॥ श्रीः ॥

श्रीमान् केशवाचार्य दैवज्ञकृत-

केशवीजातक ।

(ज्योतिषग्रन्थ.)

सान्वय सोदाहरण भाषाटीकासमेत.

जिसको

इन्द्रप्रस्थप्रान्तवर्ति नारनौलनिवासी पं० श्रीजगदीशप्रसाद त्रिपाठीने सान्वयभाषाटीकासे विभूषित किया ।

और

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

कार्तिक संवत् १९६२, शके १८२७.

केशवीजातक।

सटीक सोहारण भाषाटीका.

जिसमें

ग्रहलाघवकी रीतिसे ग्रहस्पष्ट करनेकी सारणी और चतुर्विंशद्भलोंकी सारणी तथा क्रांति-सारणी और आयुर्दा सुगमरीतिसे करनेका प्रकार और विदशा उपदशा करनेकी रीति तथा विंशोत्तरी दशा अंतरदशा तथा प्रत्यंतर योगिनीदशा अष्टोत्तरीदशा वर्ग मूल निकालनेकी रीति अष्टकवर्ग सूर्य्यकालानलचक्र तथा चन्द्रकालानल चक्र सर्वतोभद्रचक्र और सूर्य्यलग्नसे इष्ट-काल बनानेकी रिति दशमसारणी लग्नसारणी तथा चरसारणी श्रीयुत सेठ खेमराजजीकी प्रार्थनासे श्रीजगदीश मथुरादत्त शंभुदयाल रामनाथ त्रिपाठी इन्होंने "केशवीजातक" का भाषा उदाहरण बनाया सो बहुत शोधके छापा गया है ॥

पं०जगदीशप्रसाद.

दोहा–श्रीगणपति मन्दाकिनी, शारद दश दिक ईश।
हरिहर ब्रह्मा शेष गुरु, तिनको नावौं शीश ॥ १ ॥

सोरठा–श्रीराजेन्द्र नरेश, ताके सुंदर राजमें।
नारनौल शुभ देश, इन्द्रप्रस्थमें परदिशा ॥ १ ॥
पंडित रामविलास, तिनके शिष्य जगदीशने।
भाषा करी प्रकाश, केशवीजातक ग्रंथकी ॥ २ ॥
मोहिं दासानुजदास, जान आप किरपाकरो।
क्षमाकरो द्विजतास, मैं मूरख मतिमंदहूँ ॥ ३ ॥

चौपाई–मोर नाम हैगा जगदीशा। गुरुचरणन में नावौं शीशा ॥ १ ॥
रामविलास गुरूजी मेरा। उनके चरणनऽकाहूं चेरा ॥ २ ॥
मथुरामें मेरी मित्राई। जिन या भाषा साथ बनाई ॥ ३ ॥
ग्रंथ देख में अति कठिनाई। संस्कृतमें निज भाषा गाई ॥ ४ ॥
देख चपलता द्विजसमुदाई। क्षमाकरो निजपुत्रकी नाई ॥ ५ ॥

श्लोक–शास्त्रकर्ता भवेद्व्यासो लेखको गणनायकः।
तयोर्विचलिता बुद्धिर्मनुष्याणां तु का कथा ॥ १ ॥

भूमिका।

ज्योतिषं नयनं स्मृतम्।

प्रिय पाठकगण! आप सब महाशयोंको विदितही होगा कि, चारों वर्णोको शिक्षा प्रणाली बतलानेवाला दिव्यपुस्तक वेद है और उसके शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद और ज्योतिष यह छः अंग हैं और षडंग वेद पढ़ना ब्राह्मणोंसे लेकर वैश्यों पर्य्यंत तीनों वर्णोका धर्म है उसही हमारे शिरोधार्य्य वेदका एक अंग ज्योतिष है उसके दो भाग हैं एक व्यक्त कहिये प्रत्यक्ष दृष्टफल ग्रहण अस्तोदयादि दूसरा अव्यक्त कहिये अदृष्ट भविष्यफल जातक और वर्षफलादिक. अब यहां अपनेको जातक के विषे विचार कर्तव्य है कि, प्राणीके यावज्जन्ममें जो शुभ. किंवा अशुभ फल होता है कहिये कौन २ समयमें जिसको लाभ किंवा हानि जय किंवा पराजय किससे सुखोत्पत्ति किंवा पीडा और कौन समयमें रोगादिकों से मरण प्रायः संकट और शरीरसुख, कुटुम्बसुख, भ्रातृसुख, मित्रसुख, पुत्रसुख, कलत्रसुख, पितृमातृसुख, इत्यादि बातोंका ज्ञान जिस ग्रंथसे होताहै कहिये ज्योतिषीलोग जिस ग्रंथके आधारसे जन्मपत्रिका लिखते हैं उसको जातक ऐसा कहते हैं संस्कृतमें जातक पर बहुत ग्रंथहैं परंतु सबमें प्रसिद्ध और विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ केशवाचार्यकृत जातकपद्धति जिसको "केशवीजातक" कहते हैं सो यह ग्रंथ संस्कृतभाषामें है इस वास्ते उसका उपयोग मनुष्योंको बहुत होता नहीं इसवास्ते उसका सान्वय भाषाटीका निर्माण किया कारण इसकी सहायतासे केशवीजातकका यथार्थ ज्ञानहोके पत्रिकाका गणित कैसे करना सो खुलासे मालूम होगा, इसमें केशवीजातकके मूल श्लोक लिखके वह सब श्लोकोंका अन्वय और खडी भाषामें अर्थ लिखाहै और ग्रह और षड्बल इत्यादि गणित अल्पायाससे करने में आवें इस वास्ते सारणीको योजनाकरके उस सारणीका कैसा उपयोग करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक् उदाहरण लिखेहैं और जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके वास्ते उत्तम उदाहरण लिखाहै इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और उच्चबल तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखीहै और ग्रहोपरि तथा भावोपरि दृष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरीदशा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति और वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्ठक प्रत्यंतरदशा लिखके जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम बताया है।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रमकियाहै सो देखनेसे मालूम होगा अब आशाहै कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे।

आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको छोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और मेरेको सूचना दें कि जिससे वह भूल पुनरावृत्तिमें दुरुस्त की जायगी।

श्लोक-विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ॥ न हि वंध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् ॥ १ ॥ करोमि केशवीग्रंथोदाहृतिं लोककाम्यया ॥ बालानां सुखबोधाय न तु पांडित्यगर्वितः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

पं० जगदीशप्रसाद.

अथ केशवीजातकस्य सूचिपत्रम् ।



इति केशवीजातकस्य सूचिपत्रम् ।

॥ श्रीः ॥

अथ केशवीजातकम्

भाषा उदाहरण सहितं प्रारभ्यते.

मंगलाचरणादिश्लोकः

स्रग्धरावृत्तम्.

हेरम्बोम्बायवेधोहरिपशुपतयो भास्कराद्या ग्रहा ये
पंचैते लोकपालाश्च थदशनदितादिक्प्रपाये महान्तः ॥
मेषाद्याराशयश्चाश्विमुखनुख वराश्चनक्षत्र तारा
योगाविष्कंभकाद्याः सकल सुरवराः पांतु मामत्र रुत्ये ॥ १ ॥

नृगिरा केशवं नत्वा केशवीजातकं स्फुटम्.
जगद्दीशः प्रकुरुते जगदीशानुकम्पया ॥ २ ॥

मूल श्लोक.

नत्वा विघ्नपशारदाच्युतशिव ब्रह्मार्कमुख्यग्रहान्
कुर्वे जातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये ॥
यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्रजन्मसमयो वेद्योऽत्र खेटाः स्फुटा
यत्पक्षेहि घटंत उद्गमइहास्तर्क्षैसषड्भः सच ॥ १ ॥

अन्वयः- अहं केशवाचार्य्यः जातक पद्धतिं कुर्वे करोमीत्यर्थः किं कृत्वा विघ्नप शारदाच्युत शिवब्रह्मार्क मुख्य ग्रहान्नत्वा किं विशिष्टां जातक पद्धतिं स्फुटतरां अतिशयेन स्फुटेति स्फुटतरातां स्फुटतरां ॥ किमर्थं ज्योतिर्विदां प्रीतये ज्योतिषं विदंति जानंति येते ज्योतिर्विदस्तेषां प्रीतये अत्र ज्योतिश्शब्देन त्रिस्कंधोक्तेयः गणित संहिता जातक इत्यर्थः होराविद मित्यर्थे य ज्योतिर्विदस्ते एतद्धोरा शास्त्रविदो भवंत्येवेति शम् ॥

अर्थभाषाः- गणपती- सरस्वती- विष्णु-शिव- ब्रह्मा- और सूर्यादिनवग्रह इनको नमस्कार करिके ज्योतिर्विदके संतोषार्थ यह स्पष्ट जातक पद्धति नामक ग्रंथ करते है. इसमें जन्मकाल घटी शंकु चक्र फलक इत्यादि यंत्रोंसे सूक्ष्म रीतिसे जानना और स्पष्टग्रह जिस पक्षके प्रत्यक्ष होय उस पक्षके ग्रह लाघवरीत्या लेना. जन्म कालीन लग्न स्वदेशीय उदयसे बनावना

उदाहरणम्..

शके १८०८ में १५४२ कमकिया तो शेष-
२६६ इस्को ११ से भाग दिया तो लब्धि

वारक्रमचक्रम्

०	१	२	३	४	५	६	शेष
चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू	वार

३३ यह चक्रशेष ३ रहा इस्को १२से गुणातो ३६ हुवा इस्में गतमास० शून्य युक्त कियातो ३६ भया यह मध्यम मास गण भया इस्को दो स्थान में स्थापित किया एक जगे चक्र ३३ इस्को दूना कियातो ६६ भया इस्में १० युक्त कियातो ७६ भया इस्को दूसरे अंकमें युक्तकियातो ११२ इस्को ३३ से भागदियातो लब्धि ३ अधिमास आयासो इस्को दूसरामें युक्त किया तो ३९ हुवा इस्को ३० गुणाकिया ११७० हुवा इस्में गततिथि २१ युक्त करीतो ११९१ हुवा इस्में चक्र ३३ का पष्ठांश ५ युक्त कियातो हुवा ११९६ इस्को दो जगे रखके एकमें ६४ का भाग दिया लब्धी १८ ऊनाह इस्को दूसरी जगें ११९६ में हीन किया तो ११७८ यह अहर्गण भया जन्मका वार जाननेके लिये इस्में चक्र ३३ को ५ से गुणातो १६५ भयासो अहर्गणमें युक्त कियातो १३४३ भया. इस्को ७ से भाग दिया. तो शेष ६ रहा. इसलिये रविवार आया तब यह ११७८ अहर्गण शुद्ध भया इसको वार अहर्गणसे नमिले तो १ कम करना अथवा युक्त करना.

टीपः- विशेष जिसवर्षमें अधिक मास आवता उस वर्षमें अधिमासके पूर्ववा परमें अहर्गण बनाना होयतो जो महिना अधिक हो उस महिनाके पूर्व अहर्गण करना होयतो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिमास अधिक आवेतो लेना नहीं अर्थात् अधिमासमें एक घटाय देनाजो अधिमासके आगे अहर्गण साधन करना. होयतो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिक मास आवे तो लेना नहीं अर्थात् एक युक्त करके अधिमासमें अहर्गण साधन करना.

मध्यमग्रह सारणी प्रवेश.

अहर्गणको ६० से भाग देनातो लब्धी और शेष ऐसे २ अंक आवते हैं सो आगे मध्यम ग्रह सारणीमें लब्ध्यादि ग्रहोंका १ से ६७ तक शेष लब्धी कोष्टक है उस्के नीचे वह कोष्टकके राश्यादिक अंक लिखे हैं वह शेषकोष्टक ही लब्धी कोष्टक है. परंतु उस्का फल लेनेकी रीति जुदी है वह प्रकार ऐसा है जो लब्धीका अंक होयसो शेष कोष्टकमें देखना नंतर वह कोष्टक के नीचे राशी सहित जो अंक है तिस्में राशीका त्याग करके अंकलेना. अनंतर पहिला अंकजो होय उस्को

६ से भाग देके जो शेष रहे तिस्को दूना करना तो लब्धी कोष्टकका राशी अंक होता है. अनंतर उस्के नीचेका अंक अंशस्थानमें आता है इसवास्ते ३० से अधिक होयतो ३० से भाग देके जो अंक आवे उस्को राशि स्थानमें जोडदेना तो लब्धिकोष्टक फल तैयार होता है.

सारणीमेंका अभीष्ट शेषकोष्टकके नीचेका अंक होयसो और अभीष्ट लब्धी कोष्टकका जो अंक होयसो दोनोंका योग करना अनंतर उस अंकको चक्र निम्न ध्रुवोन क्षेपक तैयार सारणीमें ऊपरके बाजू चक्रके नीचे अंक है सो अभीष्ट चक्रके नीचेके अंकमें युक्त करना तो प्रातःकालका मध्यम ग्रह होते है.

इष्टकालका मध्यम ग्रह करना होयतो सूर्य्योदयके अनंतर जो इष्टघटी और पल होय उस्का कोष्टक ग्रह सारणीके पीछे राश्यादि लिखा है. उस्मेंसे अपना जो इष्ट घटी पल होय उस्के नीचेके अंकको प्रातःकालका जो ग्रह उस्में युक्त करना तो इष्टकालका मध्यम ग्रह होता है.

मध्यम राहु बनानेकी रीत कुछ भिन्न है. सो ऐसी है के शेष लब्धी कोष्टकका योगको १२ में कम करके जो बचे उस्को चक्र निम्न ध्रुवोनक्षेपक मिलाना तो प्रातःकालका राहु होताहै इष्टकालका राहु बनाना होयतो जो अभीष्ट घटी कोष्टकके और पल कोष्टकके नीचेके अंकको लब्धी शेष कोष्टकका जो फल सो युक्त करके जो अंक आवे उस्को १२ में कम करना अनंतर चक्र निम्न ध्रुवो नक्षेपक मिलाना तो इष्टकालका राहु होता है.

इति मध्याधिकारः

रविचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१०	१०	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
०७	०६	०४	०२	००	२८	२६	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२	१०	०८	०६	०५
४१	००	११	२२	३३	४३	५४	०५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	०४
४७	३६	२५	१४	०३	५२	४१	३०	१९	०८	५७	४६	३५	२४	१३	०२	५१	४०	२९

रविशेपलब्धिकोष्टक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०
०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२७	३५	४३	५१	५९
०	१०	२०	३०	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३६	४६
०	१७	३४	५१	०८	२५	४२	०	१७	३४	५१	८	२५	४२	००	१७	३४	५१	८	२५	४३	००	१७
०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	२५	२४	३३	४२	५१	००	९	१८

रविशेषलब्धिकोष्टक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२१
७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७
५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२
३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२६	४३	०	१७	३४	५१
२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५

रविशेपलब्धिकोष्टक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	०
२०	१९	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०
१५	२४	३२	४०	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४५	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९	७	०
५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२९	०
८	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	२६	४३	०	१७	३४	५१	९	२६	४३	०	१७	३४	५१	९	०
५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	०६	१५	२४	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	०

रविघटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५३	५२	५१	५०	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४४	४३	४२
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
४१	४०	३९	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२५	२४
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	०	०
२३	२२	२१	२०	१९	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	९	८	०	०	०

रविपलकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	०	०

चंद्रचक्रनिग्रघ्नुवोन क्षेपक.

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
९	९	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६
७	३	२९	२६	२२	१८	१४	११	[illegible]	३	२९	२६	२२	१८	१४	१०	७	३	२९	२५	२२	१८	१४
२८	४२	५६	९	२३	३७	५१	५	१९	३२	४६	०	१४	२८	४१	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३२
२१	२०	१९	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१९	८	५७	४६	३५	२४	१३	२	५१	४०	२९

चंद्रशेपलब्धिकोष्टक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९
०	३३	५६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१९
०	१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५२
०	३४	९	४४	१९	५४	२९	४	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४३	१७	५२	२७	२	३७	१२	४७
०	५१	४३	३५	२७	१९	११	३	५५	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	५०	४२	३४	२६	१८	१०	२
०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२

चंद्रशेपलब्धि कोष्टक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	१०	११	११	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७
३	१६	२९	१२	२५	८	२२	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	२	१७	०	१३	२६	९	२२
३	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५२	३	१३	२४	३४	४५	५६
११	५६	३१	६	४१	१६	५१	२५	०	३५	१०	४५	२०	५५	३०	४	३९	१४	४९	२४	५९	३४	८
५४	४६	३८	३०	२२	१४	६	५८	५०	४१	३३	२५	१७	९	१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५	५७
२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०

चंद्रशेपलब्धिकोष्टक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	०
६	१९	२	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१४	२७	१०	२३	६	२०	३	१६	२९	१२	०
६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	२	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	०
४२	१८	५३	२८	२	३८	१३	४७	२२	५७	३२	७	४२	१७	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५५	०
२८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४७	३९	३१	२३	१५	७	५९	०
५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	०

चन्द्रघटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	३	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५
१३	२६	३९	५२	५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७	३०	४३	५७	१०	२३	३६	४९	३
१०	२१	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५५	६	१६	२७	३७	४८	५८	९	२०	३०	४१	५१	२
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०
१६	२९	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३	२६	३९	५२	६
१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२७	३८	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१३	२४	३४	४५	५५	६
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	२७	३७	४८	५८	१०	२१	३१	४१	५१	२	१२	२३	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रपल कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	०
१३	२६	३९	५२	५	१८	३२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७	३०	४३	५७	१०	२३	३६	४९	०
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	०
२	१६	२९	४२	५५	८	२२	३५	४८	१	१४	२८	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३	२६	३९	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०
५२	६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	३	६	९	०	३	६	९	०	३	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१	४
२५	२२	१९	७	१५	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१९	१६	१४	११	८	५	३	०	२७	२४
१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६
०	४०	२१	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	१८	५८
०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१
०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६

चन्द्रोच्चशेषलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०
२९	२०	१	४२	२३	४	४४	२५	६	४७	२८	९	५०	३०	११	५२	३३	१४	५५	३६	१६	५७	३८
४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४
५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७

चन्द्रोच्चशेषलब्धिकोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
७	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	[illegible]	१४	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	०
१८	०	४१	२२	२	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२	१२	५४	३४	१५	५६	३७	०
२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	१७	८	०	५१	४२	३४	२५	०
४३	९	३५	०	२६	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	०

चन्द्रोच्च घटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४
२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३३	४०
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	०	०	०
४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	०	०	०

चन्द्रोच्च पलकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५
४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	०	०	०

राहुचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	०	७	१०	३	८	२	६	११	४	८	३	६	११	४	९	२	७	०	५	१०
०	२८	२५	२२	१९	१६	१३	११	८	५	२	२९	२६	२४	२१	१८	१५	१२	९	७	४	१
५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५६	८	१८	२८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुडोपलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	३	६	८	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	६	९
०	१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८	५८	८	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४६	५७
०	४८	३६	२५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	५२	४१	२९	१७	६	५४	४३	३१	२०	८	५६	४५
०	२५	५०	१६	४१	६	३१	५७	२२	४७	१३	३८	३	२८	५४	१९	४४	९	३५	०	२५	५०	१६ ०

राहुशोपलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
१३	१६	१९	२२	२५	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	१९	२३
८	१९	३०	४०	५१	२	१३	२४	३५	४५	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६
३३	२२	१०	५८	४७	३५	२४	१२	१	४९	३७	२६	१४	३	५१	४०	२८	१६	५	५३	४२	३०	१८
४१	६	३२	५७	२२	४७	१३	३८	३	२८	५४	१९	४४	९	३४	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुशोपलब्धिकोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२६	२९	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२६	२९	३३	०
१७	२७	३८	४९	०	११	२१	३२	४३	५४	५	२६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	४	०
७	५५	४४	३२	२१	९	५७	४६	३४	२३	११	०	४८	३६	२५	१३	२	५०	३८	२७	१५	४	०
२२	४७	१३	३८	३	३८	५४	१९	४४	१०	३५	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७	२२	४७	१३	०

राहु घटी कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
३	६	९	१२	१५	१९	२२	२५	२८	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
६	९	१२	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	७
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
१०	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५२	५५	५८	१	४	७	११

राहुपल कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

मंगलचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
७	७	५	३	१	११	१०	८	६	४	२	०	११	९	७	५	३	१	११	१०	८	६
६	१०	१५	१९	२४	२८	३	७	१२	१६	२१	२५	०	४	८	१३	१७	२२	२६	१	५	११
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	४	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

मंगलशेपलब्धिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२
२१	२	३४	५	३७	८	४०	११	४२	१४	४५	१७	४८	२०	५१	२३	५४	२५	५७	२८	०	३१	३
२६	५२	१९	४६	१२	३९	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	४	३०	५७	२३	५०	१६	४३	९
३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	४१	१२	४३	१४	४५	१६	४८	१९	५०	२१	५२	२३	५४
३	७	११	१४	१८	२२	२५	२९	३२	३६	३९	४३	४७	५०	५४	५७	१	५	८	१२	१५	१९	२३

मंगलशेपलब्धिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२२	२३	२४
२४	६	३७	९	४०	११	४२	१४	४६	१७	४८	२०	५१	२२	५४	२६	५७	२९	०	३२	३	३४	५
२६	२	२९	५५	२२	४८	१५	४२	८	३५	१	२८	५४	२१	४७	१४	४०	७	३३	०	२६	५३	१९
२५	५६	२७	५८	२९	०	३१	२	३३	४	३६	७	३८	९	४०	११	४२	१३	४४	१५	[illegible]	१७	४८
२६	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	२	६	९	१३	१७	२०	२४	२७	३१	३५	३८	४२	४५

मंगलशेपलब्धिकोष्ठक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	०	०	१	१	२	२	३	४	४	५	०	०
३७	८	४०	१२	४२	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२२	५५	२६	५७	२९	०	३२	३	३५	६	०	०
२६	५२	१९	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३८	४	३१	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	०	०
१९	५०	२१	५३	२४	५५	२६	५७	२८	५९	३०	१	३२	३	३४	५	३६	७	३८	९	४१	०	०
४८	५२	२६	०	३	७	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३२	३६	३७	४३	४७	५०	५४	५७	१	०	०

मंगलघटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
३१	२	३४	५	३६	८	३९	११	४२	१४	४५	१७	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५६	२८
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०
०	३१	२	३४	५	३६	८	३९	१०	४३	१४	४५	१७	४८	१९	५२	२२	५३	२५	५७
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१
२९	०	३१	२	३४	५	३६	८	३९	११	४३	१४	४५	१७	४८	१९	५२	२२	५३	२६

मंगल घटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१

बुधकेन्द्र घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	२
६	१२	१९	२५	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१७	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४
१५	२१	२७	३४	४०	४६	५३	५९	५	१२	१८	२४	३१	३७	४३	५०	५६	२	९	१६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	६
२२	२५	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२७	३३	३९	४६	५१	५८	५	११	१७	२४

बुधकेन्द्र घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
२	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१३	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३	६

गुरुचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१	०	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	१	०	११	१०	९	८	८	७
१६	१९	२३	२७	१	४	८	१२	१५	११	२३	२६	०	४	८	११	१५	१९	२२	२६	०	३
३६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२८	१०	५२	३४	१६	५८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९
०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४२	४१
०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८
०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४
०	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुशेषलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४
४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२४	२३	२२	२१
१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	२१	०	८	१७	२५	३४	४२	४०	५१	०	८	१७	२५
८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२५	०	३४	८	४२	१७	५१	२६	०	३४	८	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुशेपलब्धि कोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	२	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	०
४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	०
२०	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	०
३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	०	८	१७	२५	३४	०
१७	५१	२५	०	३४	८	४३	१७	५१	२५	०	३४	८	४३	१७	५१	२५	०	३४	८	४३	१७	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुघटीकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	[illegible]
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
४५	५०	५५	५	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	०

गुरुपलकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५

शुक्रकेन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवोनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
२	०	११	९	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७
९	२५	११	२७	१३	२९	१५	१	१७	३	१९	५	२१	७	२३	९	२४	१०	२६	१२	२८	१०
२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५१	४९	४७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकेन्द्रशेपलब्धिकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१४
३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०
५९	५९	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५३	५२	५२	५२	५२
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२
६	१३	२०	२१	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	१९	२६	३३	३९	४६	५३	५९	६	१३	१९	२६	३२
३८																						

शुक्रकेन्द्रशेषलब्धिकोष्टक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८
४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०	५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१
५२	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४
२	४२	२२	२	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	३	४४	२४	४	४४	२४	४	४४	२४	४	४५
३९	४६	५२	५९	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३८	४६	५२	५९	५

शुक्रकेन्द्रशेपलब्धिकोष्टक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२८	२९	०	०	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	१०	१०	११	०	०
५८	३५	१२	४९	२६	२	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	०	०
४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३७	०	०
२५	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४६	२६	६	४६	२६	६	४६	२६	८	४७	२७	७	४७	०	०
१२	१८	२५	३२	३८	४५	५१	५८	५	११	१८	२५	३१	३८	४४	५१	५८	५	११	१८	२४	०	०

शुक्रकेन्द्रघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२
०	०	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१
३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२
५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३
१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०

शुक्रकेन्द्रपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३४	३५	३५	३६	३६	३७

शनिचक्रनिम्न ध्रुवो नक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१	५	१०	२	७	११	४	८	१
१	१५	२९	१४	२८	१२	२७	११	२५	१०	२४	८	२२	७	२१	५	२०	४	१८	३	१७	१
२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशेपलब्धिकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०
४ ३७	९	१४	१८	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५५	५९	४	९	१४	१८	२२	२८	३२	३७	४१	४६

शनिशेपलब्धिकोष्टक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१
५१	५६	०	५	९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४२	४६	५१	५६	०	५	९	१४	१८	२३	२८	३२

शनिशेपलब्धिकोष्टक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०
३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	०	०
१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	०	०
४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	०	२३	४६	०	०
३७	४१	४६	५१	५५	०	५	९	१४	१९	२३	२८	३२	३७	४१	४६	५१	५५	०	५	९	०	०

शनि घटी कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०

शनि पल कोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२

मध्यम रवि साधनका उदाहरण.

इहां अहर्गण ११७८ आया है. इस्को ६० से भाग देनेसे लब्धी १९ शेष ३८ तो यह शेष कोष्टक इस्के नीचेका अंक ११७।२७।१०।३० इस्को लब्धी अंक १९ तो लब्धी अंकके नीचे अंकराशी छोडके यह १८।४३।३५।१५।२५ अंक है. इस्के ऊपरका अंक १८के ६ से भाग दिया तो शेष० शून्य रहा दूना कियातो ० शून्य रहा यह राशी अंक भया. अब भाग स्थानमें ४३ आया ये ३०से अधिक हैं इसवास्ते इस्के ३०का भाग दिया तो लब्धी १ यह राशीमे युक्त कियातो १।१३।३५।१५।२५ यह अंक भया इस्को शेष ३८कोष्टकका पल युक्त किया तो २।२१।२।२५।५५ यह अंक भया. इस्को चक्र २२ सारणीमें इस्के नीचेका अंक ९।१९।३७।५७ यह युक्त कियातो ०।१०।४०।२३ यह प्रातः कालका मध्यम सूर्य्य बुध शुक्र भया. अब इस्को इष्टकालका मध्यम करनाहै. इसवास्ते इष्ट घटी २२ यह इस्के सारणीमेंका पल ०।०।३१।३३ औरपल ०१ इस्का पल पल सारणीका ०।०।०।०१ यह दोनूफल प्रातः कालके मध्यम ग्रहमें युक्तकियातो ०।११।११।५६ यह सूर्य्य इष्टकालका मध्यम ग्रह भया. इसी रीतीसे प्रातःकालका इष्टकालका मध्यम सब ग्रह करना.

प्रातःकालिकसूर्य्यादिमध्यमग्रह.									अथ तात्कालिक मध्यमाग्रहाः ९								
सू.	चं.	चंउ.	रा.	मं.	बुके.	बु.	शुक.	श.	सू.	चं.	चंउ.	रा.	मं.	बुक.	बु.	शुक्र.	श.
०	८	९	४	५	७	५	७	२	०	९	९	४	५	७	५	७	२
३०	२६	१७	२३	२५	५	१२	१२	१६	११	३	२८	२१	२२	७	१२	१३	१६
४०	२६	५८	४१	५०	२२	१५	१२	२८	११	२८	१	४०	७	२	१७	४२	३९
२३	२९	१०	५०	२८	५१	११	२९	३३	५६	२०	२३	५	२४	११	५१	[illegible]	३७
श्लोकः- जगदाशंन रचित केशवार्यघटिपण									५९	५९	६	२	३१	३८६	८	३७	२
मध्याधिकारः पूर्णयित ज्ञापार्य प्रकाशक									०८	२५	४१	११	२६	२४	०	०	०

अथ स्पष्टाधिकारः

श्लोकः

मंदोच्चंग्रहवर्जितंनिगदितंकेन्द्रंतदाख्यंबुधैः केन्द्रेस्यात्स्व-
मृणंफलंक्रियतुलाद्य इति. दोस्त्रिभोनत्रिभोर्द्धं विशोध्यंरसै-
श्चक्रतांकाधिकःस्याद्भुजोनंत्रिभकोटिरंकेकत्रित्रिभैस्या-
त्पदं सूर्य्यमंदोच्चमष्टाद्रियोंशा भवेत् ॥

टी०- मंदोच्चमें ग्रह कम करनेसे मन्दकेन्द्र होता है. वह केन्द्र मेष राशीसे ६राशीतक होयतो फल धन और तुलादि ६राशी होयतो फल ऋण जानना.

केन्द्र अथवा ग्रह ३ राशीसे कम होयतो वही भुज जानना. और तीनसे ३ अधिक होयतो ६ राशीमें कमकरनातो भुज होय. ६ से अधिक होय तो ६ राशी घटाय देतो भुज होय ९ से अधिक होयतो १२ में कमकरना तो भुज होय इस प्रकारसें केन्द्रका वा ग्रहका भुजकरना.

स्पष्टसारणीप्रवेश.

२ राशी १९ अंश० कला० विकला यह सूर्य्यका मंदोच्च है. इस्में मध्यम सूर्य्य कम करना तो सूर्य्यका मंद केन्द्र होता है. वह केन्द्रका भुज करके उस्का अंश करना अनंतर जो अंश आवेतो अंश कोष्टकके नीचे स्पष्ट ग्रह सारणीमें लिखाहै सो देखके भागादि फल लेना. अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उस्को इष्ट भुजांश कोष्टकके नीचे गुण लिखा है. उस्से गुणके वही कोष्टकके नीचे जो हर लिखा है. उस्से भाग देके जो फल आवे सो भुज भाग फलके विकलामें जोड देनातो सूर्य्यका मंद फल होताहै. वह फल धन होय तो मध्यम सूर्य्यमें युक्त करना. और ऋण होयतो मध्यम सूर्य्यमे कम करना. तो सूर्य्य मंद स्पष्ट होता है.

अयनांशाः

श्लोकः- वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसंहृतः शाकोयनांशाः ॥

टीकाः- इष्टशालिवाहन शकमें से ४४४ लब्धि यह कम करना जो बाकी रहै. उस्को ६० का भाग देना जो भागाकार लब्धि आवे वह अयन अंश होताहै.

उदाहरणम्:- शके १८०८ इस्मेसे ४४४ यह कमकिया तो १३६४ यह बचा- सो काल जानना. इस्को ६० से भाग दिया तो लब्धि अंश २२ कला ४४ विकला०० अब महिना प्रति ५ विकला युक्त करे तो यह अयनांश आया. २२।४४।०५

चरखण्ड.

श्लोक.

मेषादिगेसायनभागसूर्य्ये दिनार्द्धजाभापलभाभवेत्सा ॥
त्रिष्ठाहतास्युर्दशभिर्भुजंगैर्दिग्भिश्चराधीनिगुणोधृतांत्यात् ॥१॥

टीकाः- मेषका सायन सूर्य्य शून्यराशि० अंश० कला० विकला इतना सूर्य्य जिसदिन होय उसदिन मध्याह्नमें सम भूमिपर अंगुलका शंकु रखके जो छाया आवे सो पलभा जानना. आगेजो पलभा आवे उस्को ३ जगे रखके क्रमसे १०।८।१० यह अंक से गुणदे जो गुणाकार आवे उस्को क्रमसे ३।३।३ यह अंकसे भाग देना जो भागाकार आवे सो क्रमसे पहला दूसरा तीसरा चरखण्ड होताहै.

उदाहरणम्.

पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया १ से भाग देनेसे ७० यह पहला चरखंड- पलभा ७ अंगुल इस्को ८ से गुणातो ५६ भया १ से भाग दिया तो ५६ यह दूसरा चरखंड- पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया ३ से भाग देनेसे २३ यह तीसरा चरखंड इस प्रकारसे क्रम करके चरखंड ७०।५६।२३ यह हुवा.

टीका.

मंद स्पष्ट सूर्य्यमें अयनांश युक्त करनेसे सायन सूर्य्य होता है. उस्का भुज करना अनंतर भुजका जो ०।१।२ इसमेंसे राश्यंक होय उस्के समान चर खण्डका योग करना अनंतर भुज राशीके नीचे अंशादिक जो होय उस्को चरखण्डसे गुणके जो गुणाकार आवे उस्के घट्यादिकमें ६० का भाग दे अंशमें ३० का भाग देना जो लब्धी आवे उस्को पहले किया जो योग तिस्में युक्त करना तो चरस्पष्ट होता है. वह सायन सूर्य्य मेषादि ६ राशिमें होयतो फल ऋण तुलादि ६ राशिमें होय तो फल धन जानना सायंकालका ग्रह करना होयतो चर विपरीत देना सो ऐसा सायन सूर्य्य मेषादि षट्कमें होयतो धन तुलादि षट्कमें होयतो ऋण जानना वह आया जो चर उस्को मंद स्पष्ट सूर्य्यके विकलामें धन होयतो युक्त करना ऋण होयतो कम करना तो स्पष्ट सूर्य्य होता है.

सूर्य्यकी स्पष्ट गती.

केन्द्र भुज भाग कोष्टकके नीचे गति फल लिखा है. वह केन्द्र कर्कादि ६ राशि तक होयतो धन इसवास्ते पहिली रवीकी जो मध्यम गति उस्में युक्त करना और केन्द्र मकरादिक ६ राशितक ऋण जानना इसवास्ते मध्यम गतिमें कम करना तो सूर्य्यकी स्पष्टगती होती है.

दिनमान— रात्रिमान.

टीका.

जब सायन ग्रह मेषादि ६ राशिमें होय तब उत्तर गोलमें जानना- और सायनग्रह तुलादि ६ राशीमें होयतब दक्षिण गोलमें जानना- जो चर आया होय उस्को पलजानके उत्तर गोलमें होयतो १५ घडीमें युक्त करना और दक्षिण गोलमें कम करना- तो दिनार्द्ध होता है. वह दिनार्द्ध ३० में कम करना तो रात्र्यर्द्ध होता है अनंतर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्ध इस्को दूना करना तो दिनमान रात्रिमान होता है.

सूर्य स्पष्ट सारणी.

०	१	२	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२९	३१	३४	३६	३८	ग.
०	२०	३९	५९	१९	३६	५५	१२	२९	४६	३	१७	३२	४६	५९	१२	२४	३५	०
७	७	७	७	७	२३	२३	२४	२४	२४	९	९	११	११	११	११	१२	१३	‿
३	३	३	३	३	१०	१०	१५	१५	१५	४	४	५	५	५	५	५	६	हु०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	ग.
१५	१५	१४	१३	१३	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	७	६	५	४	४	फ.
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	‿
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४०	४२	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१५	फ
४५	५४	३	११	१७	२२	२८	३२	३५	३६	३७	३६	३५	३२	२८	२२	१५	७	
१३	३२	३२	२१	२१	३१	३१	४१	२	२	२	२	२	२	२	१९	२८	११	गु
६	१५	१५	१०	१०	१५	१५	२०	१	१	१	१	१	१	१	१०	१५	६	हु.
२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.
३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५	फ.
३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	‿
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३५	३७	३९	४०	४१	४२	४४	फ०
५८	४७	३५	२१	६	५२	३१	१२	५१	२८	३	३७	९	३९	८	३४	५९	२२	
११	९	९	७	७	५	५	५	८	८	८	३	३	३	७	७	७	७	गु.
६	५	५	४	४	३	३	३	५	५	५	२	२	२	५	५	५	५	हु.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	ग.
४३	४२	४१	३८	३७	३७	३५	३४	३३	३१	३०	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१८	फ.
५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	भुजा
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	
४५	४७	४८	४९	५०	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	१	२	२	३	फ०
४५	२	२१	३६	४९	१	१०	१८	२२	२६	३१	२७	२३	१८	११	१	४९	३५	
१२	४	५	५	६	७	७	११	११	१	१	११	११	९	५	४	३	३	गु.
१०	३	४	४	५	६	६	१०	१०	१	१	१२	१२	१०	६	५	४	४	हु०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	ग.
४६	३५	२३	११	९	७	६	४	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	फ.
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	भुजा
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१० फ.
२९	०	४०	१६	५०	२२	५२	२०	४५	८	२८	४६	१	१५	२५	३४	४०	४३	४५
२	२	३	७	८	१	१	५	५	१	३	१	१	१	१	१	१	१	० गु
३	३	५	१२	१५	२	२	१२	१२	३	१०	४	४	६	६	१०	१०	३०	१ हु०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ग.
४२	४०	३८	३५	३३	३१	२८	२६	२४	२२	१९	१७	१५	१२	१०	७	५	२	० फ०

॥स्पष्टग्रह॥ स्पष्ट सूर्य्य साधनका उदाहरणम्॥

यह सूर्य्यका मंदोच्च २।१८।०।० इस्में मध्यम सूर्य्य ०।११।११।५६ कम कियातो २।६।४८।४ यह शेषरहा इस्का नाम केन्द्र अब इस्का भुज २।६।४८।४ तो यही रहा भाग कियातो ६६।४८।४ यह भया इसवास्ते इहां सारणी कोष्ठक ६६ इस्के नीचेका अंक १।५९।२२ इस्कोगुण ११से४८ को गुणातो ५२८ पल ४को गुणातो ४४ इस्के ६०का भाग दियातो० लब्धि हुई अब गुणके नीचे हर १२ से ५२८ में भाग लियातो ४४ लब्ध हुवा इस्को विकलामें युक्त कियातो २।०।०।७ यह सूर्य्यका मंदफल भया अब केन्द्र मेषादि ६ राशिमें है इसवास्ते फल धन यह मध्यम सूर्य्यमें युक्तकियातो ०।१३।१२।३ यह मंदस्पष्ट सूर्य्य भया इस्में अयनांश २२।४४।२ युक्त कियातो यह १।५।५६।०६ सायन सूर्य्य इस्का भुज १।५।५६।६ यही रहा यहां भुज राशी अंक १ है. इसवास्ते चरखंड ७० भोग्यखंड ५६ भुजभाग ५।५६।६ इस्से पूर्वरीती करके आया फल ११ यह युक्तकरके ८१ यह चर भया अब सायन सूर्य्य मेषादिक है इसवास्ते मंदस्पष्ट सूर्य्यके विकलामें कम किया तो यह ०।१३।१०।४२ स्पष्ट सूर्य्य भया इहां केन्द्र मकरादिक है. इसवास्ते भुज भाग कोष्ठक ६६ इस्के नीचे गतिफल ०।५४ यह है सो ५९।०८ मध्यम गतिमें कम कियातो यह ५८।१४ स्पष्टगती भई सायन सूर्य्य मेषादिक है इसवास्ते उत्तर गोलऊपर आयाजो पलात्मकचर ८१ यह १५ घटीमें युक्त कियातो १६।२१ यह दिनार्द्ध भया इस्को ३० घटीमें कम कियातो १३।२९ यह रात्रिदळ भया. दिनमान ३२।४२ रात्रिमान २७।१८ दोनूंका योग ६०।०० अहोरात्र भया.

त्रिफल चंद्र संस्कार.

प्रथमफल अपने देशसे दक्षिणोत्तर रेखा कितने योजन है वह देखके जो योजन होय उस्को ६ से भागदेकरके जो भागाकार आवे वह कला होगी सो अपना देश दक्षिणोत्तर रेखाके पश्चिम होयतो फल धन और पूर्वमें होयतो फल ऋणजानना दक्षिणोत्तर रेखाके ऊपरके देश लंका, देवकन्या, कांची, श्वेतपर्वत वत्स गुल्म, परली, उज्जैन, गर्गराट, कुरुक्षेत्र, मेरु, द्वितीयफल पहिले जो चर किया है उस्को २ से गुणके ९ से भाग देना जो भागाकार आवे सो कलादि जानना और चर जैसा धन ऋण होय वैसा वह फल धनऋण जानना तृतीय फल सूर्य्यका जो मंदफल आया है उस्को २७ से भाग दे-

आवे सो धन ऋण जानना अब तीनों फलोंका एकी करण जो धन किंवा ण आवेगा वह मध्यम चन्द्रमें धन होयतो युक्त करना ऋण होयतो कम करना तो त्रिफल संस्कृत चन्द्र होता है.

उदाहरण.

इस उदाहरणमें मध्य रेखाका अंतर ५ योजन है इस्को ६ से भाग दिया तो०कला ५० विकला यह फल धन कारण अंतर पश्चिम है. चर ८१ इस्को २ से गुणा तो १६२ यह इस्को ९ से भाग दियातो १८।०० यह कलादि द्वितीय चर फल ऋण है इसवास्ते ऋण.सूर्य्य फल २।००।७ इस्को २७ से भाग दियातो ०।४।२६ यह अंशादि तृतीय फल धन है इसवास्ते धन यह तीनो फलोंका एकी करण ००।१२।४४ अंशादि ऋण यह मध्यम चंद्र ८।३।२८।२१ इस्में कम कियातो ९।३।१५।३८ यह त्रिफल संस्कृत चंद्र भया अथवा देशांतर कला और चर फल और सूर्य मंद फल यह तीनों फलोंको अलग अलग ऋण धन समत्व कर मध्यम चंद्रमें ऋण धन करना तो पूर्व तुल्य चन्द्र त्रिकर्म संस्कृत होता है.

स्पष्टचन्द्र.

चंद्रोच्चमें त्रिफल चन्द्र कम करना तो चन्द्रका मंद केन्द्र होता है अनंतर वह केन्द्रका भुज करना भुजका अंश करना अंश करके जो अंशांक आवे सो अंश कोष्ठकके आगे स्पष्ट सारणीमें देखना और उस्के नीचे का भागादिक फल लेना अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उस्को इष्ट भुजांश कोष्ठकके नीचे जो गुण लिखा है. उस्से गुणकर वही कोष्टकके नीचे जो हर लिखा है उस्से भाग देनेसे जो भागाकार आवेगा सो भुज भाग फलके विकलामें युक्त करना तो चन्द्र मंद फल होता है वह फल धन होयतो त्रिफल चंद्रमें युक्त करना और ऋण होयतो त्रिफल चन्द्रमें कम करना तो स्पष्ट चन्द्र होता है.

चंद्रकी स्पष्ट गतिः- पूर्वोक्त केन्द्र भुज कोष्टकके नीचे गति फल लिखा है वह लेना अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला उस्को गति फलके नीचे गुण लिखा है उस्से गुण करके ६० से भाग दे जो फल आवे सो विकलात्मक वह लिया जो गति फल उस्में कम करके वह गति फल सूर्य्यके ऐसा केन्द्र परसे चंद्रके मध्यम गतीमें धन होयतो धन करना किंवा ऋण होय तो ऋण करना तो चंद्रकी स्पष्ट गति होती है.

चन्द्रस्पष्टसारणी.

मु° क्ता	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
फ°	० ० ०	० ५ २१	० १० ४३	० १५ १	० २१ ११	० २६ १७	० ३१ ५४	० ३७ ८	० ४२ २४	० ४७ ३८	० ५२ ४८	० ५८ १	१ ३ ९	१ ८ १७	१ १३ २४	१ १८ २८	१ २३ ३१	१ २८ ३३	१ ३३ ३३	१ ३८ ३१	१ ४३ २७	१ ४८ २१	१ ५३ १२
गु°	१६	१६	१६	१६	२१	२४	२१	२१	२१	२६	२६	२३	२१	५१	५६	५	५	५	५	४९	४९	२९	२९
हे°	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	६	६	१०	१०	१	१	१	१	१०	१०	६	६
ग°	६८	६८	६७	६७	६७	६६	६६	६६	६५	६५	६५	६४	६४	६४	६३	६३	६३	६२	६२	६१	६१	६०	६०
फ°	१५	१	४४	२८	१०	५५	३७	१८	५९	४१	२०	५९	२२	१२	४८	२५	१	३४	८	३७	१५	४५	४६
गु°	१४	१५	१६	१७	१७	१८	१८	१८	२०	२१	२१	२२	२४	२२	२४	२५	२६	२५	२७	२८	२८	२९	३०
मु° क्ता	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४४	४५
फ°	१ ५८ २	२ २ ५०	२ ७ ३५	२ १२ १८	२ १६ ५८	२ २० ३७	२ २६ १२	२ ३० ४५	२ ३५ १५	२ ३९ ४०	२ ४४ ७	२ ४८ २८	२ ५२ ४७	२ ५७ ४	३ १ १५	३ ५ २४	३ ९ ३०	३ १३ ३३	३ १७ ३३	३ २१ २७	३ २५ १९	३ २८ ८	३ ३२ ५२
गु°	२४	१९	१९	१४	१४	२३	२३	९	२२	९	१२	२३	१७	२५	२५	४१	४	४	४७	२२	१९	२२	२
हे°	५	४	४	३	३	५	५	२	५	२	३	३	४	६	६	१०	१	१	१२	६	५	५	१
ग°	५९	५९	५९	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५४	५४	५३	५२	५२	५१	५०	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५
फ°	४६	१६	४५	१२	४०	७	३५	०	२६	४६	१०	३३	५५	३२	२६	५६	१७	२५	३३	८	२४	४८	५५
गु°	३१	३१	३२	३२	३२	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३९	३९	३९	४०	४१	४३	४२	४३	४४	४५	४६	४६
मु° क्ता	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
फ°	३ ३६ ३३	३ ४० ११	३ ४३ ४४	३ ४७ १४	३ ५० ३८	३ ५३ ५०	३ ५७ १६	४ ० ३८	४ ३ ३६	४ ६ ४०	४ ९ ४०	४ १२ ३५	४ १५ २५	४ १८ ११	४ २० ५२	४ २३ २४	४ २६ ०	४ २८ २७	४ ३० १३	४ ३३ ६	४ ३५ १८	४ ३७ २५	४ ३९ ३७
गु°	११	७	७	७	१०	१७	१६	१८	६१	३	३२	१७	११	८	१३	५	५	७	९	११	१३	२	२
हे°	३	२	२	२	३	५	५	६	२०	१	१२	६	४	३	५	२	२	३	४	५	६	१	१
ग°	४५	४४	४३	४२	४२	४१	४०	३७	३८	३७	३६	३५	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
फ°	९	२२	३५	४८	०	११	१८	२८	३८	४५	५२	५८	४	१३	१५	१८	२०	२२	२४	२४	२५	२४	२२
गु°	४६	४७	४८	४९	४९	५०	५१	५२	५२	५३	५३	५४	५५	५५	५६	५७	५८	५८	५९	६०	६०	६१	६२
मु° क्ता	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१
फ°	४ ४१	४ ४३	४ ४५	४ ४६	४ ४८	४ ४९	४ ५१	४ ५२	४ ५३	४ ५५	४ ५५	४ ५६	४ ५७	४ ५८	४ ५९	५ ०	५ ०	५ ०	५ १	५ १	५ १	५ १	५ ०
	२४	१६	१०	४३	२०	५०	५५	३६	५०	१	२	१	३९	४२	२४	०	३०	५५	१५	२८	३७	४०	०
गु°	११	७	५	८	३	७	४	५	७	१	१	९	४	७	३	१	५	१	१	२	२१	०	०
हे°	६	४	३	५	२	५	३	४	६	१	१	१०	५	१०	५	२	१२	३	४	१५	१	०	०
ग°	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	९	८	७	६	५	३	२	१	१	०
फ°	२२	२०	१७	११	६	१	३५	२४	४	३२	२५	१५	५	५२	४	२८	२५	१	५६	३१	१७	०	०
गु°	६३	६३	६२	६६	६६	६७	६७	६७	६८	६९	७०	७०	७१	७२	७३	७३	७४	७५	७५	७६	७७	०	०

स्पष्टचंद्र साधनेका उदाहरण.

चंद्रोच्च ९।२९।१।४४ इस्में त्रिफल चंद्र ९।३।१५।३८ कम करके बाकी ०। २४।४६।०६ यह केन्द्र इस्का भुजभाग कियातो २४।४६।०६ इसपास्त हां सारणीकोष्ठक २४ इस्के नीचे अंशादिफल २।२।५० इस्को गुण हर फल २१९ विकला युक्त कियातो २।६।२९ यह चंद्र फल भया यह केन्द्र मेषका है इसवास्ते फल धन यह त्रिफल चंद्र ९।३।१५।३८ इस युक्त कियातो ९।५।२२।७ यहस्पष्ट चंद्र भया अब इहां केन्द्र भुज भाग कोष्ठक २४ इस्का गति फल कलादि ५९।१६ इस गति फलके नीचका गुण २१ इस्से भुज भागके नीचेकी कला ४६।०६ विकला इस्को गुणके यह १४२६।१०६ इस्को ६० से भाग दिया तो फल २४ यह विकलामें कम किया बाकी ५८।५२ यह केन्द्र मेषका है इसवास्ते मध्यमगति ७९०।३५ में कम कियातो ७३१।४३ यह स्पष्ट चन्द्र गति भई.

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि स्पष्ट सारिणी प्रवेश.

मध्यम सूर्य्यमें मध्यम ग्रह भौम गुरु शनि कम करना तो भौम गुरु शनि इनका प्रथम शीघ्र केन्द्र होता है. मध्यम बुध और शुक्र इनका केन्द्र पूर्वमें मध्यम ग्रहके बराबर लिखा है. अभीष्ट ग्रहका केन्द्र ६ राशिसे अधिक होय तो १२ में कम करना अनंतर ६ से अल्प जो केन्द्र उस्का अंश करना जो अंश आवे सो आगे लिखा शीघ्र फलग्रह सारिणीका अंशकोष्ठक तैयार होता है. अनंतर अभीष्ट कोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना अनंतर अंश फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखा है उस्में से अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलाका फल कलादि वैसा विकलादि एकत्रकरके धन किंवा ऋण सारिणीमें लिखा है उसके प्रमाण लिया जो अंश फल युक्त करना किंवा कम करना तो ग्रहोंका प्रथम शीघ्र फल होता है. शीघ्र फलका अर्धकरके केन्द्रके प्रमाण मध्यम ग्रहमें युक्त करना किंवा कम करना तो दल संस्कृत ग्रह होता है. भौमादि ग्रहोंका राश्यादि मंदोच्च भौमका ४ बुधका ७ गुरु ६ शुक्रका ३ शनिका ८ अब अभीष्ट ग्रहका मंदोच्च लेकरके दल संस्कृत ग्रहमें कम करना तो मन्द केन्द्र होताहै. वह केन्द्रका पूर्वोक्त रीति करके भुज करना. भुजका भाग करना जो अंश आवे सो आगे लिखा मंद फल सारि-

णीका अंशकोष्टक तयार हैं अनंतर अभीष्ट कोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना. अनंतर फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखे हैं उस्मेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्प्रमित कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फलको एकत्र करिके उस्को पूर्व फलमें युक्त करना तो उन ग्रहोंका मन्द फल होता है. ऋण धन मन्द केन्द्र परसे जानिके उस फलको मध्यम ग्रहोंमें धन वा ऋण करना तो मंद स्पष्ट ग्रह होगा और उसी मन्द फलको प्रथम शीघ्र केन्द्रमें विलोम अर्थात् धन होयतो ऋण और ऋण होयतो धन करना तो द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है. उस शीघ्र केन्द्र परसे प्रथम शीघ्र फलके रीतिसे फल आनिकर मन्द स्पष्ट में ऋण धन करना तो वह स्पष्ट होता है. यही रीति भौमादिकोंकी है ॥ ॥ मंगल शुक्रका विशेष ॥ ॥ शुक्रारयोश्चलभवोन्त्यगतो यदाङ्क इति ॥ टीका:- जब भौम और शुक्रका अंतिम शीघ्र केन्द्रको षड्भाल्प करिके अंश करते हैं तो वह अंश यदि १६५ से १८० तक होयतो संस्कार करनेका पृथक् पृथक् सारिणी लिखी है उस्का नाम अन्त्याङ्कफल सारिणी है. उस्मेंसे शीघ्र फलके सदृश फल ले आना और उस फलको केन्द्रके वश करिके ऋण धन करना तो स्पष्ट शुक्र० भौममें तो वह ठीक २ स्पष्ट होते हैं ॥ भौमादि ग्रहोंकी गति स्पष्ट करनेका प्रकार ॥ मन्द फल सारिणीमें दहनी तरफ गति फल लिखा है पन्द्रह २ कोष्ठका उस्को कर्कादि मकरादि केन्द्र वसकर धन ऋण जानना. और शीघ्रसारिणीमें दहिनी तरफ १५ कोष्ठका गति फल धन वा ऋण लिखा है उन दोनों गति फलोंको एकत्र करना अर्थात् दोनों धन होय वा ऋण होय तो योग करना और एक धन एक ऋण होयतो अन्तर करना तो उस फलके सदृश ग्रह गति स्पष्ट होती है जब योग वा अन्तर ऋण बचे तो वक्रगति जानना यह स्पष्ट गतिको मध्यम गतिका कारण लगता नहीं.

भौमबुधशुक्रइनकीगतिमेंविशेष.

भौम बुध शुक्र इनका षड्भाल्प अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १६५ से १८० तक अंश आवे तो यह संस्कार करनेके वास्ते वह ग्रहोंका शीघ्र फल सारणीके अंत्यमें पृथक् अंत्यांक गति फल सारणी लिखी है अनंतर यह सारणीमें जो अभीष्ट अंश आवे तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलादि ऋण फल लिखा है वह लेकरके अंश फलके नीचे ६० कोष्ठक लिखा है उस्मेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलाका फल कलादि वही कलादि फल विकलाका विकलादि

फल एकत्र करके वह सर्व काल ऋण है इसवास्ते लिपा जो अंश फल उस्में युक्त करना तो शीघ्र गति फल तैयार होता है॰ अनंतर यह फलका पहिले प्रमाण मंदस्पष्ट गति फलको संस्कार करना तो भौम बुध भृगु इनकी स्पष्ट गति होती है॰

प्रथमशीघ्रकेन्द्रम्.						आशुफलं भौमादि॰					
मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰
६	७	६	७	९		२८	१७	६	४५	५	.
१९	७	२८	१३	२४	फ॰	८	२२	२२	५६	१	फ॰
४	३	५४	४२	३२		०	५३	४९	४०	७	.
३२	१९	५	१३	१९							

आशुफलार्द्धम्.						आशुफलार्द्धसंस्कृता भौमादि					
मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰
१४	८	२	२२	२		५	०	५	११	२	
४	४१	११	४८	३०		८	२	९	१८	१४	
०	२६	२४	२०	३३		३	३०	६	१३	९	
						२४	३०	२७	३६	४	

मन्दकेन्द्रम्.						मन्दफलम्.					
मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰
१०	६	०	२	५		७	१	१	१	५	
२१	२७	२०	११	१५		१२	५६	५४	३०	४७	
५६	२९	५३	४६	५०		१४	५८	२१	०	३२	
३६	३०	३३	२४	५६		५	३	०	०	०	
						३६	३६	२६	०	१५	

मन्दस्पष्टभौमादि॰						द्वि॰ शीघ्रकेन्द्रम्						द्वि॰ शीघ्रफलम्.				
मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श॰	ग्र॰	मं॰	बु॰	बृ॰	शु॰	श
५	०	५	०	२		६	७	६	७	९		३३	१७	५	४५	५
१४	९	१४	१२	१८		२६	९	२६	१२	२२		५०	५४	५९	४५	५
५५	१४	१२	४१	२७		१६	०	५९	१२	४४		५४	५	५३	५२	२४
१०	५८	३०	५६	९		४६	१७	२६	१३	४७		७	११	५	५४	४
												३८	८	०	३८	२४
												ध॰	ध॰	ऋ॰	ध॰	ध॰

स्पष्टग्रह भौमशीघ्र फल सारिणी.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ०	० ० ०	० २३ १२	० ४६ २४	१ ९ ३६	१ ३२ ४८	१ ५६ ०	२ १९ १२	२ ४२ २४	३ ५ ३६	३ २८ ४८	३ ५२ ०	४ १५ १२	४ ३८ २४	५ १ ३६	५ २४ ४८	० ४३ २
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० २३	० ४६	१ ९	१ ३३	१ ५६	२ १९	२ ४२	३ ५	३ २९	३ ५२	४ १५	४ ३८	५ १	५ २४	५ ४८
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६ ११	६ ३४	६ ५७	७ २१	७ ४४	८ ७	८ ३०	८ ५३	९ १७	९ ४०	१० ३०	१० २६	१० ४९	११ १३	११ ३६	११ ५९	१२ २२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२ ४५	१३ ८	१३ ३२	१३ ५५	१४ १८	१४ ४१	१५ ४	१५ २८	१५ ५१	१६ १४	१६ ३७	१७ १	१७ २४	१७ ४७	१८ १०	१८ ३३	१८ ५७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१९ २०	१९ ४३	२० ६	२० २९	२० ५३	२१ १६	२१ ३९	२२ २	२२ २५	२२ ४९	२३ १२	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
फ०	५ ४८ ०	६ ११ ३६	६ ३५ १२	६ ५८ ४८	७ २२ २४	७ ४६ ०	८ ९ ३६	८ ३३ १२	८ ५६ ४८	९ २० २४	९ ४४ ०	१० ७ ३६	१० ३१ १२	१० ५४ ४८	११ १८ २४	४३ ३४
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० २३	० ४७	१ ११	१ ३४	१ ५८	२ २१	२ ४५	३ ८	३ ३२	३ ५६	४ १९	४ ४३	५ ७	५ ३०	५ ५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६ १७	६ ४१	७ ४	७ २८	७ ५२	८ १५	८ ३८	९ २	९ २६	९ ५०	१० १३	१० ३७	११ १	११ २४	११ ४८	१२ ११	१२ ३५
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२ ५८	१३ २२	१३ ४६	१४ ८	१४ ३३	१४ ५७	१५ २०	१५ ४४	१६ ७	१६ ३१	१६ ५५	१७ १८	१७ ४२	१८ ५	१८ २९	१८ ५३	१९ १६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१९ ४०	२० ३	२० २७	२० ५१	२१ १४	२१ ३८	२२ १	२२ २५	२२ ४९	२३ १२	२३ ३६	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	पर्य
फ०	११ ४२ ०	१२ ४ ४८	१२ २७ ३६	१२ ५० २५	१२ १३ १२	१३ ३६ ०	१३ ५८ ४८	१४ २१ ३६	१४ ४४ २४	१५ ७ १२	१५ ३० ०	१५ ५२ ४८	१६ १५ ३६	१६ ३८ २४	१७ १ १२	४२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० २३	० ४६	१ ८	१ २२	१ ५४	२ १७	२ ४०	३ २	३ २५	३ ४८	४ १०	४ ३४	४ ५६	५ १९	५ ४२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६ ५	६ २८	६ ५०	७ १३	७ ३६	७ ५९	८ २२	८ ४४	९ ७	९ ३०	९ ५३	१० १६	१० ३८	११ १	११ २४	११ ४७	१२ १०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२ ३३	१२ ५५	१३ १८	१३ ४९	१४ ४	१४ २६	१४ ४९	१५ १२	१५ ३५	१५ ५८	१६ २०	१६ ४३	१७ ६	१७ २९	१७ ५२	१८ १४	१८ ३६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१९ ०	१९ २३	१९ ४६	२० १८	२० ३१	२० ५४	२१ १७	२१ ४०	२२ २	२२ ५	२२ ४८	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फ०	१७ २४ ०	१७ ४५ ३६	१८ १७ १२	१८ २८ ४८	१८ ५० २४	१९ १२ ०	१९ ३३ ३६	१९ ५५ १२	२० १६ ४८	२० ३८ २४	२१ ० ०	२१ २१ ३६	२१ ४३ १२	२२ ४ ४८	२२ २६ २४	४२ १४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० २२	० ४३	१ ५	१ २६	१ ४८	२ १०	२ ३१	२ ५३	३ १४	३ ३६	३ ५८	४ १९	४ ४१	५ २	५ २४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
५ ४६	६ ७	६ २९	६ ५०	७ १२	७ ३४	७ ५५	८ १७	८ ३८	९ ०	९ २२	९ ४३	१० ५	१० २९	१० ४८	११ १०	११ ३१
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
११ ५३	१२ १४	१२ ३६	१२ ५८	१३ १९	१३ ४१	१४ २	१४ २४	१४ ४६	१५ ७	१५ २९	१५ ५०	१६ १२	१६ ३४	१६ ५५	१७ १७	१[illegible] ३[illegible]
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६[illegible]
१८ ०	१८ २२	१८ ४३	१९ ५	१९ २६	१९ ४८	२० १०	२० ३१	२० ५२	२१ १४	२१ ३६	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अं०	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग०घ०
फ०	२२ ४८ ०	२३ ८ २४	२३ २८ ४८	२३ ४८ १२	२४ ८ ३६	२४ ३० ०	२४ ५० २४	२५ १० ४८	२५ ३१ १२	२५ ५१ ३६	२६ १२ ०	२६ ३२ २४	२६ ५२ ४८	२७ १३ १२	२७ ३३ ३६	४१ ३८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० २०	० ४१	१ १	१ २२	१ ४२	२ २	२ २३	२ ४३	३ ४	३ २४	३ ४४	४ ५	४ २५	४ ४६	५ ६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
५ २६	५ ४७	६ ७	६ २८	६ ४८	७ ८.	७ २९	७ ४९	८ १०	८ ३०	८ ५०	९ ११	९ ३१	९ ५२	१० १२	१० ३२	१० [illegible]
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
११ १३	११ ३४	११ ५४	१२ १४	१२ ३५	१२ ५५	१३ १६	१३ ३६	१३ ५६	१४ १७	१४ ३७	१४ ५८	१५ १८	१५ ३८	१५ ५८	१६ १०	१६ ४०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१७ ०	१७ २०	१७ ४१	१८ १	१८ २२	१८ ४२	१९ २	१९ २३	१९ ४३	२० ४	२० २४	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग०घ०
फ०	२७ ५४ ०	२८ १२ २४	२८ ३० ४८	२८ ४९ १२	२९ ७ ३६	२९ २६ ०	२९ ४४ २४	३० २ ४८	३० २१ १२	३० ३९ ३६	३० ५८ ०	३१ १६ २४	३१ ३४ ४८	३१ ५३ १२	३२ ११ ३६	४० ३८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० १८	० ३७	० ५५	१ १४	१ ३२	१ ५०	२ ९	२ २७	२ ४६	३ ४	३ २२	३ ४१	३ ५९	४ १८	४ ३६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४ ५४	५ १३	५ ३१	५ ५०	६ ८	६ २६	६ ४५	७ ३	७ २२	७ ४०	७ ५८	८ १७	८ ३५	८ ५४	९ १२	९ ३०	९ ४९
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१० ७	१० २६	१० ४४	११ २	११ २१	११ ३९	११ ५८	१२ १६	१२ ३५	१२ ५३	१३ ११	१३ ३०	१३ ४८	१४ ७	१४ २५	१४ ४३	१५ २
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१५ २०	१५ ३९	१५ ५७	१६ १५	१६ ३४	१६ ५२	१७ ११	१७ २९	१७ ४७	१८ ६	१८ २४	० ०	० ०	० ०	० ०	०	

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अंको	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गध्य
फ०	३२ ३० ०	३२ ४६ ०	३३ २ ०	३३ १८ ०	३३ ३४ ०	३३ ५० ०	३४ ६ ०	३४ २२ ०	३४ ३८ ०	३४ ५४ ०	३५ १० ०	३५ २६ ०	३५ ४२ ०	३५ ५८ ०	३६ १४ ०	३[illegible] २६ ०
फं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	८ ०	८ १६	८ ३२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	१२ ०	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

अंको	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	गध्य
फ०	३६ ३० ०	३६ ४१ १२	३६ ५२ २४	३७ ३ ३६	३७ १४ ४८	३७ २६ ०	३७ ३७ १२	३७ ४८ २४	३७ ५९ ३६	३८ १० ४८	३८ २२ ०	३८ ३३ १२	३८ ४४ २४	३८ ५५ ३६	३८ ६ ४८	२७ २
फं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० ११	० २२	० ३३	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	२ ४८
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२ ५९	३ १०	३ २१	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	५ ३६	५ ४७	५ ५८
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	[illegible]
६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ [illegible]
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	
९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	

भौमशीघ्रफलसारिणी.

अंको.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.ध.
फ०	३९ १८ ०	३९ २० ४८	३९ २३ ३६	३९ २६ २४	३९ २९ १२	३९ ३२ ०	३९ ३४ ४८	३९ ३७ ३६	३९ ४० २४	३९ ४३ १२	३९ ४६ ०	३९ ४८ ४८	३९ ५१ ३६	३९ ५४ २४	३९ ५७ १२	३२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	० ४२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	१ २४	१ २७	१ ३०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	२ ६	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४५	२ ४८	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

अंको	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	ग.ध.
फ०	४० ० ०	३९ ४७ १२	३९ ३४ २४	३९ २१ ३६	३९ ८ ४८	३८ ५६ ०	३८ ४३ १२	३८ ३० २४	३८ १७ ३६	३८ ४ ४८	३७ ५२ ०	३७ ३९ १२	३७ २६ २४	३७ १३ ३६	३७ ० ४८	२५ २
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ऋ०	० ०	० १३	० २६	० ३८	० ५१	१ ४	१ १७	१ ३०	१ ४२	१ ५५	२ ८	२ २१	२ ३४	२ ४६	२ ५९	३ १२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३ २५	३ ३८	३ ५०	४ ३	४ १६	४ २९	४ ४२	४ ५४	५ ७	५ २०	५ ३३	५ ४६	५ ५८	६ ११	६ २४	६ ३७	६ ५०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
७ २	७ २५	७ २८	७ ४२	७ ५४	८ ६	८ १९	८ ३२	८ ४५	८ ५८	९ १०	९ २३	९ ३६	९ ४९	१० २	१० १४	१० २७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१० ४०	१० ५३	११ ६	११ १८	११ ३१	११ ४४	११ ५७	१२ १०	१२ २२	१२ ३५	१२ ४८	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

भौमशीघ्रफलसारिणी-

अं	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	१६४	गध
फ०	३६ ४८ ०	३६ ० २४	३५ १२ ४८	३४ २५ १२	३३ ३९ ३६	३२ ५० ०	३२ २ २४	३१ १४ ४८	३० २७ १२	२९ ३९ ३६	२८ ५२ ०	२८ ४ २४	२७ १६ ४८	२६ २९ १२	२५ ४१ ३६	७ ३८
के०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
कें०	० ०	० ४८	१ ३५	२ २३	३ १०	३ ५८	४ ४६	५ ३३	६ २१	७ ८	७ ५६	८ ४४	९ ३१	१० १९	११ ६	११ ५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
१२ ४२	१३ २९	१४ १७	१५ ४	१५ ५२	१६ ४०	१७ २७	१८ १५	१९ २	१९ ५०	२० ३८	२१ २५	२२ १३	२३ ०	२३ ४८	२४ ३६	२५ २३
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
२६ ११	२६ ५८	२७ ४६	२८ ३४	२९ २१	३० ९	३० ५६	३१ ४४	३२ ३२	३३ १९	३४ ७	३४ ५४	३५ ४२	३६ ३०	३७ १७	३८ ५	३८ ५२
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	०	०	०	०	०
३९ ४०	४० २८	४१ १५	४२ २	४२ ५०	४३ ३८	४४ २६	४५ १३	४६ १	४६ ४८	४७ ३६	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

अं	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	गध्य
फ०	२४ ५४ ०	२२ १४ २४	२१ ३४ ४८	१९ ५५ १२	१८ १५ ३६	१६ ३६ ०	१४ ५६ २४	१३ १६ ४८	११ ३७ १२	९ ५७ ३६	८ १८ ०	६ ३८ २४	४ ५८ ४८	३ १९ १२	१ ३९ ३६	० ० ०
के०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
कें०	० ०	१ ४०	३ १९	४ ५८	६ ३८	८ १८	९ ५८	११ ३७	१३ १७	१४ ५६	१६ ३६	१८ १६	१९ ५५	२१ ३५	२३ १४	२४ ५४
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२६ ३४	२८ १३	२९ ५३	३१ १२	३३ १२	३४ ५२	३६ ३१	३८ ११	३९ ५०	४१ ३०	४३ १०	४४ ४९	४६ २९	४८ ८	४९ ४८	५१ २८	५३ ७
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५४ ४७	५६ २६	५८ ६	५९ ४६	६१ २५	६३ ५	६४ ४४	६६ २४	६८ ४	६९ ४३	७१ २३	७३ २	७४ ४२	७६ २२	७८ १	७९ ४१	८१ २०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५०	६०	०	०	०	०	०	
८३ ०	८४ ४०	८६ १९	८७ ५९	८९ ३८	९१ १८	९२ ५८	९४ ३७	९६ १७	९७ ५६	९९ ३६	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	

अंन्त्यांकफलसारिणी-

अंको	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७३	७७	७८	७९	१८०
फ०	० ० ०ध.	० १२ ध.	० २४ ध.	० ३६ ध.	० ४८ ध.	१ ० ध.	१ १२ ध.	१ २४ ध.	१ २४ ऋ.	१ १२ ऋ.	१ ० ऋ.	० ४८ ऋ.	० ३६ ऋ.	० २४ ऋ.	० १२ ऋ.	० ० ०ऋ.
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
फ०	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	३ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	६ ०	६ १२	६ २४
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६ ३६	६ ४८	७ ०	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	९ ०	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	११ ०	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०						

अंन्त्यांकगतिफलसारिणी.

अंको	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	१८०
ऋ.	२ २४ ऋ.	५ ० ऋ.	६ २५ ऋ.	७ ५१ ऋ.	९ १७ ऋ.	१० ४३ ऋ.	१२ ८ ऋ.	१३ ३४ ऋ.	१५ ० ऋ.	१६ २५ ऋ.	१७ ५१ ऋ.	१९ १७ ऋ.	२० ४३ ऋ.	२२ ८ ऋ.	२३ ३४ ऋ.	० ० ऋ.
क०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ऋ.	० १	० ३	० ४	० ६	० ७	० ९	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १७	० १९	० २०	० २१	० २३
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३१	० ३३	० ३४	० ३६	० ३७	० ३९	० ४०	० ४१	० ४३	० ४४	० ४६	० ४७
३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
० ४८	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५५	० ५७	० ५८	१ ०	१ १	१ ३	१ ५	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ ११
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७
१ १३	१ १४	१ १६	१ १७	१ १९	१ २०	१ २२	१ २३	१ २४	१ २६	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

भौममंदफलसारिणी-

अं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फ०	० ० ०	० ११ ३६	० २३ १२	० ३४ ४८	० ४६ २४	० ५८ ०	१ ९ ३६	१ २१ १२	१ ३३ ४८	१ ४४ २४	१ ५६ ०	२ ७ ३६	२ १९ १२	२ ३० ४८	२ ४२ २४	५ ४८
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	० ०	० १२	० २३	० ३५	० ४६	० ५८	१ १०	१ २१	१ ३३	१ ४४	१ ५६	२ ८	२ १९	२ ३०	२ ४२	० ०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
२ ५४	३ ६	३ १७	३ २९	३ ४०	३ ५२	४ ४	४ १५	४ २७	४ ३८	५ ५०	५ २	५ १३	५ २५	५ ३६	० ०	० ०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५ ४८	६ ०	६ ११	६ २३	६ ३४	६ ४६	६ ५८	७ ९	७ २१	७ ३२	७ ४४	७ ५८	८ ७	८ ११	८ ३०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	८ ४२	८ ५४	९ ५	९ १७	९ २८	९ ४०	९ ५२	१० ३	१० १५	१० २६	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १३	११ २४	११ ३६

अं०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फ०	२ ५४ ०	३ ५ १३	३ १६ २४	३ २७ ३६	३ ३८ ४८	३ ५० ०	४ १ १२	४ १२ २४	४ २३ ३६	४ ३४ ४८	४ ४६ ०	४ ५७ १२	५ ८ २४	५ १९ ३६	५ ३० ४८	० ५ ३६
कं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ ४८	२ ५९	३ १०	३ २२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५ ३६	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	८ १३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	८ २४	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२

भौममंद फल सारिणी.

अंकां	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	•	प.क.
५ ४२ ०	५ ५३ १२	६ ४ २४	६ १५ ३६	६ २६ ४८	६ ३८ ०	६ ४९ १२	७ ० २४	७ ११ ३६	७ २२ ४८	७ ३४ ०	७ ४५ १२	७ ५६ २४	८ ७ ३६	८ १८ ४८	०	५ ३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	०
फ०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२ ४८	२ ५९	३ १०	३ १२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
५ ३६	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १६	७ २८	७ ३८	७ ५०	८ २	८ १३	८ २४	८ ३६
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
८ ४६	८ ५८	९ १०	९ २०	९ ३०	९ ४२	९ ५४	१० ६	१० १६	१० २८	१० ३८	१० ५०	११ २	११ २	० ०	० ०	० ०
अंकां	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.क.
फ०	८ ३० ०	८ ३९ ३६	८ ४९ १२	८ ५८ ४८	९ ८ २४	९ १८ ०	९ २७ ३६	९ ३७ १२	९ ४६ ४८	९ ५६ २४	१० ६ ०	१० १५ ३६	१० २५ १२	१० ३४ ४८	१० ४४ २४	४ ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० १०	० २०	० २९	० ३९	० ४८	० ५८	१ ९	१ १६	१ २६	१ ३६	१ ४६	१ ५५	२ ५	२ १४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२ २४	२ ३४	२ ४३	२ ५३	३ २	३ १२	३ २२	३ ३२	३ ४१	३ ५०	४ ०	४ १०	४ १९	४ २८	४ ३८	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १७	५ २६	५ ३६	५ ४६	५ ५५	६ ४	६ १४	६ २४	६ ३४	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १२	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
७ २२	७ ३१	७ ४०	७ ५०	८ ०	८ १०	८ २०	८ २९	८ ३८	८ ४८	८ ५८	८ ७	९ १६	९ २६	८ २६	०	०

भौममंदफलसारिणी.

अंकों	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	फ०
फ०	१० ५४ ०	११ ० ०	११ ६ ०	११ १२ ०	११ १८ ०	११ २४ ०	११ ३० ०	११ ३६ ०	११ ४२ ०	११ ४८ ०	११ ५४ ०	१२ ० ०	१२ ६ ०	१२ १२ ०	१२ १८ ०	३ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	१ ०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	१ ३०	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
३ ०	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०	०
०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	०
अंकों	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	१२ २४ ०	१२ २६ २४	१२ २८ ४८	१२ ३१ १२	१२ ३३ ३६	१२ ३६ ०	१२ ३८ २४	१२ ४० ४८	१२ ४३ १२	१२ ४५ ३६	१२ ४८ ०	१२ ५० २४	१२ ५२ ४८	१२ ५५ १२	१२ ५७ ३६	१२ फ ० १ ० १२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फ०	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२
क०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
फ०	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८	१ ५४
क०	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
फ०	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४	० ०	० ०

बुधशीघ्रफल सारिणी.

व्यंकांश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गं·ध
फ०	० ० ०	० १६ २४	० ३२ ४८	० ४८ १२	१ ५ ३६	१ २२ ०	१ ३८ २४	१ ५४ ४८	२ ११ १२	२ २७ ३६	२ ४४ ०	३ ० २४	३ १६ ४८	३ ३३ १२	३ ४९ ३६	१०८ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १६	० ३३	० ४९	१ ६	१ २२	१ ३८	१ ५५	२ ११	२ २८	२ ४४	३ ०	३ १७	३ ३३	३ ५०	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	४ ६	४ २२	४ ३९	४ ५५	५ १२	५ २८	५ ४४	६ १	६ १७	६ ३४	६ ५०	७ ६	७ २३	७ ३९	७ ५६	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	८ १२	८ २८	८ ४६	९ १	९ १८	९ ३४	९ ५०	१० ७	१० २३	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४५	१२ १	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध०	१२ १७	१२ ३४	१२ ५१	१३ ७	१३ २३	१३ ४०	१३ ५६	१४ १३	१४ २९	१४ ४६	१५ २	१५ १८	१५ ३५	१५ ५१	१६ ८	१६ २४
व्यंकांश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गं·ध
फ०	४ ६ ०	४ २२ ०	४ ३८ ०	४ ५४ ०	५ १० ०	५ २६ ०	५ ४२ ०	५ ५८ ०	६ १४ ०	६ ३० ०	६ ४६ ०	७ २ ०	७ १८ ०	७ ३४ ०	७ ५० ०	१०४ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	४ ०	४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	८ ०	८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध०	१२ ०	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४०	१६ ०

बुधशीघ्रफलसारिणी.

अं·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग·ध
फ·	८ ६ ०	८ २० २४	८ ३४ ४८	८ ४८ १२	९ ३ ३६	९ १८ ०	९ ३३ २४	९ ४६ ४८	१० १ १२	१० १५ ३६	१० ३० ०	१० ४४ २४	१० ५८ ४८	११ १३ १२	११ २७ ३६	१०२ २०
क·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध·	० ०	० १४	० २८	० ४२	० ५६	१ १२	१ २६	१ ४१	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	२ ५२	३ ७	३ २२	०
क·	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध·	३ २६	३ ५०	४ ५	४ १८	४ २४	४ ४८	५ २	५ १७	५ २०	५ ४५	६ ०	६ १४	६ २८	६ ४३	६ ५८	०
क·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध·	७ १२	७ २६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २४	८ ३८	८ ५३	९ ७	९ २२	९ ३६	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३४	०
क·	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध·	१० ४८	११ २	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २८	१२ ४३	१२ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४१	१३ ५५	१४ १०	१४ २४

अं·	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग·
फ· ध·	११ ४२ ०	११ ५५ १२	१२ ८ २४	१२ २१ ३६	१२ ३४ ४८	१२ ४८ ०	१३ १ १२	१३ १४ २४	१३ २७ ३६	१३ ४० ४८	१३ ५४ ०	१४ ७ १२	१४ २० २४	१४ ३३ ३६	१४ ४६ ४८	९८ ४४
क·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध·	० ०	० १३	० २६	० ४०	० ५३	१ ६	१ १९	१ ३३	१ ४६	१ ५९	२ १२	२ २५	२ ३८	२ ५२	३ ७	०
क·	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	३ १८	३ ३१	३ ४४	३ ५८	४ ११	४ २४	४ ३७	४ ५०	५ ३	५ १७	५ ३०	५ ४३	५ ५६	६ १०	६ २३	
क·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	६ ३६	६ ४९	७ २	७ १५	७ २८	७ ४२	७ ५५	८ ८	८ २१	८ ३५	८ ४८	९ १	९ १४	९ २८	९ ४१	०
क·	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध·	९ ५४	१० ७	१० २०	१० ३४	१० ४७	११ ०	११	११ २६	११ ४०	११ ५३	१२ ६	१२ १९	१२ ३२	१२ ४५	१२ ५८	१३ १२

स्पष्टग्रह बुधशीघ्रफल सारिणी.

६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	०	ग.घ.
१५ फ० ०	१५ ११ १२	१५ २२ २४	१५ ३३ ३६	१५ ४४ ४८	१५ ५६ ०	१६ ७ १२	१६ १८ २४	१६ २९ ३६	१६ ४० ४८	१६ ५२ ०	१७ ३ १२	१७ १४ २४	१७ २५ ३६	१७ ३६ ४८	१७ फ०	९२ ४४
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क.	०
० ०	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ३	२ १४	२ २६	२ ३७	घ०	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	क०	०
२ ४८	२ ५९	३ १०	३ २२	३ ३३	३ ४४	३ ५५	४ ६	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ २	५ १४	५ २५	घ०	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	क०	०
५ ३६	५ ४७	५ ५८	६ १०	६ २१	६ ३२	६ ४३	६ ५४	७ ६	७ १७	७ २८	७ ३९	७ ५०	८ २	[illegible] १३	घ०	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
८ २४	८ ३५	८ ४६	८ ५८	९ ९	९ २०	९ ३१	९ ४२	९ ५४	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८	१० ५०	११ १	११ १२	०

७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गघ	नंश्रं
१७ ४८ ०	१७ ५६ २४	१८ ४ ४८	१८ १३ १२	१८ २१ ३६	१८ ३० ०	१८ ३८ २४	१८ ४६ ४८	१८ ५५ १२	१९ ३ ३६	१९ १२ ०	१९ २० २४	१९ २८ ४८	१९ ३७ १२	१९ ४५ ३६	फ०	८४ २०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
० ०	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५८	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	घ०	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	क०	०
२ ६	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	घ०	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	क०	०
४ १२	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	घ०	०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १५	८ २४	०

स्पष्टग्रहबुधशीघ्र फल सारिणी.

अं.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१	२	३	१०४	ग.ध.
फ०	१९ ५४ ०	१९ ५९ १२	२० २४ २४	२० ९ ३६	२० १४ ४८	२० २० ०	२० २५ १२	२० ३० २४	२० ३५ ३६	२० ४० ४८	२० ४६ ०	२० ५१ १२	२० ५६ २४	२१ १ ३६	२१ ६ ४८	७४ ४४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध०	३ ५४	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

अं.	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	११९	ग.ध.
फ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	२१ १२ ०	५८ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ध०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ध०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

बुधशीघ्र फल सारिणी.

१२०	२१	२२	२३	३४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	१३४	गन्ध	अंको
२१ १२ ०	२१ ५ १२	२० ५८ २४	२० ५१ ३६	२० ४४ ४८	२० ३८ ०	२० ३१ १२	२० २४ २४	२० १७ ३६	२० १० ४८	२० ४ ०	१९ ५७ १२	१९ ५० २४	१९ ४३ ३६	१९ ३६ ४८	३८ ४४	फ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्र०	० ०	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क्र०	१ ४१	१ ४५	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २२	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १०	३ १७	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
क्र०	३ २४	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क्र०	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४१	६ ४८
अंका	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	१४९	गन्ध
फ०	१९ ३० ०	१९ १४ ०	१८ ५८ ०	१८ ४२ ०	१८ २६ ०	१८ १० ०	१७ ५४ ०	१७ ३८ ०	१७ २२ ०	१७ ६ ०	१६ ५० ०	१६ ३४ ०	१६ १८ ०	१६ २ ०	१५ ४६ ०	११ ८ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्र०	० ०	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
४ ०	४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ८	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	० ०	० ०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	०
८ ०	८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	१० ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	० ०	० ०
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
१२ ०	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१४ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०	०

बुधशीघ्रफल सारिणी.

संक्रो	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	१६४	ग.च.
फ०	१५ ३० ०	१५ ३ ३६	१४ ३७ १२	१४ १० ४८	१३ ४४ २४	१३ १८ ०	१२ ५१ ३६	१२ २५ १२	११ ५८ ४८	११ ३२ २४	११ ६ ०	११ २९ ३६	१० १३ १२	९ ४६ ४८	९ २० २४	२० ४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० २६	० ५२	१ १८	१ ४४	२ १२	२ ३८	३ ५	३ ३१	३ ५८	४ २४	४ ५०	५ १७	५ ४३	६ ९	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ऋ०	६ २६	७ २	७ २९	७ ५५	८ २२	८ ४८	८ १४	८ [redacted]१	१० ७	१० ३४	११ ०	११ २६	११ ५३	१२ १९	१२ ४६	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ऋ०	१३ १२	१३ ३८	१४ १५	१४ ४१	१५ ८	१५ २४	१५ ५०	१६ १७	१६ ४३	१७ १०	१७ ३६	१८ २	१८ २९	१८ ५५	१९ २२	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ऋ०	१९ ४८	२० १४	२० ४१	२१ ७	२१ ३४	२२ ०	२२ २६	२२ ५३	२२ १९	२३ ४६	२४ १२	२४ ३८	२५ ५	२५ ३१	२५ ५८	२६ २४

व्यया	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	०
फ०	८ ५४ ०	८ १८ २४	७ ४२ ४८	७ ७ १२	६ ३१ ३६	५ ५६ ०	५ २० २४	४ ४४ ४८	४ ९ १२	३ ३३ ३६	२ ५८ ०	२ २२ २४	१ ४६ ४८	१ २१ १२	० ३५ ३६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ३६	१ ११	१ ४७	२ २२	२ ५८	३ ३४	४ ०	४ ४६	५ २०	५ ५६	६ ३२	७ ७	७ ४३	८ १८	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ऋ०	[illegible] २४	[illegible] ३८	१० ५	१० ४१	११ १६	११ ५२	१२ २८	१३ ३	१३ ३९	१४ १४	१४ ५०	१५ २६	१६ १	१६ ३७	१७ १२	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ऋ०	१७ ४८	१८ २४	१८ ५०	[illegible] ३५	२० १०	२० ४६	२१ २२	२१ ५७	२२ ३३	२२ ८	२३ ४४	२४ २०	२४ ५५	२५ ३१	२६ ६	० ०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ऋ०	२६ ४२	२७ १८	२७ ५३	२८ २९	२९ ४	२९ ४०	३० १६	३० ५१	३१ २७	३२ २	३२ ३८	३३ १४	३३ ४८	३४ २५	३५ ०	३५ ३६

त्र्यंशांकगतिफलसारिणी.

त्र्यंश	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	१८०
फ० क्ष०	२७ ५२	२९ १८	४० ४३	४२ ९	४३ ३५	४५ १	४६ २६	४७ ५२	४९ १८	५० ४३	५२ ९	५३ ३५	५५ १	५६ २६	५७ ५२	५९ १८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्ष०	० ०	० १	० २	० ४	० ६	० ७	० ९	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १७	० १९	० २०	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०
० २१	० २३	० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३१	० ३३	० ३४	० ३६	० ३७	० ३९	० ४०	० ४१	० ०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
० ०	० ४३	० ४४	० ४६	० ४७	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५४	० ५६	० ५७	० ५८	१ ०	१ १	१ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१ ५	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	१ ११	१ १३	१ १४	१ १६	१ १७	१ १९	१ २०	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६

बुध मंद फलसारिणी.

त्र्यंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ०
फ०	० ० ०	० ४ ४८	० ९ ३६	० १४ २४	० १९ १२	० २४ ०	० २८ ४८	० ३३ ३६	० ३८ २४	० ४३ १२	० ४८ ०	० ५२ ४८	० ५७ ३६	१ २ २४	१ ७ १२	४ ७४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४६	० ५२	० ५८	१ २	१ ७	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४३	२ ४८	२ ५२	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १८	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४

बुध मंद फल सारिणी.

अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ.
फ०	१ १२ ०	१ १५ ३६	१ १९ १२	१ २२ ४८	१ २६ २४	१ ३० ०	१ ३३ ३६	१ ३७ १२	१ ४० ४८	१ ४४ २४	१ ४८ ०	१ ५१ ३६	१ ५५ १२	१ ५८ ४८	२ २ २४	३ ३६
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३६	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६

अंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ.
फ०	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ १२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३९ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	२ ४८
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ३	० ५	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ४२	० ४६	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १२	१ १६	१ १८	१ २१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ५	२ ९	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २२	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	२ ४८

बुध मंदफल सारिणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
०	२ ४८ ०	२ ५० ०	२ ५२ ०	२ ५४ ०	२ ५६ ०	२ ५८ ०	३ ० ०	३ २ ०	३ ४ ०	३ ६ ०	३ ८ ०	३ १० ०	३ १२ ०	३ १४ ०	३ १६ ०	२ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ३०	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ०	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१ ३०	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	०

अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ०	२ १८ ०	२ १८ ४८	२ १९ ३६	२ २० २४	३ २१ १२	२ २२ ०	३ २२ ४८	२ २३ ३६	२ २४ २४	२ २५ १२	२ २६ ०	२ २६ ४८	३ २७ ३६	२ २८ २४	२ २९ १२	० ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३२	० ३४	० ३४	० ३५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

बुधमंद फल सारिणी.

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गफ
फ०	३ ३० ०	३ ३० २४	३ ३० ४८	३ ३१ १२	३ ३१ ३६	३ ३२ ०	३ ३२ २४	३ ३२ ४८	३ ३३ १२	३ ३३ ३६	३ ३४ ०	३ ३४ २४	३ ३४ ४८	३ ३५ १२	३ ३५ ३६	० ३४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	० ०	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ६	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४

अथगुरु शीघ्र फल सारिणी.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गध
०	० ० ०	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ४० ०	० ५० ०	१ ० ०	१ १० ०	१ २० ०	१ ३० ०	१ ४० ०	१ ५० ०	२ ० ०	२ १० ०	२ २० ०	१२ २० ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १०	० २०	० ३०	० ४०	० ५०	१ ०	१ १०	१ २०	१ ३०	१ ४०	१ ५०	२ ०	२ १०	२ २०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ ३०	२ ४०	२ ५०	३ ०	३ १०	३ २०	३ ३०	३ ४०	३ ५०	४ ०	४ १०	४ २०	४ ३०	४ ४०	४ ५०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५ ०	५ १०	५ २०	५ ३०	५ ४०	५ ५०	६ ०	६ १०	६ २०	६ ३०	६ ४०	६ ५०	७ ०	७ १०	७ २०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	७ ३०	७ ४०	७ ५०	८ ०	८ १०	८ २०	८ ३०	८ ४०	८ ५०	९ ०	९ १०	९ २०	९ ३०	९ ४०	९ ५०	१० ०

गुरुशीघ्रफलसारिणी.

अंके	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
फ०	२ ३० ०	२ ३८ ४८	२ ४७ ३६	२ ५६ २४	३ ५ १२	३ १४ ०	३ २२ ४८	३ ३१ ३६	३ ४० २४	३ ४९ १२	३ ५८ ०	[illegible] ६ ४८	४ १५ ३६	४ २४ २४	४ ३३ १२	१२ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ९	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ २	१ ११	१ १९	१ २८	१ ३७	१ ४६	१ ५४	२ ३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ १२	२ २१	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४९	३ ५८	४ ६	४ १५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ २४	४ ३३	४ ४२	४ ५०	४ ५९	५ ८	५ १७	५ २६	५ ३५	५ ४२	५ ५२	६ १	६ १०	६ १८	६ २७	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ ३६	६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४६	७ ५५	८ ४	८ १२	८ २२	८ ३०	८ ३९	८ ४८

अंके	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध.
फ०	४ ४२ ०	४ ५० २४	४ ५८ ४८	५ ७ १२	५ १५ ३६	५ २४ ०	५ ३२ २४	५ ४० ४८	५ ४९ १२	५ ५७ ३६	६ ६ ०	६ १४ २४	६ २२ ४८	६ ३१ १२	६ ३९ ३६	१२ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ ६	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	-
०	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३५	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १६	८ २४

गुरुशीघ्रफलसारणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग·ध·
फ०	६ ४८ ०	६ ५४ ४८	७ १ ३६	७ ८ २४	७ १५ १२	७ २२ ०	७ २८ ४८	७ ३५ ३६	७ ४२ २४	७ ४९ १२	७ ५६ ०	८ २ ४८	८ ९ ३६	८ १६ २४	८ २२ १२	१० ४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ७	० १४	० २०	० [illegible]	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	[illegible] ३५	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ ४३	१ ४९	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५४	३ ४	३ १०	३ १७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	३ २४	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४०	६ ४८

अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग·ध·
फ०	८ ३० ०	८ ३५ १२	८ ४० २४	८ ४५ ३६	८ ५० ४८	८ ५६ ०	९ १ १२	९ ६ २४	९ ११ ३६	९ १६ ४८	९ २२ ०	९ २७ १२	९ ३२ २४	९ ३७ ३६	९ ४२ ४८	४९ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	० ०	० १५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३७	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ ३६	२ ४१	२ ४२	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५४	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

गुरुशीघ्र फल सारिणी.

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.भ.
फ०	९ ४८ ०	९ ५१ १२	९ ५४ २४	९ ५७ ३६	१० ० ४८	१० ४ ०	१० ७ १२	१० १० २४	१० १३ ३६	१० १६ ४८	१० २० ०	१० २३ १२	१० २६ २४	१० २९ ३६	१० ३२ ४८	७ ४०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ३	० ६	० १०	० १३	० १६	० १९	० २२	० २६	० २९	० [illegible]	० ३५	० ३८	० ४२	० ४५	० ०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ४८	० ५१	० ५४	० ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १४	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ३६	१ ३९	१ ४२	१ ४६	१ ४९	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ २	२ ५	२ ८	२ ११	२ १४	२ १८	२ २२	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ २४	२ २७	२ ३०	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४६	२ ५०	२ ५३	२ ५६	२ ५९	३ २	३ ६	३ ९	३ १२

अंको	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१	२	३	१०४	ग.भ.
फ०	१० ३६ ०	१० ३६ ४८	१० ३७ ३६	१० ३८ २४	१० ३९ १२	१० ४० ०	१० ४० ४८	१० ४१ ३६	१० ४२ २४	१० ४३ १२	१० ४४ ०	१० ४४ ४८	१० ४५ ३६	१० ४६ २४	१० ४७ १२	५ ४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

गुरुशीघ्र फल सारिणी.

अंको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	११९	गध
फ०	१० ४८ ०	१० ४५ ३६	१० ४३ १२	१० ४० ४८	१० ३८ २४	१० ३६ ०	१० ३३ ३६	१० ३१ १२	१० २८ ४८	१० २६ २४	१० २४ ०	१० २१ ३६	१० १९ १२	१० १६ ४८	१० १४ २४	२ ०
के०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्षे०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	३४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५२	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ १२	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१ ४८	१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४
अंको	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	१३४	ग.ध.
फ०	१० १२ ०	१० ६ ४८	१० १ ३६	९ ५६ २४	९ ५१ १२	९ ४६ ०	९ ४० ४८	९ ३५ ३६	९ ३० २४	९ २५ १२	९ २० ०	९ १४ ४८	९ ९ ३६	९ ४ २४	८ ५९ १२	० ४०
के०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्षे०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	३ ३६	३ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५४	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३१	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

स्पष्टग्रह गुरुशीघ्र फल सारिणी.

अंको	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	१४९	गत्क.
फं०	८ ५४ ०	८ ४४ ४८	८ ३५ ३६	८ २६ २४	८ १७ १२	८ ८ ०	७ ५८ ४८	७ ४८ ३६	७ ४० २४	७ ३१ १२	७ २२ ०	७ १२ ४८	७ ३ ३६	६ ५४ २४	६ ४५ १२	२ ४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्र०	० ०	० ९	० १८	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ४	१ १४	१ २३	१ ३२	१ ४१	१ ५०	२ ०	२ ९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ १८	२ २७	२ ३६	२ ४६	२ ५५	३ ४	३ १३	३ २२	३ ३२	३ ४१	३ ५०	३ ५९	४ ८	४ १८	४ २७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ ३६	४ ४५	४ ५४	५ ४	५ १३	५ २२	५ ३१	५ ४०	५ ५०	५ ५९	६ ८	६ १७	६ २६	६ ३६	६ ४५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६ ५४	७ ३	७ १२	७ २२	७ ३१	७ ४०	७ ४९	७ ५८	८ ८	८ १७	८ २६	८ ३५	८ ४४	८ ५४	९ ३	९ १२
अंको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	१६४	गत्क.
०	६ ३६ ०	६ २४ ०	६ १२ ०	६ ० ०	५ ४८ ०	५ ३६ ०	५ २४ ०	५ १२ ०	५ ० ०	४ ४८ ०	४ ३६ ०	४ २४ ०	४ १२ ०	४ [illegible] ०	३ ४८ ०	५ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्र०	० ०	० १२	० २४	० ३६	० ४८	१ ०	१ १२	१ २४	१ ३६	१ ४८	२ ०	२ १२	२ २४	२ ३६	२ ४८	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क्र०	३ ०	३ १२	३ २४	३ ३६	३ ४८	४ ०	४ १२	४ २४	४ ३६	४ ४८	५ ०	५ १२	५ २४	५ ३६	५ ४८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	६ ०	६ १२	६ २४	६ ३६	६ ४८	७ ०	७ १२	७ २४	७ ३६	७ ४८	८ ०	८ १२	८ २४	८ ३६	८ ४८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	९ ०	९ १२	९ २४	९ ३६	९ ४८	१० ०	१० १२	१० २४	१० ३६	१० ४८	११ ०	११ १२	११ २४	११ ३६	११ ४८	१२ ०

गुरुशीघ्र फल सारिणी चक्रम्.

अंको	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	गक्ष
फ०	३ ३६ ०	३ २१ ३६	३ ७ १२	२ ५२ ४८	२ ३८ २४	२ २४ ०	२ ९ ३६	१ ५५ १२	१ ४० ४८	१ २६ २४	१ १२ ०	० ५७ ३६	० ४३ १२	० २८ ४८	० १४ २४	७ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० १४	० २९	० ४३	० ५८	१ १२	१ २६	१ ४१	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	२ ५३	३ ७	३ २२	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ऋ०	३ ३६	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३१	५ ४६	६ ०	६ १४	६ २९	६ ४३	६ ५८	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
ऋ०	७ १२	७ २६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २३	८ ३७	८ ५२	९ ६	९ २१	९ ३५	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३४	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
ऋ०	१० ४८	११ २	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २८	१२ ४३	१२ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४१	१३ ५५	१४ १०	१४ २४

गुरु मंद फल सारिणी.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फ०	० ० ०	० ५ ३६	० ११ १२	० १६ ४८	० २२ २४	० २८ ०	० ३३ ३६	० ३९ १२	० ४४ ४८	० ५० २४	० ५६ ०	१ १ ३६	१ ७ १२	१ १२ ४८	१ १८ २४	० २८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ६	० ११	० १७	० २२	० २८	० ३४	० ३९	० ४५	० ५०	० ५६	१ २	१ ७	१ १३	१ १८	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
ध०	१ २४	१ ३०	१ ३५	१ ४१	१ ४६	१ ५२	१ ५८	२ ३	२ ९	२ १४	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३७	२ ४२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ ४८	२ ५४	२ ५९	३ ५	३ १०	३ १६	३ २२	३ २७	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ५०	३ ५५	४ १	४ ५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	. .	५६	५७	५८	५९	६०
०	४ ११	४ १७	४ २२	४ २८	४ ३४	४ ४०	४ ४६	४ ,,	४ ५७	५ २	५ ८	५ १४	५ १९	५ २५	५ ३०	५ [illegible]

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी·

अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८.	२९	ग·फ·
०	१ २४ ०	१ २९ १२	१ ३४ २४	१ ३९ ३६	१ ४४ ४८	१ ५० ०	१ ५५ १२	२ ० २४	२ ५ ३६	२ १० ४८	२ १६ ०	२ २१ १२	२ २६ २४	२ ३१ ३६	२ ३६ ४८	० ३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १९	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५४	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

गुरुमंद फल सारिणी.

अं·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग·फ·
०	२ ४२ ०	२ ४६ ४८	२ ५१ ३६	२ ५६ २४	३ १ १२	३ ६ ०	३ १० ४८	३ १५ ३६	३ २० २४	३ २५ १२	३ ३० ०	३ ३४ ४८	३ ३९ ३६	३ ४४ २४	३ ४९ १२	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध०	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ १०	२ १४	२ १९	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५३	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ६	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४	

गुरुमंदफलसारिणी.

अंशो	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ति.
फ०	२ ५४ ०	२ ५७ २६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ २६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	० ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २६	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ५५	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २६	३ २९	३ ३२	३ ३६

गुरुमंदफलसारिणी.

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	[illegible]
०	४ ४८ ०	४ ५० ४८	४ ५३ ३६	४ ५६ २४	४ ५९ १२	५ २ ०	५ ४ ४८	५ ७ ३६	५ १० २४	५ १३ १२	५ १६ ०	५ १८ ४८	५ २१ ३६	५ २४ २४	५ २७ १२	० १४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० ४२	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५६	० ५९	१ २	१ ४	१ ७	१ १०	१ १३	१ १६	१ १८	१ २१	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३३	१ ३५	१ ३८	१ ४०	१ ४४	१ ४६	१ ४९	१ ५०	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	[illegible]	५६	५७	५८	५९	६०
०	२	२ [illegible]	२ ११	२ ४	२ १७	२	२ २२	२ २४	२ २८	२ ३१	२ [illegible]	२ २७	२ ४०	२	२ ४५	२ ४८

स्पष्टग्रह गुरुमंद फलसारिणी.

अंश	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९० ग फ
फ०	५ २९ ०	५ ३० ४८	५ ३१ ३६	५ ३२ २४	५ ३३ १२	५ ३४ ०	५ ३४ ४८	५ ३५ ३६	५ ३६ २४	५ ३७ १२	५ ३८ ०	५ ३८ ४८	५ ३९ ३६	५ ४० २४	५ ४१ १२	५ ४२ ० ० ४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० ०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

स्पष्ट शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ०	० ० ०	० २५ १२	० ५० २४	१ १५ ३६	१ ४० ४८	२ ६ ०	२ ३१ १२	२ ५६ २४	३ २१ ३६	३ ४६ ४८	४ ५ ०	४ ३७ १२	५ २ २४	५ २७ ३६	५ ५२ ४८	७४ ५२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३१	२ ५६	३ २१	३ ४७	४ १२	४ ३७	५ २	५ २८	५ ५३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ १८	६ ४३	७ ८	७ ३४	७ ५९	८ २४	८ ४९	९ १५	९ ४०	१० ५	१० ३०	१० ५६	११ २१	११ ४६	१२ ११	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ३६	१३ १	१३ २६	१३ ५२	१४ १७	१४ ४२	१५ ७	१५ ३३	१५ ५७	१६ २३	१६ ४८	१७ १३	१७ ३८	१८ ४	१८ २९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ५४	१९ १९	१९ ४४	२० १०	२० ३५	२१ ०	२१ २५	२१ ५०	२२ १६	२२ ४१	२३ ६	२३ ३१	२३ ५६	२४ २२	२४ ४७	२५ १२

शुक्रशीघ्रफलसारिणी

अंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	मध्य
फ०	६ १८ ०	६ ४३ १२	७ ८ २४	७ ३३ ३६	७ ५८ ४८	८ २४ ०	८ ४९ १२	९ १४ २४	९ ३९ ३६	१० ४ ४८	१० ३० ०	१० ५५ १२	११ २० २४	११ ४५ ३६	१२ १० ४८	७४ ५२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३१	२ ५६	३ २२	३ ४७	४ १२	४ ३७	५ ४	५ २९	५ ५३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ १८	६ ४३	७ ८	७ ३४	७ ५९	८ २४	८ ४९	९ १५	९ ४०	१० ५	१० ३०	१० ५५	११ २१	११ ४६	११ १२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ३६	१३ १	१३ २६	१३ ५२	१४ १७	१४ ४२	१५ ५	१५ ३२	१५ ५७	१६ २२	१६ ४८	१७ १३	१७ ३८	१८ ४	१८ २९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ५४	१९ १९	१९ ४४	२० १०	२० ३५	२१ ०	२१ २५	२१ ५०	२२ १६	२२ ४१	२३ ६	२३ ३१	२३ ५६	२४ २२	२४ ४७	२५ १२

शुक्रशीघ्रफल सारिणी

अं०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गम्य
फ०	१२ ३६ ०	१३ ० ०	१३ २४ ०	१३ ४८ ०	१४ १२ ०	१४ ३६ ०	१५ ० ०	१५ २४ ०	१५ ४८ ०	१६ १२ ०	१६ ३६ ०	१७ ० ०	१७ २४ ०	१७ ४८ ०	१८ १२ ०	७४ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ०	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अं.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.
फ.	१८ ३६ ०	१९ ० ०	१९ २४ ०	१९ ४८ ०	२० १२ ०	२० ३६ ०	२१ ० ०	२१ २४ ०	२१ ४८ ०	२२ १२ ०	२२ ३६ ०	२३ ० ०	२३ २४ ०	२३ ४८ ०	२४ १२ ०	७४ ८
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	६ ०	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
फ.	२४ ३६ ०	२४ ५८ २४	२५ २० ४८	२५ ४३ १२	२६ ५ ३६	२६ २८ ०	२६ ५० २४	२७ १२ ४८	२७ ३५ १२	२७ ५७ ३६	२८ २० ०	२८ ४२ २४	२९ ४ ४८	२९ २७ १२	२९ ४९ ३६	७२ ८
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० २२	० ४५	१ ७	१ ३०	१ ५२	१ १४	२ ३७	२ ५९	३ २२	३ ४४	४ ६	४ २९	४ ५१	५ १४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ३६	५ ५८	६ २१	६ ४३	६ ७	७ २८	७ ५०	८ १३	८ ३५	८ ५८	९ २०	९ ४२	१० ५	१० २७	१० ५०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	११ १२	११ ३४	११ ५७	१२ १९	१२ ४१	१३ ४	१३ २६	१३ ४९	१४ ११	१४ ३३	१४ ५६	१५ १८	१५ ४१	१६ ३	१६ २५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१६ ४८	१७ १०	१७ ३३	१७ ५५	१८ १८	१८ ४०	१९ २	१९ २४	१९ ४७	२० १०	२० ३२	२० ५४	२१ १७	२१ ३९	२२ २	२२ २४

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गन्ध
फ॰	३० १२ ०	३० ३२ ४८	३० ५३ ३६	३१ १४ २४	३१ ३५ १२	३१ ५६ ०	३२ १६ ४८	३२ ३७ ३६	३२ ५८ २४	३३ १९ १२	३३ ४० ०	३४ ० ४८	३४ २१ ३६	३४ ४२ २४	३५ १ १२	७२ ८
क॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध॰	० ०	० २१	० ४२	१ २	१ २३	१ ४४	२ ५	२ २६	२ ४६	३ ७	३ २८	३ ४९	४ १०	४ ३०	४ ५१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ३३	५ १२	५ ५४	६ १४	६ ३५	६ ५६	७ १७	७ ३८	७ ५८	८ १९	८ ४०	९ १	९ २२	९ ४२	१० ३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१० २४	१० ४५	६ ११	११ २६	११ ४७	१२ ८	१२ २९	१२ ५०	१२ १०	१३ ३१	१३ ५२	१४ १३	१४ ३४	१४ ५४	१५ १५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१५ ३६	१५ ५७	१६ १८	१६ ३८	१६ ५९	१७ २०	१७ ४२	१८ २	१८ २२	१८ ४३	१९ ४	१९ २४	१९ ४६	२० ६	२० २७	२० ४८

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

अंको	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	२	३	१०४	ग·ध
फ॰	३५ २४ ०	३५ ४२ १२	३६ ४ २४	३६ २१ ३६	३६ ४० ४८	३७ ० ०	३७ १९ १२	३७ ३८ २४	३७ ५७ ३६	३८ १६ ४८	३८ ३६ ०	३८ ५५ १२	३९ १४ २४	३९ ३३ ३६	३९ ५२ ४८	७१ ८
क॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध॰	० ०	० १९	० ३८	० ५७	१ १७	१ ३६	१ ५५	२ १४	२ ३३	२ ५२	३ १२	३ ३१	३ ५०	४ १०	४ २९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	४ ४८	५ ७	५ २६	५ ४५	६ ४	६ २४	६ ४३	७ २	७ २२	७ ४०	८ ०	८ १९	८ ३८	८ ५७	९ १७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	९ ३६	९ ५५	१० १४	१० ३४	१० ५३	११ १२	११ ३१	११ ५०	१२ ११	१२ २८	१२ ४८	१३ ७	१३ २६	१३ ४६	१४ ५	० ०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१४ ४	१४ ४३	१५ २	१५ २२	१५ ४१	१६ ०	१६ १८	१६ ३८	१६ ५८	१७ १७	१७ ३६	१७ ५५	१८ १४	१८ ३४	१८ ५३	१९

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	११९	ग·ध
फ०	४० १२ ०	४० २७ १२	४० ४२ २४	४० ५७ ३६	४१ १२ ४८	४१ २८ ०	४१ ४३ १२	४१ ५८ २४	४२ १३ ३६	४२ २८ ४८	४२ ४४ ०	४२ ५९ १२	४३ १४ २४	४३ २९ ३६	४३ ४४ ४८	६८ ३८
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
ध०	० १५	० ३०	० ४६	१ १	१ १६	१ ३१	१ ४६	२ २	२ १७	२ ३२	२ ४७	३ २	३ १८	३ ३३	३ ४८	०
०	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
	४ ३	४ १८	४ ३४	४ ४९	५ ४	५ १९	५ ३४	५ ५०	६ ५	६ २०	६ ३५	६ ५०	७ ६	७ २१	७ ३६	०
०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	७ ५१	८ ६	८ २२	८ ३७	८ ५२	९ ७	९ २२	९ ३८	९ ५३	१० ८	१० २३	१० ३८	१० ५४	११ ९	११ २४	०
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	११ ३९	११ ५८	१२ १०	१२ २४	१२ ४०	१२ ५५	१३ १०	१३ २६	१३ ४१	१३ ५६	१४ ११	१४ २६	१४ ४२	१४ ५७	१५ १२	०

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

अंका	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	१३४	ग·ध.
फ०	४४ ० ०	४४ ८ २४	४४ १६ ४८	४४ २५ १२	४४ ३३ ३६	४४ ४२ ०	४४ ५० २४	४४ ५८ ४८	४५ ७ १२	४५ १५ ३६	४५ २४ ०	४५ ३२ २४	४५ ४० ४८	४५ ४९ १२	४५ ५७ ३६	६४ २२
के०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३३	१ ४१	१ ४९	१ ५८	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२ ६	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४ १२	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १५	८ २४

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	१४९	गध
फ०	४६ ६ ०	४५ ५८ ४८	४५ ५१ ३६	४५ ४४ २४	४५ ३७ १२	४५ ३० ०	४५ २२ ४८	४५ १५ ३६	४५ ८ २४	४५ १ १२	४४ ५४ ०	४४ ४६ ४८	४४ ३९ ३६	४४ ३२ २४	४४ २५ १२	५४ ३८
फं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्षे०	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३४	१ ४२	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३९	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ७	३ १४	३ २२	३ २९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ ३६	३ ४३	३ ५०	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १९	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४८	४ ५५	५ २	५ १०	५ १७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५ २४	५ ३१	५ ३८	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ७	६ १४	६ २२	६ २८	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ५	७ १२

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	१६४	ग.ध
	४४ १८ ०	४३ ३१ १२	४२ ४४ २४	४१ ५७ ३६	४१ १० ४८	४० २४ ०	३९ ३७ १२	३८ ५० २४	३८ ३ ३६	३७ १६ ४८	३६ ३० ०	३५ ४३ १२	३४ ५६ २४	३४ ९ ३६	३३ २२ ४८	२९ ५३
फं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क्षे०	० ०	० ४७	१ ३४	२ २०	३ ७	३ ५४	४ ४१	५ २८	६ १४	७ १	७ ४८	८ ३५	९ २२	१० ८	१० ५५	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	११ ४२	१२ २९	१३ १६	१४ २	१४ ४९	१५ ३६	१६ २३	१७ १०	१७ ५६	१८ ४३	१९ ३०	२० १७	२१ ४	२१ ५०	२२ ३७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२३ २४	२४ ११	२४ ५८	२५ ४४	२६ ३१	२७ १८	२८ ५	२८ ५२	२९ ३८	३० २५	३१ १२	३१ ५९	३२ ४६	३३ ३२	३४ १९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३५ ६	३५ ५३	३६ ४०	३७ २६	३८ १३	३९ ०	३९ ४७	४० ३४	४१ २०	४२ ७	४२ ५[illegible]	४३ [illegible]	४४ २८	४५ १४	४६ १	४६ ४८

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंके	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	गफ
फ० ३२।२६	३२ २६ ०	३० २५ ३६	२८ १५ १२	२६ ४ ४८	२३ ५४ २४	२१ ४४ ०	१९ ३३ ३६	१७ २३ १२	१५ १२ ४८	१३ २ २४	१० ५२ ०	८ ४१ ३६	६ ३१ १२	४ २० ४८	२ १० २४	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
कु०	० ०	२ १०	४ २१	६ ३१	८ ४२	१० ५२	१३ २	१५ १३	१७ २३	१९ ३४	२१ ४४	२३ ५४	२६ ५	२८ १५	३० २६	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	३२ ३६	३४ ४६	३६ ५७	३९ ७	४१ १८	४३ २८	४५ ३८	४७ ४९	४९ ५९	५२ १०	५४ २०	५६ ३०	५८ ४०	६० ५१	६३ २	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	६५ १२	६७ २३	६९ ३३	७१ ४३	७३ ५४	७६ ४	७८ १४	८० २५	८२ ३५	८४ ४५	८६ ५६	८९ ६	९१ १७	९३ २७	९५ ३८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	९७ ४८	९९ ५८	१०२ ९	१०४ १९	१०६ ३०	१०८ ४०	११० ५०	११३ १	११५ ११	११७ २२	११९ ३२	१२१ ४२	१२३ ५३	१२६ ३	१२८ १४	१३० २४

अंत्यांकफलसारिणी.

अंक	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	गफ
फ०	० ० ध.	० २० ध.	० ४० ध.	१ ० ध.	१ २० ध.	१ ४० ध.	२ ० ध.	२ २० ध.	२ २० ऋ.	२ ० ऋ.	१ ४० ऋ.	१ २० ऋ.	१ ० ऋ.	१ ४० ऋ.	१ २० ऋ.	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

अंत्यांकगतिफल सारिणी.

अंको	१६५	१६६	१६७	१६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	१८०
	६ ८ ध.	० ४८ ध.	० ३२ ऋ.	३ ५२ ऋ.	७ १२ ऋ.	१० ३२ ऋ.	१३ ५२ ऋ.	१७ १२ ऋ.	२० ३२ ऋ.	२३ ५२ ऋ.	२७ १२ ऋ.	३० ३२ ऋ.	३३ ५२ ऋ.	३७ १२ ऋ.	४० ३२ ऋ.	४३ ५२ ऋ.
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ.	० ०	० ३	० ७	० १०	० १३	० १७	० २०	० २३	० २७	० ३०	० ३३	० ३७	० ४०	० ४३	० ४७	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ५०	० ५३	० ५७	१ ०	१ ३	१ ७	१ १०	१ १३	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	१ ३७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ ४०	१ ४३	१ ४७	१ ५०	१ ५३	१ ५७	२ ०	२ ३	२ ७	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २३	२ २७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२ ३०	२ ३३	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४७	२ ५०	२ ५३	२ ५७	३ ०	३ ३	३ ७	३ १०	३ १३	३ १७	३ २०

शुक्रमंद फल सारिणी.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ.
	० ० ०	० २ २४	० ४ ४८	० ७ १२	० ९ ३६	० १२ ०	० १४ २४	० १६ ४८	० १९ १२	० २१ ३६	० २४ ०	० २६ २४	० २८ ४८	० ३१ १२	० ३३ ३६	० ३ २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ १२	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ ४८	१ ५०	१ ५३	१ .	१ .	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १[illegible]	२ २२	२ २४

शुक्रमंदफलसारिणी

अंका	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ्र
फ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	१ ० ०	१ २ ०	१ ४ ०	२ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ३०	० ३२	० ३४	० ३६	० ३८	० ४०	० ४२	० ४४	० ४६	० ४८	० ५०	० ५२	० ५४	० ५६	० ५८	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ ०	१ २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ ३०	१ ३२	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	२ ०

शुक्रमंदफलसारिणी

अंका	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ्र
	१ ६ ०	१ ६ ४८	१ ७ ३६	१ ८ २४	१ ९ १२	१ १० ०	१ १० ४८	१ ११ ३६	१ १२ २४	१ १३ १२	१ १४ ०	१ १४ ४८	१ १५ ३६	१ १६ २४	१ १७ १२	० ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० १२	० १३	० १४	० १४	० १५	० १६	० १७	० १८	० १८	० १९	० २०	० २१	० २२	० २२	० २३	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० २४	० २५	० २६	० २६	० २७	० २८	० २९	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ३६	० ३७	० ३८	० ३८	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४२	० ४३	० ४४	० ४५	० ४६	० ४६	० ४७	० ४८

शुक्रमंदफलसारिणी-

अंश	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गफ
फ०	१ १८ ०	१ १८ २४	१ १८ ४८	१ १९ १२	१ १९ ३६	१ २० ०	१ २० २४	१ २० ४८	१ २१ १२	१ २१ ३६	१ २२ ०	१ २२ २४	१ २२ ४८	१ २३ १२	१ २३ ३६	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ६	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १५	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४

शुक्रमंदफलसारिणी-

अंश	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गफ
फ०	१ २४ ०	१ २४ २४	१ २४ ४८	१ २५ १२	१ २५ ३६	१ २६ ०	१ २६ २४	१ २६ ४८	१ २७ १२	१ २७ ३६	१ २८ ०	१ २८ २४	१ २८ ४८	१ २९ १२	१ २९ ३६	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ०	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ६	० ६	० ७	० ७	० ८	० ८	० ८	० ९	० ९	० १०	० १०	० १०	० ११	० ११	० १२	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० १२	० १२	० १३	० १३	० १४	० १४	० १४	० १५	० १५	० १६	० १६	० १६	० १७	० १७	० १८	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० १८	० १८	० १९	० १९	० २०	० २०	० २०	० २१	० २१	० २२	० २२	० २२	० २३	० २३	० २४	० २४

शुक्रमंदफलसारिणी.

अंक	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग॰
०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	१ ३० ०	० ०
क॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध॰	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अं॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग॰प॰
	० ४ ०	० ६ ०	० १२ ०	० १८ ०	० २४ ०	० ३० ०	० ३६ ०	० ४२ ०	० ४८ ०	० ५४ ०	१ ० ०	१ ६ ०	१ १२ ०	१ १८ ०	१ २४ ०	– ८ ०
क॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध॰	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ३०	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ ०	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ [illegible]	४ [illegible]	०
	४५	४६	४७	[illegible]	४९	५०	[illegible]	[illegible]	५३	५४	५५	५६	५७	[illegible]	५९	६
	४ ३०	४ ३६	४ ४२	४ [illegible]	४ [illegible]	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	[illegible]	५ ३६	५ [illegible]	५ ४८	५ ५४	६ ०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

थ्रका	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग·ध
फ०	१ ३० ०	१ ३५ १२	१ ४० २४	१ ४५ ३६	१ ५० ४८	१ ५६ ०	२ १ १२	२ ६ २४	२ ११ ३६	२ १६ ४८	२ २२ ०	२ २७ १२	२ ३२ २४	२ ३७ ३६	२ ४२ ४८	० ७ १२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	३ ५४
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	३ ५९	४ ४	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

थ्रका	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गध
	२ ४८ ०	२ ५२ २४	२ ५६ ४८	३ १ १२	३ ५ ३६	३ १० ०	३ १४ २४	३ १८ ४८	३ २३ १२	३ २७ ३६	३ ३२ ०	३ ३६ २४	३ ४० ४८	३ ४५ १२	३ ४९ ३६	६ २४
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ४	० ९	० १३	० १८	० २२	० २६	० ३०	० ३५	० ४०	० ४४	० ४८	० ५३	० ५७	१ २	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ६	१ १०	१ १५	१ १९	१ २४	१ २८	१ ३३	१ ३७	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५४	१ ५९	२ ३	२ ८	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ १२	२ १६	२ २१	२ २५	२ ३०	२ ३४	२ ३८	२ ४२	२ ४७	२ ५२	२ ५६	३ ०	३ ५	३ ९	३ १४	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ १८	३ २२	३ २७	३ ३१	३ ३६	३ ४०	३ ४४	३ ४९	३ ५३	३ ५८	४ २	४ ६	४ ११	४ १५	४ २०	[illegible] २४

स्पष्टग्रहःशनिशीघ्र फल सारिणी.

अंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गम्य
फ०	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १२ ०	४ १५ ३६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ २४	५ ३६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ५४	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२ ४२	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २९	३ ३२	३ ३६

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गम्य
फ०	४ ४८ ०	४ ५० २४	४ ५२ ४८	४ ५५ १२	४ ५७ ३६	५ ० ०	५ २ २४	५ ४ ४८	५ ७ १२	५ ९ ३६	५ १२ ०	५ १४ २४	५ १६ ४८	५ १९ १२	५ २१ ३६	४ २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३०	० ३४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ३६	० ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ २	१ ५	१ ७	१ १०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ १२	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ ४८	१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ २	२ ५	२ ७	२ १०	२ १२	२ १४	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गध
फ-	५ २४ ०	५ २५ १२	५ २६ २४	५ २७ ३६	५ २८ ४८	५ ३० ०	५ ३१ १२	५ ३२ २४	५ ३३ ३६	५ ३४ ४८	५ ३६ ०	५ ३७ १२	५ ३८ २४	५ ३९ ३६	५ ४० ४८	२ १२
क-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० १	० २	० ४	० ५	० ६	० ७	० ८	० १०	० ११	० १२	० १३	० १४	० १६	० १७	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० १८	० १९	० २०	० २२	० २३	० २४	० २५	० २६	० २८	० २९	० ३०	० ३१	० ३२	० ३४	० ३५	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ३६	० ३७	० ३८	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४६	० ४७	० ४८	० ४९	० ५०	० ५२	० ५३	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ५४	० ५५	० ५६	० ५८	० ५९	१ ०	१ १	१ २	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ८	१ १०	१ ११	१ १२

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंको	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१	२	३	१०४	गध
फ.	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	५ ४२ ०	२ ० ०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०

शनिशीघ्रफल सारिणी

अंको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	११९	ग·घ
फ.	५ ४२ ०	५ ४० २४	५ ३८ ४८	५ ३७ १२	५ ३५ ३६	५ ३४ ०	५ ३२ २४	५ ३० ४८	५ २९ १२	५ २७ ३६	५ २६ ०	५ २४ २४	५ २२ ४८	५ २१ १२	५ १९ ३६	० २४
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ.	० १	० २	० ३	० ५	० ६	० ८	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १८	० १९	० २१	० २२	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३२	० ३४	० ३५	० ३७	० ३८	० ४०	० ४२	० ४३	० ४५	० ४६	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ४८	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५८	० ५९	१ १	१ २	१ ४	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ १२	१ १४	१ १५	१ १७	१ १८	१ २०	१ २२	१ २३	१ २५	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३१	१ ३३	१ ३४	१ ३६

शनिशीघ्रफल सारिणी

अंको	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	१३४	ग·घ
फ.	५ १८ ०	५ १४ ४८	५ ११ ३६	५ ८ २४	५ ५ १२	५ २ ०	४ ५८ ४८	४ ५५ ३६	४ ५२ २४	४ ४९ १२	४ ४६ ०	४ ४२ ४८	४ ३९ ३६	४ ३६ २४	४ ३३ १२	१ १२
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ.	० ०	० ३	० ६	० १०	० १३	० १६	० १९	० २२	० २६	० २९	० ३२	० ३५	० ३८	० ४२	० ४५	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	० ४८	० ५१	० ५४	० ५८	१ १	१ ४	१ ७	१ १०	१ १४	१ १७	१ २०	१ २३	१ २७	१ ३०	१ ३३	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१ ३६	१ ३९	१ ४२	१ ४६	१ ४९	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ५	२ ८	२ ११	२ १४	२ १८	२ २१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२ २४	२ २७	२ ३०	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४३	२ ४६	२ ५०	२ ५३	२ ५६	२ ५९	३ २	३ ५	३ ९	३ १२

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१३५	१३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	१४९	गक्र
फ०	४ ३० ०	४ २५ १२	४ २० २४	४ १५ ३६	४ १० ४८	४ ६ ०	४ १ १२	३ ५६ २४	३ ५१ ३६	३ ४६ ४८	३ ४२ ०	३ ३७ १२	३ ३२ २४	३ २७ ३६	३ २२ ४८	२ ४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २८	० ३४	० ३८	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	१ २	१ ७	० ०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	० ०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५२	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २९	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	१६४	गक्र
फ०	३ १८ ०	३ १२ ०	३ ६ ०	३ ० ०	२ ५४ ०	२ ४८ ०	२ ४२ ०	२ ३६ ०	२ ३० ०	२ २४ ०	२ १८ ०	२ १२ ०	२ ६ ०	२ ० ०	१ ५४ ०	४ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ०	० ०	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	० ५४	१ ०	१ ६	१ १२	१ १८	१ २४	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ [illegible]	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	१ ०	२ ६	२ २	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०
	[illegible]	३२	३२	[illegible]	३५	३६	३७	[illegible]	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	२	२	४ ०	४ ६	४ २	४ १८	४ २४	४ ३०	०
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	[illegible]	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ [illegible]	५ [illegible]	५ २०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०	० ०

शनिशीघ्रफलसारिणी·

अंको	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७९	गन्क
फ·	१ ४८ ०	१ ४० ४८	१ ३२ ३६	१ २६ २४	१ १९ १२	१ १२ ०	१ ४ ४८	० ५७ ३६	० ५० २४	० ४३ १२	० ३६ ०	० २८ ४८	० २१ ३६	० १४ २४	० ७ १२	५ १२
क·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ऋ·	० ०	० ७	० १४	० २२	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३४	१ ४१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३८	२ ४६	२ ५३	३ ०	३ ७	३ १४	३ २२	३ २९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ ३६	३ ४३	३ ५०	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १९	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४८	४ ५५	५ २	५ १०	५ १७	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५ २४	५ ३१	५ ३८	५ ४६	५ ५३	६ ०	६ ७	६ १४	६ २२	६ २८	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ५	७ १२

शनिमंदफलसारिणी·

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गक
फ·	० ० ०	० ७ ३६	० १५ १२	० २२ ४८	० ३० २४	० ३८ ०	० ४५ ३६	० ५३ १२	१ ० ४८	१ ८ २४	१ १६ ०	१ २३ ३६	१ ३१ १२	१ ३८ ४८	१ ४६ २४	० १५
क·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध·	० ०	० ८	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४६	० ५३	१ १	१ ८	१ १६	१ २४	१ ३१	१ ३९	१ ४६	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ५४	२ २	२ ९	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४७	२ ५५	३ २	३ १०	३ १८	३ २५	३ ३३	३ ४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ ४८	३ ५६	४ ३	४ ११	४ १८	४ २६	४ ३४	४ ४१	४ ४९	४ ५६	५ ४	५ १२	५ १९	५ २७	५ ३४	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५ ४२	५ ५०	५ ५७	६ ५	६ १२	६ २०	६ २७	६ ३५	६ ४३	६ ५०	६ ५८	७ ६	७ १३	७ २१	७ २८	७ ३६

शनिमंद फलसारिणी

अं	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फ.	१ ५४ ०	२ २ २४	२ १० ४८	२ १९ १२	२ २७ ३६	२ ३६ ०	२ ४४ २४	२ ५२ ४८	३ १ १२	३ ९ ३६	३ १८ ०	३ २६ २४	३ ३४ ४८	३ ४३ १२	३ ५१ ३६	० १७
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ४९	१ ५८	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२ ६	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५५	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	३ ५५	४ ४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४ १२	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ २	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५३	६ १	६ ९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १५	८ २४

शनिमंद फलसारिणी

अं	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ
फ.	४ ० ०	४ ८ ०	४ १६ ०	४ २४ ०	४ ३२ ०	४ ४० ०	४ ४८ ०	४ ५६ ०	५ ४ ०	५ १२ ०	५ २० ०	५ २८ ०	५ ३६ ०	५ ४४ ०	५ ५२ ०	० १६
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० ८	० १६	० २४	० ३२	० ४०	० ४८	० ५६	१ ४	१ १२	१ २०	१ २८	१ ३६	१ ४४	१ ५२	०
	३५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२ ०	२ ८	२ १६	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ४	३ १२	३ २०	३ २८	३ ३६	३ ४४	३ ५२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	४ ०	४ ८	४ १६	४ २४	४ ३२	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २०	५ २८	५ ३६	५ ४४	५ ५२	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	६ ०	६ ८	६ १६	६ २४	६ ३२	६ ४०	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २०	७ २८	७ ३६	७ ४४	७ ५२	८ ०

शनिमंदफलसारिणी.

अं.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गफ.
फ.	६ ० ०	६ ६ ४८	६ १३ ३६	६ २० २४	६ २७ १२	६ ३४ ०	६ ४० ४८	६ ४७ ३६	६ ५४ २४	७ १ १२	७ ८ ०	७ १४ ४८	७ २१ ३६	७ २८ २४	७ ३५ १२	० १२
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ४२	१ ४९	१ ५६	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १०	३ १७	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३ २४	३ ३१	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५ ६	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४०	६ ४८

शनिमंदफलसारिणी.

अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गफ.
फ.	७ ४२ ०	७ ४६ ४८	७ ५१ ३६	७ ५६ २४	८ १ १२	८ ६ ०	८ १० ४८	८ १५ ३६	८ २० २४	८ २५ १२	८ ३० ०	८ ३४ ४८	८ ३९ ३६	८ ४४ २४	८ ४९ १२	० ९
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध.	० ०	० ५	० १०	० १४	० १९	० २४	० २९	० ३४	० ३९	० ४३	० ४८	० ५३	० ५८	० २	० ७	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ ९	२ १४	२ १९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ २४	२ २९	२ ३३	२ ३८	२ ४२	२ ४८	२ ५४	२ ५८	३ २	३ ७	३ १२	३ १७	३ २२	३ २६	३ ३१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५०	३ ५५	४ ०	४ ५	४ १०	४ १४	४ १९	४ २४	४ २८	४ ३४	४ ३८	४ ४३	४ ४८

शनि मंद फल सारिणी·

अ·	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	८ ५४ ०	८ ५५ ३६	८ ५७ १२	८ ५८ ४८	९ ० २४	९ २ ०	९ ३ ३६	९ ५ १२	९ ७ ४८	९ ८ २४	९ १० ०	९ ११ ३६	९ १३ १२	९ १४ ४८	९ १६ २४	९ [illegible] ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० २	० ३	० ५	० ६	० ८	० १०	० ११	० १३	० १४	० १६	० १८	० १९	० २१	० २२	० ०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	० २४	० २६	० २७	० २९	० ३०	० ३२	० ३४	० ३५	० ३७	० ३८	० ४०	० ४२	० ४३	० ४५	० ४६	० ०
.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	० ४८	० ५०	० ५१	० ५३	० ५४	० ५६	० ५८	० ५९	१ १	१ २	१ ४	१ ६	१ ७	१ ९	१ १०	० ०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१ १२	१ १४	१ १५	१ १७	१ १८	१ २०	१ ३२	१ २३	१ २५	१ २६	१ २८	१ ३०	१ ३१	१ ३३	१ ३४	१ ३६

॥ इति पंचतारा स्पष्टी करण सारिणी संपूर्णम् ॥

प्रथमशीघ्रफल·

यह मध्यम सूर्य्य०।११।११।५६ इस्मेंसे मध्यम भौम५।२२।०७।२४ कम कियातो यह०६।१९।०४।३२ भौमका प्रथम शीघ्र केन्द्र भयायह ६ राशीसेजादाहै इसवास्ते १२ मैं पतित किया ५।१०।५५।२८ यह भया इस्के अंश १६०।५५।२८ इसवास्ते इहां भौमशीघ्र फल सारिणी कोष्ठक १६० के नीचेका अंक २८।५२।०० इस्को और अंशके नीचे कला ५५ है. इसवास्ते ५५ कला विकला कोष्ठक के नीचेका कलादि फल ४३।२८ अब अंश कलाके नीचे विकला २८ है. इसवास्ते २८ कला विकला कोष्ठकके नीचेका विकलादि फल २२।१३ यह ऋण सारिणीमें लिखाहै. इसवास्ते लियाजो फल २८।५२।०० इस्में फप .. तो .।०८।०० यह प्रथम शीघ्र फल भया इस्काअर्द्ध किया तो ..।४।००। अबकेन्द्र तुलकाहै इसवास्ते ऋण यह मध्यम भौम ५।२२।०७।२४ इस्में अर्द्ध कम किया तो ५।८।३।२४ यह दल संस्कृत भौम भया इसीरीतिसे और ग्रह करनाकेन्द्रादि सहित सबग्रह ३२के पत्रमें लिखदिये हैं.

भौमादिमंदोच्चम्.				
मं	बु	बृ	शु	श
४	७	६	२	८
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०

मंदफल.

भौमका मंदोच्च राशी ४।०।०।० इस्से दल संस्कृत भौम ५।८।३।२४ कमकिया तो बाकी १०।२१।५६।३६ यह भौमका मंदकेन्द्र भया इस्का भुज १।८।३।२४ इस्के अंश ३८।३।२४ हैं. इसवास्ते इहा भौम मन्दफल सारिणी कोष्ठक ३८ इस्के नीचेका अंक ७।११।३६ अब अंशकेनीचे कला ३ है इसवास्ते ३ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि ०।२४ अब अंश कलाके नीचे विकला २४ है इसवास्ते २४ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल विकलादि ४।२९ एकत्र करके पूर्व फलमें युक्त कियातो यह ७।१२।१४ भौमका मंद फल भया. यह मंदकेन्द्र तुलादिक है इसवास्ते ऋणतो यह मध्यम भौम ५।२२।७।२४ इस्में कम किया तो ५।१४।५५।१० यह मंदस्पष्ट भौम भया. इसीरीतिसे बुधादिक ग्रह करना + अब यहि मंद फल ७।१२।१४ विपरीत कहिये धन इसवास्ते प्रथम शीघ्र केन्द्र ६।१९।४।३२. इस्में युक्त कियातो ६।२६।१६।४६ यह भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्र भया.

अंतिमशीघ्रफल.

यह केन्द्र षडाधिक है इसवास्ते १२में पतित किया ५।३।४३।१४ यह हुवा अब इस्के अंश १५३।४३।१४ इस्का पूर्वोक्त शीघ्र फल सारिणी कोष्टक १५३का नीचेका अंशादि फल २४।२५।१२ यह अब अंशके नीचे कला ४३ है इसवास्ते ४३ कलाविकला कोष्ठकके नीचेका फलकलादि ३४।७ यह अंशकलाके नीचे विकला १४ है इसवास्ते १४ कला विकला कोष्ठकमेंका विकलादि फल ११।६ यह सब फल ऋण सारिणीमें लिखाहै इसवास्ते प्रथमजो फल २४।२५।१२ इस्में कम कियातो २३।५०।५४ यह अंतिम शीघ्रफल भया यह केन्द्र तुलका है इसवास्ते ऋण मंदस्पष्ट भौम ५।१४।५५।१० इस्में कम कियातो ४।२१।४।१६ यह स्पष्ट भौम भया.

भौम शुक्र अंतिमशीघ्रकेन्द्रका अंश १६९ से १८० तक अंश आवते हैं जद उस्का शीघ्र फल लेनेके खातर और उदाहरण कहते हैं मंगल का अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १७०।२०।२२ कल्पना करके अब मंगल शीघ्र केन्द्र सारणीमें अंत्यांक सारिणीमें १७० अंशके नीचे अशादि फल १।०।० यह अब अंशके नीचे कला २० इस्का फल ५।०।० और क-

लाके नीचे विकला २२ इस्का फल ४।२४ एकत्र करके ५।४ इस्कोपूर्वमें लियोजो फलसो सारणीमें धन लिख्याहै इसवास्ते कला विकला फल युक्त करके १।५।४ यह फलकेन्द्रका बससे ऋण धन ग्रहमें करना.

गत्युदाहरणम्.

भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १५३ आयाहै इसवास्ते १५३ को ष्टकका गतिफल ७।३८ कलादि धन यह और मंद फल सारिणी कोष्टक ३८ इस्का गति फल ५।३६ कलादि यह मंद केन्द्र मकरादिक है इसवास्ते ऋणसो पूर्व गति फलमें घटायातो बाकी २।२ यह धनफल आया य ही मंगलकी स्पष्टगति भई इस्के प्रमाण ऊपरके सारिणी परसे स्पष्ट बुध गुरु शुक्र शनि इनकी स्पष्टगति बनावना. राहू जो मध्यम है वही सर्वदा स्पष्ट समझना विशेष यह उस्में ६ राशी युक्त करनातो केतू होताहै

श्लोक.

जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥
स्पष्टाधिकारपूर्णोयं तद्भावार्थप्रकाशकः ॥

इतिस्पष्टाधिकारः

भौमादिकोंका द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश परसे अस्तादि जाननेका प्रकारः

श्लोक

त्रिनृपैः शरत्रिगुणभिः शरार्कैर्नगभूपैस्त्रियमैः क्रमात्कुजाद्याः ॥
चलकेन्द्रलवैः प्रयांतिवक्रं भगणात्तैः पतितैर्व्रजंति मार्गम् ॥
क्षितिजोष्टयमैरुदेति पूर्वं गुरुरिन्द्रैरविजस्तु सप्तचन्द्रैः ॥
स्वस्वोदय भाग संविहीने भगणांशैरपरत्र यातिचास्तम् ॥
खशरैर्भजिनैः परत्र तूर्णारुदयोस्तोक्षदिनैर्नगाद्रि भूभिः ॥
उदयोदगनखैर्न्महीन्दुभि भागस्तोदिग्दहनैश्चषट्सुरैःस्यात् ॥

टीका:- अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश क्रमसे भौमका १६३ बुधका १४५ गुरुका १२५ शुक्रका १६७ शनिका ११३ इतने अंश होयतो क्रमसे यही ग्रह होतेहैं. और क्रमसे भौम १९७ बुध २१५ गुरु २३५ शुक्र १९३ शनि २४७ इतने अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश होयतो क्रमसे वह ग्रह मार्गी होते हैं.

अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भौमका २८ गुरुका १४ और शनिका १७ होय तो भौमगुरु शनि इनका उदय पूर्वमें होताहै- और अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश अनुक्रमसे ३३२।३४६।३४३ इतने होयतो भौमगुरुशनि इनका अस्त पश्चिममें होताहै. और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश बुधका ५० शुक्रका २४ यह होयतो बुधशुक्र इनका पश्चिममें उदय होताहै. और अंतिम शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे १५५।१७७ यह होयतो बुधशुक्र इनका अस्त पश्चिममें होताहै. और अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश क्रमसे २०५।१८३ यह होयतो बुध शुक्र इनका पूर्वमें उदय होताहै + और अंतिमशीघ्र केन्द्रके अंश क्रमसे ३१०।३२६ यह होयतो बुध शुक्र इनका पूर्वमें अस्त होता है.

श्लोक — वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः क्षितिसुताद्द्विगुणास्त्रिभक्ताः सांकांशकाद्दशहतांगहृताः कुभक्ता वक्राद्यमासदिवसैः क्रमतो गवेष्यम् ॥

टीका:- ग्रहोंका वक्र- उदय- अस्त- मार्ग इन्होंके जो अंतिम शीघ्र केंद्रांश कहे है वह उक्त शीघ्र केंद्रांश और अभीष्ट शीघ्र केन्द्रांश इनका अंतर करके अंतरांश क्रमसे भौमका दूना करना और बुधको ३ से भाग देना गुरुको १० से गुणके ९ से भाग देना और शुक्रको १० से गुणके ६ से भागदेना और शनिको १ से भाग देना तो भागाकार आवे सो वह दिन भया अनंतर उक्त शीघ्र केन्द्रसे अभीष्ट शीघ्र केन्द्रांश अधिक होयतो वक्र उदय अस्त और मार्ग यह होयके उतने दिन भये ऐसा जानना. और जो उक्त शीघ्र केन्द्रसे अभीष्ट केन्द्रांश कमती होयतो वक्र- उदय- अस्त और मार्ग यह होनेका इतने दिन आगे होगा ऐसा समझना.

स्वगाः स्पष्टाः सजवाः

सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	रा·	के·
० १३ १० ४२	९ ५ २२ ३५	४ ११ ४ १६	११ २१ २० ५३	५ ९ १२ ३७	१० २६ ५६ ४	२ १३ २१ ४५	४ २१ ४० ८	१० २१ ४० ८
५८ १६	७३१ ४३	२ २	१४ ४४	५ व· २६	५४ २८	४ ३८	३ ११	३ ११

लंकोदयपल·		
मे·	२७८	मी·
वृ·	२९९	कुं·
मि·	३२३	म·
क·	३२३	ध·
सिं·	२९९	वृ·
क·	२७८	तु·

लग्नबनानेकेलिए लंकोदयसे स्वदेशोदयपल्यावनेकि रीति ॥

श्लोक — लङ्कोदयानागतुरङ्गदस्रा २७८ गोङ्काश्विनो २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः ॥ क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थाश्च विहीनयुक्ताः ॥

लंकामें मेष राशीका उदय २७८ पल वृषभराशीका उदय २९९ पल. मिथुन

राशीका उदय ३२३ पल- कर्क राशीका उदय ३२३ पल सिंह राशीका उदय २९९ पल कन्या राशीका उदय २७८ पल रहता है और लंकामें तुला राशीसे मीनराशीतक उदयके पल कन्या राशीसे उलटा मेष राशीतक लिखा है सो जानना. जीस देशका उदय करना होय उस देशका चरखंडाके क्रमसे मेष वृष मिथुन इनका पलात्मक जो उदय उस्में कम करना और वही चरखंडा उलटा कर्क सिंह कन्या इनका जो पलात्मक उदय उस्में युक्त करनातो स्वदेशका उदय मेषसे कन्यातक होता है. और वही उदय उलटा तुलासे मीनतक होता है.

स्वदेशोदय बनानेका उदाहरण कहते हैं.

टी०- मेषका पलात्मक उदय २७८ इस्मेसे प्रथमचर खण्ड ७० यह कम किया तो २०८ यह पलात्मक स्वदेशका मेषका उदय वृषभका पलात्मक उदय २९९ इस्मै द्वितीय चरखण्ड ५६ यह कम कियातो २४३ यह स्वदेशका वृषका उदय मिथुनका उदय ३२३ इस्मै तृतीय चरखंड २३ यह कम कियातो ३०० यह मिथुनका स्वदेशी उदय कर्कका उदय ३२३ सिंहका उदय २९९ कन्याका उदय २७८ इन सबूंमैं क्रमसे २३।५६।७० यह युक्त कियातो क्रमसे कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ यह पलात्मक स्वदेशका लग्न भना अब यह उलटे रीतिसे तुलाका ३४८ वृश्चिकका ३५५ धनका ३४६ मकरका ३०० कुंभका २४३ मीनका २०८ यह पलात्मक स्वदेशका उदय भया

लग्नबनानेका प्रकारः

स्वदेशोदय	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	३४८	३५५	३४६	३००	२६३	२०८
	कं.	सिं.	क.	मि.	वृ.	मे.

तात्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ॥ एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥

तदनु जहीहि गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृद्लवाद्यम् ॥
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वं भवति विलग्नमदो वनांशहीनम् ॥
भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः
स्याल्लनुः निशितुसषड्भार्कात्स्यात्तनूरिष्टकालः ॥

टीका- जिस कालका लग्न करना होय उसकालका स्पष्ट सूर्य्य करके उसमें अयनांश युक्त करनाजो अंक आवे उस्मेसे राशीका त्याग करके जो अंशादिक फल रहे सो भुक्त होताहै और जो भुक्त है सो ३० अंशमें कम करनेसे अंशादि भोग्यफल होताहै. अनंतर पूर्वमें जिस राशिका स्वा

ग कियाहै उस्मैं १ युक्त करके नसरिमित राशीके उदयसे भुक्त और भोग्य गुण देना जो गुणाकार आवे उस्को ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो क्रमसे भुक्त काल और भोग्य इनका पल होताहै अब अभीष्ट घटिका जो होय उस्का पल करके उस्में भोग्य कालका पल कम करना जो शेष रहे उस्मेंसे जिस उदयसे गुणन किया होय उस्के आगेके जितने पलात्मक उदय कम होय उतने कम करना औरजो पलात्मक शेष रहे उस्को ३० से गुणके जो गुणाकार आवे उस्को जोउदय कम न भया होय वह उदयसे भागदेको फल अंशादि आवेगा उस्में शेष राशीसे जितना राशीका उदय कम भया होय उतनी राशी युक्त करना जोफल आवे उस्मेंसे अयनांशा कमती करनातो अभीष्टकालका राश्यादि लग्न होताहै

भुक्तकालसे लग्न करना होयतो अभीष्ट काल रखते बखत जो इष्ट घडी पलहोयउस्को ६० में घटायकर जो शेषरहे उस्को अभीष्टकाल रखना भुक्त घटायकर जब लग्न घटावै उसबखत उलटा लग्न घटावै जैसे मेषका उदय-से गुणैतो मीनकुंभादिक कमतीकरै और सब क्रिया भोग्यवत् करै.

रात्रीका लग्न करना होयतो स्पष्टसूर्य्यमें ६ राशी युक्त करना अनंतर पूर्वरीति प्रमाण लग्न बनावना परंतु अभीष्ट काल रखते बखत जो इष्टकाल होय उस्में दिनमान कम करके जो शेष रहे सो अभिष्ट रखना.

जन्मकाल सूर्य्योदयसे ३२ घटिका १ पल उस बखतका लग्न साधन कर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य्य ००।१२।१०।४२ इस्मैं अयनांशा २२।४४।०३ यह युक्त करके ०।०।५४।४५ यह सायन सूर्य्य इस्की राशी त्याग करके ५।५४।४५ यह भुक्त भया यह ३० अंशमें कम करके अंशादि २४।०५।१५ यह भोग्य भयाइस्कोत्याग कियाजो राशी उस्मैं १ युक्त करके वृषके उदय २४३ सेगुण-के अंशादिफल ५८५३ कला १५ विकला ४५ इस्को ३० से भाग देके १९५।३ ।१५।४५ यह पलात्मक भोग्य काल भया इसही प्रकार भक्त काल साधनकरना अबै सूर्य्योदयसें अभीष्ट घटी ३२ पल ०१ इस्का पल कियातो१९२१ इस्में भोग्यकाल १९५।३।१५।४५ यहकमकरके शेष १७२५।२६।४४।१५यह इस्में मिथुनोदय ३०० कर्कोदय ३४६ सिंहोदय ३५५ कन्योदय ३४८ तुलोदय ३४८ यह कम करके शेष २८ पल इस्में वृश्चिकोदय कम होता नहीं इसवास्ते शेषपल २८ इस्को ३० से गुणके नीचेका अंक २६ युक्त करके ८६६ यह इस्को वृश्चिकोदय ३५५ से भागदेके अंश २ लब्ध भया शेष १५६ इस्को ६० से गुणनेसे ९३६० इस्में कला ४४ युक्त करीतो यह ९४०४ इस्को ३५५ से भागदेने से.

कला२६ शेष १७४ इस्को ६०से गुणातो १०४४० इस्में विकला १५ युक्तकियातो १०४५५ यह इस्को वृश्चिकोदयः ३५५ से भाग देनेसे २९ विकला प्राप्त भई अब पूर्वमें प्राप्त भया अंशादि ०२।२६।२९ यह इस्में मेषादि शुद्ध पर्य्यंत राशी ७ युक्त कियातो ७।२।२६।२९ इस्में अयनांश ।२२।४४।३ कमकियातो राश्यादिक लग्नस्पष्ट भया. ६।९।४२।२६ इस्में ६ राशी युक्त करीतो यह ००।९।४२।२६ सप्तम भाव भया.

अभीष्टकालमें भोग्यकाल कमती न होयतो लग्न बनावनेकी रीति.

पलात्मक अभीष्ट काल ३० से गुणके उस्को सायन ग्रहकी जो राशी होय थह राशीके उदयसे भाग देके अंशादि फल आवेगा वह स्पष्ट सूर्य्यमें युक्त करना तो इष्टकालका लग्न होताहै.

लग्नसे अभीष्टकाल करनेकी रीति

श्लोकः अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितोयुक्तमध्योदयोऽभीष्टकालोभवेत् ॥ यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशान्तरहतउदयः स्यात्खाग्निहृत्तिष्टकालःइनतउदयऊनश्चेत्सशोध्योद्युरात्रात् ॥

टीका- लग्नमें अयनांश युक्त करके जो अंक आवे उस्से भुक्त काल करना. और स्पष्ट सूर्य्यसे भोग्य काल करना अनंतर सायन लग्न और सायन सूर्य्य इनके मध्यके जोउदय होय उनका अंक लेके उस्में भुक्त काल और भोग्य काल इस्का अंक युक्त करनातो पलात्मक अभीष्ट काल होता है.

सायन लग्न और सायन सूर्य्य एक राशीमें होंयतो लग्नसे अभीष्ट काल साधने. सायन लग्न और सायन सूर्य्य इनका अंतर करके उस्को सायन सूर्य्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो पलात्मक अभीष्टकालपलात्मक होताहै. जो सायन सूर्य्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो पूर्व प्रमाण साधन किया जो कलासो ६० मेंसे कम करनातो इष्टकाल होताहै. ऊपरक हा वैसा प्रमाण जन्मकालका लग्न ६।९।४२।२६ यह इस्में ६ राशी युक्त कियातो यह सप्तम भाव हुवा ०।९।४२।२६

नतोन्नत पूर्वक दशमचतुर्थ भाव साधन.

श्लोकः रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनान्होगतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतंचोन्नतम् ॥ यत्पूर्वेन्नतपङ्क्तियुक्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो यल्लंकोदयकेश्च लग्नमिव तन्माध्यं सपड्भं सुखम् ॥ २॥

अन्वयः- रात्रेः शेषं वागतं दिनार्द्धेन युतं अन्हो दिनस्य गतंवा शेषं दिनदले नविश्लेष्यं खलितिनिश्चयेन क्रमेण पूर्व पश्चिमनतंस्यात् तन्नतं त्रिंशच्युतंच पुन उन्नतंस्यात् ॥ पूर्वोन्नतषड्भ युक्त रवितः लंकोदयैर्लग्नमिवयल्लग्नंतन्मा ख्यं दशमंस्यात् एवं पश्चान्नता दित्यतः केवलार्काल्लंकोदयकैर्लग्नमिवयल्लग्नं तद्दशमंस्यात् सचः षड्राशी युक्तं सुखंचतुर्थंस्यात्.

भाषा:- दिनमें पूर्वनत दिनमें पश्चिम नत रात्रीमें पूर्वनत रात्रीमें पश्चिम नत ऐसा चार प्रकारका नत होता है. मध्यरात्रिके अनंतर जो शेष रात्र होय उस्में दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रीका पूर्वनत होता है. और मध्यरात्रके पूर्वमें जो गत रात्र हो उस्में दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रीका पश्चिम नत होताहै और मध्यान्हके पूर्व जो दिनगत घटिका होय वह दिनार्ध घडीमेंसे कम करना तो दिनका पूर्व नत होता है. और मध्यान्हके अनंतर जो दिन शेष होय वह दिनार्द्धमेंसे कम करना तो दिनमेंका पश्चिमनत होता है. यह नत ३०मे कम करनेसे उन्नत होताहै यह पूर्वनत कम करे तो पूर्वोन्नत होता है और पश्चिमनत कम करे तो पश्चिमोन्नत होताहै. पूर्वोन्नत आया होयतो उन्नत को इष्टकाल कल्पना करके तात्कालिक सूर्य्यमें ६ राशी युक्त करके लंकोदयसे पूर्व रीति प्रमाण लग्न साधनके ऐसा लग्न साधन करे और पश्चिम नत आया होयतो नतको इष्टकाल कल्पना करके तात्कालिक सूर्य्यसे लग्नके प्रमाण लंकोदयसे लग्न साधन करे तो दशम भाव होताहै. दशम भावमें ६ राशी युक्त करे तो चतुर्थ भाव होता है.

टिप्पणः- वरोबर मध्यान्हमें जन्म होयतो तात्कालिक सूर्य्य दशम भाव होताहै. अथवा वरोबर मध्यरात्रीमें जन्म होयतो तात्कालिक सूर्य्य चतुर्थ भाव होताहै.

उदाहरणम्.

मध्यान्हके अनंतर शेष ०।४१ दिन इस्को दिनार्द्ध १६।२१ इस्में कमकरके १५।४० यह पश्चिम नत भया. इस्को ३०मे कमकियातो पश्चिमोन्नत १४।२० भया. अबनत १५।४० कोइष्टमानकरतात्कालिसूर्य्य ०।१२।१०।४२ इस्में अयनांश २२।४४।०३ युक्तकरके ०।१५।५४।४५ यह भुक्तांश भया इस्को ३० में कमकिया तो २४।५।१५ यह भोग्यांश भयाइस्को लंकोदय वृषका मान २९९ सेगुणातो ७२०२।९।४५ इस्को ३० से भाग दियातो २४०।२।९।४५ यह भोग्यकाल पलात्मक भया इस्को नत १५।४० इस्कीपल ९४० में कम कियातो ६९९।२७।५०।१५ इसी मिथुनोदय ३२३ कर्कोदय ३२३

यह कम करके शेष ५३।२७।५०।१५ इस्मे सिंहोदय२९९ कम नहीं होता इसवास्ते शेष ५३ को ३०से गुणातो १५९० इस्में नीचेका अंश२७युक्त कियातो १६।१७ इस्को सिंहोदय २९९ से भाग दियातो अंशादि ५।२४ ।३८ इस्में मेषादि शुद्ध पर्य्यंत राशी ४ युक्त करीतो ४।५।२४।३८इस्में अयनांशा २२।४४।३ हीन कियातो यह ३।१२।४०।३४ दशमभया इस्में ६ राशी युक्त करीतो ९।१२।४०।३४ यह चतुर्थ भाव भया.

शेष आठ भाव साधन संधी और क्षयचय फल साधनम्.

श्लोकः

त्र्यंशोव्यस्तखभस्य भूयमहतो योज्यस्तनौ द्विच्युतो बंधौ देपिचसांगभास्तनुमुखाः संधिर्द्वियोगोर्द्धितः ॥ शून्यं संधिषु भावगेखिलफलं स्याद्भावसंध्यंतरेणांसं संधिखगांतरक्षयचय भावाधिकाल्पेखगे ॥ ३ ॥

अन्वयः - व्यस्तखभस्य त्र्यंशो भूय महता नौ योज्यस्तदा द्वितीय तृतीय भावौ भवतः विगत मस्तं यस्मात्खभात्त द्व्यस्त ख भंतस्येत्यर्थः स एव त्र्यंशो द्विच्युतो द्वाभ्यांच्युतो भूय महतश्चतुर्थ भावे योज्यस्तदा पंचषष्ठ भावौ भवतः एक गुणित युक्ते पंचम भावः द्विगुणित युक्तेषष्ठ भावः स्यादित्यर्थः तेऽनंतरानीतास्चत्वारोभावा सांगभाः षड्राशिसहितास्तदाऽष्टमनवमैकादशद्वादश भावाः स्युः अपिच शब्दावनुक्त बोधकौ चत्वारी भावाः प्रथमं साधितास्तद्बोधक मित्यर्थः अथ संधिः संधिर्द्वियोगोऽर्द्धितः द्वयोर्योगो द्वियोगोऽर्द्धितो ह्यर्धितः सन् संधिः स्यात्प्रथम भावस्य विरामसंधिर्द्वितीयस्यारामसंधिर्भवतीति ॥ संधिसमे ग्रहे शून्यं फलंस्यात् भावगेभावांशादिसमें अखिलं संपूर्णरूप फल मित्यर्थः भावाधिके ग्रहे सति संधि खगयो रंतरं भाव संध्यंतरेण भक्तं क्षयाख्यं फलंस्यात् भावाल्पे खगे संधि खगांन्तरं भाव संध्यंतरेणासं भक्तं सच्चयाख्यं स्यात् तयोरखरो हारीह संज्ञाच स्यात् ॥

अर्थभाषा.

दशम भावमेंसे सप्तम भाव कम करके जो शेष रहे उस्का तृतीयांश लग्नमें युक्त करना तो द्वितीय भाव होताहै - वही तृतीयांश दूना करके लग्नमें युक्त करें तो तृतीय भाव होताहै और वही तृतीयांश २ राशीमें कम करके जोशेष रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करना तो पंचम भाव होताहै. वही शेष दूना करके चतुर्थ भावमें युक्त करना तो षष्ट भाव होता है अब यह भावमें

द्वितीय तृतीय पंचम यह ६ राशी युक्त करे तो क्रमसे अष्टम नव एकादश द्वादश और पूर्वोक्त प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम यह तन्वादि द्वादश भाव होते हैं दो भावको युक्त करके उस्का अर्द्ध करे तो संधि होती है सो ऐसी प्रथम द्वितीय भावको योग. र्द्ध करे तो प्रथन भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है. इसी प्रमाण द्वादश भावकी संधि होती है.

विशेष.

यह संधि करनेके वख्त भाव योग १२ से अधिक आवे तो उस्मेसे १२ कम नहीं करना अथवा भाव ०० होयतो योग करनेके वख्त ० के बदलेमें १२ लेना नहीं. संधितुल्य ग्रह होय तो शून्य फल वा भाव तुल्य ग्रह होय तो पूर्ण फलग्रह भावसे कमती होयतो वह ग्रहमेंसे आरंभ संधि कम करना वा ग्रह भावसे अधिक होयतो वह ग्रहमेंसे विराम संधि कम करना अनंतर जो अंतर आवे उस्को भाव संधीके अंतरसे भाग देना तो ग्रह भाव फल होताहै वह ग्रह भावसे अधिक होयतो क्षय अवरोह २ फल अथवा ग्रह भावसे कमती होयतो चय आरोह फल जानना.

टीप-१- ग्रह आरंभ संधिसे कमती होयतो पीछेका भावका फल देता हैं और विराम संधिसे अधिक होयतो आगेके भावका फल देता है.

टीप- २- चतुर्थ भावमेंसे प्रथम भाव कम करके जो शेष रहै उस्का षष्ठांश प्रथम भावमें युक्त करना तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है. और यह संधिमें यही षष्ठांश युक्त करेतो धन भाव होताहै. इसी प्रमाण षष्ठांश युक्त करनेसे संधि सह चतुर्थ भावतक भाव होते हैं अनंतर यहि षष्ठांश १ में कम करके जो शेष रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करेतो चतुर्थ भावके विराम संधितक भाव होते है. अनंतर यह ६ भावको और संधिको ६ + ६ राशी क्रमसे युक्त करेतो आगेके सर्व भाव संधि सुगम रीतिसे होते हैं.

उदाहरणम्.

यह दशम भाव ३।१२।४०।३४ इस्मेंसे सप्तम भाव ०।१।४२।२६ कम करके ३।२।५८।८ यह इस्का तृतीयांश १।०।५९।२२।४० इसे लग्न ६।९।४२।२६।० युक्त करके ७।१०।४१।४८।४० यह द्वितीय भाव भया तृतीयांशको दूना २।१।५८।४५।२० इस्में लग्न ६।९।४२।२६।० युक्त करके ८।११।४१।११।२० यह तृतीय भाव भया यह तृतीयांश १।०।५९।२२।४० इस्को २ राशीमेंसे कम करके शेष ००।२९।०।३७।२० यह इ-

स्में चतुर्थ भाव ९।१२।४०।२४।० युक्त करके १०।११।४१।११।२० यह पंचम भाव भया वहीशेष दूना १।२८।१।१४।४० इस्को चतुर्थ भाव ९।१२।४०।२४।० युक्त करके ११।१०।४१।४८।४० यह षष्ठ भाव भया अब द्वितीय तृतीय पंचम षष्ठयह भावोंमें ६ राशी क्रमसे युक्त करै तो अष्टम नवमैकादश द्वादश यह स्पष्ट भाव होते हैं.

लग्न ६।९।४२।२६।० द्वितीय भाव ७।१०।४१।४८।४० इनका योग १३।२०।२४।१४।४० इसका अर्द्ध ६।२५।१२।०७।२० यह प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है इसी प्रमाण सर्व भावकी संधि करना. अथवा चतुर्थ भाव ९।१२।४०।२४।० इस्मेंलग्न ६।९।४२।२६।० कम कियातो ३।२।५८।८ यह इस्का षष्ठांश ०।१५।२९।४१।२० इस्से लग्न ६।९।४२।२६।० युक्त कियातो ६।२५।१२।०७।२७ यही रीतिसे क्रमसे युक्त करना तो संधि कर कर सहित चतुर्थ भाव होता पुनः षष्ठांशको १ मे हीन करना चतुर्थ भावसे युक्त करना तो सप्तम भावतक संधिसहित होता है आगें पूर्वोक्तवत्.

१	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	भा.
६ ९ ४२ २६ ०	६ २५ १२ ७ २०	७ १० ४१ ४८ ४०	७ २६ ११ ३० ०	८ ११ ४१ ११ २०	८ २७ १० ५२ ४०	९ १२ ४० २४ ०	९ २७ १० ५२ ४०	१० ११ ४१ ११ २०	१० २६ ११ ३० ०	११ १० ४१ ४८ ४०	११ २५ १२ ७ २०	
७	०	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२	०	भा.
० ९ ४२ २६ ०	० २५ १२ ७ २०	१ १० ४१ ४८ ४०	१ २६ ११ ३० ०	२ ११ ४१ ११ २०	२ २७ १० ५२ ४०	३ १२ ४० २४ ०	३ २७ १० ५२ ४०	४ ११ ४१ ११ २०	४ २६ ११ ३० ०	५ १० ४१ ४८ ४०	५ २५ १२ ७ २०	

क्षयचय उदाहरणम्

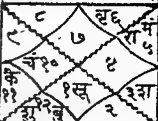
सूर्य्य०।१३।१०।४२ यह निकट भाव सप्तम ०।९।४२।२६ इस्से अधिक है इसवास्ते सूर्य्य यह भावकी विरामसंधि ०।२५।१२।०७ इस्में कम करके ०।१२।०१।२५ इस्की विकला ४३२८५ यह अंतर इस्को सप्तम भा० ०।९।४२।२६ और विराम संधि०।

जन्मलग्नमिदम्.



२५।१२।०७ इस्का अंतर ०।१५।२९।४१ इस्की विकला ५५७८१ इससे भाग देके ००।४६।३३ यह सूर्य्य भाव फल भया यह फल सूर्य्य निकट भावसे अधिक है इसवास्ते क्षय जानना इसी प्रमाण सर्व ग्रहोंका भाव फल करना इ०

भावोद्वारचक्रमिदम्



ग्रहभावफलचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहः
० ४६ ३३ क्षय	० ३१ ४४ चय.	० ५७ २७ चय	० १५ ५६ क्षय	० ५९ ४२ चय	० ३ ४ चय	० ५३ ३१ क्षय	फ०

श्लोकः } जगदीशेन रचिते केशवी ग्रंथ टिप्पणे
भावाधिकारः पूर्णोयंतद्भाषार्थप्रकाशकः ॥

इति भावाऽध्यायः

टिप्पण- भावोनकः खगः पूर्व संधिना रहित स्तदा ॥ अधिकश्चेद्विरामारभ्य संधेः शोध्यस्तदंतरम् ॥ भावसंध्यंतरेणाप्तं तद्भाव फल मुच्यते क्षयंचैवतदाज्ञेयमधिकेऽस्येचयं भवेत् ॥ १ ॥

अथदृष्टीसाधनाध्यायः

श्लोकः } रवैकाग्निद्विखवेदरामयमभूखा भ्राभ्रमेकादि-
भेद्रष्टावर्जित दृश्यकस्यगुरुणाचेदष्टवेदे कृताः
मंदेनांकयमेसृजानगगुणेंकाभ्रादिजाः संस्कृता-
भाग घ्नक्षयवृद्धि खानललवेनाप्ध्युद्धृताद्दग्भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः- पश्यती तिद्रष्टा दर्शन योग्यो दृश्यः द्रष्टावर्जित दृश्य कस्यैकादि एकादि राशिषुशेषेषुरवैकाग्नित्यादयोंकाः ०।१।३।२।०।४।३।२।१।०।०।० स्युःतत्रैक भे शेषेरवंशून्यं द्वित्तिद्विशेषे एक इत्यादि द्वादशभेऽर्थात् शून्यशेषेऽभ्रं-शून्यं किंभूताएते अंकाभ्रादिजाः खादिजाः गुरुशनि भौमाना विशेषश्चे-दितिचे द्गुरुणा दृष्टावर्जित दृश्यकस्या ष्टवेदे भशेषेकृताश्चत्वारोंकास्युस्तदा पूर्वोक्तं नेत्यर्थः मंदेनांक यमेकद्वाश्चत्वारोंकाः असृजा भौमेन द्रष्टावर्जित दृश्यकस्यनगगुणे भेचत्वारोंकास्युः पूर्वोक्तानेतिभावः एवंराश्यादावंकानुक्त्वा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशी
०	१५	४५	३	०	६०	४५	३०	१५	०	०	०	कला

श· मं· बृ·   मं· बृ· श·
६० ६० ६०   ६० ६० ६०

का नीचेका अंकलेके अंतर करेजोअंतर आवे उस्से नीचे जो भागादिक होयतो गुणदेना फेर ३से भाग देना पावेसो फलांकमें संस्कार करना सो ऐसाके आगेका अंकज्यादा होयतो युक्त करना पिछलामें आगाको कमती होयतो पिछलायमें घटाय देना तो दृष्टी होती हे. यह दूसराप्रकार होगा.

इष्टादृश्यमें कमकरके जो १ राशी रहेतो अंशादिक आधाकरे तो दृष्टीहोय और २ राशी बचेतो अंशामें १५ युक्त करेतो दृष्टि होय और तीन राशी रहे तो अंशादिकके आधा करे अंशाने ४५ मे घटायदे तो दृष्टीहोय और चारराशी रहे तो अंशादिकाने ३०में घटावे दृष्टि होय.

रविचंद्रबुध शुक्र दृष्टी सारिणी.

राशि	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष·	०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
वृष·	१	० ० ०	० ० ३०	० १ ०	० १ ३०	० २ ०	० २ ३०	० ३ ०	० ३ ३०	० ४ ०	० ४ ३०	० ५ ०	० ५ ३०	० ६ ०	० ६ ३०	० ७ ०
मिथुन	२	० १५ ०	० १६ ०	० १७ ०	० १८ ०	० १९ ०	० २० ०	० २१ ०	० २२ ०	० २३ ०	० २४ ०	० २५ ०	० २६ ०	० २७ ०	० २८ ०	० २९ ०
कर्क	३	० ४५ ०	० ४४ ३०	० ४४ ०	० ४३ ३०	० ४३ ०	० ४२ ३०	० ४२ ०	० ४१ ३०	० ४१ ०	० ४० ३०	० ४० ०	० ३९ ३०	० ३९ ०	० ३८ ३०	० ३८ ०
सिंह	४	० ३० ०	० २९ ०	० २८ ०	० २७ ०	० २६ ०	० २५ ०	० २४ ०	० २३ ०	० २२ ०	० २१ ०	० २० ०	० १९ ०	० १८ ०	० १७ ०	० १६ ०
क·	५	० ० ०	० २ ०	० ४ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २८ ०
तुल	६	१ ० ०	० ५९ ३०	० ५९ ०	० ५८ ३०	० ५८ ०	० ५७ ३०	० ५७ ०	० ५६ ३०	० ५६ ०	० ५५ ३०	० ५५ ०	० ५४ ३०	० ५४ ०	० ५३ ३०	० ५३ ०
वृश्चि·	७	० ४५ ०	० ४४ ३०	० ४४ ०	० ४३ ३०	० ४३ ०	० ४२ ३०	० ४२ ०	० ४१ ३०	० ४१ ०	० ४० ३०	० ४० ०	० ३९ ३०	० ३९ ०	० ३८ ३०	० ३८ ०
धन	८	० ३० ०	० २९ ३०	० २९ ०	० २८ ३०	० २८ ०	० २७ ३०	० २७ ०	० २६ ३०	० २६ ०	० २५ ३०	० २५ ०	० २४ ३०	० २४ ०	० २३ ३०	० २३ ०
मक·	९	० १५ ०	० १४ ३०	० १४ ०	० १३ ३०	० १३ ०	० १२ ३०	० १२ ०	० ११ ३०	० ११ ०	० १० ३०	० १० ०	० ९ ३०	० ९ ०	० ८ ३०	० ८ ०
कुंभ	१०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मीन	११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

और ५ राशि रहेतो अंशादिक दूणाकरे दृष्टीहोय और ६-७-८-९ राशीबचेतो राश्यादिक १० मेंसोधे अंशकरे पाछे आधाकरे तो दृष्टी होय और १०-११-०० राशीबचेतो दृष्टीनहीं होय और मंगलकीकरे जद ३-७ राशीबचेतो अंशाने ६० मे घटादे जब दृष्टी हो और ८ राशीबचे तो अंशादिक आधाकरे फेर उसीने आधाजोडे और १५ जोडे दृष्टी हो. और ९ राशीऊपर होयतो १०० दृष्टी होय और गुरु दृष्टीकरे जब ५-९ राशीबचेतो अंशादिक आधाकरे अंशामें ४५ जोड देतो दृष्टी होय और चार राशीऊपर होयतो अंशादिक दूणाकरे पीछे ६०मे घटावे तो दृष्टी होय.

और ८ राशी ऊपर होयतो अंशादिक आधाकरकर सहितकरै फेर६० मैं घटाय देतोदृष्टीहोयशनिश्चरकी दृष्टीकरीजब १ राशी ऊपर होयतो अंशादिक दूणाकरे दृष्टीहोयराशी ८ होयतो अंशामें ३० जोडैतो दृष्टी होय और २ राशी होयतो अंशादिक आधाकरै ६० मैं घटाय देतो दृष्टी होय और ९ राशी

रविचन्द्र बुध शुक्र दृष्टि सारिणी.

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ७ ३०	० ८ ०	० ८ ३०	० ९ ०	० ९ ३०	० १० ०	० १० ३०	० ११ ०	० ११ ३०	० १२ ०	० १२ ३०	० १३ ०	० १३ ३०	० १४ ०	० १४ ३०	१ गु. २ भा.	धं.
० ३० ०	० ३१ ०	० ३२ ०	० ३३ ०	० ३४ ०	० ३५ ०	० ३६ ०	० ३७ ०	० ३८ ०	० ३९ ०	० ४० ०	० ४१ ०	० ४२ ०	० ४३ ०	० ४४ ०	१ गु. १ भा.	ध.
० ३७ ३०	० ३७ ०	० ३६ ३०	० ३६ ०	० ३५ ३०	० ३५ ०	० ३४ ३०	० ३४ ०	० ३२ ३०	० ३२ ०	० ३२ ३०	० ३२ ०	० ३१ ३०	० ३१ ०	० ३० ३०	१ गु. २ भा.	ऋ.
० १५ ०	० १४ ०	० १३ ०	० १२ ०	० ११ ०	० १० ०	० ९ ०	० ८ ०	० ७ ०	० ६ ०	० ५ ०	० ४ ०	० ३ ०	० २ ०	० १ ०	१ गु. १ भा.	ऋ.
० ३० ०	० ३२ ०	० ३४ ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	२ गु. १ भा.	ध.
० ५२ ३०	० ५२ ०	० ५१ ३०	० ५१ ०	० ५० ३०	० ५० ॥	० ४८ ३०	० ४९ ०	० ४८ ३०	० ४८ ०	० ४७ ३०	० ४७ ०	० ४६ ३०	० ४६ ०	० ४५ ३०	१ गु. २ भा.	ऋ.
० ३७ ३०	० ३७ ०	० ३६ ३०	० ३६ ०	० ३५ ३०	० ३५ ०	० ३४ ३०	० ३४ ०	० ३३ ३०	० ३३ ०	० ३२ ३०	० ३२ ०	० ३१ ३०	० ३१ ०	० ३० ३०	१ गु. २ भा.	ऋ.
० २२ १०	० २२ ०	० २१ ३०	० २१ ०	० २० ३०	० २० ०	० १९ ३०	० १९ ०	० १८ ३०	० १८ ०	० १७ ३०	० १७ ०	० १६ ३०	० १६ ०	० १५ ३०	१ गु. २ भा.	ऋ.
० ७ ३०	० ७ ०	० ६ ३०	० ६ ०	० ५ ३०	० ५ ०	० ४ ३०	० ४ ०	० ३ ३०	० ३ ०	० २ ३०	० २ ०	० १ ३०	० १ ०	० ० ३०	१ गु. २ भा.	ऋ.
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

[illegible] अंशादिक दूणाकरि ६० में घटाय देतो दृष्टि होय १ इति दृष्टि-
[illegible] सारिणी.

भौम दृष्टिः

राशी	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
वृष	१	० ० ०	० ० ३०	० १ ०	० १ ३०	० २ ०	० २ ३०	० ३ ०	० ३ ३०	० ४ ०	० ४ ३०	० ५ ०	० ५ ३०	० ६ ०	० ६ ३०	० ७ ०
मि.	२	० १५ ०	० १६ ३०	० १८ ०	० १९ ३०	० २१ ०	० २२ ३०	० २४ ०	० २५ ३०	० २७ ०	० २८ ३०	० ३० ०	० ३१ ३०	० ३३ ०	० ३४ ३०	० ३६ ०
कर्क	३	० ० ०	० ५९ ०	० ५८ ०	० ५७ ०	० ५६ ०	० ५५ ०	० ५४ ०	० ५३ ०	० ५२ ०	० ५१ ०	० ५० ०	० ४९ ०	० ४८ ०	० ४७ ०	० ४६ ०
सिंह	४	० ३० ०	० २९ ०	० २८ ०	० २७ ०	० २६ ०	० २५ ०	० २४ ०	० २३ ०	० २२ ०	० २१ ०	० २० ०	० १९ ०	० १८ ०	० १७ ०	० १६ ०
क.	५	० ० ०	० २ ०	० ४ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २८ ०
तुल	६	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०
वृश्चि	७	१ ० ०	० ५९ ०	० ५८ ०	० ५७ ०	० ५६ ०	० ५५ ०	० ५४ ०	० ५३ ०	० ५२ ०	० ५१ ०	० ५० ०	० ४९ ०	० ४८ ०	० ४७ ०	० ४६ ०
धन	८	० ३० ०	० २९ ३०	० २९ ०	० २८ ३०	० २८ ०	० २७ ३०	० २७ ०	० २६ ३०	० २६ ०	० २५ ३०	० २५ ०	० २४ ३०	० २४ ०	० २३ ३०	० २३ ०
मक.	९	० १५ ०	० १४ ३०	० १४ ०	० १३ ३०	० १३ ०	० १२ ३०	० १२ ०	० ११ ३०	० ११ ०	० १० ३०	० १० ०	० ९ ३०	० ९ ०	० ८ ३०	० ८ ०
कुंभ	१०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मीन	११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

सौमदृष्टी.

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ७ ३०	० ८ ०	० ८ ३०	० ९ ०	० ९ ३०	० १० ०	० १० ३०	० ११ ०	० ११ ३०	० १२ ०	० १२ ३०	० १३ ०	० १३ ३०	० १४ ०	० १४ ३०	गु.१ भा.२	घ.
० ३७ ३०	० ३९ ०	० ४० ३०	० ४२ ०	० ४३ ३०	० ४५ ०	० ४६ ३०	० ४८ ०	० ४९ ३०	० ५१ ०	० ५२ ३०	० ५४ ०	० ५५ ३०	० ५७ ०	० ५८ ३०	गु.२ भा.२	ध.
० ४५ ०	० ४४ ०	० ४३ ०	० ४२ ०	० ४१ ०	० ४० ०	० ३९ ०	० ३८ ०	० ३७ ०	० ३६ ०	० ३५ ०	० ३४ ०	० ३३ ०	० ३२ ०	० ३१ ०	गु.१ ३ भा.१	क.
० १५ ०	० १४ ०	० १३ ०	० १२ ०	० ११ ०	० १० ०	० ९ ०	० ८ ०	० ७ ०	० ६ ०	० ५ ०	० ४ ०	० ३ ०	० २ ०	० १ ०	गु.१ भा.१	क.
० ३० ०	० ३२ ०	० ३४ ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	गु.२ भा.१	ध.
१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	० ० ०	
० ४५ ०	० ४४ ०	० ४३ ०	० ४२ ०	० ४१ ०	० ४० ०	० ३९ ०	० ३८ ०	० ३७ ०	० ३६ ०	० ३५ ०	० ३४ ०	० ३३ ०	० ३२ ०	० ३१ ०	गु.१ भा.१	क.
० २२ ३०	० २२ ०	० २१ ३०	० २१ ०	० २० ३०	० २० ०	० १९ ३०	० १९ ०	० १८ ३०	० १८ ०	० १७ ३०	० १७ ०	० १६ ३०	० १५ ०	० १५ ३०	गु.१ भा.२	क.
० ७ ३०	० ७ ०	० ६ ३०	० ६ ०	० ५ ३०	० ५ ०	० ४ ३०	० ४ ०	० ३ ३०	० ३ ०	० २ ३०	० २ ०	० १ ३०	० १ ०	० ० ३०	गु.१ भा.२	क.
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

गुरुदृष्टी॰

रा॰	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष॰	०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
वृष	१ ०	० ० ०	० ० ३०	० १ ०	० १ ३०	० २ ०	० २ ३०	० ३ ०	० ३ ३०	० ४ ०	० ४ ३०	० ५ ०	० ५ ३०	० ६ ०	० ६ ३०	० ७ ०
मि॰	२	० १५ ०	० १६ ०	० १७ ०	० १८ ०	० १९ ०	० २० ०	० २१ ०	० २२ ०	० २३ ०	० २४ ०	० २५ ०	० २६ ०	० २७ ०	० २८ ०	० २९ ०
कर्क	३	० ४५ ०	० ४५ ३०	० ४६ ०	० ४६ ३०	० ४७ ०	० ४७ ३०	० ४८ ०	० ४८ ३०	० ४९ ०	० ४९ ३०	० ५० ०	० ५० ३०	० ५१ ०	० ५१ ३०	० ५२ ०
सिं॰	४	१ ० ०	० ५८ ०	० ५६ ०	० ५४ ०	० ५२ ०	० ५० ०	० ४८ ०	० ४६ ०	० ४४ ०	० ४२ ०	० ४० ०	० ३८ ०	० ३६ ०	० ३४ ०	० ३२ ०
कन्या	५	० ० ०	० २ ०	० ४ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २८ ०
तुल	६	१ ० ०	० ५९ ३०	० ५९ ०	० ५८ ३०	० ५८ ०	० ५७ ३०	० ५७ ०	० ५६ ३०	० ५६ ०	० ५५ ३०	० ५५ ०	० ५४ ३०	० ५४ ०	० ५३ ३०	० ५३ ०
वृश्चि॰	७	० ४५ ०	० ४५ ३०	० ४६ ०	० ४६ ३०	० ४७ ०	० ४७ ३०	० ४८ ०	० ४८ ३०	० ४९ ०	० ४९ ३०	० ५० ०	० ५० ३०	० ५१ ०	० ५१ ३०	० ५२ ०
धन	८	१ ० ०	० ५८ ३०	० ५७ ०	० ५६ ३०	० ५४ ०	० ५२ ३०	० ५१ ०	० ४९ ३०	० ४८ ०	० ४६ ३०	० ४५ ०	० ४३ ३०	० ४२ ०	० ४० ३०	० ३९ ०
मकर	९	० १५ ०	० १४ ३०	० १४ ०	० १३ ३०	० १३ ०	० १२ ३०	० १२ ०	० ११ ३०	० ११ ०	० १० ३०	० १० ०	० ९ ३०	० ९ ०	० ८ ३०	० ८ ०
कुंभ	१०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मीन	११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

गुरुदृष्टी.

	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
रा १	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
२	० ७ ३०	० ८ ०	० ८ ३०	० ९ ०	० ९ ३०	० १० ०	० १० ३०	० ११ ०	० ११ ३०	० १२ ०	० १२ ३०	० १३ ०	० १३ ३०	० १४ ०	० १४ ३०	गु १ भा २	घ.
३	० ३० ०	० ३१ ०	० ३२ ०	० ३३ ०	० ३४ ०	० ३५ ०	० ३६ ०	० ३७ ०	० ३८ ०	० ३९ ०	० ४० ०	० ४१ ०	० ४२ ०	० ४३ ०	० ४४ ०	गु १ भा १	घ.
४	० ५२ ३०	० ५३ ०	० ५३ ३०	० ५४ ०	० ५४ ३०	० ५५ ०	० ५५ ३०	० ५६ ०	० ५६ ३०	० ५७ ०	० ५७ ३०	० ५८ ०	० ५८ ३०	० ५९ ०	० ५९ ३०	गु १ भा २	घ.
५	० ३० ०	० २८ ०	० २६ ०	० २४ ०	० २२ ०	० २० ०	० १८ ०	० १६ ०	० १४ ०	० १२ ०	० १० ०	० ८ ०	० ६ ०	० ४ ०	० २ ०	गु २ भा १	ऋ.
5	० ३० ०	० ३२ ०	० ३४ ०	० ३६ ०	० ३८ ०	० ४० ०	० ४२ ०	० ४४ ०	० ४६ ०	० ४८ ०	० ५० ०	० ५२ ०	० ५४ ०	० ५६ ०	० ५८ ०	गु २ भा १	घ.
७	० ५२ ३०	० ५२ ०	० ५१ ३०	० ५१ ०	० ५० ३०	० ५० ०	० ४९ ३०	० ४९ ०	० ४८ ३०	० ४८ ०	० ४७ ३०	० ४७ ०	० ४६ ३०	० ४६ ०	० ४५ ३०	गु १ भा २	ऋ.
८	० ५२ ३०	० ५३ ०	० ५३ ३०	० ५४ ०	० ५४ ३०	० ५५ ०	० ५५ ३०	० ५६ ०	० ५६ ३०	० ५७ ०	० ५७ ३०	० ५८ ०	० ५८ ३०	० ५९ ०	० ५९ ३०	गु १ भा २	घ.
९	० ३७ ३०	० ३६ ०	० ३४ ३०	० ३३ ०	० ३१ ३०	० ३० ०	० २८ ३०	० २७ ०	० २५ ३०	० २४ ०	० २२ ३०	० २१ ०	० १९ ३०	० १८ ०	० १६ ३०	गु २ भा.	ऋ.
१०	० ७ ३०	० ७ ०	० ६ ३०	० ६ ०	० ५ ३०	० ५ ०	० ४ ३०	० ४ ०	० ३ ३०	० ३ ०	० २ ३०	० २ ०	० १ ३०	० १ ०	० ० ३०	गु १ भा २	ऋ.
११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
१२	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

शनिदृष्टी.

रा.	अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
वृषभ	१	० ० ०	० २ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २६ ०	० २८ ०
मिथुन	२	१ ० ०	० ५९ ३०	० ५९ ०	० ५८ ३०	० ५८ ०	० ५७ ३०	० ५७ ०	० ५६ ३०	० ५६ ०	० ५५ ३०	० ५५ ०	० ५४ ३०	० ५४ ०	० ५३ ३०	० ५३ ०
कर्क	३	० ४५ ०	० ४४ ३०	० ४४ ०	० ४३ ३०	० ४३ ०	० ४२ ३०	० ४२ ०	० ४१ ३०	० ४१ ०	० ४० ३०	० ४० ०	० ३९ ३०	० ३९ ०	० ३८ ३०	० ३८ ०
सिंह	४	० ३० ०	० २९ ०	० २८ ०	० २७ ०	० २६ ०	० २५ ०	० २४ ०	० २३ ०	० २२ ०	० २१ ०	० २० ०	० १९ ०	० १८ ०	० १७ ०	० १६ ०
कन्या	५	० ० ०	० २ ०	० ४ ०	० ६ ०	० ८ ०	० १० ०	० १२ ०	० १४ ०	० १६ ०	० १८ ०	० २० ०	० २२ ०	० २४ ०	० २६ ०	० २८ ०
तुल	६	१ ० ०	० ५९ ३०	० ५९ ०	० ५८ ३०	० ५८ ०	० ५७ ३०	० ५७ ०	० ५६ ३०	० ५६ ०	० ५५ ३०	० ५५ ०	० ५४ ३०	० ५४ ०	० ५३ ३०	० ५३ ०
वृश्चि.	७	० ४५ ०	० ४४ ३०	० ४४ ०	० ४३ ३०	० ४३ ०	० ४२ ३०	० ४२ ०	० ४१ ३०	० ४१ ०	० ४० ३०	० ४० ०	० ३९ ३०	० ३९ ०	० ३८ ३०	० ३८ ०
धन	८	० ३० ०	० ३१ ०	० ३२ ०	० ३३ ०	० ३४ ०	० ३५ ०	० ३६ ०	० ३७ ०	० ३८ ०	० ३९ ०	० ४० ०	० ४१ ०	० ४२ ०	० ४३ ०	० ४४ ०
मकर	९	१ ० ०	० ५८ ०	० ५६ ०	० ५४ ०	० ५२ ०	० ५० ०	० ४८ ०	० ४६ ०	० ४४ ०	० ४२ ०	० ४० ०	० ३८ ०	० ३६ ०	० ३४ ०	० ३२ ०
कुंभ	१०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मीन	११	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०

शनिदृष्टी.

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९		
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु२	
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८		ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५		ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०		ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१		ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु२	
३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८		ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५		ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०		ऋ.
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	भा२	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु१	
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९		ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा१	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	गु३	
३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२		ऋ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	भा०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दृष्टी उदाहरण.

द्रष्टाचंद्र ८।५।२२।३५ यह दृश्यसूर्य्य ०।१३।१०।४२ इस्मेसे कम करके शेष ३।७।४८।७ यहहै. इसवास्ते चंद्र दृष्टी फल सारिणीमें ३ तृतीयराशी कोष्टकके सामने ७ अंशके नीचेका फल ०।४१।३० इस्को इष्ट अंशके नीचे कला ४८ विकला ७ है. इस्को राशीकोष्टक ३ इस्के सामनेका गुण १ इस्से गुणके कला ४८ विकला ७ इस्को गुणके नीचेका हर २ से भाग देकों २४।०३ यह विकलादि फल सारिणीमे ऋण लिख्याहै इसवास्ते पूर्वमे लियाजो फल ०।४१।३० इस्मेसे कम करके ०।४१।०६ यह चन्द्रकी सूर्य्यके ऊपर दृष्टी भई. इसीप्रमाण सर्वग्रहोंकी दृष्टी ग्रहोंपर औरभावपर वह वह ग्रह दृष्टी फल सारिणी परसे करना.

दूसरी रीति दृष्टी उदाहरण.

दृष्टादृश्यमेसे कम करके ३।७।४८।७ इसवास्ते ३ राशीके नीचेका अंक ४५ आगेकी राशी ४ इस्केनीचेकाअंक ३० इस्का अंतर १५ इसे भागा दि गुणके ११७।१।४५ इस्को ३० से भागदियातो ३।५४ अब अगली राशीकाअंक कमतीहै. इसवास्ते ४५मे ३।५४ कमकिया तो ४१।६ यह चंद्रकी दृष्टी भई. उपरराशीका स्थानमें ०० धरदेना तीसरी विधि दृष्टीकी अंशादिक ७।४८।७ अर्द्ध किया तो ३१५४।३ इस्को ४५ मे कमकियातो ०।४१।०६ पूर्व तुल्य चन्द्र दृष्टी भई.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	भृ.	शनि	ग्रहाः
० ० ०	० १८ ५४	० ३१ ३	० ० ०	० ४ ५८	० ० ०	० १५ ११	सूर्यः
० ४१ ६	० ० ०	० ४१ ९	० ३० ५८	० २८ २५	० १० ४७	० १५ ५८	चंद्रः
० २८ ५७	० ५ ४२	० ० ०	० ४८ ४३	० ० ०	१ ० ०	० ० ०	मंगलः
० ० ०	० ७ ५९	० १० १७	० ० ०	० ३३ ४३	० ० ०	० २७ १	बुधः
० ४७ २८	० ५८ ३५	० ० ०	० ५३ २६	० ० ०	० ३७ २७	० ४२ २५	बृह.
० ८ ७	० ० ०	० २८ ३६	० ० ०	० ५४ २२	० ० ०	० ३६ ४७	शुक्रः
० ० २४	० ४८ ५९	० ५५ २५	० ४४ २	० ४७ ३४	० ४३ ३४	० ० ०	शनिः
१ ३६ ४२	१ ६ २४	१ २० ४२	१ २४ २४	१ ५६ ४०	० ४८ १४	१ ४२ ११	शुभैक्यः
० [illegible] २१	१ [illegible] ३५	१ २६ २८	१ ३३ ४५	० ५२ ३२	१ ४३ २४	० १५ ११	पापै.

ग्रहोंका उच्चादि कोष्ठक.

ग्रहः		सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उच्च	रा.	०	१	९	५	३	११	६
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	रा.	६	७	३	११	९	५	०
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
मूलत्रिकोण	रा.	४	१ नं.	०	५ नं.	८	६	१०
	अं.	२०	३	२०	१५ ५	२०	२०	२०
स्वगृह		सिंह	कर्क	मे. वृ.	मि. कं.	ध. मी.	वृ. तु.	म. कुं.
नैसर्गिक मित्र		र. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
नैसर्गिक सम		बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
नैसर्गिक शत्रु		श. शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.
लिंग		पु.	स्त्री.	पु.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.

ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्री.

जिस ग्रहकी तात्काल मैत्री देखना होयतो वह ग्रह जिस स्थानमें होय उसस्थानसे २-३-४-१०-११ और १२ यह स्थानमें जो ग्रह होय सो अभीष्ट ग्रहके तत्काल मित्र होते हैं और १-५-६-७-८ और ९ यह स्थानमें जो ग्रह होयसो अभीष्ट ग्रहके शत्रु होते हैं.

ग्रहोंकी पंचधा अधिमैत्री.

ग्रहोंका नैसर्गिक मैत्र्यादि और तात्कालिक मैत्र्यादि इस्से ग्रहोंकी पंचधा अधि मैत्री उत्पन्न होती है सो इसप्रकार अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक मित्र होयतो अभीष्ट ग्रहका अधिमित्र होताहै. अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिकमें सम और तात्कालिक मित्रहोयतो अभीष्ट ग्रहका मित्र होताहै. अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्रऔर तात्कालिक शत्रु होयतो अभीष्ट ग्रहका सम होता. अभीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक सम और तात्कालिक शत्रु होयतो अभीष्ट ग्रहका शत्रु होताहै. और अभीष्ट ग्रहका नैसर्गिकशत्रुवातात्कालिक शत्रु होयतो अभीष्ट ग्रहका अधिशत्रुजानना + अत्रेदं ध्येयम् : सम- मित्र- मित्र+ मित्रमित्र अधिमित्र + मित्रशत्रु सम- समशत्रु शत्रु- शत्रुशत्रु अधिशत्रुः ॥ इति ॥

श्लोक- नीचोनोच्चगणाच्चुतः षडधिकश्चेत्सड्हृद्दोच्चंबलं
स्वर्क्षेर्द्धंसमभेष्टमास्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलं ॥
मित्रर्क्षेधिरधीष्टभेत्रयड्भाशा वैरिभेष्टयंशको-
दंत्तांशोध्यरिभेगृहादिपवसात् खेटस्यसप्तैक्यजं ॥५॥

सप्तवर्ग बल मिदम् .

स्वक्षेत्रं	ऽमित्रं	मित्र	सम	शत्रु	ऽशत्रु	मूलत्रि.	
० ३० ०	० २२ ३०	० १५ ०	० ७ ३०	० ३ ४५	० ५२ ३०	० ४५ ०	बल.

अन्वयः- नीचो नोग्रहश्चेत्सडधिको द्वादशराशिभ्यः शुद्धः षड्हृतउच्चंबलंस्यात् उच्च संबंधी बल मित्यर्थः अत्रेदंध्येयं उच्चोनग्रहेशेषं षड्राशिस्तदा षडभागेरूपं बलं पूर्णबलमितिचेत्षड्भालमस्तदा रूपस्थाने शून्यं स्थाप्यंपुनः शेषं राश्यादिकं षष्टयासंगुण्योपरि षड्भक्तः संलब्धं कला स्थाने स्थाप्यः पुनः शेषं षष्टया संगुणा षड्भिर्भागेर्विकला स्थाने स्थाप्यः एवं अंशाद्य मुच्चबलंस्यात् + स्वर्क्षेर्द्धमित्यस्यार्थः स्वर्क्षे स्वगृहे ग्रहे संति अर्द्ध रूपार्द्ध बलंलेख्यम् समराशिस्थेऽष्टमांशोबलम् मूलत्रिकोणेत्रयश्चरणाः मित्रर्क्षेचतुर्थांशोबलं अधिमित्रर्क्षेत्रयोऽष्टमांशाः शत्रुराशिस्थेषोडशांशबलं अधिशत्रुराशिस्थे द्वात्रिंशदंशोबलं स्यादिति सर्वत्रक्रिया पदं सर्वत्ररूपस्यैवार्द्धादिकंग्राह्यं अत्रस्वर्क्षमित्युपलक्षणंकिंतु स्वराश्यादि स्थितेऽप्यर्द्धं बलंग्राह्यंकुतः इत्यतः आह ग्रहादिपवसादिति आदिशब्दाद्धोराद्रेष्काणादयोग्राह्याः गृहादीन् यांतियेते गृहादियाः ग्रहादि सप्तवर्गस्वामिनोयेसन्ति तद्दशात्स्वर्क्षेर्द्धमित्यादीनिखेटस्यसप्तवर्ग बलानि ग्राह्याणि सप्तानामैक्याज्जायत इति सप्तैक्यजम् .

अर्थः- जिस ग्रहका उच्चबल [illegible] [illegible] उस ग्रह में उसी उच्ची ग्रहका नीच घटाय देना शेषको ६ से भाग देना तो उच्च संबंधी बल होताहै. कदाचित् शेष ६ राशीसे अधिक होयतो १२ [illegible] टायके शेषको ६ से भाग देना यदि शेष ठीक ६ बचे तो ६ [illegible] पूर्णबल अर्थात् रूप १ बल होगा जब ६ राशीसे कम रहेगा तब राशीसें ६ से भाग देनेसे अंशस्थानमें शून्य फल आवेगा पुनः [illegible] ६० से गुण देना अंश दूना करके युक्त करना फिर ६ से भाग देना. जो पावेसो कला स्थानमें रखना. शेषको ६० [illegible]

देना विकला दूना युक्त करना ६ से भाग देना लब्धि विकला होगी। अथवा नीच ग्रहांतरका कला करना १८० से भाग देना तो कलादि सुगम रीतिसे उच्चबल होगा. अथवा नीच ग्रहांतर जो होय उस्की राशीको १० से गुणना अंश कला विकलाको २० से गुणना तो उच्चबल होता है.

जो ग्रह स्वगृहमें होय उस्का अर्द्ध ०।३०।० बल समके गृहमें होयतो अष्टमांश ०।७।३० मूल त्रिकोणका होयतो चतुर्थांश त्रिगुणित ०।४५।० मित्रग्रहका होयतो चतुर्थांश ०।१५।० अधिमित्रका होयतो अष्टमांश त्रिगुणित ०।२२।३० शत्रुगृहमें होयतो षोडशांश ०।३।४५ अधिशत्रुका होयतो बत्तीसावां अंश ०।१।५२ यह बल ग्रह होरादि सप्तवर्गके स्वामीके अनुरोधसे कहिये स्वामी अपने गृहमें होयतो अर्द्धबल और स्वामी समगृहमें होयतो अष्टमांश बल इत्यादि जानना. यह सप्तवर्गज बल एकत्र करनेसे ग्रहोंका सप्त योगज बल होता है.

टीपः- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ मीन यह १२ राशी हैं. इस्मेसे मेष मिथुन सिंह तुला धन कुंभ यह विषम ६ राशी और वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर मीन यह ६ राशी सम होती हैं. यह सप्तवर्ग गृह होरा द्रेष्काण सप्तमांश नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश होते हैं. १ गृह (राशी कहिये ३० अंश इस्के स्वामी पूर्वमें कहे हैं होरा कहिये राश्यर्द्ध १५ अंश) विषम राशीमें प्रथम होराका स्वामी सूर्य और द्वितीय होराका स्वामी चंद्र और समराशी प्रथम होराका स्वामी चन्द्र द्वितीय होराका स्वामी सूर्य २ द्रेष्काण कहिये राशीका तृतीयांश १० अंश इसवास्ते यह तीन है. प्रथम द्रेष्काणका स्वामी गृहाधिप द्वितीय द्रेष्काणका स्वामी ग्रहसे पंचम राश्य धिप तृतीय द्रेष्काणका स्वगृहसें नवमराश्य धिप. ४ सप्तमांश कहिये राशीका सप्तमांश ४ अंश १७ कला विषमराशीमें अपने गृहसे ७ राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपती होते हैं. और समराशीमें अपने गृहके सप्तम राशीसे सात राशीके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपती होते हैं. ५ नवमांश कहिये राशीका नवमांश ३ अंश २० कला मेष सिंह धन यह गृह होयतो मेषसे ९ राशीके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं वृष कन्या मकर यह गृह होय. तो मकर राशीसे ९ राशीका स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं.

मिथुन तुला कुंभ यह राशी होयतो तुला राशीसे ९ राशीके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं. कर्क वृश्चिक मीन यह राशी होयतो कर्क राशीसे ९ राशीका स्वामी नवांशाधिपती होते है.

६ द्वादशांश कहिये राशीका द्वादश भाग २ अंश ३० कला स्वस्वराशीमें स्वस्वगृहसे १२ राशीके स्वामी क्रमसे द्वादशांशपती होते हैं.

७ त्रिंशांश कहिये राशीका त्रिंशद्भाग १ अंश विषम राशीमें प्रथम ५ अंशका स्वामी भौम आगे ५ अंशका स्वामी शनि आगे ८ अंशका स्वामी गुरु आगे ७ अंशका स्वामी बुध आगे ५ अंशका स्वामी शुक्र सम राशीमें उलटे रीतिसे ५ का शुक्र ७ का बुध ८ का गुरु आगे ५ का शनि आगे ५ का भौम यही रीतिसे जानना.

होरालग्नम्.	द्रेष्काणलग्नम्.	सप्तमांशक.
६ चं.बु.शु. ७ बु.श. मं. ५ सू. ४ ३ ८ २ ९ ११ १ १० १२	८ बु रा ६ ९ मं श शु ७ ५ सू १० चं ४ ११ १ ३ १२ २	१० बु ८ ११ ९ ७ मं १२ ६ श १ रा ३ चं ५ गु २ ४ सू

नवमांशक ल.	द्वादशांशक ल.	त्रिंशांशक ल.
श मं ११ गु १० ८ ९ ७ १२ रा ६ १ ३ शु २ मं ५ सू.	चं. ११ रा मं गु ९ बु १२ १० ८ श १ ७ २ ४ ६ सू ३ ५	१२ १० बु मं १ श ११ ९ सू २ ८ ३ ५ ७ शु ४ चं रा ६

उच्चनीचप्रकरण- अजवृषभमृगांगनाकुलीराझषवणिजौच दिवाकरादितुंगाः दशशिखिमनुयुक्तिथींद्रियांशैस्त्रिनवक विंशतिभिश्चतेस्तनीचाः

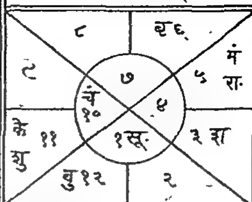
निसर्ग मैत्री चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह
चं.मं.गु.	सू.बु.	चं.गु.सू.	शु.सू.	सू.चं.मं.	बु.श.	शु.बु.	मित्र:
बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.	मं.गु.	गु.	सम.
शु.श.	०	बु.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	शत्रु.

तात्काल मैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
शु बु चं श	सू बु शु	श बृ	सू चं शु श	मं श	सू बु चं	मं सू बु बृ	मित्र
मं बृ	श मं बृ	शु चं बु सू	मं बृ	सू चं शु बु	मं सू श	शु चं	शत्रु

जन्मलग्नम्.



पंचधा मैत्रीचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहः
बु.	शु.	श.	श.	श.	०	बृ.	मित्रः
चं.	सू. बु.	बृ.	सू. शु.	मं.	बु.	बु.	ऽधिमित्र
श. मं. बृ. शु.	सू. बु.	सू. चं.	चं.	सू. चं.	सू. चं. श.	सू. शु. मं.	सम
०	बृ. मं. श.	शु.	मं. बृ.	०	मं. बृ.	०	शत्रु
०	०	बु.	०	बु. शु.	०	चं.	ऽधिशत्रुः

बलाध्याय-उच्चबल सारिणी प्रवेश.

सूर्य्यादि ७ ग्रहोंका १२ राशी कोष्टक लिखके वह वह ग्रहके सामने राशीकोष्ठकके नीचे रूप कलादि बल लिखा है उस्मेंसे ग्रहका जो इष्ट राशी कोष्ठक होय उस्के नीचेका फल लेके राशी कोष्टकके नीचे ३० अंशकोष्ठक और ६० कला कोष्ठक लिखा है उस्मेंसे ग्रहोंके जो इष्टांश और कला होय उस्के नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके वह धन किंवा ऋण राशी फलमें लिखा है उस्के प्रमाण लिया जो राशी फल उस्से युक्त करना किंवा कम करना तो उच्चबल होता है परंतु जब ग्रहोकी उच्चनीच राशी आदती है तब फल लेनेकी जुदी रीति है सो ऐसी कि पृथक् पृथक् ग्रहोंका उच्च राशी फलमे उक्तोच्चांश लिखे हैं उतने अंशतक मात्र वह फल अंशादि धन आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सारिणी मेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण उच्च राशी फलमें न युक्त करके रूप (८१) बलमें कम करना तो उच्चबल होता है. तैसे ही नीच राशी फलमें उक्त नीचांश लिखे हैं उतने अंशतक मात्र वह फल ऋण आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सारणीमेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण नीच राशी फलमें कम न करते जो फल आवे वही उच्चबल जानना.

उच्चफलसारिणी राशीफल.

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	रा.
सू.	५६।१० ४० ध.	५२ २० ऋ.	४२ २० ऋ.	३३ २० ऋ.	२३ २० ऋ.	१३ २० ऋ.	१०३ २० ऋ.	६ ४० ध.	१६ ४० ध.	२६ ४० ध.	३६ ४० ध.	४६ ४० ध.	सू.
चं.	४९ ० ध.	५९ ० ध.	५१ ० ऋ.	४१ ० ऋ.	३१ ० ऋ.	२१ ० ऋ.	११ ० ऋ.	१ ० ऋ.	९ ० ध.	१९ ० ध.	२९ ० ध.	३९ ० ध.	चं.
मं.	२९ २० ऋ.	२९ २० ऋ.	१९ २० ऋ.	९-२९ २० ऋ.	० ४० ध.	१० ४० ध.	२० ४० ध.	३० ४० ध.	४० ४० ध.	५० २९ ४० ध.	५९ २० ऋ.	४९ २० ऋ.	मं.
बु.	५ ० ध.	१५ ० ध.	२५ ० ध.	३५ ० ध.	४५ ० ध.	५५ १५ ० ध.	५५ ० ऋ.	४५ ० ऋ.	३५ ० ऋ.	२५ ० ऋ.	१५ ० ऋ.	५।१५ ० ऋ.	बु.
गु.	२८ २० ध.	३८ २० ध.	४८ २० ध.	५८ २० ध.	५१ ४० ऋ.	४१ ४० ऋ.	३१ ४० ऋ.	२१ ४० ऋ.	११ ४० ऋ.	१ ५ ४० ऋ.	८ २० ध.	१८ २० ध.	गु.
शु.	५९ ० ऋ.	४९ ० ऋ.	३९ ० ऋ.	२९ ० ऋ.	१९ ० ऋ.	९ २५ ० ऋ.	१ ० ध.	११ ० ध.	२१ ० ध.	३१ ० ध.	४१ ० ध.	५१ २५ ० ध.	शु.
श.	६ २० ३० ऋ.	३ २० ध.	१३ २० ध.	२३ २० ध.	३३ २० ध.	४३ २० ध.	५२ ३० २० ध.	५६ ४० ऋ.	४६ ४० ऋ.	३६ ४० ऋ.	२६ ४० ऋ.	१६ ४० ऋ.	श.

अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० ०	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	० ०

कलाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
० ०	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
५ ०	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१० ०	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०
[illegible]	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
१५ ०	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०

उदाहरणम्.

इहां सूर्य्य ०।१३।१०।४२ है इसवास्ते ०० राशीकोष्ठकके नीचेका सूर्य्यका फल ०।५६।४० यह लेके अनंतर १३ अंशकोष्ठकके नीचेका कलादि फल ४।२० और कला १० कोष्ठकके नीचेका फल ३ यह विकलामें युक्त करके यह राशी फलमें धन लिखाहै इसवास्ते ०५६।४० यहराशीफलमें युक्तकरके ०१।०१।२ अबइहां रवि उच्च राशीका है इसवस्तेअर१नयुक्त करके ०।१।२ यह इस्को रूप १ में कनकरके०।५८।५७ यह सूर्यका उच्च बल इसी प्रमाण चंद्रादि द्वितीय सारिणी प्रवेश. जिस ग्रहका उच्च बल बनावना होय उसग्रहमें उसी ग्रहकानीच कम करनाजो ६ राशीसे ज्यादा होयतो १२ राशीमें कम करकेजो शेषराश्यंक होयउस्केनीचेका अंशादि फल लेके उस्केंनीचेजोअंशकला होय उस्का फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंका उच्चबल होता है. अंशकला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणीमेंसे ना.

उच्च राशीफल.							
०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	०	०	०	०	०	१	
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	फ.
०	०	०	०	०	०	०	

उदाहरणम्

सूर्य्य०।१३।१०।४२यह इस्में इस्कानीच ६।१०।००कम कियातो ६।३।१०।४२ यह ६ सेअधिक है इसवास्ते १२ में कम करके ५।२६।४९।१८ है. इसवास्ते ५ राशी कोष्ठकके नीचेका फल ०।५०।० पहलेके अनंतर २६ अंशकोष्टक पूर्वोक्तिके नीचेका कलादि फल ८।४० और कला ४९का नीचे विकलादि फल १६।२० यह एकत्र करके ८।५६ यह राशीफल ।५०।० इस्मे युक्त कियातो ०।५८।५६ यह सूर्यका उच्चबल प्राप्त ऐसी रीतीसे चंद्रादिकोंका करनातो स्पष्ट बल होता है राशी फलमेंअंश कला फल सदा युक्त करना.

उच्चबल चक्रम्.							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहः
०	०	०	०	०	०	०	
५८	२०	४	२	३८	४९	१७	फल
५६	४७	२१	७	५५	५८	४७	

मेषराशीसप्तवर्गपति चक्रम्

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्क	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१० मं १	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
सप्तम	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	४ १७ मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	८ ३४ शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	१२ ५१ बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
नवमां	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	१० बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१३ २० चं ४	सू ५	सू ५	सू ५
द्वादश	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्क	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्तम	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१७ ८ चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	२१ २५ सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	२५ ४२ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३० शु ७
नवमां	सू ५	सू ५	सू ५	१६ ४० सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६ ४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
द्वादश	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

विशेष नीचेतंतुमहं सप्तांशैकवर्गाद्विशेषवत्। भागोक्तंज्योतिर्गांकफलमुपचलंतवेत् ॥१॥

वृषराशीसप्तवर्ग पति चक्रम्.

अं	३०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५
श	०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गृह	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेका	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सम.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	४।१७ मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	८।३४ गु ९	श १०	श १०	श ११	श १०	श १०	श १०	श १०	१२।५१ श १०	श ११	श ११	श ११	श ११
नव	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	३।२० श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	६।४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३।२० मं १	शु २	शु २	शु २
द्वाद.	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
त्रिंशा	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

अं	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०
श	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गृह	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेका	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
सम.	श ११	श ११	श ११	श ११	१७।८ श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२१।२६ गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२५।४३ मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	३० शु २
नव.	शु २	शु २	शु २	१६।४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	२३।२० चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	२६।४० सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
द्वाद.	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
त्रिंशा	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

मिथुनराशीसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५
द्रेष्का	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सम	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	४ १७ बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	८ ३४ चं ४	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	१२ ५१ स ५	स ६	स ६	स ६	स ६
नव.	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३ २० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	६ ४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३ २० श १०	श १०	श १०	श १०
द्वाद.	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	स ५	स ५	स ५	स ५	स ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सम	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१७ ८ बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२१ २५ शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२५ ४२ मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
नव.	श ११	श ११	श ११	१६ ४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३ २० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वाद.	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बु	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

कर्कराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	०।३०	१।०	१।३०	२।०	२।३०	३।०	३।३०	४।०	४।३०	५।०	५।३०	६।०	६।३०	७।०	७।३०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
सप्त	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १० / शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११
नव	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४ / सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५ / बु ६	बु ६
द्वाद	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशा	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६

अंश	८।०	८।३०	९।०	९।३०	१०।०	१०।३०	११।०	११।३०	१२।०	१२।३०	१३।०	१३।३०	१४।०	१४।३०	१५।०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
सप्त	शा ११	शा ११	शा ११ / गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२ / मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
नव	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७ / मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
द्वाद	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
त्रिंशा	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

अंश	१५।३०	१६।०	१६।३०	१७।०	१७।३०	१८।०	१८।३०	१९।०	१९।३०	२०।०	२०।३०	२१।०	२१।३०	२२।०	२२।३०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
सप्त	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १ / शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २ / बु ३	बु ३	बु ३
नव	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८ / गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०
द्वाद	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशा	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०

अंश	२३।०	२३।३०	२४।०	२४।३०	२५।०	२५।३०	२६।०	२६।३०	२७।०	२७।३०	२८।०	२८।३०	२९।०	२९।३०	३०।०
ग्रह	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
सप्त	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३ / चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
नव	शा १०	शा १० / शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११ / गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
द्वाद	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
त्रिंशा	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

सिंहराशिसप्तवर्ग पति चक्रम्

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
सप्त	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	४।१७ सू बु	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	८।३४ बु शु	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१२।५१ शु मं	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
नव	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	३।२० मं शु	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	६।४० शु बु	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	१३।२० चं सू	सू ५	सू ५	सू ५
द्वाद	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
सप्त	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	१७।८ मं गु	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	२१।२५ गु श	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	२५।४२ श श	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
नव	सू ५	सू ५	सू ५	१६।४० सू बु	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	२३।२० शु मं	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२६।४० मं गु	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
द्वाद	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
त्रिंशा	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

कन्याराशिसप्तवर्गपति चक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
गृह	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्क	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
सप्त	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	[illegible]	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	[illegible]	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	[illegible]	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
नव	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	[illegible]	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	[illegible]	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	[illegible]	शु २	शु २	शु २
द्वाद	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
त्रिंशा	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
गृह	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्क	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
सप्त	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	[illegible]	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	[illegible]	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	[illegible]	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
नव	शु २	शु २	शु २	[illegible]	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	[illegible]	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	[illegible]	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
द्वाद	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
त्रिंशा	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

तुलराशिसप्तवर्ग पति चक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
सम	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	४।१७ शु मं	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	८।३४ मं गु	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	१२।५१ गु श	श १०	श १०	श १०	श १०
नवा	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३।२० शु मं	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	६।४० मं गु	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३।२० श १० श ११	श ११	श ११	श ११
द्वाद	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
त्रिंशां	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सम	श १०	श १०	श १०	श १०	१७।८ श	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	२१।२५ श गु	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	२५।४२ गु मं	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
नवा	श ११	श ११	श ११	१६।४० श गु	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३।२० मं शु	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६।४० शु बु	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वाद	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
त्रिंशां	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु २	बु ३	बु २	बु २	बु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु २	बु २	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

वृश्चिकराशिसप्तवर्गपति चक्रम्.

अंश	०।३०	१।०	१।३०	२।०	२।३०	३।०	३।३०	४।०	४।३०	५।०	५।३०	६।०	६।३०	७।०	७।३०	८।०	८।३०	९।०	९।३०	१०।०	१०।३०	११।०	११।३०	१२।०	१२।३०	१३।०	१३।३०	१४।०	१४।३०	१५।०
ग्रह	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
सप्त	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु / बु	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु / चं	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं / सू	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
नवां	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं / सू	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू / बु	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु / मं	मं ८	मं ८	मं ८
द्वाद	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
त्रिंशा	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२

अंश	१५।३०	१६।०	१६।३०	१७।०	१७।३०	१८।०	१८।३०	१९।०	१९।३०	२०।०	२०।३०	२१।०	२१।३०	२२।०	२२।३०	२३।०	२३।३०	२४।०	२४।३०	२५।०	२५।३०	२६।०	२६।३०	२७।०	२७।३०	२८।०	२८।३०	२९।०	२९।३०	३०।०
ग्रह	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
सप्त	र ५	र ५	र ५	र ५	र / बु	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु / शु	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु / मं	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
नवां	मं ८	मं ८	मं ८	मं / बृ	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श / श	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श / बृ	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२
द्वाद	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
त्रिंशा	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

धनराशिसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १
सप्तम	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९ श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १० श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११ बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२
नवा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १ शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २ बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४ र ५	र ५	र ५	र ५
द्वाद	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
त्रिंशा	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
सप्तम	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२	बृ १२ मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १ शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २ बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
नवा	र ५	र ५	र ५	र ५ बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७ मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८ बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९
द्वाद	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
त्रिंशा	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बृ ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

मकरराशिसप्तवर्गपति चक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २
सप्त	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	४ १७ सू	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	८ ३४ बु ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	१२ ५१ शु	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
नवां	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	३ २० शा १०	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	६ ४० गु ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१३ २० शु १	शु २	शु २	शु २
द्वाद	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	शा ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
त्रिंशां	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०
होरा	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५
द्रेष्का	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
सप्त	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	१७ ८ मं शु	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	२१ २५ गु मं	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	२५ ४२ शा गु	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०	शा १०
नवां	शु २	शु २	शु २	१६ ४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	२३ २० चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	२६ ४० सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६
द्वाद	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

गु | गु | गु | गु | गु | गु | शा ... शा | शा | शा | शा | मं | मं | मं | मं | मं | मं | मं | मं | मं
१२ | १२ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८

कुंभराशिसप्तवर्गपति चक्रम्

अंश	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५
कला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
सप्तम	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	४।१७ श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	८।३४ गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	१२।५१ मं १	शु २	शु २	शु २	शु २
नवां	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	३।२० शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	६।४० मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	१३।२० श १०	श ११	श ११	श ११
द्वाद	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
त्रिंशां	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९

अंश	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०
कला	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गृह	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७
सप्तम	शु २	शु २	शु २	शु २	१७।८ शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	२१।२५ बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	२५।४२ चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
नवां	श ११	श ११	श ११	१६।४० श ११	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	२३।२० मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	२६।४० शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३
द्वाद	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०
त्रिंशां	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७

मीनराशीसप्तवर्गपतिचक्रम्.

अंश	० ३०	१ ०	१ ३०	२ ०	२ ३०	३ ०	३ ३०	४ ०	४ ३०	५ ०	५ ३०	६ ०	६ ३०	७ ०	७ ३०	८ ०	८ ३०	९ ०	९ ३०	१० ०	१० ३०	११ ०	११ ३०	१२ ०	१२ ३०	१३ ०	१३ ३०	१४ ०	१४ ३०	१५ ०
ग्रह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
द्रेष्का	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४
सप्तमांश	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	[illegible]	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	[illegible]	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	[illegible]	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९
नवांश	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	[illegible]	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	[illegible]	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	[illegible]	मं ८	मं ८	मं ८
द्वादशांश	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	मं १	मं १	मं १	मं १	मं १	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	बु ३	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
त्रिंशांश	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	शु २	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२

अंश	१५ ३०	१६ ०	१६ ३०	१७ ०	१७ ३०	१८ ०	१८ ३०	१९ ०	१९ ३०	२० ०	२० ३०	२१ ०	२१ ३०	२२ ०	२२ ३०	२३ ०	२३ ३०	२४ ०	२४ ३०	२५ ०	२५ ३०	२६ ०	२६ ३०	२७ ०	२७ ३०	२८ ०	२८ ३०	२९ ०	२९ ३०	३० ०
ग्रह	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
होरा	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५	र ५
द्रेष्का	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	चं ४	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८
सप्तमांश	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	[illegible]	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	[illegible]	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	[illegible]	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
नवांश	मं ८	मं ८	मं ८	[illegible]	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	[illegible]	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११	[illegible]	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२
द्वादशांश	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	बु ६	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	शु ७	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	गु ९	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श ११	श ११	श ११	श ११	श ११
त्रिंशांश	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	गु १२	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	श १०	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८	मं ८

यह चक्रोंमें सप्तवर्गपति मेषादि १२ राशीका जुदाजुदा अंशोंका तीस तीस कलाके अंतरसे ६० कोष्ठक लिखके उस्के नीचे सप्तवर्गके सामने उनके स्वामी लिखके उनके स्वगृहके स्पष्टताके वास्ते ग्रहके पास स्वगृहका राश्यंक लिखा है इस परसे सुलभ रीतिसे सप्तवर्गपति मालूम होते हैं.

उदाहरणम्

इहां सूर्य्य ०।१२।१०।४२ है इसवास्ते मेष राशीका १२ अंश१० कला कोष्ठकको नीचेके सप्त वर्ग पति आये.

गृ॰प॰ हो॰प॰ द्रे॰प॰ स॰प॰ न॰प॰ द्वा॰प॰ त्रिं॰प॰ इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका
मं॰ सू॰ सू॰ चं॰ चं॰ बु॰ श॰ राश्यादिकसे चक्र परसे सप्तवर्ग पति होते हैं. इसी रीतिसे भाव सप्तवर्ग पतिजानना.

ग्रहसप्तवर्गपतिचक्रम्. आश्रयगुणार्थ...

ग्र॰	सूर्य्य॰		चन्द्रः		भौमः		बुधः		गुरुः		भृगुः		शनिः		४ ग्रहाः
स्वगृह	मं	स	श	श	सू	स	य	श	बु	ऽश	श	स	बु	भौ	स्वक्षेत्र.
होरा	सू	ग्व	चं	स्व	सू	स	सू	ऽमि	चं	स	च	स	सू	स	होरा.
द्रेष्का॰	सू	स्व	श	श	घ	ऽमि	मं	श	बु	ऽश	शु	स्व	शु	स	द्रेष्काण
सप्त	च	ऽमि	सू	ऽमि	शु	श	श	मि	म	ऽमि	सू	स	बु	ऽमि	सप्तमांश.
नवमा॰	चं	ऽमि	श	श	च	स	श	मि	बृ	स्व	बु	ऽमि	श	स्व	नवमांश.
द्वाद॰	बु	ऽमि	बृ	श	बृ	ऽमि	मं	श	बृ	स्व	बृ	श	मं	सू	द्वादशांश.
त्रिंशा॰	बृ	सु	बु	ऽमि	बृ	ऽमि	श	ऽमि	बु	ऽशा	बु	स्व	[illegible]	[illegible]	त्रिंशांश.

भावसप्तवर्गपतिचक्र.

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वगृ॰	शु॰	मं॰	बु॰	श॰	श॰	बु	मं॰	शु॰	बु॰	चं॰	सू॰	गु॰
होरा	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰	सू॰	च	सू॰	चं॰	सू॰	चं॰
द्रेष्का	शु॰	बृ॰	म॰	शु॰	बु॰	चं॰	म॰	बु॰	शु॰	मं॰	बृ॰	श
सप्त	बृ॰	चं॰	श॰	बु॰	म॰	मं॰	बु	श॰	सू॰	बृ॰	शु॰	शु॰
नव	बृ॰	शु॰	च	मं॰	श॰	बु॰	बु॰	मं॰	श॰	शु॰	चं॰	म
द्वाद	ग॰	बृ॰	मं॰	बु॰	बु॰	चं॰	च॰	बु॰	शु॰	बृ॰	बृ॰	श
त्रिंश	श॰	बु॰	बृ॰	बृ॰	बृ॰	बु॰	श॰	बु	बृ	बृ॰	बृ॰	ब

सप्तवर्गबलोदाहरणम्.

सूर्य्यका गृहपति भौम समके क्षेत्रमे है इसवास्ते गृहबल अष्टमांश ०।७।३० होरापति सूर्य्य समके क्षेत्रमे है इसवास्ते होराबल ० अष्टमांश ०।७।३० द्रेष्काणपति सूर्य्य समके क्षेत्रमें है इसवास्ते द्रेष्काण बल अष्टमांश ०।७।३० सप्तमांश पति चन्द्र शत्रुक्षेत्रमे है इसवास्ते सप्तमांश बल षोडशांश ०।

३।४५ नवमांशपति चन्द्र शत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते नवमांश बल षोडशांश ०।३।४५ द्वादशांशपति बुध शत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते द्वादशांश बल षोडशांश ०।३।४५ त्रिंशांशपति गुरु अधिशत्रु क्षेत्रमे है इसवास्ते त्रिंशांशबल ०।१।५२॥ सूर्य्यके सप्तवर्गका बलका योग ०।३५।३७॥ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका सप्तवर्ग बल होता है.

अथ- ग्रहसप्तवर्गबलचक्रम्.

सू·	चं·	मं·	बु·	बृ	शु·	श·	ग्रहाः
मं स ० ७ ३०	श [illegible] ० २२ ३०	सू स ० ७ ३०	बृ ऽश ० १ ५२॥	बु श ० ३ ४५	श ऽमि ० २२ ३०	बु श ० ३ ४५	गृह
सू स ० ७ ३०	चं श ० ३ ४५	सू स. ० ७ ३०	सू स ० ७ ३०	चं श ० ३ ४५	चं श ० ३ ४५	सू स ० ७ ३०	होरा
सू स ० ७ ३०	श· ऽमि ० २२ ३०	बृ ऽश ० १ ५२॥	मं स ० ७ ३०	बु श ० ३ ४५	शु स ० ७ ३०	शु स ० ७ ३०	द्रेष्काण
चं श ० ३ ४५	सू स ० ७ ३०	शु स ० ७ ३०	श ऽमि ० २२ ३०	म श ० ७ ३०	सू स ० ७ ३०	बु श ० ३ ४५	सप्तमां·
चं श ० ३ ४५	श ऽमि ० २२ ३०	चं श ० ३ ४५	श ऽमि ० २२ ३०	बृ ऽश ० १ ५२॥	बु श ० ३ ४५	श ऽमि ० २२ ३०	नवमांश.
बु श ० ३ ४५	बृ ऽश ० १ ५२॥	बृ ऽश ० १ ५२॥	म स ० ७ ३०	बृ ऽश ० १ ५२॥	बृ ऽश ० १ ५२॥	मं स ० ७ ३०	द्वादशां·
बृ ऽश ० १ ५२॥	बु श ० ३ ४५	बृ ऽश ० १ ५२॥	श ऽमि ० २२ ३०	बु श ० ३ ४५	शु स ० ७ ३०	म स ० ७ ३०	त्रिंशांश
० ३५ ३७॥	१ २४ २२॥	० ३१ ५२॥	१ ३१ ५२॥	० ६ ५	० ५४ २२॥	१ ० ०	ऐक्य

दु
श्लोक

शुक्रेन्दू समभांशकेहि विषमेन्येदद्युरंघ्रिंबलम्
केन्द्राद्येषु चरूपकार्द्धचरणान्यच्छंतिखेटाः क्रमात् ॥
स्त्रीखेटौ चरमेनराः प्रथमके क्लीबोऽत्र मध्ये तथा
द्रेष्काणे वितरंति पादमुदितं स्थानाख्यवीर्य्यं त्विदम् ॥६

अन्वयः- समभांशके स्थितौ शुक्रेन्दू हीति निश्चयेनांघ्रिं चतुर्थांशबलं दद्यातां अन्येरवि भौम बुध गुरु शनयो विषम भांशे स्थितास्तदांघ्रिबलं दद्युः भ-
शब्दाच्च भांशम् विषमा राशयः १।३।५।७।९।११ शेषाः समा इति केन्द्रादि-
षु केन्द्रपणफरापोक्लिमेषु स्थिताः खेटाः क्रमाद्रूपकार्द्धचरणान्बलानि यच्छंति
ददन्ति एतदुक्तं भवति केन्द्रे ग्रहे सति रूपं १ बलं पणफरे अर्द्धं ०।३०। बलं
आपोक्लिमे चतुर्थांशं ०।१५। बलं यच्छंति स्त्रीखेटौ शशिशुक्रौ तृतीय द्रेष्का·

णे वर्त्तमानौ पादं बलं दत्तः नराः सूर्य्य मंगल गुरवः प्रथम द्रेष्काणे पादं बलं वितरंति क्लीबौ बुधशनि मध्ये द्रेष्काणे स्थितौ पादं बलं दत्तः इदं यत् पंचधा बलमुदितं तत्स्थानाख्यं वीर्य्यं पंचानां योगे स्थान बलं स्यादित्यर्थः ॥

अर्थः- शुक्र चंद्र यह समराशीमें किंवा समांशमें होयतो और सूर्य्य मंगल बुध गुरु शनि यह विषम राशीमें वं विषमांशमें होयतो चरण ०।१५।० बल देते हैं- ग्रह केन्द्रमें कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें होयतो रूप १ बल देते हैं ग्रह पणफरमें कहिये द्वितीय पंचम अष्टम एकादश स्थानमें होयतो अर्ध ०।३०।० बल देते हैं ग्रह आपोक्लिममें कहिये तृतीय षष्ठ नवम द्वादश स्थानमें होयतो चरण ०।१५।० बल देते हैं- पुरुष ग्रह प्रथम द्रेष्काणमें होय और नपुंसक ग्रह द्वितीय द्रेष्काणमें होय और स्त्री ग्रह तृतीय द्रेष्काणमें होयतो चरणबल ०।१५।० देते हैं यह ५ स्थान बलोंके योगकोभी स्थानबल ऐसा कहते हैं.

युग्मायुग्म बलोदाहरणम्.

इहां सूर्य्य भौम और शनि यह विषम राशीमें हैं इसवास्ते इनका चरण बल चन्द्र समराशीमें हैं इसवास्ते चन्द्रका चरण ०।१५।० बल शुक्र समराशीमें किंवा सम नावांशमें नही इसवास्ते इसका बल ०।०।० बुध गुरु विषम राशीमें किंवा विशमांशमे नहीं. इनका बल ०।०।०

युग्मायुग्म बलम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
०	०	०	०	०	०	०	ब
१५	१५	१५	०	०		१५	ल
०	०	०	०	०		०	

अथ केन्द्रादिबलोदाहरण.

सूर्य्य चन्द्र केन्द्रमे हे इसवास्ते इनका रूपबल भौम शुक्र पणफरमेंहैं इसवास्ते इनका अर्द्ध ०।३०।० बुध गुरु शनि यह आपोक्लिममें है इसवास्ते इनका चरणबल

द्रेष्काण बलोदाहरणम्.

इहां गुरु प्रथम द्रेष्काणमेंहे इसवास्ते चरणबल शुक्र तृतीय द्रेष्काणमेंहे इसवास्ते चरण बल शनि द्वितीय द्रेष्काणमें हे इसवास्ते चरणबल सू. मं. प्रथम द्रेष्काणमें नहीं और बुध द्वितीय द्रेष्काणमें नहीं और चंद्र तृतीय द्रेष्काणमें नहीं इसवास्ते इनका बल शून्य ०।०।०

केन्द्रादि बलम्.

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
१	१	०	०	०	०	०	ब
०	०	३०	१५	१५	३०	१५	ल
०	०	०	०	०	०	०	

द्रेष्काणवलचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	भृगुज	रविजः	ग्रहाः
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	० १५ ०	० १५ ०	वल.

स्थानवल योगचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगळः	बुधः	बृह	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
० ५८ ५६	० २० ४७	० ४ २१	० २ ७	० ३८ ५५	० ४९ ५८	० १७ ४७	उच्चवल १
० ३५ ३७॥	१ २४ २२॥	० ३१ ५२॥	१ ३१ ५२॥	० २६ १५	० ५४ २२॥	१ ० ०	सप्तवर्ग २
० १५ ०	० १५ ०	० १५ ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	युग्मायुग्म ३
१ ० ०	१ ० ०	० ३० ०	० ३५ ०	० १५ ०	० ३० ०	० १५ ०	केन्द्रादि ० ४
० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० १५ ०	० १५ ०	० १५ ०	द्रेष्काण ५
२ ४९ २३॥	३ ० १॥	१ २१ १३॥	१ ४८ ५०॥	१ ३५ १०	२ २४॥ २०॥	२ २ ४७॥	योग.

दिग्वल कालवल श्लोक.

मन्दाल्लग्नमिनात्कुजाच्चहिबुकंशोध्यंविधोर्भार्गवात्
माध्यंज्ञाद्गुरुतोऽस्तमथरसभात्पुष्टंत्यजेच्चक्रतः ॥
दिग्वीर्यंरसहृत्तयोसमथजं रूपंसदास्याद्विदः
त्रिंशद्भक्तनतोन्नतेशशिकुजार्किणांपरेषांवलं ॥ ७

अन्वयः- शनेः सकाशाल्लग्नं सूर्याद्भौमाच्च हिबुकं चतुर्थं विधोः भार्गवाच्च माध्यं दशमं बुधाद्गुरोस्सकाशादस्तं सप्तमं शोध्यमिति सर्वत्र ध्येयं शेषं षड्राश्यधिकं चेत्स्यात्तदा द्वादशराशिभ्यः शोध्यं ततः षड्हृत् षड्भक्तः सन् दिग्वीर्यं स्यात् तुशब्दादुच्चवल भाग प्रकारोऽत्रापि बोध्य इति १ अथैतस्य नंतरं समयजं कालजं वलमुच्यते विदो बुधस्य सदा दिन रात्रौ रूपं १ वलं स्यात् त्रिंशद्भक्त नतोन्नते शशिकुजार्किणां परेषां वलं भवतः नतं त्रिंशता भक्तं यल्लब्धं तच्चन्द्र भौमशनीनां वलं भवेत् उन्नतं त्रिंशद्भक्तं रवि गुरु शुक्राणां वलं स्यात्.

अर्थभाषाः- शनिमेंसे लग्न, सूर्य भौममेंसे चतुर्थ भाव चन्द्रमेंसे शुक्रमेंसे दशम भाव बुधमेंसे गुरुमेंसे सप्तम भाव यह क्रमसे कम करके शेष ६ रा-

शीके अपेक्षा अधिक होयतो वह १२ राशीमें कम करके अनंतर जो शेष रहे उस्को उच्चबलमें पूर्वोक्त रीति प्रमाण ६से भाग देनातो ग्रहोंका दिग्बल होताहै.

दिग्बल सारणी प्रवेश.

ग्रहमेंसे लग्नादि कथित भाव कम करके जो शेष रहे उस्को ६ से कम करना. अर्थात् षडभाल्प करना अब इहां सारणीमें ६ राशी कोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल उस्मेंसे अभीष्ट ग्रहका जो ६ राशिमेंसे राश्यंक होय उस्के नीचेका फल लना राशीकोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्ठक और उस्के नीचे ६० कला कोष्ठक लिखाहै उस्मेंसे अभीष्ट ग्रह का जो अंश और कला आवे तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशी फल तिस्में युक्त करनातो ग्रहोंका दिग्बल होताहै.

दिग्बल राशी फल. अंशफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	१	फ	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	१०	२०	३०	४०	५०	०		२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फलफलचक्रम्.								५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
								२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

उदाहरणम्.

इहां सूर्य १०।१२।१०।४२ यह इस्मेंसे चतुर्थ भाव ७।१२।४०।२४ कम करके शेष ३।०।३०।१८ आया अयइस्का राश्यंक ३ है इसवास्ते ३ राशी फल ०।३०।० और अंश ० है इसवास्ते अंश कोष्टकका फल ०।०।० और कला ३० है इसवास्ते ३० कला कोष्ठकका फल १०।० यह विकलामें युक्त कियातो

०।३०।१० यह सूर्य्यका दिग्बल भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका सारणी परसे दिग्बल करना. अर्थ कालबलका कहते बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रीमें रूप १ बल नतमें ३०से भाग देनेसे चन्द्र भौम

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	दिग्बलचक्रं
० ३० १०	० ५७ ३४	० ५० ३२	० ६ ७	० ४१ २०	० ४५ १४	० २८ ४७	

और शनि इनका और उन्नतमें ३०से भाग देतो सूर्य्य गुरु और शुक्र इनका नतोन्नत बल होताहै अथवा नत द्विगुणित करेतो चंद्र भौम शनि इनका और उन्नत द्विगुणी करेतो सूर्य्य गुरु शुक्र इनका सुगम रीतिसे कलादि बल होताहै.

उदाहरणम्.

नत१५।४० इस्को ३०से भागदेके ०।३१।२० यह चन्द्र भौम शनि इनका बल भया उन्नत१४।२० इस्को ३०से भागदेके ०।२८।४० यह सूर्य्य गुरु शुक्र इनका बल भया. और बुधका रूप १ बल ऐसा जानना.

श्लोक.

पक्षबलत्र्यंशबलवर्षमासदिनहोराबलं.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	नतोन्नतबलचक्रम्
० २८ ४०	० ३१ २०	० ३१ २०	१ ० ०	० २८ ४०	० २८ ४०	० ३१ २०	

शुक्लेन्तेतिथिहृद्गतैष्यतिथयो वीर्य्यंसतांभूच्युतं पापानांद्विगुणंविधोरिदमथान्हस्त्र्यंशके छुक्रमात् ॥ सौम्यार्कार्कि भुवांनिशः शशिसितारार्णाच रूपम्. सदेज्यस्याथांघ्रिचयाद्बली किल समा मासद्युहोरेश्वराः ॥ ८ ॥

अन्वयः- शुक्ले-ऽन्ते कृष्णे गतैष्यतिथयस्तिथिभिः पंचदशः १५भिर्भाज्याः फलंसतां शुभग्रहाणांचन्द्र बुध गुरु शुक्राणां बलंस्यात् तदेव बलं भूच्युतं रूपाच्च्युतं पापानां रवि भौम शनीनां पापयुत बुधस्यच वीर्य्यबलस्यात् इदं चन्द्रबलं द्विगुणंकार्य्यं अथ पक्षबल कथना नंतरं त्र्यंशबलमुच्यते अन्हो दिवसस्य त्र्यंशके छुक्रमात् बुध सूर्य्य शनीनां रूपंबलं स्यात् निशोरात्रेस्त्र्यंशके छुक्रमेण चन्द्र शुक्र भौमानां रूपं १ बलं भवति तद्यथा यदि दिने जन्मतदा दिनमानस्य त्रिभागं कार्य्यं चेत्प्रथमेंशे जन्म तदा बुधस्य रूपबलं अन्येषां शून्यं यदि द्वितीयेंशे जन्म तदा सूर्य्यस्य रूपबलं अन्येषां शून्यं तृतीयंशे शनेः रूपबलं अन्येषां शून्यं स्यात् एवं रात्रावपि + ईज्यस्य गुरोः सदा दिवा रात्रौ वा जन्मस्यात् तदा रूपं बलं भवति. अथेत्य नंतरं अंघ्रिच याचरण वृद्धया समामासद्यु होरेश्वरो- बलीस्यात् एतदुक्तं वर्षेशस्य बलं पाद ०।१५।० मासेशस्य ०।३०।० दिनेशस्य ०।४५।० होरेशस्य १।०।० बलम्.

अर्थ भाषा- शुक्ल पक्षमें गत तिथीको १५से भाग देना और कृष्ण-

पक्षमें ऐष्य तिथीकों १५ से भाग देनातो शुभ चन्द्र बुध गुरु शुक्र इन ग्रहोंका और यही १ में कम करके पाप ग्रहोंका रवि भौम शनि इन कोपक्ष बल होताहै. उस्में से आया जो चन्द्र बलसो दूना करना व तात्कालिक सूर्य्य और चंद्र इनका अंतर ६ राशीकी अपेक्षा ज्यादा होयतो १२ में कम करना जो शेषरहे उस्को उच्च बलमें पूर्वोक्त रीतिके प्रमाण ६ से भागदेनातो शुभ ग्रहोंका और वही ६० मेंसे कम करके पापग्रहोंका पक्षबल होताहै. त्र्यंशबल दिनके प्रथम त्रिभागमें जन्म होयतो बुधकारूप १ बल द्वितीय त्रीभागमें सूर्य्यका तृतीय त्रिभागमें शनिका ऐसा रात्रीमें प्रथम त्रिभागमें चन्द्रको द्वितीय त्रिभागमें शुक्रका तृतीय त्रिभागमें भौमका और सर्व कालमें गुरुका रूप १।०।० जाननां वर्ष पतिका चरणबल मास पतिका अर्द्ध बल दिन पती चरणत्रय बल होरापतीका रूप बल यह वर्षमास दिन होरापती इनका बल जानना इन चारों बलके योगको काल बल ऐसा कहते हैं.

वर्षपतीबनावनेकी रीतिः

श्लोक- इष्टोऽयंग्रहलाघवद्युनिचयश्चक्राहतैः षट्शरैः
पट्दस्रैश्चयुतःसबाणतपनसेपुश्चखांगाग्निभिः ॥
खाप्त्यांशैर्विहृतंफलेगुणयमश्चेचक्रनिघ्नाक्षखेपे-
तेसत्रियुगनगोर्वरितके ऽस्तोऽर्कात्समामासपौ ॥

अर्थः- अभीष्ट चक्रको ५६ से गुणके उस्में अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें १२५ युक्त करना २६०से भाग देनाजो भागाकार आवे उस्को २ से गुणके गुणाकारको चक्र ५से गुणके उस्में ३ युक्त करके सब अंक एकत्र करके ७ से भागदेके जो शेषांक रहे सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान वर्षाधिप होता है.

मास पतिबनावनेकी रीति.

अभीष्ट चक्रको २६ से गुणके उस्में अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें ५ युक्त करना ३०से भागदेनाजो भागाकार आवे उस्को दूना करके उस्में ४ युक्त करके ७ से भागदेके जो शेषांक रहे सो क्रमसे सूर्य्यादि वर्तमान मासपति होताहै.

दिनपतिबनावनेकी रीति.

अपने देशसे दक्षिणोत्तर मध्य रेखाका जो योजन होय उस्में उसकान-

तुर्यांश कम करके तान्वित फल पूर्व मध्य रेषा होयतो १५ घडीमें कम करना अथवा पश्चिम रेखा होयतो १५ घडीमें युक्त करना अनंतर यह संस्कार युक्त घडी दिनार्धसे जितना पल कमती होय उतना पल सूर्य्योदयके अनंतर वार प्रवृत्ति होती है. अथवा संस्कृत घडी दीनार्धसे जितना पल अधिक होय उतना पलसे सूर्य्योदयके पूर्ववार प्रवृत्ति होतीहै यह प्रकारसे जन्म कालमें जो वार होयसो वार पति जानना.

होरापति बनावनेकी रीति.

वार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घटी पल होय उस्को दूनाकरना उस्को २ स्थानमें रखना प्रथम स्थानमें ५ से भाग देना शेषको द्वितीयस्थानमें घटाय देना और १ युक्त करना तो वारपतीके क्रमसे अर्थात् १ बचे तो सूर्य्य २ में शुक्र ३ में बुध ४ में चन्द्र ५ में शनि ६ में गुरु ७ में भौम यह क्रमसे इष्टवारपतीसे गणनासे जो वार आवे उस्की वहगत होरा जानना. अनंतर वर्त्तमान होराका स्वामी होरा पति जानना.

पक्षबल सारणि प्रवेश.

तात्कालिक सूर्य्य और चन्द्र इनका अंतर षड्भाल्प करना अब सारणीमें ६ राशि कोष्ठक लिखके वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल लिखाहै उस्मेंसे अंतरका जो राश्यंक होय उस्के नीचेका फल लेना राशि कोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्टक और ६० कला कोष्ठक लिखाहै उस्मेंसे अंतरका जो इष्ट अंश और कला आवे उस्के नीचेका अंशका फलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लियाजो राशिफल उस्में युक्त करनातो शुभग्रहोंका पक्षबल होताहै और यह रूप १ में कम करेतो पापग्रहोंका पक्षबल होताहै. इस्मेंसे चन्द्रका बल द्विगुणित करना.

राशीफल.							अंशफल.														
०	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	१०	२०	३०	४०	५०	०															
०	०	०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

उदाहरणम्.	१६	३७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
सूर्य्य ०।१३।१०।१२	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
चन्द्र ९।५।२२।२५ इ.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

नका अंतर ८।२२।११।५३ यह ६ सेज्यादाहै इसवास्ते १२ मेसेकम करके ३।७।४८।७ यह इसवास्ते राशिकोष्टक ३ इस्काफल ०।३०।० इस्को अंशकोष्टक ७ इस्काफल २।२० और कलाकोष्टक ४८ इस्काफल १६ एकत्र करके २।३६ युक्त करके ०।३२।३६ यह शुभग्रहों कोपक्षवल यही रूपमें कमकरके ०।२७।२४ यहपापग्रहोंका पक्षवल और चंद्रका द्विगुणित १।५।१२ जानना।

कलाकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	२०	४०	०

पक्षबलचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
०	१	०	०	०	०	०	०
२७	५	२७	३२	३२	३२	२७	व.
२४	१२	२४	३६	३६	३६	२४	

दिनरात्रित्रिभागबलोदाहरणम्.

इहां दिनमान ३२।०१ इस्का त्रिभाग १०।४० इसवास्ते दिनके तृतीय त्रिभागमें जन्म इसवास्ते शनिका रूपबल और गुरुका रूपबल जानना. और ग्रहोंका शून्य बल जानना.

वर्षपतिबलोदाहरणम्.

चक्र २३ इस्को ८६से गुणके १९७८ यह इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके २०२६ यह इसमें १२५ युक्त करके २१५१ इस्को ३६० में भाग देके ८ यह इस्को ३ से गुणके २४ इस्को चक्र २३ यह ५ से गुणके १६५ इसमें ३ युक्त करके १६८ पूर्वोक्त अंक २४ युक्त करके १९२ इस्को ७ से भाग देके शेषांक ३ इनवास्ते वर्षपति भौम इस्का बल ०।१५।० जानना.

दिनरात्रित्रिभागबल.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
०	०	०	०	१	०	१	व.
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	

मासपतिबलोदाहरणम्.

चक्र २३ इस्को ३६ से गुणके ८५८ यह इसमें अहर्गण ११७८ युक्त करके २०३६ यह इसमें ५ युक्त करके २०४१ इस्को ३० से भाग देके ६८

इस्को दूना करके १३६ यह इस्मे ४युक्त करके १४० इस्को ७ से भाग देके शेषांक० इसवास्ते मासपति शनि इस्का वल ०।३०।०

दिनपतिवलोदाहरणम्.

देशांतर योजन ५ इस्में इसीका चतुर्थांश १।१५ कम करके ३।४५ पल यह पश्चिम देशांतर है इसवास्ते १५ घडीमें युक्त करके १५।३।४५ यह दिनार्ध १६।२१ इस्से १ घडी १८ पलकमती है इसवास्ते सूर्योदय के अनंतर १ घडी १८ पलसे वारप्रवृत्ति भई जन्मकाल रविवारको ३२ घडी १ पलपर है इसवास्ते रवि यही दिनपति इस्का वल ०।४५।० जानना.

होरापति वलोदाहरणम्.

वार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक ३०।४२ इस्को २ से गुणके ६१ घडी २४ पल इस्को ५ से भागदेके १२ आये इहां इष्टवारपती रवि इस्से गणनामें गत होरपति शनि और वर्त्तमान होरापती गुरु इस्का वल रूप (१) जानना.

वर्षमासदिनहोरापतिवलचक्र								कालवलयोगचक्र.							
सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	ग्र·	सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श	ग्र·
दिन ० ४५ ०	० ० ०	वर्ष ० १५ ०	० ० ०	होरा १ ० ०	० ० ०	मास ० ३० ०	व·	१ ६१ ४	१ ३६ ३२	१ १३ ४४	१ ३२ ३६	३ १ १६	१ १ १६	२ २८ ४४	व·

इदानींक्रमप्राप्तचेष्टावलं विवक्षुरादावयनबलमाहः-

श्लोक- सदाक्रांतिभागैर्युताज्ञस्यसिद्धाः शनीन्द्वोर्युतोनाः क्रमाद्याम्यसौम्यैः ॥ विलोमंपरेषांगजाम्भोधि ४८ भक्ताभवेदायनंवीर्यमर्कस्यदृग्घ्नं ॥ ९ ॥

अन्वयः- ज्ञस्य बुधस्य दक्षिणेर्वोत्तरैः क्रांतिभागैः सिद्धाश्चतुर्विंशत्यः युताः शनींद्वोर्युतोनाः क्रमात् याम्यैसौम्यैर्युताः सौम्यैरूनाः परेषां रवि भौम गुरु शुक्राणां विलोमंसौम्यैर्युताः याम्यैरूनाः सिद्धाः २४ गजाम्भोधि ४८ भक्ताः संतः आयनंवीर्य्यं भवेत् इदमायनवलं अर्कस्यद्विगुणितं सद्भवेत्

अर्थः- सर्वकाल २४ अंशमें बुधका दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति भागयुक्त करना २४ अंशमें शनि और चन्द्र इनके दक्षिण क्रांति भाग युक्त करना और उत्तर क्रांति भाग २४ अंशमेंसे कम करना २४ अंशमेंसे रवि भौम गुरु और शुक्र इनका दक्षिण क्रांति भाग कम करना और उत्तर

क्रांति भाग २४ अंशमें युक्त करना. अनंतर वह सब ४८ से भाग देना तो ग्रहोंका अयन बल होता है. परंतु यह बल सूर्य्यका मात्र द्विगुणित करना अथवा क्रांतिभाग संस्कारित २४ अंशमें उसीका चतुर्थांश युक्त करना तो कलादि अयनबल हो.

क्रांतिबनावनेका. श्लोक.

स्युःखंडानिरववार्द्धयोम्वरकृताशैलाग्नयोध्व्यग्नयः
त्रिशतत्व घतीनवारिनिधयस्तैः सायनांश ग्रहात् ॥
बाव्हंशा नकु १० भागसंख्यकयुतिः शेषेष्यघाताद्दशा-
साद्धयादिग्वि हृत्तालवादिरपमस्तद्दिक्स्व गोलाभवेत् ॥१॥

अन्वयः- अयनांशायुक्तात्खेटात् ग्रहात् बाव्हंशा भुज भागा-स्तेषां दिग्लवो दशमांशः तन्मित खण्डैक्यं कार्य्यम् ॥ तच्छेषेण धातात्गुणितात् एष्यं भोग्य खंडं तस्य योदिग्लवो दशमांशः तेन युतं खण्डैक्यं कार्य्यम् ततोदिग्भिर्हृतो दशभक्तः लवाद्यः अंशाद्यः स्वदिक् सायनगोलदिक् अपमः क्रांतिःस्यात्.

अर्थभाषा.

ग्रहमें अयनांशा युक्त करके उस्का पूर्वोक्त रीति करके भुज करना और उस्के अंश करना १० से भाग देना जो भागाकार आवे तत्परिमित नीचे लिखे अंकमें मिलान करना और भागाकारमें एक युक्त करके तत्परिमित अंकलेके उस्के ऊपरके अंशादि शेषको गुणके वह गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे उस्में पीछेके अंककी मिलान युक्त करना औरजो मिलान आवे तिस्को १० से भाग देना जो भागाकार आवे सो अंशादि क्रांति जानना जो सायन ग्रह उत्तर गोलमें होयतो उत्तर क्रांति और दक्षिण गोल होयतो दक्षिण क्रांति जानना. गोल ऐसाकि मेषसे ६ राशीतक सायन ग्रह होयतो उत्तर गोल तुलसे ६ राशीतक सायन ग्रह होयतो दक्षिण गोल जानना.

क्रांत्यंक चक्रम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४

क्रांतिसारिणीप्रवेश.

प्रथम सायन ग्रह करके उस्का भुज करके उस्का भाग करना अनंतर सारणिमें अंश कोष्ठक ९० लिखके उस्के नीचे अंशादि फल लिखा है और दश दश अंशके अंतरसे अलग अलग ६० कला विकला कोष्ठक लिखा है- अब अभीष्ट भुज भाग कोष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेके उस्को भुज भागके नीचे जो कला विकला तत्परिमित कला विकला कोष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंकी अंशादि क्रांति होती है- उदाहरणम्.

सूर्य००।३।१०।४२ इस्को अयनांश २२।४४।०३ युक्त करके ०।२५।५४।४५ यह सायन सूर्य इस्का भुजकियातो वहीरहा ०।२५।५४।४५ इस्के अंश २५।५४।४५ यह हैं इसवास्ते भुज भाग कोष्टक २५ के नीचेका अंशादि फल १३।२४।०० कला ५४का कला विकला कोष्टक नीचेका कलादि फल १८।२२ विकला ४५का कला विकला कोष्टकका विकलादि फल १५।१९ यह कला विकला कोष्ठक फल एकत्र करके १८।३७ यह पूर्वोक्त अंशफल १३।२४।०० इस्में युक्त कियातो १३।४२।३७ यह सूर्यकी क्रांति भई इसी प्रमाण सब ग्रहोंकी क्रांति बनावना. अब सायन सूर्य उत्तर गोलमें है इसीवास्ते उत्तर क्रांति जानना.

क्रांतिचक्रम्.

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
१३ ४२ ३७	२० ५६ २४	१० १७ ३१	५ ३७ ५८	० २२ ४०	४ ७ ५७	२३ ४५ २२	बल.
उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर	उत्तर दक्षिण

क्रांतिसारिणी.

भुजांको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
क्रां. फ.	० ० ०	० २४ ०	० ४८ ०	१ १२ ०	१ ३६ ०	२ ० ०	२ २४ ०	२ ४८ ०	३ १२ ०	३ ३६ ०	फ.

कलाविकला फल ॥

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ० ०	० ० २४	० ० ४८	० १ १२	० १ ३६	० २ ०	० २ २४	० २ ४८	० ३ १२	० ३ ३६	० ४ ०	० ४ २४	० ४ ४८	० ५ १२	० ५ ३९
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	० ६ ०	० ६ २४	० ६ ४८	० ७ १२	० ७ ३६	० ८ ०	० ८ २४	० ८ ४८	० ९ १२	० ९ ३६	० १० ०	० १० २४	० १० ४८	० ११ १२	० ११ ३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	० १२ ०	० १२ २४	० १२ ४८	० १३ १२	० १३ ३६	० १४ ०	० १४ २४	० १४ ४८	० १५ १२	० १५ ३६	० १६ ०	० १६ २४	० १६ ४८	० १७ १२	० १७ ३६
को.	४५	०६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. ध.	० १८ ०	० १८ २४	० १८ ४८	० १९ १२	० १९ ३६	० २० ०	० २० २४	० २० ४८	० २१ १२	० २१ ३६	० २२ ०	० २२ २४	० २२ ४८	० २३ १२	० २३ ३६

क्रांति सारिणी.

भुजां.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
क्रां. फ.	४ ० ०	४ २४ ०	४ ४८ ०	५ १२ ०	५ ३६ ०	६ ० ०	६ २४ ०	६ ४८ ०	७ १२ ०	७ ३६ ०	फ.

कला विकला फल.

कों.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क ध.	० ० ०	० ० २४	० ० ४८	० १ १२	० १ ३६	० २ ०	० २ २४	० २ ४८	० ३ १२	० ३ ३६	० ४ ०	० ४ २४	० ४ ४८	० ५ १२	० ५ ३६
कों.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	० ६ ०	० ६ २४	० ६ ४८	० ७ १२	० ७ ३६	० ८ ०	० ८ २४	० ८ ४८	० ९ १२	० ९ ३६	० १० ०	० १० २४	० १० ४८	० ११ १२	० ११ ३६
कों.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	१२ ०	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६
कों.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क प.	१८ ०	१८ २४	१८ ४८	१९ २२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६

क्रांतिसारिणी·

भुज·अं·	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	·
अं· क·	८ ० ०	८ २२ १२	८ ४४ २४	९ ६ ३६	९ २८ ४८	९ ५१ ०	१० १३ १२	१० ३५ २४	१० ५७ ३६	११ १९ ४८	फ·

कलाविकला फल,

को·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क·	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध·	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	४	२६	४८	१०
को·	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क·	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०
ध·	३३	५५	१७	३९	१	२४	४६	८	३०	५२	१५	३७	५९	२१	४३
को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क·	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
ध·	६	२८	५०	१२	३४	५७	१९	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४	१६
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क·	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१
ध·	३९	१	२३	४५	७	३०	५२	१४	३६	५८	२१	४३	५	२७	४९

क्रांति सारिणी

भुज·अं·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं फ·	११ ४२ ०	१२ २ २४	१२ २२ ४८	१२ ४३ १२	१३ ३ ३६	१३ २४ ०	१३ ४४ २४	१४ ४ ४८	१४ २५ १२	१४ ४५ ३६	फ·

कला विकला फल·

को·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क·	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
ध·	०	२०	४०	१	२१	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५
को·	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क·	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
ध·	६	२६	४६	७	२७	४८	८	२८	४९	९	३०	५०	११	३१	५१
को·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क·	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
ध·	१२	३२	५२	१४	३४	५५	१६	३६	५६	१६	३७	५७	१७	३८	५८
को·	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क·	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
ध·	१९	३९	५९	२०	४०	१	२१	४१	२	२२	४१	३	२३	४४	४

क्रांतिसारिणी.

मु अं	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं. फ.	१५ ६ ०	१५ २४ ०	१५ ४२ ०	१६ ० ०	१६ १८ ०	१६ ३६ ०	१६ ५४ ०	१७ १२ ०	१७ ३० ०	१७ ४८ ०	फ.

कलाविकलाफल.

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ०	० १८	० ३६	० ५४	१ १२	१ ३०	१ ४८	२ ६	२ २४	२ ४२	३ ०	३ १८	३ ३६	३ ५४	४ १२

को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	४ ३०	४ ४८	५ ६	५ २४	५ ४२	६ ०	६ १८	६ ३६	६ ५४	७ १२	७ ३०	७ ४८	८ ६	८ २४	८ ४२

को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	९ ०	९ १८	९ ३६	९ ५४	१० १२	१० ३०	१० ४८	११ ६	११ २४	११ ४२	१२ ०	१२ १८	१२ ३६	१२ ५४	१३ १२

को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. ध.	१३ ३०	१३ ४८	१४ ६	१४ २४	१४ ४२	१५ ०	१५ १८	१५ ३६	१५ ५४	१६ १२	१६ ३०	१६ ४८	१७ ६	१७ २४	१७ ४२

क्रांतिसारिणी.

मु. अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं. फ.	१८ ६ ०	१८ २१ ०	१८ ३६ ०	१८ ५१ ०	१९ ६ ०	१९ २१ ०	१९ ३६ ०	१९ ५१ ०	२० ६ ०	२० २१ ०	फ.

कलाविकलाफल.

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ०	० १५	० ३०	० ४५	१ ०	१ १५	१ ३०	१ ४५	२ ०	२ १५	२ ३०	२ ४५	३ ०	३ १५	३ ३०

को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	३ ४५	४ ०	४ १५	४ ३०	४ ४५	५ ०	५ १५	५ ३०	५ ४५	६ ०	६ १५	६ ३०	६ ४५	७ ०	७ १५

को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	७ ३०	७ ४५	८ ०	८ १५	८ ३०	८ ४५	९ ०	९ १५	९ ३०	१० ४५	१० ०	१० १५	१० ३०	१० ४५	११ ०

को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. ध.	११ १५	११ ३०	११ ४५	१२ ०	१२ १५	१२ ३०	१२ ४५	१३ ०	१३ १५	१३ ३०	१३ ४५	१४ ०	१४ १५	१४ ३०	१४ ४५

क्रांतिसारिणी.

भु.अं.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
अ. फ.	२० ३६ ०	२० ४६ ४८	२० ५७ ३६	२१ ८ २४	२१ १९ १२	२१ ३० ०	२१ ४० ४८	२१ ५१ ३६	२२ २ २४	२२ १२ १२	फ.

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ०	० ११	० २२	० ३३	० [illegible]	० ५५	१ ४	१ १५	१ २६	१ ३७	१ ४८	१ ५९	२ १०	२ २१	२ ३२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	३ ४२	२ ५३	३ ४	३ १५	३ २६	३ ३६	३ ४७	३ ५८	४ ९	४ २०	४ ३०	४ ४१	४ ५२	५ ३	५ १४
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	५ २४	५ ३५	५ ४६	५ ५७	६ ८	६ १८	६ २९	६ ४०	६ ५१	७ २	७ १२	७ २३	७ ३४	७ ४५	७ ५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. ध.	८ ६	८ १७	८ २८	८ ३९	८ ५०	९ ०	९ ११	९ २२	९ ३३	९ ४४	९ ५५	१० ५	१० १६	१० २७	१० ३८

क्रांतिसारिणी.

भु.अं.	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अं. फ.	२२ २४ ०	२२ ३१ १२	२२ ३८ २४	२२ ४५ ३६	२२ ५२ ४८	२३ ० ०	२३ ७ १२	२३ १४ २४	२३ २१ ३६	२३ २८ ४८	फ.

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क. ध.	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क. ध.	१ ४८	१ ५५	२ २	२ ९	२ १६	२ २४	२ ३१	२ ३८	२ ४५	२ ५२	३ ०	३ ७	३ १४	३ २१	३ २८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क. ध.	३ ३६	३ ४३	३ ५०	३ ५७	४ ४	४ १२	४ १९	४ २६	४ ३३	४ ४०	४ ४८	४ ५५	५ २	५ ९	५ १६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क. ध.	५ २४	५ ३१	५ ३८	५ ४५	५ ५२	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३६	६ ४३	६ ५०	६ ५७	७ ४

क्रांति सारिणी.

भु.अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
फ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
घ.	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५७	५९	१	४	६	८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३७	४०	४२	४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४८	५०	५२	५५	५७	५९	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०

अयनबल सारिणीप्रवेश.

ग्रहोंके दक्षिणोत्तर क्रांति संबंधसे अयन बल सारिणीमें शून्य से २४ तक २५ क्रांति भाग कोष्ठक दो ठिकाने लिखा हे. जब सूर्य्य मंगल गुरु भृगु इनकी उत्तरक्रांति और शनि चन्द्र इनकी दक्षिण क्रांति बुधकी दक्षिणकिंवा उत्तर क्रांति हे तब प्रथम क्रांति भाग कोष्ठकमेंसे अभीष्टक्रांति भागकोष्ठकके नीचेका रूपादि फल लेके उस्को अंश कोष्ठक के आगे ६० कलाविकला कोष्ठक लिखा हे उस्मेसे क्रांतिभागके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कलाविकला कोष्ठकके नीचेका ४७ को ष्ठकतक कलाका विकलादि विकलाका प्रतिकलादि और ४८ कोष्ठकसे कलाका कलादि वैसा विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो भिन्न भिन्न ग्रहोंका अयन बल होता हे. जब सूर्य्य भौम गुरु शुक्र इनकी दक्षिण क्रांति और शनि चन्द्र इनकी उत्तर क्रांति होय तब द्वितीय क्रांति भाग कोष्टकमेसे अभीष्ट क्रांति भाग कोष्ठकके नीचेका रूपा दि फल लेना अनंतर आगे ६० कला विकला कोष्ठक लिखा हे उस्मेसे अभीष्ट क्रांति भागके नीचे जो कला विकला होय तत्परिमित कला वि

कला कोष्टकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके लिया जो अंशफल उस्मेसे कम करना तो ग्रहोंका अयनबल तयार होताहै. यह अयनबल सूर्य्यका मात्र दूना करना.

प्रथमक्रांति भागचक्र अंशफल-अयनबल सारिणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
० ३० ०	० ३१ १५	० ३२ ३०	० ३३ ४५	० ३५ ०	० ३६ १५	० ३७ ३०	० ३८ ४५	० ४० ०	० ४१ १५	० ४२ ३०	० ४३ ४५	० ४५ ०
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	०
० ४६ १५	० ४७ ३०	० ४८ ४५	० ५० ०	० ५१ १५	० ५२ ३०	० ५३ ४५	० ५५ ०	० ५६ १५	० ५७ ३०	० ५८ ४५	० ० ०	० ० ०

द्वितीयक्रांति भागअंशफल.

अं·को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
क· ध·	० ३० ०	० २८ ४५	० २७ ३०	० २६ १५	० २५ ०	० २३ ४५	० २२ ३०	० २१ १५	० २० ०	० १८ ४५	० १७ ३०	० १६ १५
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
० १५ ०	० १३ ४५	० १२ ३०	० ११ १५	० १० ०	० ८ ४५	० ७ ३०	० ६ १५	० ५ ०	० ३ ४५	० २ ३०	० १ १५	० ० ०

कलाफल.

को·	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क·	०	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	०
फ·	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	
को·	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क·	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३५	३६	०
फ·	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	
को·	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
क·	३७	३८	४०	४१	४२	४३	४५	४६	४७	४८	५०	५१	५२	५३	५५	०
फ·	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क·	५६	५७	५८	१ ०	१ १	१ २	१ ३	१ ५	१ ६	१ ७	१ ८	१ १०	१ ११	१ १२	१ १३	१ १५ ०
फ·	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	

उदाहरणम्.

सूर्य्यकी उत्तर क्रांति१३।४२।३७ इस्का अंश १३ है. इसवास्ते इहां

प्रथम क्रांति भाग कोष्ठक १३ इस्का फल ०।४५घटी १५ इस्की क्रांति भागके नीचेकी कला ४२ विकला २७ इस्का कलाका विकलादि और विकलाका प्रतिकलादि फल एकत्र करके ५२।१६ यह विकलामें युक्त करके ०।४७।८ यह दूनाकरके १।३४।१६ यह सूर्य्यका अयनबल भया इसी प्रमाण सारणीसे चन्द्रादिकोंका अयन बल होता है.

अयन बल चक्रम्.

सूर्य्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१ ३४ १६	० ५६ १०	० ४२ ५२	० ३७ १	० २९ ३१	० २४ ५०	० ० १८	बल

इदानीं भौमादीनां चेष्टाबलमाह.

श्लोक —
मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलं चेष्टाख्यकेन्द्रं कुजात्
स्यात्तत्केन्द्रगणाद्युतं षडधिकं षड्भ्रं चेष्टाबलं ॥
स्यादेकोत्तररूपमेकदिविहृतं नैसर्गिकं स्याद्बलं
मंदारज्ञसुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनां क्रमात् ॥१॥

अन्वय मध्यस्पष्टयोर्ग्रहयोर्योगार्धेनोनितं चलं ताम शीघ्रोच्चं तदा भौमादीनां चेष्टा संज्ञकं केन्द्रं स्यात् तत्केन्द्रं चेत्षडधिकं तदा द्वादशराशिभ्यः शुद्धं ततः षड्भक्तं चेष्टाबलं भवतिचकाराद्युच्च बलसाधन वद्भागयोर्विर नापिच्छेयः अत्रेदंध्येयं यदि मध्यस्पष्टयुतौ द्वादशाधिके तदा द्वादशाभि रनष्टं नकार्य्यमिति: नैसर्गिकबलः स्यादित्यस्य पूर्वार्धेन संबंधः एको त्तर रूपमेकदिविहृतं तदा क्रमाच्छनि भौम बुध गुरु शुक्र चन्द्र सूर्य्याणां नैसर्गिकं बलंस्यात् तद्यथा एकस्मिन् सप्तभक्ते शनेर्नैसर्गिक बलं द्वयोःसप्तभक्ते भौमस्य.

अर्थ भाषाः- मध्यम और स्पष्ट ग्रहका योगार्द्ध उसी ग्रहके शीघ्रोच्च में कम करनातो भौमादि ग्रहोंका चेष्टा केन्द्र होताहै यह केन्द्र ६ राशीसे ज्यादा होयतो १२ राशीमें कम करना अनंतर उच्च बलमें सूर्य्य रीतिप्रमाणे ६ से भाग देना तो चेष्टाबल होताहै अथवा षड्भाल्प केन्द्रांश भागा त्मक करके इसीकी ३ से भाग देना तो सुगमरीतिसे चेष्टाबल होताहै यह अयन और चेष्टाबल इनके योगको चेष्टाबल कहते हैं. अनुक्रमसे १ से ७ तक अंककों ७ से भाग देनातो क्रमसे शनि भौम बुध गुरु शुक्र चन्द्र सूर्य्य इनका नैसर्गिक बल होता है अथवा.

८।२४।१७ इनको क्रमसे १ से ७ तक अंकसे गुणना तो शनि भौम इत्यादि ग्रहोंका कला नैसर्गिक बल होताहै. अथवा सर्गिक बलको दूना तिगुना चौगुना करते जावो तो वही क्रमसे बल हो जायगा.

भौमादिग्रहोंका शीघ्रोच्च बनावनेकि विधिः

बुध और शुक्र इनके शीघ्रकेन्द्रमें मध्यम सूर्य युक्त करनेसे बुध शुक्रका शीघ्रोच्च होता है. और मंगल बृहस्पति शनि इनका शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य है.

मध्यमग्रह.						स्पष्टग्रह.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
५ २२ ७ २४	० ११ ११ ५६	५ १२ १७ ५१	० ११ ११ ५६	२ १६ ३१ ३७	म.	४ २१ ४ १६	११ २१ २० ५३	५ ८ १२ ३७	१० २६ ५६ ४	२ १३ २१ ४५	स्पष्ट.
मध्यस्पष्टयोगः						मध्यस्पष्टयोगदलचक्रम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१० ३ ११ ५०	० २ ३२ ४९	१० २० ३० २८	११ ८ ८ ०	५ ० १ २२	यो.	५ १ ३५ ५०	० १ १६ २४	५ १० १५ १८	५ १९ ४ ०	२ १५ ० ४१	यो.द.
शीघ्रोच्चचक्रं.						चेष्टाकेन्द्रचक्रम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
० ११ ३१ ५६	७ १८ १५ १५	० ११ ११ ५६	७ २९ [illegible] ९	० ११ [illegible] ५६	शी. उ.	७ ९ २६ ९	३ १६ ५८ ५१	७ ० ५६ ४२	२ ५ ५० ९	९ २६ ११ १५	के.

चेष्टाबलसारिणी प्रवेशः

चेष्टाकेन्द्र षड्भास्य करके सारणीमें ८ राशी कोष्टके लिखके उसके नीचे कोष्टकमें रूपादि फल लिखाहै. उसमेंसे षड्भास्य चेष्टकेन्द्रकाजो दृष्ट राशयंक होय उसके नीचेका फल लेना. अनंतर राशि कोष्टकके नीचे अंश कोष्टक और ६० कला कोष्टक लिखा है. उसमेसे षड्भास्यक्रमकेंद्रके जो इष्टअंश औरकला आवे तत्संमिति कोष्टकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशी फल उसमे युक्त करना तो ग्रहोंका चेष्टाबलहोता है. यह सार-

णी प्रवेशसे इष्टकष्टाध्यायमेकासूर्य्यचंद्रकाचेष्टावलकरनेके वास्ते काम पड़ताहै- ॥ चेष्टावलसारिणीराशिफल- ॥

०	१	२	३	४	५	६	०	०
० ० ०	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ४० ०	० ५० ०	१ ० ०	० ० ०	० ० ०

अंशफल-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०

टीपः- आरामरेज्य सौरीणां शीघ्रोच्चंस्याद्दिवाकरः ॥

कला विकला फल.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	२ ४०	३ ०	३ २०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	[illegible]
१० -	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०
४६	४७	४८	४९	५०	[illegible]१	५२	५३	५४	५५	[illegible]	५७	५८	५९	६०
१५ -	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	[illegible]	९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०

उदाहरणम्.

शौनका चेष्टाकेन्द्र ७।१।२६।६ यह ६ से अधिक है- इसवास्ते १२ मेंसे कम करके ४।२०।२२।५४ यह इसका राश्यंक ४ इसवास्ते ४ राशिकोष्ठकका फल ०।४०।० इस्का अंश २० इसवास्ते २० कोष्ठक-

का फलं ६।४० और कला २२ इसवास्ते २२ कला कोष्टक का फल ७।४० एकत्र करके ६।४८ यह राशी फलमें युक्त करके ०।४६।४८ यह भौमका चेष्टावल भया. इसही प्रकार बुधादिकोंका करना.

चेष्टावलचक्र. अयनचेष्टावलयोगचक्र.

मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	०	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
० ४६ ४८	० ४४ २०	० ४९ ४१	० २१ ५६	० २१ १६	०	१ ३४ १६	० ५१ १०	१ २९ ४०	१ २१ २१	१ १९ १२	० ४६ ४६	० २१ २४

५ नैसर्गिकवलोदाहरण.

एकको ७से भागदेके ०।८।३४ यह शनिका. दोको ७से भागदेके ०।१७।८ यह भौमका. ३को ७से भागदेके ०।२५।४३ यह बुधका चारको ७ से भागदेके ०।३४।१७ यह गुरूका. पांचको ७से भागदेके ०।४२।५१ यह शुक्रका. छको ७से भागदेके ०।५१।२५ यह चन्द्रका ७को ७से भागदेके १।०।० यह सूर्य्यका. इसीप्रमाण ग्रहोंका सवकाल एकही नैसर्गिक वल होता है. यहवल सिद्ध है.

नैसर्गिक वल.

ग्रहः	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
व.	१ ० ०	० ५१ २६	० १७ ८	० २५ ४३	० ३४ १७	० ४२ ५१	० ८ ३४

श्लोक—
युद्धेवाणवियोगहृत्खचरयोर्वीर्य्यैक्ययोरंतरम्
स्वंसौम्यस्यवलेक्षयंचयमदिक्संस्थस्यकुर्य्याद्वले ॥
सदृष्ट्यंघ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनंखेटवीर्य्यंभवेत् भावानां
वलमीशजंचनृचतुष्पादाख्यकीटांवुजा ॥ १ ॥
जायांवुचरवर्गोनिताःखलुततोदिग्वीर्य्यवत्तद्युतं
सदृष्ट्यंघ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनंज्ञेज्यदृग्युक्पुनः ॥

अन्वयः- खचरयोस्ताराग्रहयोः भौमादिग्रहयोरित्यर्थः युद्धे सति वीर्य्यैक्ययोर्वलैक्ययोरंतरं वाणवियोगहृत्तदंतरेण पंचकः सन् यल्लब्धं तत् सौम्यस्तस्यस्यग्रहस्यवलेस्वंधनंकुर्यात् यमदिक्संस्थस्यवले क्षय-

मृणं कुर्य्यात् ग्रहस्य दक्षिणोत्तरस्य ज्ञानंतु शर वशेन भवति तथा यस्य ग्रहस्योत्तरः शरः स उत्तरस्थः यस्य दक्षिणः स दक्षिणस्थः यदिद्वयोरुत्तरः शरस्तदायस्याधिक शरः स उत्तरस्थोऽन्यो दक्षिणस्थः यदिद्वयोर्दक्षिणशरस्तदायस्याधिक शरः सोदक्षिणस्थोऽन्य उत्तरस्थ इत्यर्थः इदानीं दृग्बल- ग्रहाणां प्रागानीतंबलंस्तत्र शुभ ग्रहाणां दृष्टि चतुर्थांशेन युतं उग्राणां पापानां दृष्टी चतु र्थांशेन रहितं कार्य्यं तदा ग्रहाणां वीर्य्यं भवेत् भावबल- भावानामेकं बलं स्वामि बलं भवन्च पुनर्द्वितीय बलं नृ चतुष्पाद्रश्च कीटाम्बुजा भावाः नृ चतुष्पाद कीट जलचरणशयो भावा क्रमेण जायांबाद्यरव भोनिताः सप्तम चतुर्थ प्रथम दशम भावे रूनायदि षड भाधिकास्तदा द्वादश राशिभ्यः शुद्धाः पड्भास्यायथास्थित एवतत्तः षड्भक्ता फलं दिग्बलं भवेत् अनयो योगः कार्य्यः सतुशुभग्रह दृष्टि चतुर्थांश पापग्रह दृष्टि चतुर्थांशयो रंतरं धनर्णं पूर्वोक्त बलेकार्य्ये बुधगुर्वोर्दृष्टयो रेक्यं तृतीय बलं भयाणां योगे स्पष्टं भाव बलं स्यात् .

अर्थः- जब जन्मकालमें २ ग्रहोंका युद्ध होताहै कहिये वह ग्रह राशि भाग कलासे सम होतेहैं तब वह ग्रहोंका कलात्मक शर करना अनंतर वही ग्रहोंका पूर्वोक्त बलका जो ऐक्य उस्का अंतर करके उस्को शरके अंतरसे भागदेना जो फल आवेसो उत्तर दिशामें रहने वाला जो ग्रह उस्के बलमें युक्त करना और दक्षिण दिशामें रहने वाला जो ग्रह उस्के बलमेसे कम करना यह संस्कार चेष्टा बलका भेद है.

टीपः- सूर्य्यसे चंद्रादिकोंका जो समागम उस्को अस्त कहना और भौमादि ५ ग्रहोंका परस्पर जो समागम उस्को युद्ध कहना.

इसका आनयन ग्रह लाघवमें कहा है सो ऐसा. उस्में प्रथम पातांशादि कहते हैं.

श्लोक-
खाम्बुधयः स्वयमाः स्वभुजंगाः स्वांगमिताः खदशक्र-
मनःस्युः ॥ पातलवाः कुसुताद्बुधभृग्वोर्मध्यमचंचल
केन्द्रविहीनाः कुहिम्यांशियगाग्निशादलचयक्षेपड्भु-
एंचलं केन्द्रंचक्रविशुद्धमस्य भमिताद्धें क्यलवग्नागतात्
त्रिंशद्धृभयनंकुजात्कुयनलाब्धीन्द्रद्विभक्तं क्रमात्
तद्दीनाधृतिरापिंलागुणगुवोगोव्जाद्नाद्राक्स्मुति ॥१॥

मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रहः
४०	२०	८०	६०	१००	पातांशाः
१	२	३	४	४	शीघ्रांशाः
१	२	४	१	७	भाज्यांकाः
१८	१५	१३	११	१२	शीघ्रकर्णांकः

शरकेलिये शीघ्रकरणेका प्रकारः-

भौमादि जिस ग्रहका कर्णसाधना होय उस्का अंतिम शीघ्रकेन्द्रलेके वह ६ राशीके अपेक्षा अधिक होय तो १२ राशीमें कम करना और वह षड्राल्प केन्द्रके राशि परिमित कोष्टकमें लिखा जो शीघ्रांक उस्की मिलान लेना. और एकाधिक राशि परिमित शीघ्रांकमेंकेन्द्रकी राशी त्यागकरके अंशादिकको गुणना और वह गुणाकारको ३० सेभाग देना तो फल अंशादि आवेगा उस्में शीघ्रांककी मिलानयुक्त करना जो योग आवे उस्को क्रमसे कोष्ठकमेका भाज्यांकसे भागदेना जो फल आवेसो अंशादि जानना. वह क्रमसे कोष्ठकमेका शीघ्र कर्णांकिमेंसे कमकरना जो शेष रहे सो ग्रहोंका अंशादि शीघ्रकर्ण होताहै. और जो बुध शुक्रका पातांशक हे हैं उस्में अहर्गणोत्पन्नजो बुध और शुक्र जो शीघ्र केन्द्र होयसो ऊपर कहा जो पातांश उस्मेंसे कम करके जो शेष अंश रहे सो बुध और शुक्रके पातांश होते हैं.

भौमादिशरबनानेकाप्रकारः-

श्लोक- मंदस्पष्टखगात्स्वपातरहितात्क्रांत्यंशकात्केवलात्कर्णाप्तास्त्रियमाहताअथगुरोश्चेल्लोचनाप्ताः पुनः ॥
स्वाध्यूनांमसृजोऽङ्गुलादिकशरः पातोनदिक् स्यादसौ त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः ॥

अर्थभाषा-

जिस ग्रहकाशर बनाना होय उस ग्रहका पातांश मंदस्पष्ट ग्रहमेंसे कम करके जो शेष रहे सो पातोन ग्रह भया अनंतर पातोन ग्रहको अयनांश देनेबिना उस्से क्रांति ल्यावना और वह क्रांतिको २३ से गुणके वह गुणाकारको शीघ्र कर्णसे भागदेनातो अभीष्ट ग्रहका अंगुलादिशर होताहै सो पातोन ग्रह उत्तर गोलमें होयतो उत्तर शर दक्षिणगोलमें होयतो दक्षिणशर ऐसाजानना वैसा ही

गुरुका शर करना होयतो ऊपरकी रीतिसे ले आये जो शर उस्को २ से भाग देना तो गुरुका अंगुलादि शर होता है. और भौमका शरकरना होयतो ऊपरकी रीतिसे ले आये जोशर उस्मेंसे उसीका चतुर्थांश कम करना तो भौमका अंगुलादि शर होताहै. अनंतर बनाया जोशर उस्को ३से गुण देना तो कलात्मक शर होता है..

दृग्बल भाषा.

ग्रहपर जिस ग्रहकी दृष्टि रहती है उस्के बीचमें शुभ ग्रहकी दृष्टीका ऐक्य करके उस्का चतुर्थांश लेना तो वह धन दृग्बल होताहै और पापग्रहके दृष्टीका ऐक्य करके उस्का चतुर्थांश लेनातो वह ऋण दृग्बल होता है. अनंतर धन दृग्बल और ऋण दृग्बल इनका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है.

टिपः- चन्द्र बुध गुरु शुक्र यह शुभ ग्रह और रवि भौम शनि यह पाप ग्रह हैं बुध पापग्रह युक्त होयतो पापशुभ ग्रह युक्त होयतो शुभमिश्र ग्रह युक्त होयतो मिश्र फल जानना..

उदाहरणम्.

सूर्य्यके ऊपर शुभ ग्रहकी दृष्टीका ऐक्य १।२६।४२ इसका चतुर्थांश ०।२४।१० यहधन दृग्बल और सूर्य्यके ऊपर पाप ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ०।२९।२१ इसका चतुर्थांश ०।७।२० यह ऋण दृग्बल इनका अंतर ०।१६।५० यह धन दृग्बल सूर्य्यका भया इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका करना.

टिप्पणः- शुभ ग्रहकी दृष्टीका चतुर्थांश पाप ग्रहकी दृष्टिका चतुर्थांशमें घट जायतो ऋण दृग्बल अन्यथा धन दृग्बल जानना.

दृग्बल चक्र मिदम्.

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	भृगुः	शनिः	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	
१६	१	१	२	१६	१३	२१	दृग्बल.
५०	४७	२६	२०	२	५०	४५	
धन	ऋण	ऋण	ऋण	धन	ऋण	धन	

षड्बलैक्य चक्र मिदम् ॥.

सूर्य्यः	चन्द्रः	मंगः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
२ ४९ ३३॥	३ ० ९॥	१ २१ १३॥	१ ४८ ५९॥	१ ३५ १०	२ २९ २०॥	२ २ ४७	स्थानबल १
० ३० १०	० ५७ ३४	० ५० ३२	० ६ ७	० ४९ ३०	० ४५ १४	० ३८ ४७	दिग्बल २
१ ४१ ४	५ ३६ ३२	१ १३ ४४	५ २२ २६	३ १ १६	१ १ १६	२ २८ ४४	कालबल ३
१ ३४ १६	० ५६ १०	५ २९ ४०	१ २३ २२	१ १९ १२	० ६६ ४६	० २१ ३४	चेष्टाबल ४
० ० ०	० ५१ २६	० १७ ८	० २५ ४३	० ३४ १७	० ४२ ५५	० ८ ३४	निसर्गबल ५
७ २५ ३॥	७ २१ ५१॥	५ १२ ३७॥	५ १४ ४६॥	७ १९ २५	५ ४५ २७॥	५ ४० २६	पांचोंका योग.
० १६ धन ५०	० १ ऋण ४५	० १ ऋण २[illegible]	० २ ऋण २०	० १६ धन २	० १२ ऋण ५०	० २१ धन ४५	दृग्बल.
७ ५१ ५३॥	६ २० ४॥	५ १० ५१॥	५ १२ २६॥	७ ३५ २७।	५ २३ ३७॥	६ २ ११	षड्बलयोगः

भावबल.

अर्थ भाषाः—लग्नादि भावोंके स्वामीका जो बलसो लग्नादि भावबल होताहै. मनुष्य राशी मिथुन कन्या तुला धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ इस्मेंसे सप्तम भाव कम करना चतुष्पद राशीमेष वृषभ सिंह धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध इस्मेंसे चतुर्थ भाव कम करना. कीट राशी कर्क वृश्चिक इस्मेंसे तनु भाव कम करना. जलचर राशी मीन और मकरका पश्चिमार्द्ध इस्मेंसे दशम भाव कम करना अनंतर शेष ६ राशीके अपेक्षा अधिक होयतो १२ राशीमेंसे कम करके षड्भाल्प शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीति प्रमाण बल साधन करनातो भाव दिग्बल होताहै अनंतर यह दिग्बल भाव बलमें युक्त करना भावपर जीन ग्रहोंकी दृष्टी होय उस्मेंसे शुभ ग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थांश लेना तोवह धन दृग्बल होताहै और पापग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थांश लेनातो वह ऋण दृग्बल होताहै अनंतर धनऋण दृग्बलका अंतर करनातो स्पष्ट दृग्बल होताहै. यह दिग्बल संस्कृत भाव बलको धन होयतो युक्त करना. ऋण होयतो कम करना फेरउस्को भावके ऊपरकी बुध गुरुकी दृष्टी युक्त करनातो स्पष्ट भाव बल होताहै.

भावबलोदाहरणं:- तनुभावस्वामि शुक्र इस्का षड्बलैक्य ५।३१।३७।३० यह तनुभावबल यही रीतिसे धनादि भावोंका बल जानना + तनुभाव ६।१९।४२।२६ यह लग्नराशी मनुष्यराशी है. इसवास्ते इस्मेंसे सप्तम भाव ०।१९।४२।२६ कमकरके ६।०।०।० यह ६ से ज्यादा नहीं इसवास्ते ६ इस्का फल पूर्वोक्त दिक्बल सारणी परसे १।०।० यह तनुभाव दिग्बल और यह तनु भाव बल ५।३१।३७।३० इस्मे युक्त करके ६।३१।३७।३० यह दिग्बल संस्कृत तनु भाव बल- तनुभावपर शुभ ग्रह दृष्टियोग १।४३।२ इस्का चतुर्थांश ०।२५।४५ यह धन दृग्बल और पापग्रह दृष्टि १।३९।१२ योग यह इस्का चतुर्थांश ०।२४।४८ यह ऋण दृग्बल इस्का अंतर ०।०।५७ यह धन स्पष्ट दृग्बल यह दिग्बल संस्कृत तनु भाव बलमें युक्त करके ६।३२।३४।३० यह इस्को तनु भावपर बुध दृष्टि ०।५०।५० गुरु दृष्टि ०।०।४४ युक्त करके ७।२४।८।३० यह स्पष्ट तनुभाव षड्बल भया. यही रीतिसे धनादि भावोंका स्पष्टबल करना

भाव बल चक्रम्.

त.	ध.	स.	सु.	पु.	रि.	जा.	मृ.	ध.	क.	आ.	व्य.	भावाः
५।३१।३७।३०	५।१०।५१।३०	७।२५।२७।०	६।३।११।०	६।३।११।०	७।२५।२७।०	५।१०।५१।३०	५।३१।३७।३०	५।१२।२६।३०	७।३०।४।३०	७।५१।५२।३०	५।१२।२६।३०	भावस्वामी बलम्.
१।०।०।०	०।१०।२०।०	०।२९।२०।०	०।०।०।०	०।१९।२५।०	०।४०।२९।०	०।२९।१।०	०।२९।२०।०	०।२०।२९।०	०।२९।१।०	०।५०।१९।०	०।५०।१९।०	भावदिग्बलचक्रम्
६।३१।३७।३०	५।२१।११।३०	७।५४।४७।०	६।३।११।०	६।२२।३६।०	८।५।५६।०	५।३९।५२।३०	६।०।५७।३०	५।३२।५५।३०	७।५९।५।३०	८।४२।११।३०	६।२।४५।३०	योग.
०।०।५७ ध.	०।८।११ ऋ.	०।१०।३८ ऋ.	०।२।१ ऋ.	०।२०।२२ ऋ.	०।१०।३४ ऋ.	०।१४।५९ ध.	०।२९।२ ध.	०।२१।१० ध.	०।१५।७ ध.	०।१।२१ ऋ.	०।१७।२७ ध.	भावदृग्बल.
६।३२।३४।३०	५।१३।०।३०	८।४।९।०	६।०।१०।०	६।१।१२।०	८।५।२२।०	५।५३।५८।३०	६।२९।५९।३०	५।५४।१५।३०	८।४।१२।३०	८।४०।५१।३०	६।२९।९।३०	योग.
०।५०।५०	०।२५।५०	०।१९।५०	०।४।२०	०।०।०	०।०।०	०।०।०	०।९।४०	०।२५।२०	०।२४।२०	०।९।५०	०।२८।४१	बुधदृष्टिः
०।०।४४	०।३७।२९	०।४६।४४	०।५१।५	०।६।५७	०।५८।४५	०।४५।४५	०।५६।१६	०।१३।२४	०।०।०	०।०।०	०।०।०	गुरुदृष्टिः
७।२४।८।३०	६।१६।१९।३०	९।१०।४३।०	७।५।२५।०	६।८।१०।०	९।५।३७।०	६।३९।४२।३०	७।४२।५५।३०	६।४२।५९।३०	८।३८।३२।३०	८।५०।४१।३०	७।४।५०।३०	स्पष्टभावबलचक्रम्

श्लोक. } जगदं … नराचे … ॥
बलाधिकारः … ॥५॥

॥ अथ इष्टकष्टाऽध्यायः ॥ ४ ॥

इष्टकष्टसाधनार्थरविचंद्रचेष्टाबलकेन्द्रसाधनं.

श्लोक- } व्यर्केन्दुस्त्रिभयुक्तसायनरविश्चेष्टाख्यकेन्द्रं तयो-
र्गोकष्टेष्टविधौ वले कुरु ततः प्राग्वन्नवीर्य्यायते ॥ १२ ॥

अन्वयः- विगतोऽर्कोयस्मादिन्दोः सचासौ व्यर्केन्दुः त्रिभयुक्त सायन रवि श्चक्रमेण तयोश्चेष्टाख्यकेन्द्रे भवतः तद्यथा अर्कोनश्चन्द्रस्य चेष्टाकेन्द्रं राशित्रयेणायनांशैश्चयुतो रविः सूर्य्यस्य चेष्टाकेन्द्रं स्यात् ततस्ताभ्यां केन्द्राभ्यां प्राग्व भौमादि चेष्टाबलसाधनवत् षडधिकं चक्राच्युत षड् दुदित्यादिना रवीन्द्वोर्बलं कुरु भोगणके सध्याहारः कस्मिन् विधौ गोकष्टेष्ट विधौ गावो रश्मयः कष्टञ्चेष्टंच कष्टेष्टे कष्टेष्टयोर्विधिः कष्टेष्ट विधिस्तस्मिन् कष्टेष्ट विधौ अयनो चेष्टाबलयोः कष्टेष्ट साधने उपयोगोऽस्तीत्यर्थः नवीर्य्यायतिभावः यतः द्विसंगुणेत्वायन पक्षवीर्य्ये चेष्टाबले तिग्मकराब्जयोस्त इति ॥

अर्थ भाषा:- चन्द्रमेंसे सूर्य्य कम करनातो चन्द्रका चेष्टा केन्द्र होता है. और सायन सूर्य्यमें ३ राशियुक्त करना तो सूर्य्यका चेष्टाकेन्द्र होताहै. अनंतर यह केन्द्रसे रश्मिकष्टेष्ट साधनार्थ उच्च बलमें भूमौक्त रीति प्रमाण चेष्टा बल बनावना- यह चेष्टाबल- पूर्वके ऐसा षड्बलार्थ ऐसा समझना- नहीं कारण सूर्य्यकाजो अयनबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना और चन्द्रका जो पक्षबल वही चेष्टाबल है इसवास्ते दूना करना.

उदाहरणम्.

चन्द्र ८।५।२२।३५ यह इस्में से सूर्य्य ०।१३।१०।४२ यह कम करके ८।२२।११।५३ यह चन्द्र का चेष्टाकेन्द्र भया और ०।१३।१०।४२ यह इस्को अयनांश २२।४४।३ युक्तकरके १।५।५४।४५ यह सायन सूर्य्य इस्को ३ राशि युक्त करके ४।५।५४।४५ यह सूर्य्यका चेष्टाकेन्द्र अनंतर यह चेष्टाकेन्द्रसे पूर्वोक्त रीतिसे पूर्वमें लिखीजो चेष्टाबल सारणी ऊपरसे बनायासो यह चंद्रचेष्टाबल ०।३२।२६ सूर्य्यका चेष्टाबल ०।४१।५८

रश्मीष्टकष्ट साधन- श्लोकः-

येचेष्टोच्चबलेरसैर्विनिहते सैके निजारश्मय श्चेष्टातुंगबला
हतेः पदमिहेष्टं स्याद्बलोनैकयोः ॥ घातान्मूलमिदं हि कष्टमय-

त्तद्रूपंदशायाः फलंवीर्य्यंदृक्पृथगिष्टकष्टगुणितेदृचेष्टकष्टाव्हये ॥ १३ ॥

अन्वयः

सूर्य्यादीनांप्रागानीते येचेष्टोच्चबलेते षड्भिर्गुणिते सैके कृते सतिनिजा रश्मयश्चेष्टाबलाच्चेष्टारश्मयः उच्चबलादुच्चरश्मयो भवंति इत्यर्थः चेष्टाबलेनोच्चबलं गुणनीयं गोमूत्रिका गुणनरीत्या तस्यमूलमिष्ट संज्ञंस्यात् + चेष्टबलतुंगबलोनैकयोर्घाततान्मूलं कष्ट संज्ञंस्यात् दशाफलं तद्रूपंस्यात् अर्थादिष्टकष्टतुल्य फलमिति इष्टेऽधिकेसति शुभमधिकं कष्टेऽधिकेऽशुभमधिकं साम्येमिश्रफलं दशायाः स्यात्

ग्रहस्य बलं अर्थात्पड्वलैक्यं स्थानद्वये स्थाप्यं तथा ग्रहोपरिया दृष्टयस्ता अपिस्थानद्वये ग्रहस्येष्टकष्टेन गुण्यास्तदा क्रमेणेष्टबलं कष्टबलं इष्टदृष्टयः कष्टदृष्टयश्च भवंतीति॰

अर्थः- ग्रहोंका जो चेष्टाबल और उच्चबल इस्को ६से गुणके गुणाकारमें १एक युक्त करना तो ग्रहोंका उच्चरश्मी और चेष्टारश्मी होती है. ग्रहोंका चेष्टाबल औरउच्चबल इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका इष्ट होताहै. एक १ नेंसे ग्रहोंका उच्चबल और चेष्टाबल पृथक् पृथक् कम करके शेषजो गुणाकार उस्का वर्गमूल निकालना तो ग्रहोंका कष्ट होताहै. यह इष्ट कष्टके प्रमाण ग्रहोंका शुभाशुभ दशाफल जानना. ग्रहोंका पड्बलैक्य और ग्रहोपरिदृष्टी इस्को पृथक् पृथक् ग्रहोंके इष्टसे और कष्टसे गुण देनातो ग्रहोंका इष्टबल और कष्टबल और ग्रहोंकी इष्टदृष्टीऔर कष्ट दृष्टि होती है.

वर्गमूलनिकालनेका प्रकार.

श्लोक-
अंत्यंयावदिहाप्छाकाद्दृर्ध्वतिर्य्यक्स्थरेखया संज्ञास्थानं फलानां विषमाख्यसमे क्रमात् ॥ त्यक्त्वान्त्याद्विषमात्कृतिंद्विगुणयेन्मूलंसमेतद्धृते त्यक्त्वालब्धकृतिंतदाद्यविषमाल्लब्धंद्विनिघ्नंन्यसेत् पंक्त्यांपंक्तिहृतेसमेऽन्त्यविषमात्त्यक्त्वाप्तवर्गफलं पंक्त्यांतद्द्विगुणंन्यसेदितिमुहुःपंक्तेर्दलंस्यात्पदम् ॥ १० ॥

अन्वयः- गणक अंत्यादिषमात् कृतिंत्यक्त्वा मूलं द्विगुणयेत् समे तद्धृते सति लब्धकृतिं त्यक्त्वा लब्धंद्विनिघ्नंपंक्त्यांन्यसेत् समे पंक्तिहृते सति अन्त्यविषमात् आप्तवर्गं त्यक्त्वा तत्फलंद्विगुणंपंक्त्या

न्यसेत् इतिमुहुः कुर्यात् तदापंक्तेः दलंपदंस्यात् .

अर्थ भाषाः- जिस संख्याका मूल निकालना होय उस्के दहने तरफ से विषम समका चिन्ह करना जब तक अंककी समाप्ती न होय तब तक करना अनंतर सबसे बांई तरफ जो अंत्य विषम होय उस्में जिस संख्या का वर्ग घटे सो घटाय देना और जिस्कावर्ग घटै उस संख्याको मूल कहते हैं उस्को दूना करना उस्का नाम पंक्ति है उस करके भाग देनाजो विषमके पास सम होय उस्में लब्धि ऐसी लेनाकि जिस्कावर्ग आगेके विषममें घटि जायतो उस लब्धिका वर्ग आगेके विषममें घटाय देना उस्को दूना करके प्रथमजो पंक्ति संज्ञाहै उस्में आगे एक स्थानमे बढायके रखना कदाचित् और भी अंक होयतो उसी पंक्तिसे पुनः पूर्व रीतिसे भाग देना लब्धिका वर्ग आगेका विषममें घटाना लब्धि दूनी पंक्तिमें रखना ऐसा अंक समाप्तीतक करतेजाना फिर उस पंक्तिका आधा करना तो मूल होताहै.

सावयवअंकका मूल निकालनेकी रीति.

मूलावशेषकंसैकं षष्टिघ्नं विकलान्वितं ॥ द्वियुक्तेन
द्विनिघ्नेनमूलेनाप्तंस्फुटं भवेत् ॥

अर्थः- जब मूल निःशेष न होयतो शेषमें १ युक्त करिके ६० से गुणदेना उसको आयाजो मूल उस्में २ युक्त करके दूना करिके भाग देनातो मूलका अवयव होताहै यह स्थूल रीति है.

सूक्ष्मरीति यह है.

सैके न द्विघ्नमूलेन भक्तं मूलावशेषकम् ॥ लब्धन्तुत-
दधः स्थाप्यं मूलं सूक्ष्मतरं भवेत् ॥

अर्थः- मूल आयाजो उस्को दूना करके १ युक्त करिके मूल शेषमें भाग देना लब्धिको उस मूलके नीचे रखना तो सूक्ष्म मूलके आसन्न होगा.

और यह सबसे अच्छी रीति है.

जिस्का मूल लेना होय उस्को ६० से गुणि देना कलायुक्त करना फिर ६० से गुणना उस्का मूल लेना उस्को ६० से भाग देनातो ठीक मूल होगा यदि ऊपरका अंश शून्य होयतो नीचेके अंकको ६० से गुणिके विकला युक्त करके मूल लेना उस्को ६० से भाग देनातो मूल होता है.

रश्म्युदाहरणम्.॥

सूर्य्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ इस्को ६ से गुणके ४।११।४८ यह इस्को एक युक्त करके ५।११।४८ यह सूर्य्यकी चेष्टा रश्मि० सूर्य्यकाउच्चबल ०।५८।५६ इस्को ६ से गुणके ५।५३।३६ यह इस्को १ युक्तकरके ६।५३।३६ यह सूर्य्यकि उच्चरश्मि० यही रीतिसे चंद्रादिकोंका चेष्टा रश्मि और उच्च रश्मि बनावना.

चेष्टाबल.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
० ४१ ५८	० ३२ २६	० ४६ ४८	० ४४ २०	० ४८ ४१	० २१ ५६	० २१ १६

उच्चबल.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
० ५८ ५६	० २० ४७	० ४ २१	० २ ७	० २८ ५५	० ४९ ५८	० १७ ४७

चेष्टारश्मि०						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
५ ११ ४८	४ १५ ३६	५ ४० ४८	५ २६ ०	५ ५८ ६	३ ११ २६	३ ७ २६

उच्चरश्मि०						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
६ ५३ ३६	३ ४ ४२	१ २६ ६	१ १२ ४२	४ ५३ ३०	५ ५९ ४८	२ ४६ ४२

इष्टोदाहरणम्.

सूर्य्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह इस्को सूर्य्यकाउच्चबल ०।५८।५६ यह इस्से गुणके ०।४१।१३ इस्का वर्ग मूल ०।४९।४३ सह सूर्य्यका इष्ट भया इसी प्रकारे चन्द्रादिकोंका इष्ट बनावना.

चेष्टोच्चबलगुणनचक्र.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
० ४१ १३	० ११ १८	० ३ २४	० १ ३४	० ३२ १४	० १८ १६	० ६ १८

इष्टचक्रम्						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
० ४९ ४३	० २६ ३	० १४ १७	० ९ ४२	० ४३ ५८	० ३२ ७	० १९ २६

कष्टोदाहरणम्.

सूर्य्यका चेष्टाबल ०।४१।५८ यह एकमें कम करके ०।१८।२ इस्को सूर्य्यका उच्चबल ०।५८।५६ यह इस्को एकमें कम करके ०।१।४ यहइस्से गुणके ०।०।१९ यह इस्का वर्गमूल ०।४।२० यह सूर्य्यका कष्ट भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना.

एकोनचेष्टोच्चबलगुणन							कष्टचक्रम्.							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
० ० १९	० १७ ५९	० १२ १५	० १५ ७	० ३ ३८	० ६ २२	० २७ १५	० ९ २०	० ३२ ४७	० २७ ७	० ३० ७	० १४ ४५	० १९ ३२	० ४० २५	०

इष्टकष्टबलोदाहरण- सूर्य्यका षड्बलैक्य ७।५३।५३।३० इस्को सूर्य्यका इष्ट ०।४९।४३ यह इस्से गुणके ६।३३।००।५३ यह सूर्य्य का इष्टबल अथवा सूर्य्यका कष्ट ०।४।२० यह इस्से सूर्य्यका षड्बलैक्यको गुणके ०।३४।०४।५२ यह सूर्य्यका कष्टबल यही रीतिसे चंद्रादिकोंका इष्टबल और कष्टबल करना.

इष्टबलचक्र.							कष्टबलचक्र.							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
० ३१ ० ५२	११ ३ ५७	० १८ ६	३ ५० ३१ ४१	५ ३३ ४५ ०	३ ३ २०	५ ५७ १८ ०	० ३४ ५२	४ ० २७ ८	३ २० २९ २६	३ ३६ ४९ ४३	५१ ५८ ०	४८ ३ ३६	४ ३ ५८ ०	०

उदाहरण- चंद्रके ऊपर सूर्य्यकी दृष्टी०।३८।५४ इस्को चन्द्रके इष्ट ०।२६।३ यह इस्से गुणके ०।८।१२ यह चन्द्रके ऊपर सूर्य्यकी इष्टदृष्टी और चन्द्रका कष्ट ०।३२।४७ यह इस्से सूर्य्य दृष्टि ०।३८।५४ गुणके ०।१०।१९ यह कष्ट दृष्टी भई यही रीतिसे सर्वग्रहोंपरकी इष्टदृष्टी और कष्ट दृष्टी करना.

इष्टदृष्टीचक्र.								कष्टदृष्टीचक्र.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
० ० ०	० ८ १२	० ७ २४	० ० ०	० ३ ३८	० ० ०	० ४ ५५	सू.	० ० ०	० १० १२	० १४ २	० ० ०	० १ १२	० ० ०	० १० १४
० २४ ३	० ० ०	० १० २	० ५ ०	० २० ५७	० ५ ५७	० ५ १०	चं.	० २ ५८	० ० ०	० १९ ३	० १५ ३२	० ७ १	० ३ ३१	० १० ५५
० २२ ५२	० २ २८	० ० ०	० ८ २	० ० ०	२२ ७ ०	० ० ०	मं.	० ३ १५	० ३ ७	० ० ०	० २४ ५७	० ० ०	० १९ ३३	० ० ०
० ० ०	० २ २८	० २ २७	० ० ०	० २४ ४२	० ० ०	० ११ ५९	बु.	० ० ०	० ४ २२	० ४ ३९	० ० ०	० ८ १७	० ० ०	० २४ ५६
० २१ ३१	० २५ २६	० ० ०	० ८ ३८	० ० ०	० २० ४०	० ४ १	बृ.	० २ २६	० ३२ ०	० ० ०	० २६ ४९	० ० ०	० १२ १२	० ८ २२
० ६ ४२	० ० ०	० ६ ४२	० ० ०	० ३९ ५०	० ० ०	० ११ ५५	शु.	० ० २५	० ० ०	० १२ ४६	० ० ०	० १३ २२	० ० ०	० २४ ४७
० ० ५	० २१ १६	० १२ १२	० ७ ७	० २४ ५१	० २४ ३	० ० ०	श.	० ० ३	० २६ ४६	० २६ ३	० २२ ६	० ११ ४१	० १४ १२	० ० ०

सप्तवर्गशुभाशुभसाधन.

श्लोक-
स्वोच्चे रूपं त्रिकोणे चरणविरहितं स्वर्क्षगेऽर्द्धं त्रयोऽष्टां
शाश्चाधीष्टर्क्षइष्टर्क्षयुजि च चरणः स्यात्समर्क्षेष्टमांशः ॥
भूपांशो वैरिगेहेऽध्यरियुजिरदांशश्च नीचे खमीशा
दिष्टं गेहे तदूनं कमसदयदलं षट्सु कार्य्यं तदैक्ये ॥ १४ ॥
पंक्त्योः सप्तसु कोष्ठयोः प्रथमयोरिष्टासदैक्ये कृता
स्थाप्ये भदलादिषट्सु च तदर्द्धं वर्गपानां पृथक् ॥
कृत्वोक्त्याऽसदसद्युतौ निजनिजे तान्भिन्नइष्टाशुभे
वर्गेट्तत्स्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात्पदग्ने स्फुटे ॥ १५ ॥

अन्वयः- स्वोच्चे मूल त्रिकोणे स्वादिगते ग्रहे रूपं पादोन रूपार्द्धमित्या दि गेहे गृहस्थाने ईशात्स्वामिन इष्टं स्यात् ॥ तद्यथा ॥ ग्रहो यस्मिन् गृहे वर्तते तत्स्वामी यदि स्वयं तदा रूपार्द्धं बलं यद्यधिमित्र गृहे तदा त्र्यो ष्टांशाः मित्र गृहे चतुर्थांशः सम गृहे ऽष्टमांशः शत्रु गृहे भूपांशः अधिशत्रु गृहे दंतांशः नीचे खं शून्यं एतदूनं रूपात्कष्टं गेहे गृहस्थानस्थयोरिष्टक ष्टयोरर्द्धं होरादि षट्सु स्थाप्ये ॥ एतदुक्तम् ॥ सप्तमस्थानस्थितानां शुभानामैक्यं शुभम् अशुभानामैक्यम शुभं स्यात् ॥ १४ ॥

पंक्त्योरिति ॥ इष्टासदैक्ये चतुर्भक्ते पंक्त्योः स्थाप्ये एतदुक्तं भव ति ॥ प्रागानीतमिष्टैक्यं चतुर्भक्तं शुभपंक्त्योःस्थाप्यं कष्टैक्यं चतुर्थांश मशुभं पंक्तौ स्थाप्यं प्रथमयोर्ग्रहकोष्ठयोरित्यर्थः भदलादि षट्सु होरा दिषट्सु तदर्द्धं गृहस्थापितफलस्यार्द्धं स्थाप्यं वर्गपानां गृहादि सप्तवर्गेशा नां पृथक् प्रत्येकं निजनिजे स्वस्वेसदसद्युतौ शुभाशुभयो रैक्ये उक्त्ये त्यनेन स्वोच्चे रूपमित्यादिना स्थापितयोरेव शुभाशुभयोरैक्ये कार्य्ये न चांतरं स्थापितयोरिति कृत्वा तान्भिन्न इष्टाशुभेता न्यांनि भे कार्ये इष्ट शुभे पंक्त्योः सप्तसु कोष्ठयोःस्थापितफले अनयारीत्या आनीते ये इष्टाशु भेगे वर्गेट्तत्स्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात् पदघ्ने स्फुटे स्याताम् ॥ वर्गेट् वर्ग स्वामी तत्स्थरवगोवर्गस्थग्रहः ओजसोः पलयोः तयोर्घा त पदेन पूर्वफले गुणिते सति स्फुटेस्तः ॥ १५ ॥

अर्थभाषा:

गृहेश परनोच्चमें होयतो रूपबल १ त्रिकोणमें होयतो तीन चतुर्थांश ०।४५।० स्वगृहमें होयतो अर्द्ध ०।३०।० अधिमित्रके

गृहमें होयतो तीन अष्टमांश०।२२।३० मित्रगृहमें चतुर्थांश०।१५।० समके गृहमें अष्टमांश०।७।३० शत्रु गृहमें षोडशांश०।३।४५ अधि शत्रु गृहमें दशांश०।१।५२।३० परम नीचमें होयतो शून्य ० यह गृह स्थानमें शुभ जानना यह शुभ एक१में हीन करनेसे अशुभ होताहै गृहस्थानमें यह शुभाशुभ होरादि षड्वर्ग स्वामी परसे गृहस्थानके फल प्रमाणसे जो फल आवे उस्का अर्द्ध जानना अनंतर सप्तवर्गोत्पन्न शुभका और अशुभका ऐक्यता करना.

टिप्पण.

ग्रह परम उच्चमें किंवा परमनीचेमे वा मूल त्रिकोणमें प्राप्त होयतो मित्रादिज फल नलेना ते उच्च किंवा नीच वा मूल त्रिकोण इसीका फल लेना.

उच्चमूलत्रिकोणवास्वगृह इसमेसेतीनकावादोका संभव होता हैउस्का निर्णय.

सिंह२० अंशतक सूर्य्यका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- वृषभ३ अंशतक चन्द्रका उच्च अनंतर मूल त्रिकोण- मेष१२ अंशतक भौमका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- कन्या अंशतक बुधका उच्च आगे५ अंशतक मूल त्रिकोण आगे स्वगृह- धनु१० अंशतक गुरुका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- तुला१५ अंशतक शुक्रका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- कुंभ२० अंशतक शनिका त्रिकोण अनंतर स्वगृह जानना- जब ग्रह उच्च किंवा नीच राशीका उक्तांशमें रहताहै तब ग्रहका परमोच्च किंवा परमनीच जानना.

अर्थ भाषा.

दो सात सात कोष्ठककी शुभाशुभ पंक्ति लिखना अनंतर शुभ पंक्तिका प्रथम कहिये गृह कोष्ठकमे ग्रहोंके सप्तवर्गोत्पन्न शुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांशका अर्ध लिखना: और अशुभ पंक्तिके प्रथम कोष्ठकमें ग्रहका सप्तवर्गोत्पन्न अशुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि षट् ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांश अर्ध लिखना अनंतर गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीका जुदाजुदा किया जो सप्त वर्गोत्पन्न शुभैक्य उस्को क्रमसे यह शुभ पंक्तिमें लिखाजो गृह होरादि सप्तवर्ग फलसे अलग अलग गुणदेना तो मध्यमशुभ होताहै. और गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीका पृथक् पृथक् किया

जोसप्तवर्गोत्पन्नअशुभैक्यउसको क्रमसे यह अशुभ पंक्तिमें लिखा जोगृहहोरादि सप्तवर्ग फलसे पृथक् पृथक् गुणदेनातो मध्यम अशुभ होताहै॰

अनंतर जिस ग्रहका स्पष्ट शुभ साधन करना होयतो उस ग्रहके इष्टबलको उसी ग्रहके गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीके इष्ट बलसे पृथक्पृथक् गुणके उनके वर्ग मूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम शुभको गुणदेना तो ग्रहोंका स्पष्टशुभ होताहै॰ और जिस ग्रहका स्पष्ट अशुभ साधन करना होयतोवह ग्रहके कष्ट बलको उसी ग्रहके गृह होरादि सप्तवर्गस्वामीके कष्ट बलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्गमूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम अशुभको गुण देनातो ग्रहोंका स्पष्ट अशुभ होता है॰

टिप्पणः- विंशतिरंशाःसिंहेत्रि कोणपरेस्वभवनमर्कस्य ॥ उच्चंभागात्रितयं वृषइन्दोःस्यात्रिकोणमपरेंशाः॥ द्वादश भागामेषेत्रिकोणमपरेस्वगृहंतु भौमस्यउच्चमथोकन्यायांतु बुधस्यतुगांशकैःसदाचिंत्यम्, परतस्त्रिकोणजातंपंचभिरंशैस्स्वराशिजंपरतः, दशभिर्भागैर्जीवस्यत्रिकोणंधनुषितत्परंस्वगृहम् शुक्रस्यतुतिथयोंशास्त्रिकोणमपरंस्वभंतुलायांतु, कुंभेत्रिकोणस्वगृहेरविजस्यरवेर्यथासिंहे॰ ॥

उदाहरणम्ः- सूर्य्य मंगलके गृहमें है इसवास्ते गृह स्वामी भौम-सो समके गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके गृह स्थानमें ०।७।३० शुभयह एकमें कमकरके ०।५२।३० यह अशुभ होरास्वामी सूर्य्ययह समके गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके होरा स्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमें कमकरके ०।५२।३० अशुभ इनके अर्द्ध होरास्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ अशुभ द्रेष्काण स्वामी सूर्य्य यह समके गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके द्रेष्काणस्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमें कमकरके ०।५२।३० अशुभ इनके अर्ध द्रेष्काणस्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ अशुभ सप्तमांशस्वामी चन्द्र यह शत्रु गृहमें है॰ इसवास्ते सूर्य्यके सप्तमांश स्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कमकरके ०।५६।१५ अशुभ इनको अर्द्ध सप्तमांश स्थानमें ०।१।५२॥ शुभ और ०।२८।७॥ अशुभ नवमांश स्वामी चन्द्र यह शत्रु गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके नवमांश स्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कमकरके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध नवमांशस्थानमें ०।१।५२॥ शुभ और ०।२८।७॥ अशुभ द्वादशांश स्वामी बुध शत्रु गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके द्वादशांश स्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमें कम करके ०।५६।१५ अशुभ इनका अर्ध द्वादशांशस्थानमें ०।१।५२॥ शुभ और ०।२८।७॥ अशुभ त्रिंशांश स्वामी गुरु ऽधि शत्रुके गृहमें है इसवास्ते सूर्य्यके त्रिंशांशस्थानमें ०।१।५२॥ शुभ यह एकमें कम करके ०।५८।७॥ अशुभ इनका अर्ध त्रिंशांशस्थानमें ०।०।५६।

शुभ और ०।२९।३॥। अशुभ सूर्य्यके सप्तवर्ग शुभका ऐक्य ०।२१।३३॥। और सूर्य्यके सप्तवर्ग अशुभका ऐक्य ३।३८।२६ यह प्रमाणसे चन्द्रादिक ग्रहोंका शुभाशुभ करके उनका ऐक्य करना.

वर्गेश सहित सप्तवर्ग शुभ चक्रम्.

ग्रह	सूर्य्यः	चंद्रः	मंग.	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	ग्रहः
ग्रह	मं. ७ स. ३०	श. २२ ऽमि. ३०	सू. ७ स. ३०	बृ. १ ऽश. ५२॥	बु. ३ श. ४५	श. २२ ऽमि. ३०	बु. ३ श. ४५	ग्रह
होरा	सू. ३ स. ४५	चं. १ श. ५२॥	सू. ३ स. ४५	सू. २ स. ४५	च. १ श. ५२॥	च. १ श. ५२॥	सू. ३ स. ४५	होरा
द्रेष्का.	सू. ३ स. ४५	श. ११ ऽमि. १५	बृ. ० ऽश. ५६।	मं. ३ स. ४५	बु. १ श. ५२॥	शु. ३ स. ४५	शु. ३ स. ४५	द्रेष्का.
सप्त.	चं. १ श. ५२॥	सू. ३ स. ४५	शु. ३ स. ४५	श. ११ ऽमि. १५	मं. ३ स. ४५	सू. ३ स. ४५	बु. १ श. ५२॥	सप्त.
नवमां.	चं. १ श. ५२॥	श. ११ ऽमि. १५	चं. १ श. ५२॥	श. ११ ऽमि. १५	बृ. ० ऽश. ५६।	बु. १ श. ५२॥	श. ११ ऽमि. १५	नव.
द्वाद.	बु. १ श. ५२॥	बृ. ० ऽश. ५६।	बृ. ० ऽश. ५६।	मं. ३ स. ४५	बृ. ० ऽश. ५६।	बृ. ० ऽश. ५६।	मं. ३ स. ४५	द्वाद.
त्रिंशां.	बृ. ० ऽश. ५६।	बु. १ ऽश. ५२॥	बृ. ० ऽश. ५६।	श. ११ ऽमि. १५	बु. १ श. ५२॥	शु. ३ श. ४५	मं. ३ स. ४५	त्रिंशां
ऐक्य	२१ ३३॥	५३ २६।	१९ ४१।	४६ ५२॥	१५ ०	३८ २६।	३१ ५२॥	ऐक्य.

सप्तवर्गअशुभचक्रमिदम्.

ग्रहः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
ग्रह	५२ ३०	२७ ३०	५२ २०	५८ ७॥	५६ १५	२७ ३०	५६ १५	ग्रह.
होरा	२६ १५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	२८ ७॥	२८ ७॥	२६ १५	होरा
द्रेष्का.	२६ १५	१८ ४५	२९ ३॥	२६ १५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	द्रेष्का
सप्त.	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	१८ ४५	२६ १५	२६ १५	२८ ७॥	सप्त.
नव.	२८ ७॥	१८ ४५	२८ ७॥	१८ ४५	२९ ३॥	२८ ७॥	१८ ४५	नव.
द्वाद	२८ ७॥	२९ ३॥	२९ ३॥	२६ १५	२९ ३॥	२९ ३॥	२६ १५	द्वाद.
त्रिंशा.	२९ ३॥	२८ ७॥	२९ ३॥	१८ ४५	२८ ७॥	२६ १५	२६ १५	त्रिंशां.
ऐक्य	३ ३८ २६।	३ ६ २३॥	३ ४० १८॥	३ १२ ७॥	३ ५५ ०	३ २९ ३३॥	३ २८ ७॥	ऐक्य

उदाहरण- सूर्य्यका शुभैक्य ०।२१।२३।। इस्को ४ से भागदेके ०।५।२. यह सूर्य्यके शुभपंक्तिके गृह कोष्ठकमें लिखना और इस्का अर्ध ०।२।' यह शुभपंक्तिके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना.

सूर्य्यका अशुभैक्य ३।२८।२६ इस्को ४ से भाग देके ०।५४।३६ यह सू र्य्यके अशुभ पंक्तिके गृहकोष्ठकमें लिखना. और इस्का अर्ध ०।२७।१८ यह अशु भपंक्तिके होरादि ६ कोष्ठकमें लिखना. इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका भी जानना.

शुभपंक्तिचक्रम्. | अशुभपंक्तिचक्रम्.

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	०।५।२२	०।१३।२१	०।४।५५	०।११।४३	०।३।४५	०।९।२६	०।७।५८	गृ.	०।५४।३६	०।४६।३८	०।५५।४	०।४८।१७	०।५६।१५	०।५०।२४	०।५२।२
हो.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	हो.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१२	०।२६।१
द्रे.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	द्रे.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१२	०।२६।१
स.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	स.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१२	०।२६।१
न.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	न.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१२	०।२६।१
द्वा.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	द्वा.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१२	०।२६।१
त्रिं.	०।२।४१	०।६।४०	०।२।२७	०।५।५१	०।१।५२	०।४।४८	०।३।५९	त्रिं.	०।२७।१८	०।२३।१९	०।२७।३२	०।२४।८	०।२८।७	०।२५।१५	०।२६।१

उदाहरणम्.

सूर्य्य मेषकाहै इसवास्ते गृहेश मंगल है. इस्का शुभैक्य ०।१९।५१ इस्को सूर्य्यकि शुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५।२२ इस्से गुणके ०।१।४६ यह सूर्य्यका ग्रह मध्यम शुभ- गृहेश मंगल इस्का अशुभैक्य ३।४०।१८।।। इस्को सूर्य्यके अशुभपंक्तिमेंका गृहफल ०।५४।३६ इस्से गुणके ३।२०।२८ यह सूर्य्यके गृह मध्यम अशुभ यह गतिसे होरादिकोंका मध्यम शुभ. शुभ करना और चन्द्रादिकोंका भी गृहादि मध्यम शुभाशुभ करना.

मध्यमशुभचक्रम्.								मध्यमअशुभचक्रम्.						
ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	०।१।५६	०।७।५	०।१।४६	०।२।५६	०।२।५६	०।५।६६	०।६।१३	गृ.	२।२०।२८	३।९।२३	२।२०।२८	२।१।४	२।१।४	३।५४।५८	२।४७।२८
हो.	०।०।५८	०।५।५६	०।०।५२	०।२।६	०।१।४०	०।४।१६	०।१।२६	हो.	१।२२।२३	१।१२।३०	१।४०।१४	१।२७।५२	१।२७।२६	५।१८।२३	१।२४।४३
द्रे.	०।०।५८	०।३।३२	०।०।२७	०।१।५५	०।१।२७	०।३।४	०।२।३३	द्रे.	१।३२।२३	१।२८।४१	१।४३।१०	१।२८।३७	५।३०।३०	१।२४।३९	१।२७।२३
स.	०।२।२३	०।२।२४	०।१।२४	०।३।२५	०।०।२७	०।१।४४	०।३।७	स.	५।२४।५३	५।२४।५३	१।२२।२९	१।२३।४२	१।४३।१५	१।३१।४४	१।२३।४४
न.	०।२।२३	०।३।३२	०।२।११	०।३।६	०।०।२८	०।३।४५	०।२।७	न.	१।२४।५३	१।२०।५२	१।२५।३६	१।२३।४२	१।४५।२६	१।२१।६	१।३०।१४
द्वा.	०।२।६	०।१।४०	०।०।३७	०।१।५५	०।०।२८	०।१।१२	०।१।१८	द्वा.	१।२७।५२	१।२७।२६	१।४३।१५	१।२८।२७	१।४५।२६	१।३४।३०	१।३४।३१
त्रिं.	०।०।४०	०।५।१२	०।०।३७	०।३।७	०।१।२७	०।३।४	०।१।१८	त्रिं.	५।४७।१२	१।१५।३	५।४३।१५	१।२३।४१	१।३०।३०	१।२४।३०	१।३५।३१

सूर्य्यका स्पष्ट शुभ साधन करना इसवास्ते सूर्य्यका इष्टबल ६।२३।०।५३ इस्को सूर्य्य नैपका है. इसवास्ते ग्रहेश भौम इस्का इष्टबल १।१४।० इस्से गुणके ८।२।१६ इस्का वर्गमूल २।५०।६ इस्को सूर्य्यका मध्यम ग्रह शुभ ०।१।४६ इस्से गुणके ०।५।० यह सूर्य्यका स्पष्ट ग्रह शुभ भया यही रीतिसे सूर्य्यके होरादिकोंका स्पष्ट शुभ और सूर्य्यका ग्रहादि स्पष्ट अशुभ और चंद्रादिकोंका स्पष्ट शुभ और अशुभ करना.

वर्गेशग्रहेशइष्टबलगुणनचक्रम्.								वर्गेशग्रहेशकष्टबलगुणनचक्र						
ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
गृ.	६।१६	६।३२।३५	६।१५	४।४१।०	४।४१।०	५।५७।५०	७।२८।४५	गृ.	१।१९।४८	५६।१६।४२	१।१९।४८	८।५२।४०	४।५२।४०	७।१०।३०	१०।३८।४२
हो.	४२।२८।१४	१०।२६	८।१५	५।२९।१३	१७।४२।४८	९।४२।५२	१२।४४।२६	हो.	१।१९।२२	१६।२९।२६	१।१९।४८	२।१९।७	७।२८।४२	१७।१३।०	[illegible]
द्रे.	४२।२८।१४	१।३५।३२	५।११।३७	३।२९।१८	४।४१।०	९।१८।२१	५।५०।५०	द्रे.	८।१९।२३	२६।१७।४२	४।२२।९	६।७।१२	४।५२।४०	२।१४।३५	२।१९।३०
स.	[illegible]	२०।४५।३०	३।४५।५५	६।३८।४५	६।५५।३७	१२।५२।४९	१६।३८।४५	स.	१।१६।३५	१।१६।३५	६।१२।५०	१।३७।४२	४।२२।९	१।१३	१६।३७।४२
न.	[illegible]	५।१३।३३	२।५५।३०	१।३८।४५	२०।५६।३०	२।३४।६	४।४९।१२	न.	२।१६।३५	१६।५७।४२	१।२२।५९	१।३७।४२	३।२८।५६	४२।२६	१६।२९।०
द्वा.	[illegible]	५।४२।४८	६।५१।३७	२।१८	२०।५६।२९	[illegible]	२।३४।४०	द्वा.	२।२९।७	७।२८।४२	४।२२।९	७।१३।२	२।२८।५९	२।२१।२८	१।३१।१३
त्रिं.	२।१५।२	२।४०।५२	५।५१।३७	३।३८।४५	६।४१।०	९।१८।२२	२।२४।४०	त्रिं.	१।३६	१।२८।३०	६।२२।९	१०।३७।४२	४।५२।४०	२।१४।३५	९।२२।१३

वर्गेशगृहेशइष्टबलगुणनपदचक्र.

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
गृ.	२ ५० ६	२ २९ ४२	२ ५० ६	२ ९ ५०	२ ९ ५०	२ २६ ३१	१ १६ ५८
हो.	६ ३१ १	३ ११ ५	२ ५० ६	२ २० ३१	४ १२ २८	३ ७ १	३ २४ ९
द्रे.	६ ३१ २	२ २९ ४२	२ ३७ ०	१ १ ९	२ ९ ५०	३ ३ ३	२ २६ ३१
स.	४ २३ १९	४ ३३ १२	१ ५६ २२	१ १६ ५८	२ २७ ९	४ २७ ३०	१ १६ ५८
न.	४ ३३ १९	२ २९ ४२	१ ५६ ५४	१ १६ ५८	५ ३३ ४५	१ २६ ९	१ ५७ १८
हा.	२ २० ३१	४ १२ २८	२ ३७ ९	१ ९ ९	५ ३३ ४५	४ ७ ९	१ २२ १०
त्रिं.	६ ९ १६	१ ३८ १४	२ ३७ ९	१ १६ ५८	२ ९ ५०	३ ३ ३	१ २२ १०

वर्गेशगृहेशकष्टबलगुणनपदच.

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
गृ.	१ ९ ११	४ २ १२	१ ९ ११	२ १९ ३१	२ १२ ३१	२ ४२ २१	३ १५ ४०
हो.	० ३४ ५	४ ० २७	१ ९ ११	१ १३ ८	२ ४४ ५	२ ४१ ११	१ ३१ ११
द्रे.	० ३५ ५	४ २ १२	२ ५ २५	२ २८ २७	२ १२ ३१	२ ४० २१	२ ४२ २१
स.	१ ३० ३७	१ ३० ३७	२ ३ १२	२ १५ ४०	२ ५ २५	१ ० ४१	३ १५ ४०
न.	१ ३० ३७	४ २ १२	३ ३ ४८	३ १५ ४०	१ ५१ ५६	२ १० ११	० ३ ५९
हा.	५ १३ ८	२ ४४ ५	२ ५ २५	२ २८ २७	१ ५१ ५७	१ ४१ ५८	३ ५ ८
त्रिं.	१ ५२ ९	३ ३४ ११	२ ५ २५	३ १५ ४०	२ १२ ३१	२ ४० २१	३ ५ ८

स्पष्टशुभचक्र.

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
गृ.	० ५ ०	० १७ ४०	० ५ ०	० ६ २१	० ६ २१	० १२ २७	० ७ ५८
हो.	० ६ १८	० १८ ५४	० १ ३१	० ४ ५५	० ७ १	० १३ १८	० ५ ७
द्रे.	० ६ १८	० ६ ४९	० १ ३७	० १ ५७	० २ ८	० ९ २१	० ६ १३
स.	० १० ५१	० १० ५६	० ३ २	० ३ ५८	० १ २७	० ७ ४४	० ४ ०.
न.	० १० ५१	० ८ ४९	० ४ ११	० ३ ५८	० ९ २६	० ६ १	० ४ ८
हा.	० ११ ५५	० ७ १	० १ ३७	० १ ५७	० ३ ३६	० ४ ५६	० २ १
त्रिं.	० ४ १	० ८ २१	० १ ३७	० ३ ५८	० ३ ८	० ९ २१	० २ १
ऐ.	० ४८ १५	१ १८ ४०	० १९ ४२	० २७ ४	८ २६ २७	[illegible]	० ३१ २५

स्पष्टअशुभचक्रम्.

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
गृ.	३ ५१ ०	३ ४४ ४८	३ ५१ ०	५ ३९ ३४	६ ३९ ५४	६ ५२ २६	९ ६ ७
हो.	० ५६ २७	४ ५० ३३	१ ५५ ३४	१ ४७ ६	२ ५९ ६	३ ३० ३४	२ ३३ ५७
द्रे.	० ५६ २७	६ २४ १२	३ ३५ ४९	३ २९ १५	२ २६ ५३	५ ५६ १३	३ ५५ २७
स.	२ ८ १२	२ ८ १२	३ ९ ५४	४ ३२ ५७	३ ३५ ४९	१ ३२ ४७	३ ५ ४८
न.	३ ८ १२	५ १६ १९	४ १२ ३३	४ ३२ ५७	३ १६ ५३	२ ५५ ५८	० ५ ५९
हा.	१ ५६ [illegible]	३ ५६ ५६	३ ३५ ४९	३ २९ १५	३ १६ ५३	२ ५३ १२	४ ५४ ४३
त्रिं.	३ १३ ३	४ २ ५३	३ ३५ ४९	४ ३२ ५७	३ १६ ५३	४ ५६ १३	४ ५४ ४३
ऐं.	१५ ० ३६	९ १९ १३ ५०	२ ४ १५	२ ९ २४ २१	२ ७ २२ १	२ ६ १८ १५	२ ९ ५५ ०

श्लोकः } जगदीशेन रचिते केशवी ग्रंथ टिप्पणे ॥
इष्टकष्टाधिकारोयं पूर्णो भाषाप्रकाशकः ॥४॥

अथआयुर्दायाध्यायः

ग्रहोंका सर्व शुभाशुभ फल दशामें ही होता हैं और दशावि भाग आयुर्दा यज्ञान विना मालूम होता नहीं इस्केवास्ते आयुर्दायाध्याय आरंभकरतेहें अब आयुर्दाय दो प्रकारका है ग्रहयोगज और गणितागत उस्में ग्रहयोगज नियता युर्दाय परमायुर्दाय और अमितायुर्दाय ऐसा तीन प्रकारका हे. गणितागत अंशोद्भव पिण्डजनैसर्गिक और जीव शर्मोदित ऐसा चार प्रकारकाहै उस्में प्रथम योगजायुर्दायमेंसे अमितायुर्दायका उदाहरण कहते हैं.

श्लोक- } कर्कीन्दीज्ययुतोदयेबुधसितौकेन्द्रेत्वरीशेतरैरायु- र्विद्ध्यमितंहियोगजमिवान्यत्रोच्यतेयोन्मितम्

अन्वयः- चन्द्रेज्य युक्ते कर्किलग्ने यदिबुध शुक्रौ केन्द्रे एकत्र वा पृथक् स्याताम् इतरैः सूर्यभौममन्दैः त्र्यरीशस्थानेषु तृतीय षडेकादशस्थान स्थितैः अस्मिन् योगे ऽमितमायुर्विद्धि जानीहि अन्यत्र ग्रंथे योगजमायुर्विद्धि ॥ अथास्मिन ग्रंथे गणितागतोऽमितमायुरुच्यते.

अर्थभावाः- कर्क लग्नमें जन्म होय उस्में चन्द्र गुरु युक्त होय बुधशुक्र केन्द्रमें होय और इतर ग्रह (रवि मंगल शनि) ३।६।११ यह स्थानमें होय इस प्रमाण सात ग्रहोंका योग होयतो अमित आयुष्य जानना योगजायुर्दायके दूसरेभी भेद और जातक शास्त्रमें कहे हे यह जातक पद्धतीमें गणितायुर्दाय मात्र कहा है.

अंशायुःसाधनार्थचेष्टागुणकउच्चगुणकस्फुटगुणकसाधन.

श्लोक- } त्र्यस्मात्त्रिकिरणाः सरूपकिरणांघ्रिश्चेत्त्रयोर्द्धावि- भूगोर्द्धंचेष्टिकतुंगरश्मिवगुणौततद्घातमूलंस्फुटः ॥

अन्वयः- यदि पूर्वोक्ताः चेष्टारश्मयः उच्चरश्मयश्च त्र्यस्मात्तदासैक चतुर्थांशः कार्य्यः चेत्त्रयोर्द्धास्तदाविभूः एक रहिताऽर्द्धं कार्य्यम् तदा चेष्टातुङ्गसंज्ञकौ गुणको भवतः तद्घातस्य मूलं स्फुटो गुणः स्यात्

अर्थभाषाः- पूर्वोक्त रश्मितीनसे कम होयतो उस्में एक युक्त करके उस्का चतुर्थांश लेनातो गुणक होताहै. यदि तीनसे ज्यादा होयतो उस्मेंसे एककम करके उस्का अर्द्ध लेनातो गुणक होताहै इसीरीति ... चेष्टा गुणक और उच्च रश्मिसे उच्च गुणक होता,

अनंतर चेष्टागुणक वा उच्च गुणक इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो स्फुट गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रविका चेष्टारश्मि ५।११।४८ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्मेंसे एक कम करके ४।११।४८ इस्का अर्ध २।५।५४ यह रवीका चेष्टागुणक रवीका उच्च रश्मि ६।५३।३६ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्में से एक कम करके ५।५३।३६ इस्का अर्ध २।५६।४८ यह रवीका उच्चगुणक भया + भौमकी उच्च रश्मि १।२६।६ यह तीनसे कम है इसवास्ते इस्मे एक युक्त करके २।२६।६ इस्का चतुर्थांश ०। २६।२१ यह भौमका उच्च गुणक भया इसी प्रकार अन्य ग्रहोंका चेष्टा गुणक और उच्च गुणक बनावना रवीका चेष्टा गुणक २। ५।५४ इस्को रवीका उच्चगुणक २।५६।४८ इस्से गुणके ६।१०।५९ इस्का वर्गमूल २।२२।१२ यह रवीका स्फुट गुणक भया.

इसीप्रमाण चंद्रादिकोंका स्फुट गुणक करना.

चेष्टागुणकचक्रम्.								उच्चगुणकचक्रम्.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२ ५ ५४	१ ३७ ४८	२ २० २४	२ १३ ०	२ २९ ३	१ ५ ४८	१ ३ ४८	०	२ ५६ ४८	१ २ २१	० २६ २१	० ३३ १०	१ ५६ ४५	२ २९ ५४	० ५६ ४१

स्फुटगुणक चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	स्फु.
२ २२ १२	१ १८ ६	१ ११ ३६	१ ६ २४	२ ११ ५७	१ २२ ११	१ ० ८	गु.

आश्रय गुणक साधन

श्लोक- यःस्वाधीष्टसुहृत्समार्यधिरिपोर्वर्गेधृतिभ्वेष्विला
विश्वांकेषुगुणागृहेद्विगुणितायोगःक्रमात्तं हरेत् ॥
तद्वेपड्सुगोंशुभ द्युतिजिनैः पड् भ्रेश्वगोंत्तमः
स्वांशत्र्यंशगतेसदारर्सगुणैःस्यादाश्रयाख्योगुणः १७

१:- यो ग्रहः स्वाधिमित्रमित्र समरिप्वधिरिपूणांवर्गेगृहादिसंसवर्गेस्यात् तस्यक्रमेण १८।१५।१२।८।५।२ एतेअंकाग्राह्या ॥ एत.

कं भवति ॥ यद्यधिमित्रगृहे होरायां द्रेष्काणे वा सप्तमांशेन नवमांशे द्वादशांशे वा त्रिंशांशे स्थितः तदा १८ अंको ग्राह्यः परं यदि गृहे तदा तद्द्विगुणं कृत्वा स्थाप्यः एवं होरादिषड्गृहेषु यथागतं स्थाप्यं तेषां सप्तसु स्थानेषु स्थापितानामंकानां योगः कार्य्यः तं योगं तन्के-स्वाधिमित्रादिमे राशौ ग्रहे सति क्रमात् ३६।४८।५४।७२।१०८।१४४ एतैरंकै षड्भिर्भजेत् वर्गोत्तम स्वांशत्र्यंशगते ग्रहे सति सदा षट्त्रिंशद्भिर्भजेत् एवं भक्ते यल्लभ्यते सः आश्रय संज्ञको गुणः स्यात् .

अर्थभाषा.

ग्रह स्वकीय वर्गमें होयतो १८ अधि मित्रके वर्गमें होयतो १५ मित्रके वर्गमें होयतो १२ समके वर्गमें होयतो ९ शत्रूके वर्गमें होयतो ३ यह प्रमाण होरादि वर्गमें अंक लेना परंतु गृह स्थानमें यह रीतिसे जो आवे उस्को दूना करके लेना. अनंतर गृहादि सप्तवर्गोंके अंकका योग करके उस्को ग्रह स्वगृहमें होयतो ३६ से अधि मित्रके गृहमें होयतो ४८ से मित्रके गृहमें होयतो ५४ समके गृहमें होयतो ७२ से शत्रुके गृहमें होयतो १०८ से अधिशत्रुके गृहमें होयतो १४४ से भाग देना परंतु ग्रह वर्गोत्तम कहिये राशीके स्व नवमांशमें होयतो वा स्वनवमांशमें किंवा स्वद्रेष्काणमें होयतो पूर्वोक्त अंक नलेना सर्वकाल ३६से भाग देना जो भागाकार आवेसो आश्रय गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रवि समके गृहमें है इसवास्ते ९ अंक यह गृहस्थानमें द्विगुणित १८ रवि स्वहोरामें है इसवास्ते होरास्थानमें १८ रवि स्वद्रेष्काणमें है. इसवास्ते द्रेष्काण स्थानमें १८ रवि अधि मित्रके सप्तमांशमें है. इसवास्ते सप्तमांश स्थानमे १५ सूर्य्य अधि मित्रके नवमांशमें है. इसवास्ते नवमांश स्थानमें १५ सूर्य्य मित्रके द्वादशांशकमें है. इसवास्ते द्वादशांशक स्थानमें १२ सूर्य्य समके त्रिंशांशमें है. इसवास्ते त्रिंशांशस्थानमें ९ यह सप्तवर्गोंकका योग १०६ इस्को सूर्य्य समके गृहमें है इसवास्ते ७२ से भाग देके १।२८।१९ यह सूर्य्यका आश्रय गुणक यही रीतिसे चंद्रादिकोंका आश्रय गुणक करना.

आश्रयगुणकसाधनचक्रम्.

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
गृह	१८	१०	१८	१०	६	१८	३०	गृह
होरा	१८	१८	९	१५	९	९	९	होरा.
द्रेष्काण	१८	५	१५	५	३	१८	९	द्रेष्काण
सप्तमांश	१५	१५	५	१२	१५	९	१५	सप्तमांश.
नवमांश	१५	५	९	१२	१८	१५	१८	नवमांश.
द्वादशांश	१३	५	१५	५	१८	३	९	द्वादशांश.
त्रिंशांश	९	१५	१५	१२	३	१८	९	त्रिंशांशः
योग	१०६	७३	८६	७४	७२	९०	९९	योग.
हर	३६	१०८	७२	१०८	३६	३६	३६	हर
आश्रय गुणक.	२ ५६ ४०	० ४० ३३	१ ११ ४०	० ४१ १७	२ ० ०	२ ३० ०	२ ४५ ०	आश्रयगुणक

आश्रयगुणक विशेष संस्कार कर्मयोगगुणक-और आयुर्भागसाधन.

श्लोकः-
चेद्वर्गोत्तमपूर्वगोध्यरिसुहृद्भेतद्गृहांकास्त्रिषड्
लब्धोनोयुगरोष्टमोब्धिनवकास्त्यास्स्वसमेकेवलः ॥
कार्य्यस्त्वाश्रयकःसतत्स्फुटहृतेमूलंसयोग्योगुणः
खेटानांचतनोर्लवाःस्वगुणतहृच्छेपाइहायुर्लवाः॥१८

अन्वयः

चेद्यदिग्रहो वर्गोत्तम पूर्वगः वर्गोत्तमः नवमांशेवा स्वनवमांशे स्वद्रेष्काणे स्थितः सन् अधिशत्रु गृहेवा अधिमित्र गृहे तदा तद्गृहांकाद्गृह वर्गे स्थापितांकात् त्रिषड्लब्ध्यावास फलेनस आश्रयक ऊनोयुधार्यः यदिवर्गोत्तमादि वर्त्तमानो ग्रहः शत्रु गृहेवा मित्र गृहे भवेत् तदा तद्गृहांकात् अब्धिनवकास्या फलेनस्त्आश्रयको गुणो हीनश्चकार्यः मित्रादि मित्रगृहे युक्तः अधिशत्रुशत्रु गृहे हीन-इत्सर्थः- ततः आश्रयाख्यगुणकःस्फुटगुणकयोर्घातान्मूलं सयोग्योगुणः खेटानां ग्रहाणांतनोर्लग्नस्यांशाः [illegible] ।। [illegible] [illegible]
इति.

अर्थभाषा.

जो ग्रह वर्गोत्तममें स्वनवमांशमें वा स्व द्रेष्काणमें होयके अधिशत्रु गृहमें वा अधिमित्र गृहमें होयतो उस्के गृहाकको ६३ से भाग देके: जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रय गुणकमें कम करना वा युक्त करना और ग्रह शत्रु गृहमें वा मित्र गृहमें होयतो उस्के ग्रहांकको १४ से भाग देके जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रय गुणकमें कम करना वा युक्त करनातो आश्रय गुणक होता है. परंतु ग्रह वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें होके स्वगृहमें वा समें गृहमें होयतो संस्कार नहीं अनंतर आश्रय गुणक वा स्फुट गुणक इस्के गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो कर्म योग्य गुणक होता है. ग्रह वा लग्न इस्के अंश करके ४० से भाग देना जो शेष रहे सो आशुभांश होते हैं ॥१८॥

उदाहरणम्.

वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें गुरुशनि स्वनवमांशमें हैं इसवास्ते गुरु शनिका आश्रय गुणक संस्कार योग्य है सोऐसा गुरु अधिशत्रूके गृहमें है इसवास्ते गुरूकी गृहांक ६ इस्को ६३ से भागक ०।५।४२ यह गुरुका आश्रय गुणक २।०।० इस्में कम करके १।५४।१८ यह गुरुका आश्रय गुणक भया और शनि अधिमित्रके गृहमें है इसवास्ते शनिका गृहांक २० इस्को ६३ से भागके ०।२८।३४ यह शनिका आश्रय गुणक २।४५।० इस्में युक्त करके ३।१३।३४ यह शनिका आश्रयगुणक भया और वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें सूर्य्यशुक्र स्वद्रेष्काणमें हैं तथापि समके गृहमें हैं इसवास्ते इस्को आश्रय गुणकको संस्कार नहीं.

आश्रयगुणकचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
२ ५६ ५०	० ४० २३	१ ११ ६०	० ४१ १७	१ ५४ १८	२ ३० ०	३ १३ ३४	०

कर्मयोग्यगुणकोदाहरणम्.

सूर्य्यका आश्रय गुणक २।५६।४ वा स्फुट गुणक २।२९।१२ इस्का गुणाकार ७।१९।[illegible]।१९ इस्का वर्गमूल २।[illegible] सूर्य्यका [illegible] योग्य गुणक भया. यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका कर्म योग्य गुणक करना.

स्में जोग्रह बलिष्ठ होय उस्का मात्र गुण करना अनंतर ग्रहगुणकसे स्वकीय आयुर्भाग इस्को गुणना कहिये रविके गुणकसे रविके आयुर्भाग गुणना यहप्रमाण इहां गुणकरके चक्रार्द्ध हानि कथित किया है

उदाहरणम्- इहां रवि भौम गुरु शनि इन्होंका चक्रार्ध हानि संभव है. इसवास्ते लग्न ६।१।४२।२६ यह इस्में सूर्य्य०।१३।१०।४२ कम करके ५।२६।३१।४४ इस्की पल ६३५५०४ इस्में ३० अंशकी १०८००० इस्से भागदियातो ०।१०।११ यह एकमें कम करके ०।४९।४९ यह सूर्य्य का गुणक इस्से सूर्य्यका आयुर्भाग १३।१०।४२ यह गुणके १०।५६।३० यह सूर्य्यका हानि संस्कृत आयुर्भाग भया. इसी प्रमाणसे भौमका गुणक ०।२९।१९ गुरूका ०।२२।२६ शनिका ०।४४।३२ इन गुणकोंसे इनोंका आयुर्भाग गुणातो भौमका ५।२४।३४ गुरूका २०।१।१५ शनिका २४।४५।४४ यह हानि संस्कृत इनोंका आयुर्भाग भया इसी प्रमाण जिस्का संभव होय उस्का आयुर्भाग करना इहांजो ३० अंशकी पल १०८००० के भाग दिया है यह पल सिद्ध है.

वर्षादित्र्यंशायुर्दायानयनमाह.

श्लोक.
दायांशोत्थकलाः स्वयोग्यगुणकघ्नाः रवाभ्रनेत्रोद्धृता
अंशायुर्युसदासमादितुतनोर्दायांशकारूयाहताः ॥
दिग्भक्ताहिसमादिचेत्तु बलवल्लग्नं तदा लग्नभै-
स्तुल्याब्दैः सहितं हि निर्भ्रशरहृद्भागादितो मासयुक् २०

अन्वयः- चक्रार्ध हानि कृतानां दायांशानां कलाः कार्य्याः स्वयोग्य गुणकै र्गुण्या द्विशत्या भक्ताः फलं वर्षाद्यमंशायुर्भवति ॥ एतदुक्तं भवति ॥ दायांश कलाशतद्वयेन भक्ते फलं वर्षं शेषमंशाद्यं द्वादशभिः संगुण्य तेनैव हरेण भक्ते फलं मासः एवं त्रिंशता गुणिते भक्ते दिनानि षष्ट्या गुणिते भक्ते घटयः पुनःषष्ट्या गुणिते हरेण भक्ते फलं पलानि ॥ लग्नस्य दायांशास्त्रिभि ३ र्गुण्या उक्त रीत्या दशभि र्भक्ते वर्षादिकमायुर्भवेत् यदि बलवल्लग्नं षडधिक बलं तदा लग्नराशितुल्यैर्वर्षैर्युक्तं कार्य्यं अपितु लग्नस्य भागाद्यं द्विगुणं तत्र पंचभक्ते सति मासाद्य +मयति तद्युक्तं तदा लग्नायुः स्पष्टं स्यात् अधिकबलज्ञानंतु अल्पेहीन बल इत्यादिना.

अर्थभाषाः- पूर्वानीत केवल और हानि संस्कृ० आयुर्भागकी कला करके उस्को स्वकर्म योग्य गुणकसे गुणके जो गुणाकार आवे उस्को-

२०० से भागके जो भागाकारआवेसो ग्रहोकी वर्षादि अंशायु होताहै लग्नके आयुर्भागको ३ से गुणके गुणाकारको १०से भाग देके जो भागा कार आवेसो लग्नका वर्षादि अंशायु होताहै. और जो लग्नबलवक्त हिये ६ रूप अपेक्षा अधिक होयतो लग्नराशी तुल्य वर्ष पूर्वानीत लग्नायूमें युक्त करके उस्में लग्नके भागादिकोंको २से गुणके ५से भागके मासादि फल युक्त करना तोलग्नायु होता है.

टीप अंशायु फल निकालनेके वखत२००से भाग देके प्रथम फल वर्षआवे बाकी रहे उस्को १२ से गुणके २०० से भागके फल मास आवताहै बाकी रहे उस्को ३० से गुणके २०० से भागके फलदि नआवता है बाकीरहे उस्को ६०सेगुणके २००से भागकेफल घटी आवती है बाकी रहे उस्को ६० से गुणके २०० से भागके फल पल आवताहै यही रीतिसे लग्नायुमें भी ऐसे मासादि फल लेना.

आयुर्भागकलाचक्रम्.						
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
६५६ ३०	२१२२ ३५	३२४ २४	१८८० ५३	१२०१ ५	४१६ ४	१४८५ ४४

कर्मयोग्यगुणागुणितआयुर्भागकलाच.						
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
१७७६ २३	१२२० ३१	३८७ २४	१६४१ ४	२४५८ १३	८५६ २१	२६७१ २६

उदाहरणम्.

सूर्य्यका आयुर्भाग कला ६५६।३० सूर्य्यकाकर्म योग्य गुणक २।४२।२१ इस्से गुणके १७७६।२३ यहीरी तिसे चन्द्रादिकोंकी कला गुणना.

उदाहरणम्.

सूर्य्यकी कर्मयोग्य गुणित आयुर्भाग कला १७७६।२३ इस्को २०० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष १७६।२३ इस्को १२ से गुणके २११६।३६ इस्को २०० से भागके लब्ध १० मास शेष ११६।३६ इस्को ३० से गुणके ३४९८ इस्को २०० से भागके लब्ध दिन १७ शेष ९८ इस्को ६० से गुणके ५८८० इस्को २०० से भागके लब्ध २९ घटी शेष ८० इस्को ६० से गुणके ४८०० इस्को २०० से भागके लब्ध २४ पल यह सूर्य्यका वर्षादि अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु करना ॥ लग्नका आयुर्भाग २९।४२।२६ इस्को ३ से गुणके ८९।७।१८ इस्को १० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष ९।७।१८ इस्को १२ से गुणके १०९।२७।३६ इस्को १० से भागके लब्ध १०

मास शेष ९।२७।३६ इस्को ३०से गुणके २८३।४८ इस्को १०से भागके लब्ध २८ दिन शेष ३।४८ इस्को ६०से गुणके २२८ इस्को १०से भागके लब्ध २२ घटि शेष ८ इस्को ६० से गुणके ४८० इस्को १०से भागके लब्ध ४८ पल यह लग्नका वर्षादि ८।१०।२८।२२।४८ अंशायु भया इस्को लग्नबल ७।२४।८।२० यह ६ रूपसे अधिक है. इसवास्ते लग्नराशितुल्यवर्ष ६ युक्त करके १४।१०।२८।२२।४८ इस्को लग्नका भागादि ९। ४२।२६ इस्को २से गुणके १९।२४।५२ इस्को ५ से भागके लब्ध ३ मासशेष ४।२५।५२ इस्को ३० से गुणके १२२।२६ इस्को ५ से भागके लब्ध २६ दिनशेष २।२६ इस्को ६०से गुणके १४६ इस्को ५से भागके लब्ध२९ घटी शेष १ इस्को ६०से गुणके ६० इस्को ५से भागके लब्ध१२ पल यह मासादि ३।२६।२९।१२ युक्त करके १५।२।२४।५२।०

वर्षादि अंशायु चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	लग्न	योग.
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२
१०	११	११	२	२	२	४	२	११
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९
२१	५५	१९	५५	१२	२५	३९	५२	४४
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२

पिण्ड निसर्ग और जीवशर्मायुर्दाय इनके आयुर्भागः

श्लोक
स्वोच्चोनोद्युचरोंगभात्समधिकोग्राह्योल्पकोनार्कभं
तच्छागाद्युचरोरिभेयदिगुणांशोनाविनावक्रगम् ॥
द्व्यासास्तमितेर्विनाशनिसितोहानिद्वयेत्राधिके।
कार्य्यौ पिण्डनिसर्गजीवगदिताचक्रार्द्धहानिर्भवेत् २१

अन्वयः- स्वकीयेनोच्चेन हीनोग्रहोयदि षडधिकः षड्राशिभ्योधिकस्तदास्यांशाः कार्य्याः यदाषड्राल्पस्तदातं द्वादश राशिभ्यो विशोध्य शेषंस्यांशाः कार्य्याः वक्रगविनावक्रीग्रह विनायदि शत्रुग्रहगस्तदातस्यांशा निज अंशेन हीनाः कार्याः यद्यस्त इने भास्ते ग्रहे तदातस्यांशा नामर्धकार्य्यम् शनिशुक्राभ्यां विना अत्रहानिद्वये प्राप्ते अधिके काहानि रेवग्राह्यानहानि द्वयम् अर्द्ध हानिरेवग्राह्या अत्रनैसर्गिकशत्रुरेवग्राह्यः पूर्वानीत स्वकीय चक्रार्धहानिगुणेनदायांशागुणनीयाइयं पिण्ड नि-

सर्गजीवगदिताचक्रार्द्ध हानिर्भवेत् ॥

अर्थभाषाः- ग्रहमें उच्च कम करके शेष ६ राशीसे कम होयतो वह १२ राशिमें कमकरके उस्के भागकरनातो पिण्ड निसर्गजीवायुर्भागहोते हैं. परंतु जो ग्रह वक्र गतिन होयके शत्रु गृहमें होयतो पूर्वोक्त भागोंका तृतीयांश वह भागमें कम करना. और जो शनि शुक्र विना ग्रह अस्तंगत होयतो पूर्वोक्त भागोंका अर्धकरना. और जो ग्रह शत्रु गृहमें होयके अस्तंगत भी है तो पूर्वोक्त भागका अर्ध मात्र करना यह पिंड निसर्गजीवायुर्दाय भागको पूर्व कथित चक्रार्ध हानिसंस्कारसीकरनातो १९के श्लोकसे लेआयेजो गुणक उस्से यह आयुर्भाग गुणना इहां नैसर्गिक शत्रुत्व समझना तात्कालिक शत्रुत्व लेना नहीं.

उदाहरणम्- रवि ०।१३।१०।४२ इस्मेसे रविका उच्च ०।१०।०।० कम करके ०।३।१०।४२ यह ६ राशीसे कम है इसवास्ते १२ राशीमेंसे कम करके ११।२६।४९।१८ इस्के अंश ३५६।४९।१८ यह सूर्य्यका पिंडादि आयुर्भाग भया. इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका करना.

सूर्य्यादिग्रहाः								उच्चचक्रः						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	९	४	११	५	१०	२	०	९	१	९	५	३	११	६
१३	५	११	२१	८	२६	१२	०	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
१०	२२	४	२०	१२	५६	२१	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	२५	१६	५२	३७	४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०

उच्चकम करके.								षड्भाल्प १२ राशीमेंकमकरके						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	८	६	६	२	१०	७	०	११	८	६	६	९	१०	७
३	२	१३	६	२	२९	२२	०	२६	२	१३	६	२६	२९	२२
१०	२२	४	२०	१२	५६	२१	०	४९	२२	४	२०	४७	५६	२१
४२	२५	१६	५२	३७	४	४५	०	१८	३५	१६	५२	२२	४	४५

पिंडादिआयुर्भागचक्रम्.								चक्रार्धहानिसंस्कृतपिंडादिआ						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३५६	२४२	१९३	१८६	२९६	३२९	२२२	पिं.	२९६	२४२	९४	१८६	१४५	३२९	१०२
४९	२२	४	२०	४७	५६	२१	आ.	१५	२२	२०	२०	२९	५६	१२
१८	३५	१६	५२	३७	४	४५	भा.	४०	३५	३२	५२	५	४	२०

इहांकोई ग्रह अस्तादिनहीं है और शत्रुराशीका भीनहीं इसवास्ते सं-
स्कारनहीं भया केवलचक्रार्द्ध हानिकासंस्कारहै- उस्काउदाहरण कहते हैं-

सूर्य्यका चक्रार्द्ध हानिगुणक ०।४९।४९ इस्से सूर्य्यके आयुरंशः
२५६।४१।१८ इस्कोगुणके २९६।१५।४० यह सूर्य्यकास्पष्ट आयुर्भागभया

भौमका चक्रार्द्ध हानिगुणक ०।२९।११ इस्से भौमके आयुरंशः १९२
४।१६ इस्कोगुणके ९४।२०।१२ यह भौमका आयुरंश भया-

गुरुका चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।३३।२६ इस्से गुरुके आयुरंश २९६।
४७।२३ इस्को गुणको १६५।२९।५ यह गुरुका स्पष्ट आयुर्भाग भया-

शनिका चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।४४।२२ इस्से शनिके आयुरंश २३३
।२१।४५ इस्को गुणके १७२।१२।२४ यह शनिका स्पष्ट आयुर्भागभ-
या- बाकी ग्रहोंका पूर्वोक्त ही आयुर्भाग लेना-

लग्नमें पापग्रह होयतो उस्का विशेष संस्कार कहते हैं-

श्लोक—
दायांशायुसदापृथक्तनुलवादिघ्नाःखषट्ख्युद्धृता
आस्योनास्तनुगेखलेचयदिसद्दृष्टेर्धया योपरे ॥
निघ्न्योग्रोदयभावजेनतनुगेग्रेचेद्बलिष्ठस्यतन् ।
साम्येपुष्टफलेनतेनितनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौकिया २२

अन्वयः- लग्नेपापेसतिचक्रार्धहानिगुणितामहाणांदायांशाःपृथक्स्या-
प्याःलग्नस्यराशिंविहाय अंशादिनिगुण्यांपष्ट्यधिकशतत्रयेण भाज्याः
आस्यालब्धफलेनांशादिनापृथक्स्याहीनाःकार्याःपापग्रहास्तुरविंनो
मशानयःसौम्येक्षितेतर्धयाशुभग्रहदृष्टेलग्नस्थक्रूरखगंतदालब्ध फल
स्यार्धं पातये दायुः पिंडादीत्यर्थः अथापरेशांमतम् निघ्नोग्रोदय भा-
वजेनेतिकेचिदेवंब्रुवंति लग्नेक्रूरेतदापृथक्स्थाःआयुर्भागाः उग्रो
दयभावजेनगुण्याःपूर्वहरेणाप्याऊनाःकार्याःशुभदृष्टेऽर्धया उग्रोद
यभावजंतुउग्रपापग्रहस्ययोभावस्तस्यावरोहारोह फलेनेत्यर्थः यदि
लग्नेद्वित्राःक्रूरास्तदाबलिष्ठस्य भावजेनगुण्याः तत्साम्येबलसाम्ये
पुष्टफलेन अधिकावरोहारोह फलेनफलसाम्येद्व्यादिगुणनंकार्य्यः
मितिभावःतदसत् एकदेशत्वात् अस्मिन् लग्नेक्रूरेऽन्याधीशेलग्नगे-
सति असौहानिर्नकार्य्या अंशजे क्रूरलग्नगेऽतोन कार्य्याः ॥

अर्थ भाषा-

जो लग्नमें पापग्रह होयतो ग्रहका पिंडायुर्भाग पृथक्-

रखना उस्कोलग्नका राइयंक छोडके भागादिकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भागदेके जो लब्धि आवेसो पृथक् रखवाजो भागउससे कमकरना परंतुजो पापग्रह शुभग्रह करके दृष्ट होयतो लब्धिका अर्ध पूर्वोक्त भागमें कमकरना तो पिंडायुर्भाग होता है.

दूसरे आचार्योंकामत यह है के पृथक् रखवाजो आयुर्भागउस्को लग्नस्थ पापग्रहको जो भाव उस्का जो फल उस्से गुणदेनाऔर ३६० से भाग देना लब्धि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करनातो पिण्डायायुर्भागहोताहै. शुभग्रह देखता होयतो लब्धिका आधा घटाना और लग्नमें दोया तीन पापग्रह होयतो जो बलीहोय उसीका भावफललेना. पापग्रहलग्नपती होकर लग्नमें होयतो यह क्रिया न करना.

उदाहरणम्.

इहांलग्नमें पापग्रह कोई नहीं. इसवास्ते विशेष संस्कार नहींभया.

पूर्वोक्तहानिसंस्कृतपिंडाद्यायुर्भागच.							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
२९६	२४२	९४	१९६	१५५	३२९	१७२	०
१५	३२	२०	२०	२९	५६	१२	०
४०	३५	१२	५३	५	४	२४	०

इदानीं पिण्डनिसर्गजीवशर्मायुर्दायानयनमाह.

मूलं:-
गोञ्जातत्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गानखाःपैण्डजे
नैसर्गेनखभूरिहि गोध्रुतिनखापञ्चाशदर्काद्गुणाः ॥
दायांशाःस्वगुणैर्हताहि भगणांशाप्ताः समाद्यायुपी
स्वर्गाप्ताश्वसमादिजैवमिप्तहत्वांशै र्घटीध्यान्वितम् २३

अन्वयः

गोञ्जेति अर्कादिति अर्कमारभ्य पिण्डाद्यायुर्दाये गोञ्जा इत्यारभ्यनखा इत्यन्तांका गुणकाः नैसर्गेनख भूरित्यादयो गुणकाः २ दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशै ३६० र्भाज्याः फलानिवर्षाद्यायुर्दायाभवन्ति ॥ गोञ्जा इत्यादिभिरंके गुणिते पिंडायुः नख भूरित्या[illegible] तनिसर्गायुःस्यात् दायांश [illegible]
फलानिवर्षादिजीवशर्मायुः स्यात् पु[illegible]
भक्तेभ्यो यल्लब्धं घटयादिकं नघुक्तं [illegible]

अर्थभाषा:- २९।२५।१५।१२।१५।२१।२ [illegible] सू.

सात ग्रहोंके पिंडायुर्दायके गुणक और २०।१।२।९।१८।२०।५० यह
क्रमसे सूर्यादि सात ग्रहोंके निसर्गायुर्दायके गुणक जानना ग्रहोंका
आयुर्भाग स्व अपना गुणकसे गुणके गुणाकारको ३६० से भागदेना तो
वर्षादिपिंड निसर्गायु होताहै. पूर्वोक्त आयुर्भागको २१ से भागदेना
जोवर्षादि फल आवेगा उस्मे पूर्वोक्त आयुर्भागको ८ से भागदेके जो
फल आवे सो घटीमें युक्त करेतो जीवशर्मोक्त आयु होताहै इहां
मासादि फल अंशायुर्दायमे कथित प्रमाण लेना.

पिण्डायूके गुणक.							निसर्गायूके गुणक.						
सू.	चं.	मं.	बु.	ग्र.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ग्र.	शु.	श.
१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०	२०	१	२	९	१८	२०	५०

पिंडायुरुदाहरणम्.

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्यका गुणक १९ इस्से
गुणके ५६२८।५७।४० इस्को ३६० से भागके लब्धि १५ वर्षशेष २२८
।५७।४० इस्को १२ से गुणके २७४७।२२ इस्को ३६० से भाग देके ल-
ब्धिमास ७ शेष २२७।२२ इस्को ३० से गुणके ६८२६ इस्को ३६० से-
भागके लब्धि दिन १८ शेष २४६ इस्को ६० से गुणके २०७६० इस्को
३६० से भागके लब्धि घटी ५७ शेष २४० इस्का ६० से गुणके १४४००
इस्को ३६० से भागके लब्धिपल ४० इसी प्रकारसे सूर्यके वर्षादिपिं-
डायू भये १५।७।१८।५७।४० यहीप्रमाण चन्द्रादिकोंका करना.

निसर्गायुरुदाहरण.

सूर्य्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्य्यका गुणका २० इस्से
गुणके ५९२५।१३।२० इस्को ३६० से भागके लब्धिवर्ष १६ शेष १६५।१३
।२० इस्को १२ से गुणके १९८२।४० इस्को ३६० से भागके लब्धिमास ५ शे-
ष १८२।४० इस्को ३० से गुणके ५४८० इस्को ३६० भागके लब्धि दिन
१५ शेष ८० इस्को ६० से गुणके ४८०० इस्को ३६० से भागके लब्धि घ-
टी १३ शेष १२० इस्को ६० से गुणके ७२०० इस्को ३६० से भागके ल-
ब्धिपल २० यह रीतिसे सूर्य्यका वर्षादि निसर्गायु भया १६।५।१५
।१३।२० यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

जीवायुरुदाहरणः- सूर्य्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को २१

से भागके लब्धि वर्ष१४ शेष २।१५।४० इस्को३२ से गुणके २७।८ इस्को२१ से भागके लब्धि मास १ शेष ६।८ इस्को ३० से गुणके १८४-इस्का२१ से भागके लब्धि दिन ८ शेष १६ इस्को ६० से गुणके ९६० इस्को२१ से भागके लब्धि घटी ४५ शेष १५ इस्को ६० से गुणके ९०० इस्को २१ से भागके लब्धिपल ४२ यह रीतिसे सूर्य्यका वर्षादिजीवायुर्भया १४।१।८।४५।४२ इस्के घटामे सूर्य्यके आयुर्भाग२९६।१५।४० इस्को ८ से भागके लब्धि२७ शेष ०।१५।४० इस्को ६० से गुणके १५।४० इस्को ८ से भागके लब्धि २ यह युक्त करके सूर्य्यका वर्षादि स्पष्ट जीवायु-र्भया १४।१।९।२२।४४ यह रीतिसे चंद्रादिकोंका करना.

पिण्डायुचक्र.								निसर्गायुचक्र.						
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१५	१६	३	६	६	११	०	२	१६	०	०	४	७	१८	२४
७	९	११	२	५	२	७	१०	५	८	६	७	१	२	०
१८	२९	५	१६	२२	२८	१४	२८	१५	२	८	२७	८	२८	२०
५७	२४	३	१०	१६	२७	८	२२	१२	२२	४०	७	४३	४१	२०
४०	३५	०	२६	१८	२४	०	४८	२०	३५	२४	५७	३०	२०	०

जीवायुचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१४	११	४	८	७	१५	८	२
१	६	५	१०	४	८	२	१०
९	१५	२७	१४	२५	१६	२९	२८
२२	३१	२३	५५	४६	४२	३७	२२
४४	४२	४०	३४	३४	२२	[illegible]	४८

पिण्डादितीनोंआयुर्दायमेंलग्नायुर्दाय बनावनेका क्रमः

श्लोक

स्याल्लिप्ताःखनखोधृताविभतनोर्वर्षादिपिंडाख्यिके
लग्नायुर्निर्लिप्तदंशकसमंकेचिन्वदंतुरूपंस्मृतं ॥
यस्येशोपिबलवत्तदेवहिपरैस्तोनाढ्यमन्यैर्यदु
शायुर्वेलयचांशतुल्यमाखिलोक्तंग्राह्यमेवादिमं २४

अन्वयः

गिणतनोर्लिप्ताराशिंविहाय लग्नस्य कलाः कार्य्याः दिवा-

त्वा भाज्याः फलं वर्षादिपिंडनिसर्गजीवशर्मायुर्दायेषुस्यात् सर्वैराचार्यैः लग्नांशकसमनवमांशसमयुक्तं लग्नभतुल्यं केश्चिदायुरुक्तं लग्नेशनवमांशयोर्मध्ये यो बली तदेव ग्राह्यमित्यन्ये तेनाढयमितिस्यालिसाखनरवो-द्भूता इत्यादिनानीतं तत्र तेनाढयराशीशो वली तदा राशितुल्य वर्षं नवमांशे बलवति तदा नवमांशतुल्यं वर्षं आढ्यं कुत्र अंशायुवत् आनीतेलग्नायुर्षि-इत्यपरमतम् अथनिखिलोक्तं अंशसमभादिमेव ग्राह्यमिति यावत्.

अर्थभाषा- राशिको छोडके भागादि लग्नकी कला करके उस्को २००से भागदेनातो पिंडनिसर्ग और जीवशर्मायुर्दायमें लग्नायु होती है. यह अंशतुल्य अर्थात् लग्न युक्त नवमांश तुल्य आयु सर्वाचार्य संमत है कोई आचार्य लग्नके राशितुल्य कहते हे. लग्नपति अंशपतिमें जो बलि होय तत्तुल्य (अर्थात्) लग्नपति बलि होयतो लग्नके राशीतुल्य आयु अंशपतिबली होयतो अंशतुल्य आयु यह कोई आचार्यका मत है ॥ आयुर्दायमें कथित रीतिसे जो आयु आवे उस्में अंशपतिबली होयतो अंशतुल्य लग्नपति बली होयतो लग्नतुल्य वर्ष युक्त करना यह परमत है. ऐसा पृथक् पृथक् सब आचार्योंने कहाहै, तथापि प्रथम प्रकार जो है सोई सबका मत है. इसलिये उसीको मानना. ॥ इति ॥

उदाहरण- राशि रहित भागादि लग्न १।४२।२६ इस्की कला ५०२। २६ इस्को २०० से भागके २।१०।२८।२२।४८ यह पिण्डनिसर्गजीवायुर्दायके विशेलग्नायु जानना.

यह अंशादि चार आयुर्दायमेंसे कौन आयुर्दाय कबलेना इस्के विषे प्रमाण.

चतुर्णामायुषांव्यवस्थामाह

श्लोक
अंशायुस्तनाविने ऽधिकबले चेयुर्निसर्गेविधौ.
स्याच्चेत्तुल्यबलं द्वयोर्युतिदलं तज्जायुयोस्त्रयया ॥
आयूंषित्रिबलैर्निहत्यचयुतिवीर्यैक्यहृद्यात्रिजा
युर्युत्याखिलवीयजैवसुदितंचेन्हीनवीर्य्यास्त्रयः ॥

अन्वयः- अधिकबलायांतनावंशायुः इनेसूर्य्ये ऽधिकबले पिंडायुः विधावधिकबले निसर्गायुः साध्यम् ॥ यदाद्वौ सबलौ तदा तत्तदायुयोर्योग दलमिश्रायुः स्यादिविगौणः तुरव्य स्तु ॥ तत्तदायुस्तत्दलेन संगुण्यत दलमिश्रायुः स्यादिविगौणः चरिलग्नार्कचन्द्रा योगतपोर्बलैक्येन भजेत्तदा मिश्रायुः स्यादित्यर्थः

स्त्र्ययोऽपितुल्यबलास्तदालग्नबलेनदिनादिकमंशायुः संगुण्यः सूर्यब-
लेनपिंडायुः संगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगं लग्नार्कच-
न्द्रबलयोगेनभजेफलं मिश्रायुः स्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषां
योगस्यतृतीयांशोमिश्रायुः स्यात् ॥ चेलग्नार्कचन्द्रास्त्रयोऽपिहीनबला-
स्तदाजीवशर्मायुः स्यादिति ॥

अर्थभाषाः- लग्नबली होयतो अंशायु सूर्य्य बली होयतो पिंडा
यु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेना जो दो समबल कहिये षड्रूपाधि
कबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होताहै. लग्न
और सूर्य्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्ध करना.
लग्न और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना.
सूर्य्य और चन्द्र समबल होय तो पिंडायु और निसर्गायु इस्का यो-
गार्ध करना. तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयु-
ष्य तीनोंके बलसे गुणके ऐक्य करके उस्को तीनोंके बलैक्यसे भागके
जो भागाकार आवेसो ॥ अथवा तीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयां-
श आयुष्यलेना वह मिश्रायु होताहै. जो लग्न सूर्य्य और चन्द्र यह
तीनोंही हीनबल होयके रूप त्र्यात्यबल होयतो जीव शर्मोक्त आ
युलेना.

उदाहरण.

सूर्य्यका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३१९७।
२९।२४ इस्को लग्नबल ७।२४।८।२० इस्से गुणके २३६६८।५८।
२२ इसीप्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६२८।५७।४०
इस्कोरविबल ७।५१।५२।२० इस्से गुणके ४४२७०।५९।५० इसीप्रका-
रचन्द्रादिकोंकाव सूर्य्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यहदिनादिक-
रके ५९२५।१३।२० इस्कोचन्द्रबल ७।२०।४।३० इस्से गुणके ४३।
४५९।२।१० इसीप्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११२९९।०।
२२ इस्केपल ४०१०२६४२२ इस्को लग्नबल ७।२४।८।२० रविबल ७।
५१।५२।२० चन्द्रबल ७।२०।४।३० इनका योग २२।३६।६ इस्की विकला
८१३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ४९२८।५७।४६ यह वर्षादिकरके १३।८।८
।५७।४६ यह सूर्य्यका मिश्रायु भया यहीरीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु
साधनकरना + अथवा रविका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ पिण्डायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह तीनों आयुर्दाय का योग ४०।११।२१।४०।२४ इसका तृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यह रविका वर्षादि मिश्रायु भया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
८	९	१	८	११	४	१३	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	२	२	४	२	११	मास
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९	दिन
२९	५५	१९	५५	१२	२५	२४	५२	५४	घटी
२५	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१६	३	६	६	१९	९	२	८०	वर्ष
७	९	११	२	५	२	७	१०	१०	मास
१८	२९	५	१६	२२	२८	१४	२८	१३	दिन
५७	२४	३	१०	१६	२७	८	२२	०	घटी
४०	२५	०	२६	१८	२४	०	४८	२१	पल

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१६	०	०	४	७	१८	२४	२	७५	वर्ष
५	८	६	७	९	३	०	१०	४	मास
१५	२	८	२७	८	२८	२०	२८	१९	दिन
१३	२२	४०	७	४३	४१	२०	२२	३१	घटी
२०	२५	२४	५७	२०	२०	०	४८	५४	पल

अंशपिंडनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
४०	२७	६	१९	२५	४१	४७	२१	२२९	वर्ष
११	५	४	०	५	९	०	०	२	मास
२१	१४	२१	२७	२	२०	१२	२१	२२	दिन
४०	४२	२	१३	११	४४	२	३७	१६	घटि
२४	५८	२६	४५	४८	२२	४८	३६	२७	पल

योगतृतीयांश मिश्रायु.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	९	२	६	८	१३	१५	७	७६	वर्ष
७	१	१	४	५	११	८	०	४	मास
२७	२४	१७	९	२०	६	४	७	२७	दिन
१३	५४	०	४	५२	५४	२०	१२	२५	घटि
२८	१९	५२	२२	५६	५१	५६	३२	२६	पल

स्त्र्ययोऽपितुल्यबलास्तदालग्नबलेनदिनादिकमंशायुः संगुण्यः सूर्य्यबलेनपिंडायुः संगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगं लग्नार्कचन्द्रबलयोगेनभजेफलं मिश्रायुः स्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषां योगस्यतृतीयांशोमिश्रायुःस्यात् ॥ चेलग्नार्कचन्द्रास्त्रयोऽपिहीनबलास्तदाजीवशर्मायुः स्यादिति ॥

अर्थभाषाः- लग्नबली होयतो अंशायु सूर्य्य बली होयतो पिंडायु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेना जो दो समबल कहिये पट्रूपाधिकबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्ध आयु होताहै. लग्न और सूर्य्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्ध करना. लग्न और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. सूर्य्य और चन्द्र समबल होयतो पिंडायु और निसर्गायु इस्का योगार्ध करना. जो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयुष्य तीनोके बलसे गुणके ऐक्य करके उस्को तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवे सो ॥ अथवा तीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्यलेना वह मिश्रायु होताहै. जो लग्न सूर्य्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयाल्पबल होयतो जीव शर्मोक्त आयुलेना.

उदाहरण.

सूर्य्यका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३१९७। २९।२४ इस्को लग्नबल ७।२४।८।२० इस्से गुणके २३६६८।५८। २२ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६९८।५७।४० इस्को रविबल ७।५१।५२।२० इस्से गुणके ४४२७०।५९।५० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका व सूर्य्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिक रके ५९२५।१३।२० इस्को चन्द्रबल ७।२०।४।३० इस्से गुणके ४३। ४५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११३९९।०। ३२ इस्के पल ४०१०२६४३२ इस्को लग्नबल ७।२४।८।२० रविबल ७। ५१।५२।२० चन्द्रबल ७।२०।४।३० इनका योग २२।३६।६ इस्की विकला ८१३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।४६ यह वर्षादि करके १३।८।८ ।४७।४६ यह सूर्य्यका मिश्रायु भया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधन करना + अथवा रविका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ पिण्डायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१२।२० यह तीनों आयुर्दायका योग ४०।११।२१।४०।२४ इसका तृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यह रविका वर्षादि मिश्रायु भया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
८	९	१	८	११	४	१२	१५	७२	वर्ष
१०	११	११	२	२	२	४	२	११	मास
१७	१२	७	१२	१	२३	८	२४	१९	दिन
२९	५५	१९	५५	१२	२५	२४	५२	४४	घटी
२४	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२	पल

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१६	३	६	६	१९	९	२	८०	वर्ष
७	९	११	२	५	२	७	१०	१०	मास
१८	२९	५	१६	२२	२८	१४	२८	१२	दिन
५७	२४	३	१०	१६	२७	८	२२	०	घटि
४०	२५	०	३६	१८	२४	०	४८	२१	पल

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१६	०	०	४	७	१८	२४	२	७५	वर्ष
५	८	६	७	९	३	०	१०	४	मास
१५	२	८	२७	८	२८	२०	२८	१९	दिन
१२	२२	४०	७	४३	४१	२०	२२	३१	घटि
२०	३५	२४	५७	२०	२०	०	४८	५४	पल

अंशपिंडनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
४०	२७	६	१९	२५	४१	४७	२१	२२९	वर्ष
११	५	४	०	५	९	०	०	२	मास
२१	१४	२१	२७	२	२०	१२	२१	२२	दिन
४०	४२	२	१३	११	४४	२	३७	१६	घटि
२४	५८	३६	४५	४८	३२	४८	३६	२७	पल

योगतृतीयांश मिश्रायु.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	९	२	६	८	१३	१५	७	७६	वर्ष
७	१	१	४	५	११	८	०	४	मास
२७	२४	१७	९	२०	६	४	७	२७	दिन
१३	५४	०	४	४३	५४	२०	१२	२५	घटि
२८	१९	५२	३२	५६	५१	५६	३२	२६	पल

इदानींबलाबलज्ञानंतथेदमायुः केषांघटतइति वदति ॥

मूलं
अल्पेहीनबलोबलीषडधिकेवीर्येग्रहस्योदयो
भिन्नंस्वस्वमतेस्मृतायुरिति तत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥
अंशायुर्बहुसंमतंभवतितत्सत्यंचसत्योदितं
स्याद्धर्मिष्ठसुशीलपथ्यसुभुजांनस्यादिदंपापिनां २६

अन्वयः- ग्रह उदयो लग्नं वा अल्पेसतिहीन बलः अधिकेपड्भाल्पेमध्यबलः षड्धिके बलीस्यादिति प्राज्ञैः श्रीपत्यादिभिर्व्यवस्थापितं व्यवस्था कृतानिर्णीतिमितियावत् ॥ अंशायुश्चतनाविनेत्यादिनाभिन्नमिति स्वस्य मतेचतुर्विध मायुः स्मृतं उक्तम् अंशायु र्बहु संमतं बहेनामाचार्याणां संमतंभवतिसत्यंच तदेव सत्योदितं स्यात् बहुसाम्यं समुपैतिसत्यवाक्यम् ॥ इदमायुर्धर्मिष्ठानां सुशीलवतां पथ्य सुभुजां पथ्यहितं यद्भोजनंतत्सेवनम् येषां भवति तेषांस्यात् गणितागतमायुः नपापिनांस्यात्

अर्थ भाषाः- ग्रह या लग्नका षड्बलैक्य ३से कम होयतो हीनबल होते हैं ३ से अधिक होयतो मध्यबल और ६से अधिक होयतो बली होता है सब आचार्योंने पृथक् २ आयु कहाहै लग्नबली होयतो अंशायु सूर्यबली होयतो पिण्डायु इत्यादि कहाहै ऐसाहै तथापि सत्याचार्यकामत अंशायुपर है बहुत आचार्योंकाभी मतहै और जो धर्मिष्ठ सुशील पथ्य भोजी हैं उन्हीकी आयु मिलती है पापियोंकी नही और पथ्यापथ्यसे रहित जो हैं वह अकालमे भी मरते हैं.

शिष्यसंदेह निवारणमाहः-

मूलं
हानिर्यास्तमितेरिपोऽप्यनुमता शोत्थेत्ल्पबुध्यानतत्
यस्माच्चेष्टिकआश्रयेऽस्तिनिखिलैः पैण्डादिपूक्तान्ततः
आयुःसौरमितः यतोऽहर्गणनासौरात्ततः सूरिभिः
प्रोक्तंसत्यमसद्यदल्पकथितनाक्षत्रकंसावनम् २७ ॥

अन्वयः- या अस्तमितेऽर्द्ध हानिः शत्रुभेत्र्यंशहानिः सातुपैण्डादित्रिष्वायुर्दाये उक्तकेनचिदाचार्येणांशायुर्दाये कृतासालस्य बुद्ध्या हेतु भूतया अल्पाचासौ बुद्धिश्चाल्प बुद्धिस्तयाल्प बुद्ध्यात् इसत् यस्मात्कारणात् इतं हानिश्चेष्टिकेन्चेष्टागुणकेयतोऽस्तंगतस्यचेष्टागुणके रूपार्द्धमेवहानिः अरिगृहे त्र्यंशहानिरुक्तास्तीतिभावः आयुः सौरमितमेव ग्राह्यंयतोऽहर्गणनासौरात्उक्तंच ॥ वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात् मासास्तथा चति

ययस्तुहि नांशुमानात् ॥ चत्रुच्छ सूतकचिकित्सितवासराद्यं तत्सावनाच्च घटिकादिकमार्क्षमानात् ॥ ततः सूरिभिः सत्यंप्रोक्तं अल्पकथितं नाक्षत्रकं सावनमितिकेचिदल्पज्ञेन नाक्षत्र सावने नायुः कथितं तदसादितिशम् .

अर्थ भाषाः- पिण्डादि आयुर्दायमे अस्तंगत ग्रह होयतो अर्ध हानि- और शत्रु गृहमें होयतो अंश हानिजो सब आचार्योंने कहाहै उस्कोअनुमान कोई अल्प बुद्धीसे अंशायुर्दायमें करैंगे तो वह करना नहीं कारण अर्धहानि चेष्ठा गुणकमे और अंश हानि आश्रय गुणकमें है वर्ष गणना सौरसे है इसवास्ते विद्वानने यह आयुर्दाय सौर मानसे कथित है और वही सत्य है नाक्षत्र किंवा सावन मान लेना ऐसा जो कोई कहते हैं सो असत्य जानना क्योंकि बहुमतसे विरोध है सो ठीक नहीं है .

इदानीं मनुष्यपरमायुरन्च प्राणिनां परमायु-
कथनपूर्वकमायुर्दाया नयनमाह-

श्लोकः-
पंचाहंनरवभूसमानृकरिणांव्याघ्राद्यजादेर्नृपाः
गोकाल्योश्वजिनास्तथोष्ट्रखरयोस्तत्वानि सूर्याशुनाम् ॥
अश्वायुः परमंरदान्नृवदिहानीयायुरेषां परायु र्निघ्नं
नृपरायुषाचविहृतं तेषां स्फुटायु र्भवेत् ॥ २८ ॥

अन्वयः- पंचदिनाधिक नरवभू वर्षाणि १२०।०।५ नृकरिणां परमायुः स्यात् व्याघ्राद्यजादेर्नृपाः १६ गोकाल्योर्गोमहिष्योर्जिना श्चतुर्विंशति २४ मितापरमायुः हीतिनिश्चयार्थबोधकः ॥ तयोष्ट्रखरयोस्तत्वानि पंचविंशति २५ वर्षाणिपरमायुः शुनां कुक्कुराणां द्वादश वर्षाणि परमायुः स्यात् अश्वानांरदाद्वात्रिंशत् ३२ एषां नृवत् मनुष्यवदायुरानीय स्वस्व परमायुर्दायवर्षैः संगुण्य नृपरायुषा भजेत्तदातेषां स्फुटायु र्भवेत् ॥ इति आयुर्दायाध्यायः पंचमः ॥

अर्थभाषाः- मनुष्य और हाथी इनका परमायु १२० वर्ष ५ दिन व्याघ्रादि और अजादि इनका १६ वर्ष गौ भैंस इनका २४ वर्ष ऊंट और गर्दभ इनका २५ वर्ष कुत्तेका १२ वर्ष घोडेका ३२ वर्ष यह प्राणीका मनुष्यके प्रमाण आयुर्दाय बनायके उस्को स्वस्वपरमायुसे गुणके गुणाकारको मनुष्यके परमायु १२० वर्ष ५ दिनसे भाग देना तो वह २ प्राणीका स्पष्टायु होता है. ॥ इति ॥

श्लोकः-
जगदीशेनरचिते केशवी ग्रंथ टिप्पणे ॥
पूर्णोयमायुरध्यायो भावार्थस्यप्रकाशकः ॥५॥

अथदशाऽध्यायः

श्लोक
यस्यायुर्यदसौदशास्यचशुभेष्टोच्चस्वभांशेतथा
रोहानीचपरिच्युतस्ययदिसाकष्टारिनीचांशभे ॥
त्यक्तोच्चेलवरोहिणी भवतिसामध्योच्चमित्रस्वभां-
शेसद्दृष्टयुतःस्फुरत्करबलिष्टेष्टाधिकेस्याच्छुभा २९

अन्वयः- यस्य ग्रहस्य लग्नस्य वा यदायुरसावस्य ग्रहस्य दशास्यात् इष्टोच्चस्वभांशे वर्त्तमानस्य शुभा इष्टस्य मित्रस्य भें ऽशेवाउच्चगृहेउच्चांशेवास्वभेस्वांशेवास्थितस्य ग्रहस्य दशाशुभास्यात् ॥ तथानीचपरिच्युतस्य ग्रहस्य दशाऽरोहाशुभास्यात् यदिनीचपरिच्युतग्रहोऽरिभांशेअरेः शत्रोर्नीचस्य वा भांशे तदातस्य दशाकष्टदानेष्टफलदा ।त्यक्तोच्चेग्रहे-तद्दशाऽवरोहिणीअशुभाअशुभफलदायदित्यक्तोच्चग्रहउच्चमित्रस्वभांशेस्थितस्तदा तस्य दशाऽशुभापिमध्यास्यात् ।सद्दृष्टयुतस्फुरत्करबलिष्ठेष्टाधिके ग्रहेसतितस्यदशाशुभास्यात् शुभग्रहैर्दृष्टेयुतश्चस्फुरत्कररश्मयो यस्यसस्फुरत्करः बलिष्टेऽधिकबले इष्टाधिके इष्टं इष्टबलमधिकं यस्यस इष्टबलः

अथभाषा-

ग्रहकाजो आयुर्दाय वही उस्की दशा होती है. गृह मित्र गृहमेंउच्चमें वा स्वगृहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमे होयतो वहग्रह की दशा शुभ होती है. ऐसाहि यदि ग्रह परमनीचको छोडकर आगे जायतो दशा आरोहा शुभ होती है. परंतुजो वह ग्रह शत्रुगृहमें वा नीचमें किंवाशत्रूके अंशमें वा नीचांशमें होयतो आरोहा दशायह अशुभ होती है. और ग्रह परम उच्च छोडके आगेजायतो दशा अवरोहिणी अशुभ होती है. परंतु ग्रहउच्चमें मित्रगृहमे वा स्वगृहमे अथवा उच्चांशमे मित्रांशमें वा स्वांशमें होयतो अवरोहिणी दशा यह मध्यम होती है. ग्रह शुभ दृष्ट शुभयुक्त उदित बलिष्ट और इष्टाधिक कहिये पूर्वमें लेआये जो इष्ट अधिक होयतो दशाशुभ होती है.

इदानीं दशाक्रममाह.

स्यादाद्याहिदशाधिकौजसइहार्केन्दूदयानांततः
तत्केन्द्रादियुजामथहिबहवोवीर्य्यैकमेणैवहि ॥
चेदोजस्समतायुषोधिकतयायुस्तुल्यताचेद्दशा-मौ-
ढ्यात्स्यादुदितक्रमात्क्रमविधौवीर्य्यहितत्रोच्यते ॥ ३० ॥

अन्वयः- अर्केंदू दयानां सूर्य्य चन्द्रलग्नानां मध्ये योधिक बलस्त-स्याद्या दशाकल्प्यात तस्तत्केन्द्रादिषुर्जातयथा अर्कबलाधिके प्रथमद-शाऽर्कस्यततस्तस्यकेन्द्रस्थितानां अर्थात् द्वितीयादशा रविस्थानेस्थितस्य तृतीया चतुर्थ स्थितस्य चतुर्थी सप्तमस्थस्य पंचमी दशम स्थितस्य एवं चन्द्रेवालग्ने बलवति सति ॥ ततः पणफरस्थस्य २।५।८।११ ततआपो-क्लिमस्था ३।६।९।१२ नामयद्येकस्थाद्विबहवः संतितदावक्ष्यमाण बला धिकस्याद्यादशाततोन्यूनस्य द्वितीया एवं तृतीयाद्या बल साम्ये यस्या धिकायुः तत्रापिन्यूनाधिक्यं योज्यंतस्यापि साम्ये यो ग्रहो ऽस्तात्प्रथमो दितस्तस्याद्यादशाज्ञेयेति ॥ ३० ॥

अर्थभाषाः- सूर्य्य चन्द्र और लग्न इनमें जो बली होय उसकी दशा प्रथमजानना और उसके बाद केन्द्र १।४।७।१० स्थकी दशा अनंतर पण फर २।५।८।११ स्थकी दशाअनंतर आपोक्लिमस्थ ग्रहकी दशा ऐसा-क्रम जानना केन्द्रमें पण फरमें और आपोक्लिमस्थानमें एकसे ज्या दा ग्रह होयतो प्रथम दशा किसकी है तब उसमें जो अधिकबल होय उसकी प्रथम दशा अनंतर न्यून बल होय उसकी दशा कदाचित् बल-कीभी समता होयतोजिसकी आयु अधिक होय उसकी प्रथम दशा आयुकाभी समता होयतो जो अस्तसे प्रथम उदय हुवा होय उसकी प्रथम दशा होती है. ॥ ३० ॥

इदानीं लग्नाद्य दशा प्राप्तबलमाह.

श्लोक-
चेल्लग्नाद्यदशास्वभावजफलघ्नोजांसिपाकक्रमे
ऽर्केन्द्वोश्चेत्प्रथमारवगोदयबलांघ्रिर्भेऽन्यवर्गेऽर्द्धितः ॥
स्वैर्वर्गेशबलैर्हतोबलमिहैक्यंमूलतैक्यंपरे ऽथैवं-
रिष्टदभक्तृजेधिकबले भक्तोत्तदा रिष्टहृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः- चेदाद्यालग्न दशातदा भावफलघ्नोजांसिकार्य्याणिओजां सिस्वस्वषड्बलैक्यानि ग्रहाणां भावज फलैर्गुण्यानिदशा क्रमेतानिदशा बलानि स्फुटानि भवंतिचेदर्केन्द्वोः प्रथमादशा अर्कस्य चंद्रस्य वा प्रथ-मा दशातदा ग्रहाणां लग्नस्यचयत्षड्बलैक्यं तस्यांघ्रिश्चतुर्थांशो भेगृ-हस्थानेस्थाप्योऽन्यवर्गे होरादिषुचतुर्थांशस्यार्द्धः स्थाप्यः ते सप्तवर्ग-स्थितांकाः स्वैर्वर्गेशबलैर्निहत्यगुण यित्वा तेषामैक्यं बलं स्यात् अपर मतंतु ऽपरे एवं ब्रुवंति ॥ तेषांगुणनफलं प्रथमं मूलानि गृहीत्वा तेषा-

मैक्यं बलं स्यात् दसदेक देशत्वात् खगोदयबलांघ्रीत्यादि प्रकारेण नीतबलेरिष्टदभंकृजग्रहयोर्यदिरिष्टभंक्कारिष्टदग्रहापेक्षयाधिक बलस्तदारिष्टहृत्स्यात् ॥ २१ ॥

अर्थभाषा.

यदिलग्नकी प्रथमें दशा होयतो भाव फलसे ग्रहके षड्बलैक्यको गुण देना तो दशाक्रमसे बल होताहै यदि सूर्य्य या चन्द्रमाकी प्रथम दशा होयतो ग्रह और लग्न इनके बलका चतुर्थांश सप्तवर्ग बलके गृह स्थान में रखना और उस्का आधा होरादि६ स्थानमें रखना और उनको अपने अपने वर्गस्वामीके बलसे गुणदेना और सबका योग करना तोबल होताहै और कोई आचार्य्योंका यहमतहै कि गुणन फलका मूल लेकर योगकरना तोबलहोताहै. यहठीक नहीं है. पूर्वरीति आयाजोवल वह यदि रिष्टकर्ता ग्रहके अपेक्षा रिष्टभंगकर्ता ग्रहका बल अधिक होयतोरिष्टको नाश करेगा.

दशाक्रमोदाहरणम्.

इहां सूर्य्य चन्द्र और लग्न इस्में सूर्य्य अधिक बलहै इसवास्ते पिंडायुमें सूर्य्य दशा प्रथमलेके उदाहरण क्रम लिखना. तथापि ग्रंथक्रमानुरोधसे लग्न बलाधिक कल्पना करके अंशायुमें प्रथमलग्न दशालेके दशाक्रम लिखते हैं प्रथमलग्नदशा अनंतर लग्नसे केन्द्र स्थानमें सूर्य्य चंद्र हैं और पणफरमें शुक्रमंगल है और आपोक्लिममें गुरु बुध शनिहैं इन मैसे प्रथम दशा किस्कीहै यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

दशाक्रमबलचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
६	३	४	१	६	०	५	ब
३	५२	५७	२२	३७	१६	२३	
३६	४५	३८	५८	१६	५७	३	ल

जन्मलग्नम्.

रविका षड्बलैक्य ७।५१।५३ इस्को रवि भावफल ०।४६।३३ इस्से गुणके ६।३।३६ यह रविका दशाक्रम बल भया यही रीतिसे चंद्रादिकोंकाबलकरना इहांकेन्द्रमेंजो सूर्य्यचन्द्रहैं इस्में सूर्य्य अधिकबल है इस्की द्वितीयदशा चन्द्रकी तृतीयदशा अनंतर पणफरमें शुक्र मंगलहैं इस्में मंगल अधिकबलहै इस्की चतुर्थ दशा अनंतर शुक्रकी आपोक्लिममें गुरु

अंशायुचक्रम्.

ल.	सू.	चं.	मं.	शु.	बृ.	श.	बु.	यो.
१५	८	९	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१२	७	२३	१	८	१३	१९
५२	२९	५५	१९	२५	१२	३४	५५	४४
०	२४	४८	१२	४८	०	४८	१२	१२

बुध शनि है. इस्में गुरु अधिक बल है. इस्की दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना.

उदाहरणार्थ सूर्य्य- अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथम सूर्य दशा अनंतर सूर्य्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चंद्र है इस्में प्रथम दशा किस्की है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

चन्द्रका षड्बलैक्य ७।२०।४ इस्का चतुर्थांश १।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इस्का अर्ध ०।५५।० यह होरादि ६ स्थानमें बल अब चन्द्रका गृहेश शनि इस्का षड्बलैक्य ६।२।११ इस्से चंद्रका गृह बल १।५०।१ इस्को गुणके ११।४।६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इस्का षड्बलैक्य ७।२०।४ इस्से चन्द्रका होराबल ०।५५।० इस्को गुणके ६।४३।२४ यही रीतिसे द्रेष्काणादिकोंका गुणाकार करके सप्तवर्गमें के गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है.

ग्रह और लग्न इनका बल चतुर्थांश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें.

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
ग्रह	१ ५७ ५८	१ ५० १	१ १७ ४२	१ १८ ६	१ ५३ ५२	१ २२ ५४	१ ३० ३३	१ ५१ २
होरा	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्रेष्का.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
सप्त.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
नव.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
द्वाद.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१
त्रिंशां.	० ५८ ५९	० ५५ ०	० ३८ ५१	० ३९ ३	० ५६ ५६	० ४१ २७	० ४५ १६	० ५५ ३१

वर्गेश बलसे गुणके.

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	लग्न
ग्रह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	९ ५२ ५१	९ ५२ ५६	८ २० २६	७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	६ ४३ २४	५ ५ २२	५ ७ ७	६ ५७ ३४	५ ४ १	५ ५६ ०	७ १६ ३७
द्रेष्का.	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	४ ५६ २८	३ ४९ ५	४ १० ११	५ ६ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३४	३ ३४ ४३	३ ५५ ४३	४ ५४ ५८	५ २५ ५९	३ ५५ ४३	७ १ २५
नव.	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४४ ५६	३ ५५ ४३	७ १२ १०	३ ३५ ५०	४ ३३ १५	७ १ २५
द्वाद.	५ ७ ८	६ ५७ ३०	४ ५४ ५४	३ २२ १९	७ १२ १०	५ १४ ३८	३ ५४ ३१	५ ३५ ७
त्रिंशा.	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५५ ४३	४ ५६ २८	३ ४९ ५	३ ५४ ३१	५ ३५ ७

गुणाकारका ऐक्यदशाक्रमबलचक्रम्.

सूर्य्य.	चन्द्रः	मंग.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि.	लग्न	योग
५२	४७	३८	३३	४६	३५	३४	४७	३३५
३९	४७	२०	२१	२	१९	५५	५०	४७
२	५८	५८	४५	४४	४	४२	१२	२५

इहां सूर्य्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्रहै इस्मैं लग्न अधिक बल हैं उस्को द्वितीय दशा अनंतर चन्द्रकी पणफरमें मंगल शुक्र इस्मैं मंगल अधिक बलहैं उस्की दशा अनंतर शुक्रकी दशा आपोक्लिममें बुध गुरु शनि है. इस्मैं गुरु अधिक बलहै उस्की दशा अनंतर शनिदशा अनंतर बुधकी दशा इहां मिश्रायुमें सूर्य्य अधिक बल हैं इसवास्ते यही दशा क्रम जानना यह बलपिंडायुमें और निसर्गायुमें लेना अंशायुमें

पहलेजो बलकिया है उस्का प्रमाणसे दशा रखना.

पिण्डायुर्दशाक्रम चक्रम्.

सू.	ल.	चं.	मं.	गु.	शु.	श.	बु.	यो.	
१५	२	१६	३	११	६	९	६	८०	व.
७	१०	९	११	२	५	७	२	१०	म.
१८	२८	२९	५	२८	२२	१४	१६	१२	दि.
५७	२२	२४	३	३७	१६	८	१०	०	घ.
४०	४८	२५	०	२४	१८	०	३६	२१	प.

उदाहरणार्थ चन्द्रका अधिक बल कल्पना करके निसर्गायूमें दशाक्रम लिखते हैं. प्रथमचन्द्र दशा अनंतर चन्द्रसे केन्द्र स्थानमें लग्न और सूर्य्य हैं इस्में सूर्य्य अधिकबल है इस्की द्वितीय दशा अनंतर लग्नकी दशा चन्द्रसे पणफरमें शुक्र मंगल है इस्में मंगल अधिक बल है उस्की दशा अनंतर शुक्रकी दशा चन्द्रसे आपोक्लिमस्थानमें बुध गुरु शनि हैं इस्में गुरु अधिक बल है इस्की दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा पिंडायूमें जो बल किया है उसी बलका प्रमाणसे निसर्गायूमें भी लेना. और जीवायूमें भी लेना.

निसर्गायु चक्रम्.

चं.	सू.	ल.	मं.	गु.	शु.	श.	बु.	यो.	
०	३६	२	०	१८	७	२४	४	७५	व.
८	५	१०	६	३	९	०	७	४	म.
२	३५	२८	८	२८	८	२०	२७	११	दि.
२३	२३	३३	४०	४१	४३	३०	७	३१	घ.
३५	२०	४८	२४	२०	३०	०	५७	५४	प.

जीवायुर्दायमें सूर्य्य चन्द्र लग्नमें हीन बल होय तथापि जो उन्में अधिक बलहोय उस्की प्रथम दशा कल्पना करके अनंतर उस्से जो केन्द्रादि स्थानमें होय उनकी दशा इत्यादि क्रम जानना ॥ रिष्टभंग विचारानंतर और दशाक्रम बल दार्ढ्य और मतांतर निराकरण.

श्लोक— भंक्तुरिष्टकर्ता हिताहितशुभासत्वं च नीचोच्च भा
स्ताद्यस्याश्रयता विचार्य्य मतिमान् रिष्टस्य भंगं वदेत्
श्रेष्ठं रिष्टहतौ दशाक्रमइहौजः श्रीधराद्योदितम्
कष्टं ष्ट्रभवलांतरात्कचकुतत्तद्युक्ति शून्यत्वसत् ॥३२॥

अन्वयः

भंकुरितिरिष्टभंकुः रिष्टकृतोरिष्टकारकस्य ग्रहस्य हिताहितं शुभाशुभं विचार्य्यरिष्ट भंगं वदेत् हितं इष्टं अहितं कष्टं शुभासव्त शुभग्रहं पापग्रहंच उच्चास्थितो नीच स्थितोवा अस्तोदितोवामित्रगृहे शत्रुगृहे वास्या दित्यादि सर्वं विचार्य्य रिष्टस्य भंगं वदेत् मतिमान् ॥ इहास्मिन्स्थले दशाक्रमे श्रीधराद्योदितं ओजो बलं श्रेष्ठंइष्ट बलेन गुण्यो दशाविधौ बलंस्यात् ॥ अथपरमतं ॥ कष्टेष्टघ्नेति क्वचेकेचनाचार्य्या कष्टेष्टाभ्यां गुणिते बले तयो रंतरात्साधितं वीर्य्यं दृक् पृथगिष्ट कष्ट गुणित मित्यादिना इष्ट कष्ट गुणितं षड्लं तयोरंतरं कार्य्यं तस्य चतुर्थांशो ग्रहे श्चोरादावर्धितः ततः स्वस्ववर्गेशबलै हैतस्ते षामैक्यं स्पष्ट बलं स्यात्तदसत् युक्तिशून्यत्वात् .

अर्थभाषा.

अरिष्ट कर्ताग्रह और अरिष्ट भंगकर्ता ग्रह इनके इष्टकष्ट वह शुभहैं किंवा पापहैं ग्रह और वह नीचमें उच्चमें मित्र ग्रहमें शत्रु गृहमें और अस्तंगतउदित है इत्यादि इनका आश्रयत्वका विचार करके बुद्धिमान् गणकने अरिष्ट भंग कहना यह ग्रंथमेरिष्ट भंगके विषेऔर दशाक्रमके विषे श्रीधरादिक आचार्य्योंने कहे प्रमाण बलल्यावनेकी रीति कहा है वही श्रेष्ठ है श्रीपति इत्यादि ग्रंथकारने इष्टसेवा कष्टसे षड्वल गुणके उस्के अंतरसे जो बल साधन कथित कियावह अयुक्त है इसवास्ते असत है.

॥ अंतर्दशाकरना ॥

श्लोकः
अर्धस्यैकभगास्त्रिकोणगृहगरुर्यंशस्यचास्तेनगां
शस्याघ्रेश्चतुरस्त्रगोनिजगुणैः पक्तैकभेस्याद्दली ॥
अंशादीकुरुरूपमत्रसमतांकृत्वाचनाशंछिदा
मंशघ्नाःस्वदशाः पृथक्खलुलवैक्याप्तास्युरंतर्दशाः ३३

अन्वयः

मूल दशेश ग्रहस्यो ग्रहोनिजगुणै रर्धपक्ता पाचको भवति निज गुणैरित्यस्यार्थस्यारोहावरोह उच्च नीच कक्षादि भिरित्यर्थः त्रिकोणगानवम पंचमस्थानगरुर्यंशस्य अस्ते सप्तमस्थे नगांशस्य सप्तमांशस्य चतुरस्त्रचतुर्थाष्टमस्थानगोंघ्रे चतुर्थांशस्य पक्ता याचको भवति

लग्नस्याप्येवं एकभे द्विवहुषु सत्सु वली एक एव ग्रहः पाचयति न सर्वेत्र अ-
त्रापि दशाक्रमवलं ज्ञेयम् अंशा दौरूपकल्पातनः प्रथममेक गृह स्थि-
तस्य ततस्त्रिकोणगस्य ग्रहस्य ततो अस्त गतस्य ततश्चतुरस्रः गतस्य
ग्रहस्य भागास्त्याप्याः ततः समच्छिदीकृत्य छेद गमं च कत्वा पृथक्‌कृतेषा
मंशानां योगः कार्य्यः ग्रह दशा पृथग्वले गुण्या अंशयोगेन भाज्याः अंत
दशाः स्युः

अर्थभाषा-

मूल दशापति अर्थात् महादशापति जिस राशीमें होय उसी राशीमें
जो ग्रह होय वह दशापतिके संवधसे दशापतिके अर्धफलका पाचक
होता है दशापतिसे ५।९ यह स्थानमें रहनेवाला ग्रह दशापतिके
तृतीयांश कालका पाचक होता है और दशापतिसे सप्त ७ म स्था-
नमेंका ग्रह दशापतिके सप्तमांशका पाचक होताहै और दशापतिसे ४।८
यह स्थानमेंका ग्रह दशापतिके चतुर्थांश कालका पाचक होताहै सर्वत्र ग्र-
ह आरोहावरोह उच्चनीचादि पूर्वोक्त स्वगुणसे शुभाशुभ फलको पाचक
होताहै- कहिये अन्य दशामें भी अपने पाक कालमें शुभाशुभ फल देताहै
एक राशीमें एकसे ज्यादा ग्रह होयतो उस्में जो वलिष्ठ ग्रह होय उसी को
लेना इहां अंश स्थानमें १ लेके उस्के नीचे छेद लिखना अनंतर समच्छे
द करके छेदांक त्याग करना अंशांकसे स्वकीय स्वकीय वर्षादि दशा अ-
लग अलग गुणके गुणाकारको अंशांकके मिलानेसे जुदा जुदा भाग
देनातो अंतर्दशा होतीहै.

अंतर्दशाक्रमः-

प्रथम दशापतीकी अंतर्दशा अनंतर दशापतीके राशीमें रहने वाले
ग्रहका अंतर फिर दशापतिसे ९।५ यह स्थानमें रहनेवालोंका अंतर फि-
र सप्तम स्थानके ग्रहका अंतर अनंतर ४।८ यह स्थानके ग्रहका अंतर
कदाचित् पूर्वोक्त स्थानोंमें दोतीन ग्रह होयतो वलका वशसे क्रम जान
ना जो दशाक्रमके विषे वल है वही अंतर्दशामें भी वल जानना.

समच्छेद करनेकी रीति-

जिन संख्याओंका समच्छेद करना होय उनको वरावरसे रखकर
एकके हरसे दूसरेके हर अंशको गुणदेना और दूसरेके हरसे और सवके
हर अंशको गुणना ऐसा परस्पर गुणनेसे समानच्छेद होताहै.

उदाहरण + जैसे लग्नदशामें अंतर करनाहै. ल $\frac{1}{1}$ शु $\frac{1}{3}$ श $\frac{1}{3}$
सू $\frac{1}{7}$ चं $\frac{1}{4}$ इनको समच्छेद करके २५२।८४।८४।३६।६३ अं-
२५२।२५२।२५२।२५२।२५२ ह-

इन अंशोकि मिलान ५१९ इस्को ३ से भागके १७२ अंशोमें ३ से भाग देनेसे ८४।२८।२८।१३।२१ इसीप्रकार जहां अधिक अंक होय उस्के अपवर्तनदेके सूक्ष्म अंक करलेना जोकाम उस अंकसे होताथा वो काम इस अंकसे हो जायगा.

उदाहरणम्.

इहां सूर्य्यबल अधिकहै इसवास्ते मिश्रायुमे प्रथम सूर्य्यदशा १३।७।२७।१३।२८ अब सूर्य्यदशामें अंतर्दशा विचार इहां कुंडलीमे सूर्य्यके साथ कोई ग्रह नहीं सूर्य्यसे त्रिकोणमें मंगल है सो $\frac{१}{३}$ पाचक है और सूर्य्यसे सप्तममें लग्न है सो $\frac{१}{७}$ पाचक तब सूर्य्यदशामें मंगल और लग्न पाचक है सूर्य्य $\frac{१}{१}$ मं- $\frac{१}{३}$ ल- $\frac{१}{७}$ यह समच्छेद करके सू- $\frac{२१}{२१}$ मं $\frac{७}{२१}$ ल- $\frac{३}{२१}$ इस्के छेद त्यागकरके सू-२१ मं-७ ल-३ यह अंशांक भया यहां सूर्य्यकी मूल दशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को सूर्य्यके अंश २१ इस्से गुणके २८६।१०।१।४२।४८ इस्को अंशांककी मिलान ३१ इस्से भागके ९।३।११।१।२२ यह सूर्य्यमें सूर्य्यकी दशा सूर्य्यकी मूल दशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को मंगलके अंश ७ इस्से गुणके ९५।७।१०।३४।१६ इस्को अंशांककी मिलान ३१से भागके ३।१।०।२०।२८ यह सूर्य्यदशामें मंगलकी अंतर्दशा सूर्य्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को लग्नके अंश ३ इस्से गुणके ४०।११।२१।४०।२४ इस्को अंशांककी मिलान ३१ से भागके १।३।२५।५१।३८ यह सूर्य्यदशामें लग्नकी अंतर्दशा यह तीनों अंतर्दशाका योग १३।७।२७।१३।२८ यह सूर्य्यकी मूल दशा. यही रीतिसे लग्नादि दशामें अंतर्दशा करना.

अंशच्छेदचक्रम्.

सू-	मं-	ल-	ल-	शु-	श-	सू-	चं-	चं-	र-	सू-	मं-	मं-	सू-	शु-	बु-
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	७	१	३	३	७	९	१	३	९	९	१	३	७	४

गु-	ल-	श-	मं-	च-	र-	चं-	बु-	सू-	श-	ल-	शु-	चं-	र-	बु-	र-	ल-	श-
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	७	४	१	२	७	४	१	३	२	७	४	१	७	९	४

समच्छेद चक्रम्.

सू.	मं.	ल.	ल.	गु.	श.	सू.	चं.	चं.	रा.	सू.	मं.	मं.	सू.	गु.	बु.
२१	७	३	८४	२८	२८	१२	२१	१२	४	३	३	८४	२८	१२	२१
२१	२१	२१	८४	८४	८४	८४	८४	१२	१२	१२	१२	८४	८४	८४	८४

शु.	ल.	गु.	मं.	रा.	रा.	चं.	गु.	सू.	शु.	ल.	गु.	चं.	रा.	बु.	रा.	ल.	श.
८४	२८	२८	१२	२१	८४	२८	१२	२१	८४	२८	२८	१२	२१	२८	४	७	७
८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	२८	२८	२८	२८

सूर्यदशामेंअन्तरदशा				लग्नदशामेंअन्तरदशा						चंद्रदशामेंअंतर्दशा					भौममेंअंतरदशा				
सू.	मं.	ल.	यो.	ल.	गु.	श.	सू.	चं.	यो.	मं.	रा.	सू.	मं.	यो.	मं.	सू.	गु.	बु.	यो.
८	३	१	१२	२	१	१	०	०	७	४	१	१	१	९	१	०	०	०	२
३	१	२	७	४	१	१	५	१०	०	११	७	२	२	१	२	४	२	३	१
१	०	२५	२७	२७	१९	१९	२५	६	७	२७	२९	२९	२९	२४	२४	२८	३	२१	३७
१	२०	५१	१३	५	३	१	३७	४६	३२	१३	४	१८	१८	५४	२०	६	२८	५	०
२२	२८	३८	२८	४	४१	४१	५१	१५	३२	१६	२५	१९	१९	१९	२२	४८	३७	५	५२

शुक्रदशामेंअंतरदशा						गुरुदशामेंअंतरदशा					शनिदशामेंअंतरदशा						बुधदशामेंअंतरदशा				
शु.	ल.	श.	मं.	रा.	यो.	रा.	चं.	बु.	सू.	यो.	श.	ल.	गु.	चं.	रा.	यो.	बु.	रा.	ल.	श.	यो.
६	२	२	०	३	१३	४	१	०	१	८	७	२	२	१	१	१५	३	०	०	०	६
९	२	३	११	८	११	१०	७	८	२	५	७	६	६	१	१०	८	१०	६	११	११	४
५	१	१	१७	८	६	२७	१९	३२	२१	२९	१०	१३	१३	१	२५	४	१३	१९	१८	१८	१
५७	५१	५१	५१	५१	५४	१९	६	२८	४१	४३	३६	३२	३२	३०	१	२०	२१	३	२०	२०	४
२०	१०	१०	३१	२२	५१	१८	२५	२८	४१	५६	३२	१०	१०	५६	८	५६	२	०	३५	३५	३२

इदानींसूक्ष्मफलज्ञानार्थंविदशादिसाधनमाह.

श्लोक- इत्याभ्योविदशास्ततोप्युपदशाताभ्यश्चसूक्ष्मं फलं
पंचांशोनदिनद्वयंतुकलयेत्स्यायुःकृतंदृश्यते ॥ पद्भैः
खेटलवांतरेणचभवेन्मासांतरंचायुषः प्रोक्तंयैस्तु-
दशादिलग्नजफलंतेभ्योनिहभ्यो-नमः ॥ ३४ ॥

अन्वयः-

इत्यनयारीत्याआभ्यो अंतर्दशाभ्योविदशाः साध्याः परंअत्रदशा स्थानेऽन्तर्दशास्थाप्याःततउपदशासाध्याविदशादशानकल्प्यताभ्योदशा

न्तर्दशाविदशोपदशाभ्योऽति सूक्ष्मं फलं वदेत् गणक इति.

अनयारीत्यारुक्तमंशायुः कलया एक कलया पंचांशोनदिनद्वयमायुर्दश्यते ॥ एक कलातुल्येनग्रहांतरेऐवं भवति यदिनवांशकलाभि २०० रेकंवर्षंतदैक कलयाकि मित्यनेनायुषएकदिनमष्टचत्वारिंशद्घटिकांतरं पततिब्रह्मसौरार्य्यभट्टादिपक्षैः ग्रहाणामंशाद्यमंतरं भवतितेनायुषामासाद्यमंतरं भवति । अपिचजन्मकालस्यपलमात्रांतरे लग्नस्यकलाषट्कं स्यांतरंस्यात्तेन दशाविभागे आयुर्दायेऽप्यन्तरंस्यात् एवं येराचार्य्यैर्दशादिलग्नफलंदशाप्रवेशेलग्न फल मुक्तं तेभ्यो ऽति दूरभ्योनम इति वक्रोक्तिः ॥

अर्थभाषा.

जिस प्रकार दशासे अंतर्दशाकिया है उसी रीतिसे अंतर्दशासे विदशा करना इहां अंतर्दशाको दशा कल्पना करना और अंतर्दशापतिकोदशापति कल्पना करना अनंतर पूर्व श्लोकमें कथित रीति प्रमाण पाचकांशको समच्छेदादि विधि करके विदशा ल्यावना तैसेही विदशाको दशाकल्पना करना और विदशा पतिको दशापति कल्पना करके विदशामें उपदशा ल्यावना यही रीतिसे दशामें अंतर्दशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और अंतर्दशामें विदशापती अपनेगुण प्रमाण फल देते है और विदशामें उपदशापती अपणे गुण प्रमाण फल देते हैं ऐसे उपदशा सूक्ष्म कालिक फल जानना.

इहां १ फलाका अंशायुर्दाय ल्यावनेकी रीति प्रमाण आयुर्दाय कियातो १ दिन ४८ घडी आया ऐसा देखाता है ब्रह्म सौरार्य्य भट्टादि पक्षसे ग्रहका भागादि अंतर आवता है इसवास्ते आयुर्दायमें मासादि अंतर आवेगा

जब जन्मकालमें पलमात्र अंतर आवताहै. तब लग्नमें ६ कलाका अंतर आवताहै और ६ कलासे आयुर्दायमें १० दिनका अंतर आवेगा ऐसा अंतर देखकर यह दशा प्रवेशादि लग्न फल कथित किया है वह दूर दर्शीको दण्डवत् है.

सूर्य्यमहादशांतर्गत सूर्य्यांतर्दशामध्येविदशा

सू.	मं.	ल.	यो.
६	२	०	१
२	१	१०	२
६	२	२२	१
२९	९	२१	१
५७	५९	२६	२२

सूर्य्यमहादशांतर्गत मंगलांतर्दशामध्ये विदशा.

मं.	सू.	शु.	बु.	यो.
१	०	०	०	३
१	७	२	५	१
१३	४	१	१०	०
१३	२४	५३	४८	२०
५६	३८	२५	२२	२८

सूर्य्यमहादशांतर्गतलग्नांतर्दशा मध्ये विदशा चक्रम्.

ल.	शु.	श.	सू.	च.	यो.
०	०	०	०	०	१
७	२	२	१	१	३
२१	१७	१७	२	२७	२५
३	१	१	०	४५	५१
१४	४	४	२८	४८	३८

लग्नमहादशांतर्गत लग्नांतर्दशा मध्येविदशा चक्रम्.

ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.
१	०	०	०	०	३
७	६	६	२	४	४
२५	१८	१८	२५	२८	२७
४८	३६	३६	६	५७	५
२५	१२	१२	५६	९	४

लग्नमहादशांतर्गत शुक्रांत र्दशा मध्ये विदशाचक्रम्.

शु.	ल.	श.	मं.	बु.	यो.
०	०	०	०	०	१
६	२	२	०	१	१
१८	६	६	२८	१९	११
३६	१२	१२	२२	३२	१
११	४	४	१९	३	४१

लग्नमहादशांतर्गत शनैरंतर्दशा मध्ये विदशा चक्रम्.

श.	ल.	शु.	चं.	बु.	यो.
०	०	०	०	०	१
६	२	२	१	१	१
८	२	२	१७	१७	१९
४६	५५	५५	११	११	१
५५	३९	३९	४४	४४	४१

लग्नमहादशांतर्गतसूर्य्यां मध्येविदशाचक्रम्.

सू.	मं.	ल.	यो.
०	०	०	०
२	१	०	५
२८	९	१६	२५
४४	३५	५७	१७
५९	०	५२	५१

लग्नमहादशांतर्गत चंद्रांतर्दशामध्येविदशा चक्रम्.

चं.	बु.	सू.	मं.	यो.
०	०	०	०	०
५	१	१	१	१०
२७	२५	११	११	६
१९	४६	४९	४९	४६
४६	३७	५६	५६	१५

चन्द्रमहादशांतर्गत चन्द्रांतर्दशामध्ये विदशा चक्रम्.

चं.	बु.	सू.	मं.	यो.
२	०	०	०	४
८	१०	८	८	११
२०	२६	५	५	२७
१८	४६	४	४	१३
९	३	३२	३२	१६

चन्द्रमहादशांतर्गत जीवांतर्दशा मध्ये विदशाचक्रम्.

बु.	चं.	शु.	सू.	यो.
०	०	०	०	६
११	३	१	२	७
१७	२५	१९	२६	२९
२	४०	३४	४५	४
५९	५९	४३	४४	२५

चन्द्रमहादशांतर्गत सूर्य्यां मध्येवि चक्रम्

सू.	मं.	ल.	यो.
०	०	०	१
१०	३	१	२
४	११	१३	२९
२२	२७	२८	१८
५	२२	५२	१९

चन्द्रमहादशांतर्गत मंगलांतर्दशा मध्ये विदशा चक्रम्.

मं.	सू.	शु.	बु.	यो.
०	०	०	०	६
८	२	१	२	२
२०	२६	७	५	२९
१७	४५	११	४	१८
१४	४४	३	१८	१९

भौममहादशांतर्गत मंगलांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

मं.	स्.	शु.	बु.	यो.
०	०	०	०	१
८	२	१	२	२
१७	२५	६	४	२४
२४	४८	४६	२१	२०
२७	१२	२२	९	२२

भौममहादशांतर्गत सूर्य्यामध्ये विदशाचक्रम्.

स्.	मं.	ल.	यो.	शु.
०	०	०	०	०
३	१	०	५	१
१०	२	१४	२८	०
२०	२६	२०	६	४९
५	४२	१	४८	१६

भौममहादशांतर्गत शुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

ल.	श.	मं.	स्.	यो.
०	०	०	०	०
०	०	०	०	२
१०	१०	४	[illegible]	३
१६	१६	२४	४२	२८
२५	२५	१२	१९	३७

भौममहादशांतर्गत बुधांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्

बु.	स्.	ल.	श.	यो.
०	०	०	०	०
२	०	०	०	२
७	९	१६	१६	२१
२७	३९	५४	५४	५
१	२४	१५	१५	५

शुक्रमहादशांतर्गत शुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

शु.	ल.	श.	मं.	स्.	यो.
३	१	१	०	०	६
३	१	१	५	९	९
१२	४	४	१८	२५	५
४६	१५	१५	५८	४१	५७
२९	२२	२२	६	२९	३०

शुक्रमहादशांतर्गत लग्नांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

ल.	शु.	श.	स्.	चं.	यो.
१	०	०	०	०	२
१	४	४	१	३	३
४	११	११	२६	८	९
१५	२५	२५	१९	२३	५९
३३	११	११	२२	५२	१०

शुक्रमहादशांतर्गत शनेरंतर्दशामध्ये विदशाच.

श.	ल.	शु.	चं.	स्.	यो.
१	०	०	०	०	२
०	४	४	३	३	२
२४	४	४	३	३	१
५५	५५	५५	४१	४१	५९
४६	१५	१५	२७	२७	१०

शुक्रमहादशांतर्गत मंगलांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्

मं.	स्.	शु.	बु.	यो.
०	०	०	०	०
६	२	०	१	११
२१	७	२८	२०	१७
३५	११	४७	२३	५९
४८	५६	५८	५७	३९

शुक्रमहादशांतर्गत गुरुअंतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

गु.	चं.	बु.	स्.	यो.
०	०	०	०	१
११	३	१	२	८
२२	२७	२०	२९	८
४७	३५	२२	११	५९
२९	४३	५७	५४	२२

गुरुमहादशांतर्गत गुरु. मध्ये विदशाचक्रम्.

गु.	चं.	बु.	स्.	यो.
२	०	०	०	४
०	११	४	८	१०
२	११	२६	१५	२७
२५	१६	१५	५७	१०
२८	३३	३५	२४	१४

गुरुमहादशांतर्गत चन्द्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्

चं.	गु.	स्.	मं.	यो.
०	०	०	०	१
१८	३	०	२	७
२१	१७	२०	२०	११
१०	८	१९	१०	६
५२	२७	५८	५८	२५

गुरुमहादशांतर्गत बुधांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

बु.	गु.	ल.	श.	यो.	
०	०	०	०	०	व.
५	०	१	१	८	मा.
२	२१	८	८	१२	दि.
५०	५७	२५	२५	२८	घ.
४५	१५	१२	१२	२८	प.

गुरुमहादशांतर्गतसू॰ म॰ विदशाचक्रम्

सू॰	मं॰	ल॰	यो॰
०	०	०	१
१	३	१	२
२९	९	१२	२१
१८	४६	४५	४१
१६	५	२८	४१

शनिमहादशांतर्गतशनैरंतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

श॰	ल॰	शु॰	चं॰	बृ॰	यो॰
२	१	१	०	०	७
६	२	२	१०	१०	७
४	१	१	१६	१६	१०
५३	२७	३७	१३	३३	३६
४६	५५	५५	२७	२७	२२

शनिमहादशांतर्गतलग्नांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

ल॰	शु॰	श॰	सू॰	चं॰	यो॰
१	०	०	०	०	२
२	४	४	२	३	६
२३	२७	२७	२	२०	१३
२४	५०	५०	२२	५३	३२
०	२०	२०	०	२०	१०

शनिमहादशांतर्गतशुक्रांतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.

शु॰	ल॰	श॰	म॰	बृ॰	यो॰
१	०	०	०	०	२
२	४	४	२	३	६
२३	२७	२७	२	२०	१३
२४	५०	५०	२२	५३	३२
०	२०	२०	०	३०	१०

शनिमहादशांतर्गत चंद्रांतर्दशा विदशाचक्रम्.

चं॰	बृ॰	सू॰	म	यो॰
०	०	०	०	१
७	२	१	१	१
२	११	२३	२३	१
२३	११	२३	२३	३०
१४	४	३१	१९	५६

शनिम॰ द॰ गुरुअंतर्दशा मध्ये विदशाचक्रम्.

बृ॰	चं॰	बु॰	सू॰	यो॰
१	०	०	०	०
१	४	१	३	१०
६	१२	२६	९	२५
५४	१८	४२	१३	९
५७	११	८	४४	८

बुध महादशांतर्गत बुधांतर्दशा विदशा चक्रम्.

बु॰	श॰	ल॰	श॰	यो॰
२	०	०	०	३
४	४	७	७	१५
८	१	२	२	१३
७	९	१	१	२१
३५	२१	५४	५४	२

बुधमहादशागुरुअंतर्दशा मध्ये विदशाचक्रम्

बृ॰	चं॰	बु॰	सू॰	यो॰
०	०	०	०	०
३	१	०	०	६
२५	८	१६	२८	१९
१८	२६	२८	४९	३
४३	१४	२३	४०	०

बुध महादशांतर्गत लग्नांतर्दशा मध्ये विदशाचक्रम्.

ल॰	शु॰	श॰	सू॰	चं॰	यो॰
०	०	०	०	०	०
५	१	१	०	१	११
११	२६	२६	२४	१२	१८
८	२२	२२	९	१७	२०
६	४२	४२	४४	१	१५

बुधमहादशांतर्गतशनिअंतर्दशामध्येविदशा.

श॰	ल॰	शु॰	चं॰	बृ॰	यो॰
०	०	०	०	०	०
५	१	१	१	१	११
३०	२३	२२	३०	१०	३८
४६	३५	३५	११	११	२०
१७	२६	२६	३२	३३	१५

इति विदशा संपूर्ण.

जिस प्रकारसे विदशाकरिहै उसी प्रकार पदशाकरना. किंचिदुशाक्रमे वक्ष्यामि.

उपदशा चक्रम्.

सू॰ म॰ द॰ सूर्य्यात् सू॰ विद॰ शामें उपदशा.				सू॰ म॰ द॰ सूर्य्यात मंगल विद॰ उपद॰ शा चक्रम् ॥					सू॰ म॰ दशा॰ लग्नात॰ मध्ये विदशामें उपद॰ शा चक्रम्.					
सू॰	मं॰	ल॰	यो॰	मं॰	सू॰	शु॰	बु॰	यो॰	ल॰	शु॰	श॰	सू॰	चं॰	यो॰
४	१	०	६	१	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०
२	४	७	३	२	४	२	३	१	५	१	१	०	१	१०
२८	२९	८	६	१५	२५	२	१८	२	६	२२	२२	२२	९	२२
३५	३१	२२	२९	४४	१४	१४	५६	०	३१	१०	१०	२१	७	२१
४६	५५	१६	५७	१६	४५	५४	४.	५९	१३.	२४	२४	३६	४१	२६

इसी प्रकारसे उपदशा सब करना इहां ग्रंथका बढणके भयसे तीनहीं लिख्या.

श्लोक — जगदीशेनरचिते केशवी ग्रंथ टिप्पणे॥
दशाधिकारः पूर्णोयंतन्द्वापार्य प्रकाशकः ॥ ८ ॥

दशाप्रवेशकालमें सावनाहर्गण साधन.

श्लोक —
शाकोब्दाजनिमध्यमार्कभयुतं मासादितद्युग्दशा
ब्दाद्यंतत्रशकेसमासादितरणी मध्योदशादौ भवेत ॥०॥
घस्त्रीभूतदशापृथक्‌त्रिकुहतांर्वांकाप्ट हृत्त द्युतो
सास्यात्तात्निकादृशाब्दपलयुक्त द्युगजनि द्युव्रजः २५

अन्वयः- शाकोऽब्दाजनिशाकएवाब्दावत्सराकल्प्याः जनिमध्यमार्कभयुतंमासादिजन्मकालिक मध्यमार्कस्यराश्यादिकं मासादिः कल्प्यः जन्मशाकएवंप्रथमदशाप्रवेशोज्ञेयः द्वितीयस्तुतेनवर्षादिनायुक्तं दशाब्दाद्यंकार्य्यम् दशाब्दाशाकेषुयोज्याअथमासाद्ये दशामासाद्यं योज्यएवं तत्रशकेऽधस्तमासाद्युंसमासादितः रणिर्मध्यमोदशादौ भवेत् एवं तृतीयादि दशादौमध्यमोरविर्ज्ञेयः ॥ तात्कालिक मासाद्यानयनं घस्त्री भूत दशेति दिनीकृतदशापृथक्स्थाप्या एकत्र त्रयोदश १३ त्रिगुण्यारवांकाप्ट ८९० भिर्भक्तालब्धेन द्विशाद्येनपृथक्स्थायुक्ताकार्य्यातदासावनादशास्यात् कदादशाब्दपलयुक्तातदातद्युग्जनिद्युव्रज इतितयादशया युक्‌-

जनिद्युव्रजो जन्मकालिकाहर्गणः सावयवः सूर्योदय कालिकोऽहर्गणः सूर्योदयादिष्टेन घटीपलेनयुक्तस्तदा सावयवः स्यादिति भावः ॥ सएव दशाऽहर्गणः पूर्वोक्त प्रकारेणयुतावर्षा दौ द्वितीयादि दशा प्रवेशकालिकोऽहर्गणो भवति ॥ एवंतृतीयादिज्ञेया ॥ ३५ ॥

अर्थभाषा.

जन्मकालीन शकको प्रथम दशावर्ष युक्त करना और जन्मकालिन मध्यम राश्यादि सूर्यको प्रथम दशाका मासादि राश्यादि मानके युक्त करनातो वह दशावर्ष युक्त किया भया शकमें द्वितीय दशारंभमें मध्यमसूर्य होताहै. प्रथम दशादिवसादि करके पृथक् रखके एक ठिकाने उसको १३ से गुणके ८९० से भागके जो दिवसादि फल आवेगा तो और दशावर्ष तुल्य फल पृथक् रक्खे अंकमें युक्त करना तो वह प्रथम सावन दशाहोती है. अनंतर वह जन्मकालीन सावयव अहर्गणमें युक्त करना. तो द्वितीय दशारंभका अहर्गण होता है.

शकको दशावर्ष युक्त करनेके कालमें सर्वदशा वर्षादि रखना प्रथम दशाके नीचे शक रखना और शकके नीचे जन्म कालीन मध्यमसूर्य रखना अनंतर सूर्यको प्रथम दशामासादि युक्त करके वर्ष शकमें युक्त करना.

उदाहरणम्.

प्रथमसूर्यदशावर्षादि १३।७।२७।१३।२८ इसके नीचे जन्मकालीनशक १८०८ यहवर्षमें मध्यमसूर्य ०।११।११।५६ इसको प्रथमदशामासादियुक्त करके ८।८।२५।२४ और शकमें वर्ष युक्त करके १८२१ यह शकमें ८।८।२५।२४ मध्यम सूर्य रहते सूर्यदशा पूर्ण होयके लग्न दशा प्रवेश भयी यहीरीतिसे सर्वदशा प्रवेश करना और इसी प्रकार से विदशा और उपदशा प्रवेश करना. अथवा स्पष्ट सूर्य और सवत् युक्तकरना.

दशा प्रवेश चक्र.

सू.	ल.	चं.	मं.	शु.	बृ.	श.	बु.	यो.
१३ ७ २७ १३ २८	७ ० ७ १२ ३२	८ ० २४ ५४ ११	२ १७ ० ५२	१३ ११ ५८ ५१	८ ५ ३० ४३ ५६	१५ ८ ४ २० ५६	६ ४ ९ ४ ३२	७ ६ ४ २७ २५ २६
१८०८	१८२१	१८२८	१८३७	१८२९	१८५२	१८६२	१८७८	१८८४
० ११ ११ ५६	८ ८ २५ २४	८ १५ ३७ ५६	१० १० २२ १५	११ २७ २२ ०७	११ ४ २७ ५८	४ २५ ११ ५४	० २९ ३२ ५०	५ ८ ३७ २२

अहर्गण करनेकी रीति.

प्रथम सूर्य्यदशा १३।७।२७।१३।२८ यह दिवसादि करके ४९। ।७।१३।२८ यह पृथक् १३ से गुणके ६३९२३।५५।४ इस्को ८९० से भागके लब्धि दिवस ७१ शेष ७३३।५५।४ इस्को ६० से गुणके ४४ ०३५।४ इस्को ८९० से भागके लब्ध घटिका ४९ शेष ४२५।४ इस्को ६० से गुणके २५५०४ इस्को ८९० से भागदेके लब्धि पल २८ और दशावर्षतुल्य पल १३ युक्त करके लब्ध दिवसादि ७१।४९।४१ यह पृथक् रक्खा. जो दिवसादि दशा ४९१७।१३।२८ इस्में युक्त करके ४९८९।३।९ यह प्रथम सावन दशा भई जन्मकालिक अहर्गण जन्म कालीन इष्ट घटि सहित ११७८।३२।१ यह सावयव अहर्गण इस्को सावन दशा ४९८९।३।९ युक्त करके ६१६७।३५।१० यह बुध दशा रंभ समयमें सावयव अहर्गण भया ॥ परंतु जब यह अहर्गण ४०१६ से ज्यादा आवे तब ४०१६ से भागके शेष रहे सो अहर्गण जानना और लब्धि आवे सो पूर्वमें आया जो चक्र उस्में युक्त करना अब इहां अहर्गण ६१६७।३५।१० यह ४०१६ से अधिक है इस्को ४०१६ से भागके लब्ध १ शेष २१५१।३५।१० यह अहर्गण भया पूर्वोक्त चक्र २३ में लब्ध १ युक्त करके २४ चक्र भया.

यह अहर्गणका प्रयोजन माह.

श्लोक- तस्मात्सावयवाद्गणात्स्वकरणात्साध्या दशादौ खगाः
क्षेपाज्जन्मखगान्प्रकल्प्य दिवासाध्याद्दशा सावनात् ॥
तेस्पष्टास्तिथिअसंक्रमवसान्मासो दशादौ तनुः पूर्वो
क्तं जडकर्मचात्र तु भयात्तल्लाघवं दर्शितम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः- तस्मात्सावयवादहर्गणाद्दशादौ स्वकरणाज्जन्मकाले यस्मा त्करणाद्ग्रहाः साधितास्तेन करणेन दशा प्रवेशाऽहर्गणाद्ग्रहाः साध्याः यदि जन्मखगान्क्षेपान्प्रकल्प्य दशादौ सावयवात्सावनाऽहर्गणात्साधि ता ग्रहा जन्मकालजनितग्रहे क्षेप्यास्तदाते दशादौ स्वगा भवंति एवंकृते सावनाद्दशा भवति अस्मादहर्गणादानीतोऽर्कः प्राक् जातेन दशाप्रवे श मध्य सूर्य्येण समस्तदाहर्गण शुद्धो ज्ञेयो नान्यथा ॥ ततो दशा दौ साधिता चन्द्रार्काभ्यां भक्ताब्यर्क विधोर्लवा इत्यादिना तिथिः सा ध्या संक्रमवशान्मासो ज्ञेयः शुक्लादि मासेषु यस्मिन्मासे मेष

संक्रांतिर्भवति सचैत्रोमासो ज्ञेय इत्यादि वषमा द्यो ज्ञेयाः दशाप्र-
विशेलग्न मपिसाध्यंस्वेष्टे पूर्वैः पूर्वाचार्य्यैः श्रीधराद्यैः सावनी दशानय
नेजडकर्म महतायासेन कृत मित्यर्थः अतो मया लाघवं दर्शितम्.

अर्थभाषा.

पूर्व कथित सावयव अहर्गणसे जन्म कालमें जिसपक्षके ग्रह
किया होय उसी पक्षसे दशारंभमें ग्रह करना अथवा सावन दशा
तुल्य अहर्गणसे ग्रह करके उस्में जन्मकालीन ग्रह क्षेपक कल्पना क
रना युक्त करना तो वह दशारंभमें ग्रह होते हैं अनंतर वह स्पष्टक
रना और सूर्य्य चन्द्रसे तिथी ल्यावना यह केवल पांडित्य यह साव
नी करण पूर्वाचार्य्यने महान् प्रयाससे किया इसवास्ते वह जड
कर्म है हमने तो उस्का इहां लाघवता कथन कियाहै.

उदाहरणम्.

लग्न दशारंभमें १८२१ शकमें सावयव अहर्गण २१५१।३५।१०
इस्से जो मध्यम सूर्य्य आवेतो पूर्व सिद्ध दशा प्रवेश मध्यम सूर्य्य ८।
८।२५।२४ इस्के बराबर होयतो यह अहर्गण शुद्ध है अन्यथा अशु
द्ध ग्रह समजनेके वास्ते पूर्वोक्त रीति प्रमाण सारणी परसे मध्यम
सूर्य्य करते हैं. अहर्गण २१५१ इस्को ६० से भागके लब्धि ३५
और शेष ५१ यह शेष कोष्टक इस्के नीचेका सारणीमेंका अंक
१।२०।१५।५७ इस्को लब्ध्यंक ३५ इस्के नीचेका राशी छोडके
भागादि अंक ४।२९।४६।० इसमेंसे प्रथमांकको ६ से भागके बा-
की ४ इस्का दूना ८ यह रास्यंक इसवास्ते ८।२९।४६।० यह लब्धि
कोष्टक फल और चक्र २४ इस्के नीचेका सारणीमेंका अंक
९।१७।४८।४६ और घटी कोष्टक ३५ और पल कोष्टक १० इ-
स्के नीचेका अंक ०।०।३४।३० और ०।०।०।१० यह युक्त करके
८।८।२५।२३ यह मध्यम सूर्य्य पूर्व मध्यम सूर्य्यके बराबर हैं.
अथवा दशासावनाऽहर्गण ४९८९।३।१९ इस्से चक्रांक फल मिला
येबिना मध्यम सूर्य्य ७।२७।१३।२७ इस्को जन्मकालीन मध्यम
सूर्य्य ०।११।११।५६ युक्त करके ८।८।२५।२३ यह वही मध्यम
सूर्य्य आया यही रीतिसे चन्द्रादि मध्यम करना.

दशा सावना हर्गणसे मध्यम ग्रह करते वखत उस्को सारणीमेंके
चक्रके नीचेके अंक युक्त करना नहीं कारण उस्को चक्र संकुल

त जन्म कालीन ग्रह युक्त करना होता है सूर्य्य मीन राशीको होयके जो सूर्य्य चन्द्रसे चैत्र मासांतकी तिथी आवे तो शकमें एक युक्तकरना तो अहर्गण बराबर आवेगा.

दशारंभसमये स्पष्ट सूर्य्यादि.

इहां पूर्व कथित प्रमाण सारणी परसे दशारंभ दिवसमें प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य्य ८।७।२७।२८ गति ६१।१७ चन्द्र ४।४।१०।२ गति ७३१।४३ इस्से आई गततिथि ०४ इसवास्ते धनका सूर्य्य रहते पोष कृष्ण पक्ष भया.

अबदशारंभसमयलिखते हैं.

संवत् १९५६ शके १८२१ पौष कृष्ण पंचमी शुक्रवार १५ इहांअहर्गण २१५१ इसदिन सूर्य्योदयके अनंतर घटी ३५ पल १० इस समयमें स्पष्टसूर्य्य ८।८।०२।०८ चन्द्र ४।११।५३।२२ लग्न ३।२६।२२।१२ कहिये कर्क लग्नमें रवि दशा निवृत्ति समाप्ति और लग्न दशा प्रवृत्ति प्रारंभ भई यही रीतिसे सर्व ग्रहोंकी दशा अंतर्दशा विदशा उपदशा प्रवृत्ति समयमें स्पष्ट सर्व ग्रह और लग्न करके दशापतिसे फलका विचार करना.

सूर्य्यचन्द्रसेतिथिकरणनक्षत्रऔरयोगल्यावनेका प्रकार.

स्पष्ट चन्द्रमेंसे स्पष्ट रवि कम करके बाकी रहै उस्का अंश करके उस्को १२ से भागके जो भागाकार आवे वह गत तिथि जानना. और जो अंशादिक बाकी रहैगा वह भुक्त तिथि होगी वह १२ अंशमेंसे कम करके जो बाकी रहै सो भोग्य तिथी जानना अनंतर भुक्त तिथि और भोग्यतिथि इनकी विकला करके उस्को क्रमसे ६० से गुणके जो गुणाकार आवे उस्को क्रमसे रविचन्द्र स्पष्ट गतीके अंतरके विकलासे भागके जो भागाकार घटिकादि आवेगा वही क्रमसे भुक्त तिथि और भोग्य तिथी इनकी घटी जानना.

गततिथीजो होय उस्को २से गुणके ७से भागदेना और बाकी गान लेना वव्वबवकरणसे तिथीके पूर्वार्धमें करण होते हैं उसमें १ युक्त करना तिथिके उत्तरार्धमें करण होते हैं अनंतर तिथीकी भुक्त भोग्यकी घटिका योगकरके उस्का अर्ध करना. और उसमेंसे भुक्त घटी कम करना तो करणकी घटिका होती है जो तिथीकी भुक्त घटि

सुमार ३०से घटिका ऊपर होचतो निर्थीकी भुक्त भोग्य घटीमेंसे भुक्त घटी कम करना तो करणकी घटिका होती है कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धमें शकुनी करण और कृष्ण पक्षकी अमावस्याको पूर्वार्द्धमें चतुष्पद करण और उत्तरार्धमें नाग करण औरशुद्धप्रतिपदाको पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न करण यह स्थिर करणहै. करणोके नामः- बव१ बालव २ कौलव ३ तैतल ४ गर ५ वणिज ६ भद्रा ७ अथवा विष्टी अथवा कल्याणी नाम है.

स्पष्ट चन्द्रकी कला करके उस्को८००से भागके जो भागाकारआवे सोगत नक्षत्र जानना. औरजो बाकी कलादि रहेगा वह गत नक्षत्रके आगेका भुक्त नक्षत्र होता है. वह८०० से कलामेंसे कम करकेजो बाकी रहेगा वह भोग्य नक्षत्रजानना. अनंतर भुक्त नक्षत्र और भोग्यनक्षत्र इनकी विकला करके उस्को६०सें क्रमसे गुणना उस्को क्रमसे चन्द्र स्पष्टगतीके विकलासे भागदेना जो कमसे भागाकार आवेसो घटिकादि आवेगी वह क्रमसे भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी घटिकाजानना.

४ स्पष्टसूर्य चन्द्रके योगकी कला करके उस्को८००से भागके जोभागाकार आवे सोगतयोगजानना औरजो बाकी कलादि रहेगा सो भुक्तयोग भयासो ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहेगा सो गत योगके आगेका भोग्ययोगजानना. अनंतर भुक्तयोग और भोग्य योग इनकी विकला करके उस्कोक्रमसे ६०से गुणनाऔरजो अनुक्रमसे गुणाकार आवे उस्को सूर्य्यचन्द्रके स्पष्टगतीके ऐक विकलासे भागदेना जो अनुक्रमसे भागाकार आवे वह घटिकादि आवेगेवहक्रमसे भुक्तयोग औरभोग्ययोग इनकी घटिकाजानना.

उदाहरणम्.

जन्मकालीन स्पष्टचन्द्र ९।५।२२।३५ इस्मेंसे स्पष्ट रवि०।१३।२०।४२ कम करके ९।२२।१।५३ इस्के अंश २६२।११।५३ इस्कें अंशाको १२से भागके २१ गततिथिशेष १०।११।५३ यह भुक्त तिथि ७ शेपको १२ मेसे कम करके १।४८।७ यह भोग्य तिथिसप्तमी अब भुक्त तिथीकी विकला ३६७१३ इस्को ६० से गुणके २२०२७८० इस्को चन्द्र गति ७३१।४३ रविगति ५८।३४ इस्का अंतर ६७३।२९ इस्की विकला ४०४०९ इस्से भागके ५४ घटी ३० पल यह सप्तमीकी भुक्त घटिका भई. अनंतर भोग्य तिथिकी विकला-

६४८७ इस्को ६० से गुणके २८ ९२२० इस्को स्पष्ट रवि चंद्र गति के अंतरकी विकला ४०५० ९ इस्से भागके ९ घटी ३८ पल यह सप्तमीकी भोग्य घटिका भई.

गत तिथि ६ इस्की २ से गुणके १२ इस्को ७ से भागके शेष ५ इसवास्ते सप्तमीके पूर्वार्द्धमें गरकरण और उत्तरार्धमें वणिजकरण अब तिथिकी भुक्त घटी ५४।३० और भोग्य घटी ९।३८ युक्त करके ६४।८ इस्में भुक्त घटी ५४।३० कम करके ९।३८ यह गरकरणकी घटिका भई.

चन्द्र ९।५।२२।३५ इस्की कला १६५२२ विकला ३५ इस्को ८०० से भागके २० गत नक्षत्र बाकी ५२२।३५ यह भुक्त नक्षत्र उत्तराषाढ बाकीका अंकको ८०० से कलामेंसे कम करके शेष २७७।२५ यह भोग्य नक्षत्र उत्तराषाढ भया.

अब भुक्त नक्षत्रकी विकला ३१३५५ इस्को ६० से गुणके १८८१-३०० इस्को चन्द्र गति विकला ४३९०३ इस्से भागके ४२ घटी ५१ पल यह उत्तराषाढ नक्षत्रकी भुक्त घटिका भई अनंतर भोग्य नक्षत्रकी विकला १६६४५ इस्को ६० से गुणके ९९८७०० इस्को चन्द्र गतिकी विकला ४३९०३ से भागके २२ घटि ४५ पल यह उत्तराषाढकी भोग्य घटिका भई.

स्पष्टसूर्य ०।१३।१०।४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका योग ९।१८।३३।१७ इस्कीकला १७२१३।१७ इस्को ८०० से भागके २१ गत योग बाकी ५१३।१७ साध्य भुक्तयोग शेष ८०० सेमेंसे कमकरके २८६।४३ यह साध्ययोग भोग्य अब भुक्त योगकी विकला ३०७९७ इस्को ६० से गुणके १८४७८२० इस्को रविगति ५९।१४ चन्द्र गति ७३१।४३ इनका योग ७८९।५७ इस्की विकला ४७३९७ इस्से भागके ३८ घटि ५९ पलयह साध्ययोगकी भुक्त घटिका भई.

अनंतर भोग्य योगकी विकला १७२०३ इस्को ६० से गुणके १०३२३८० इस्को रविचन्द्रकी स्पष्टगतिकी विकला ४७३९७ इस्से भागके २१ घटी ४७ पल यह साध्ययोगकी भोग्य घटिका भई इसप्रकारसे तिथि नक्षत्र योग करणकी भुक्त योग्य घटी करना.

इहां जन्मदिनमें भोग्यतिथि नक्षत्र योग इनकी घटिका और जन्मकालीक भुक्त नक्षत्र योग इनकी घटिका युक्त करके जन्म-

समय ३२ घटिकाबराबर मिलते.

ग्रहदशामें प्रति दिनका चन्द्र फल.

श्लोक- चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्यसुहृदुच्चस्वर्क्षसंस्थोदशाना-
थाद्धीनवसप्तमोपचय गोदद्याच्छुभानीतिच ॥ य-
स्मिन्भेत्रविधुः सजन्मनितनुस्वायादि भावोयदा त-
त्तद्वृद्धिकरोथतत्क्षयकरःप्रोक्तेतरस्थानगः ॥ ३७ ॥

अन्वय.

प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृन्मेतदुच्चेनस्वांशेभवतिचन्द्रस्तदाच पुनर्दशेशात्सं-चम नवमसप्तम तृतीय षष्ठदशैकादशस्थानस्थचन्द्रो भवति ॥ तदाच-न्द्रः शुभानि दद्यात् एवं शुभ फलप्रद श्वन्द्रो दशायां यस्मिन् भावे वर्तते सराशिर्जन्मकाले यस्मिन् भावे वर्तते तन्द्रावं शुभं करोति यदिचन्द्र राशिस्तनुभावेस्यात् तदातनु सौख्य करः स्यादेवं धनादि भावेपि य-दि कथितेतरस्थान गस्तदा क्षयकरो हानिकरः स्यात् प्रोक्ते तरस्थान-स्यायमर्थः चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदादि स्थानादि तरस्था नगः वैरिनीचादिस्थित इति.

अर्थभाषा.

जिस ग्रहकी दशाहोय उस ग्रहके मित्र गृहमें उच्च गृहमें वा स्वगृहमें होकर दशापतिसे ५।९।७।३।६।१०।११ यहस्थानमें चन्द्र होयतो शुभ फल देताहैं. सो ऐसी दशामें जिस राशीको चन्द्र होय वह राशिजन्म कालमें तनु भाव होयतो शरीर वृद्धि कारक वह राशी धन भाव होय तो धन वृद्धिकारक आय भाव होयतो लाभ कारक और आदि शब्द से सहज भाव होयतो भ्रातृ सुख सुहृन्द्राव होयतो मित्रसुख सुत भाव होयतो पुत्र सुख रिपु भाव होयतो वैरिनाशकारक जाया भाव होयतो स्त्रीसुख. मृत्यु भावहोयतो मृत्यु नाशकारक धर्मभाव होयतो ध-र्म भाग्य कारक दशम भाव होयतो कर्म फल कारक व्ययभाव होयतो व्यय नाश कारक सहजादि भावोंका भ्रातृ सुखादि फल कथन किया है. तैसाहि पराक्रमादि सुखभी जानना इहां शुभ सूचन कथित है. इसवास्ते अरि मृत्युव्यय यह भावोंके फल विपरीत जानना पूर्व कथित स्थानसे इतर स्थानमें कहिये दशेश्वरके शत्रु ग्रहमें किंवा नीचमें च-न्द्र होयके दशापतीसे १।२।४।८।१२ यह स्थानमें होयतो भाव क्षय फल कारक होताहै. कहिये दशामें जिस राशिका ऐसा चन्द्र है.

वह राशि जन्मकालमें तनुभाव होयतो शरीर क्लेश कारक धन भाव होयतो धन हानि कारक यह प्रमाण सहजादि भाव फल योजना करना इससे विपरीत शत्रुमित्र व्ययभाव होय तो वह भाव शत्रु मृत्यु व्यय कारक ही होता है.

दशाफल दशारिष्ट और दशारिष्ट भंग.

श्लोक- यद्द्रव्यं खचरस्य भावग्रह दृग्योगादि सर्वं फलं योज्यं वृत्तिकृतिर्बलादिह दशायां चाथ यो वैरियुक् ॥ पापः पापदशां विशेत्स च विपत्कर्ताथ तद्भंगदस्तत्काले बलवान्खगः शुभसुहृद्दृष्टेष्ट सद्वर्गगः ॥ ३८ ॥

अन्वयः

यस्य ग्रहस्य यद्द्रव्यं नाम्नं स्यादित्यादि भावफलं राशिफलं दृष्टिफलं योगफलं आदिशब्दादुच्चनीचमूलत्रिकोण वृत्ति कृतिर्जीविका इति सर्वं तस्य ग्रहस्य दशायां वाच्यं बलादि तिस बले पयोक्तं पूर्ण फलं भवति मध्ये मध्यं हीनबले हीनं फलदः अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रुयुक्तः पापग्रहः पापदशायां विशति अर्थात्पापदशायां पापस्यांतरे भवेत् स पापोऽपि विपत्कर्ता हानिकर्ता स्यात् यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभमित्रेण दृष्टः अथवा मित्र षड्वर्ग गो वा इष्टाधिकः स तद्भंगदः स्यात् ॥ ३८ ॥

अर्थभाषा.

जिसग्रहका जोनाआदि द्रव्य और भाव फल राशिफल शत्रुनीच मूल त्रिकोणादि जीविका कर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है बल सदृश अधिक बली होय तो पूर्ण फल मध्यममें मध्य फल हीन बलमें न्यून फल होताहै. पाप ग्रहोंके दशामें शत्रुयुक्त पापग्रहका अंतर आवे तो विपत्कर्ता मरण जानना. परंतु यदि उस समय कोई शुभग्रह बली होयके देखता होय या मित्रग्रह देखता होय वा शुभ मित्रोंके षड्वर्गोमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो भंगकर्ता होता है.

अथाष्टकवर्ग फलमाह.

श्लोक- खेटस्याष्टयदष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मतश्चन्द्रो वृद्धिपु चस्वभोच्चभसुहृद्भे स्वोत्रिकोणे स्थितः ॥ दृष्टं मध्यफलं विपर्ययगतस्यानिष्टमप्युत्कटं शस्यं स्यात्परखगस्य च यदङ्कं त्याद्बलं तत्वतः ॥ ३९ ॥

अन्वयः

जन्मनितन्विन्द्वोः लग्नचन्द्राभ्यामित्यर्थः वृद्धिषु उपचयस्थानेषु ३।६।१०।११ स्वभे स्वोच्चे सुहृद्भे स्वमूल त्रिकोणेस्थितो ग्रहस्तस्य यदष्टक वर्गजफलं शुभं तत्पूर्णं उक्तस्थानाद्भिन्नगृहेस्थः शत्रुनीचादिग्स्तस्य शुभफलं मध्यम अथवा उपचय स्थान रहितः स्वोच्चादिस्थः तस्य शुभ फल मध्यमं दुष्टं एवमनुपचय स्थानगोग्रहः शत्रुनाचादिगस्तस्याशुभं अप्युत्कटम शुभंस्यादित्यादि सर्व ग्रहस्य षड्वर्ग बलं ज्ञात्वा तत्वतः फलं वदेत् यथा पूर्ण बल ग्रह पूर्ण शुभा शुभ फलं मध्ये मध्यं हीने हीन मित्यर्थः ॥ ३९ ॥

अर्थभाषा.

जोग्रह जन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इस स्थानोंमें होकर स्वगृहमें स्वोच्चमें वा स्वमूल त्रिकोणमें होताहै उस्का अष्टवर्गज फल शुभ जानना. अशुभ फल स्वल्प जानना और पूर्व स्थान से भिन्न स्थानोमें अर्थात् १।२।४।५।७।८।९।१२ इनस्थानोमे होकर शत्रु गृहमें वा नीच राशीमें रहता है. उस्का अष्ट वर्गज फल अशुभ फल पूर्णजानना. और शुभफल स्वल्प जानना. जन्म लग्नसे और जन्म राशीसे उपचय स्थानमें और शत्रु गृहमें वा नीचमें जो ग्रह रहताहै उस्का अष्टवर्गज शुभफल मध्यम और अशुभ फल किंचिन्न्यून जानना अथवा इतर स्थानमें होयके स्वगृहोच्चादि स्थित रहते अशुभ फल मध्यम और शुभफल किंचिन्न्यून जानना यह अष्ट वर्गज फल ग्रहोंके षड्बल प्रमाण जानना ग्रह पूर्णबल होयतो यथोक्त फल न्यून बल होयतो न्यून फल और अस्तंगत होयतो फल नहीं ऐसा जानना.

अथ कचिज्जातकफलव्यभिचारे कर्तव्यतामाह.

श्लोकः—
जीवेत्क्वापिविभंगरिष्टजातोऽरिष्टंविनाम्रीयते चा-
द्योऽद्वः शिशुदुस्तरापिचपरोक्ताद्यंपुनोर्यका ॥ का-
र्यांप्रश्ननिमित्तपूर्वशकुनैरक्षन्स्वमानंधिया होराज्ञे-
नसुबुद्धिनाहिवहुधोदर्कस्यकालावली ॥ ४० ॥

अन्वय

क्वापिक्वचित्स्थलेविभंगजोरिष्टभंगरहित इत्यर्थः जीवेत् क्वापिरिष्टं

विनाश्रीयते इति व्यभिचारः चाद्योब्दः प्रथमोब्दः शिशोर्दुस्तरः भ सवज्वरादि भया दित्यर्थः तथा ऽपरौ द्वितीय तृतीयाब्दौ दुस्तरौ दत्त जननं यावत् अत एषु त्रिषु वर्षेषु पत्रिकानो कार्य्या भंगादिकं विचारयित्वा वर्षत्रय मध्येपि पत्रिका कार्य्या कैः प्रश्न निमित्त पूर्व शकुनैः प्रश्ने निमित्त पूर्वे लग्ने बलोपश्रुताद्यै स्तथा शकुनैः शुभ शकुनैः शुभवस्तु यदिश्रुति दर्शनगं इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्य्या ॥ किंकुर्वन्स्वमान रक्षन् गणकेन इत्यध्याहारः किं विशिष्टेन होराविज्ञेन पुनः सुबुद्धिनाहि यस्मात् उदर्को भावी कालो बली स्यात्

भाषा अर्थ.

कभी कभी अरिष्ट भंग रहते बिना बालक जीता है और कभी कभी अरिष्ट योग न रहते भी मरण पावता है ऐसा जातक फल व्यभिचार देखते हैं. तैसाहि प्रथमवर्ष बालक को दुस्तर है और आगेका दो वर्ष यहबालकका दुस्तर है. इसवास्ते ३ वर्षतक पत्रिका करना नहीं कारण भावीफल बहुत प्रकारका है और काल भी दुर्विज्ञेय है. बुद्धिवान गणकने तात्कालिक लग्न बलोपश्रुत्यादि शकुनसे शुभफल जानके बुद्धिके योगते अपनी प्रतिष्ठा रखके सर्वदा यह तीन वर्षमें और आगे भी जन्म पत्रिका करना.

ग्रंथोपसंहारः

श्लोक. नंदिग्रामे केशवो विप्रवर्य्यो योभूद्धोराशास्त्रसंघं विलोक्य ॥ तेनोक्तेयंपद्धतिर्जातकीया चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा सुबोधा ॥ ४१ ॥

अन्वय.

यः केशवो विप्रवर्य्यो नंदिग्रामे आसीत् तेन होराशास्त्रसंघं विलोक्य होराएव शास्त्रं होराशास्त्रं होरा शास्त्र समूहं विलोक्य जातकीया पद्धति रुक्ता किं विशिष्टा चत्वारिंशद्वृत्तबद्धा पुनः कथं भूता सुबोधा ॥ ४१ ॥

अर्थभाषा.

दक्षिण देश प्रसिद्ध नंदिग्राममें केशव यह नाम करके ब्राह्मण श्रेष्ठ रहता रहा उसने जातकशास्त्र समूह देखकर उसमें सदुक्त असदुक्त अल्पुक्त बहुमत अल्पमत क्याहै इसका विचार करके चालीस श्लोकका सुगम ऐसी यह जातक पद्धति रचना किया. ॥ ४१ ॥

ग्रंथप्रशंसामाह

श्लोक- येसुबोधांपठंतीमामग्र्यांजातकपद्धतिम् ॥
होरावित्पदवींयांतिलोकेमानंचशाश्वते ॥ ४२ ॥

अन्वय-

येगणका इमांसुबोधांजातकपद्धतिंपठंति किंभूतामग्र्यांतेलोके होरावित्पदवींयांतिमानंयशश्च लभंते ॥ ४२ ॥

अर्थभाषा-

जो ज्योतिषी इस जातक पद्धतीको अध्ययन करेंगे वह लोकमें दैवज्ञ पदवी- और गौरव कीर्ति यशको प्राप्त होवेंगे ॥ ४२ ॥ इति ॥

इति केशवीजातकंसमाप्तं.

चर सारणी प्रवेश पलभा.

मंद स्पष्ट सूर्य्यको अयनांश युक्त करके उस्का भुज करके भुजका भाग करना इहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाणे ९० अंश कोष्टक लिखके वह कोष्टकके नीचे प्रत्येक अंशका फल विकलादि लिखाहै. उस्मेंसे अभीष्ट अंश होय उस्के नीचेका फल लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकला होय उस्को अंश कोष्टकके सामने दहने तरफजो गुणलिखाहै उस्से गुणके जो गुणाकार आवे उस्को गुणके नीचेजो हर लिखाहै उस्से भागके जो फल प्रति कलात्मक आये वह लेके पूर्व फलमें युक्त करना तो चर होताहै. वह चर सायन सूर्य्य मेषादि ६ राशिको होयतो ऋण और तुलादि ६ राशिको होयतो धन,जानना-

चरसंस्कारसारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४		गु०१०
०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३२		हर ३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०		
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	गु०१०
३५	३७	३९	४२	४४	४६	४९	५१	५३	५६	५८	६०	६३	६५	६७	७०	हर ३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		गुण २८
७१	७३	७५	७७	७९	८१	८३	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६	९८		हर १५
५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०		
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		गुण २८
९९	१०१	१०३	१०५	१०७	१०९	१११	११२	११४	११६	११८	१२०	१२२	१२४	१२६		हर १५
५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	[illegible]		
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५		गुण २२
१२६	१२७	१२८	१२९	१२९	१३०	१३१	१३२	१३२	१३३	१३४	१३५	१३५	१३६	१३७		हर ३०
४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०		
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	२०		गुण २२
१३८	१३९	१३९	१४०	१४१	१४२	१४२	१४३	१४४	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९		हर ३०
१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०		

उदाहरण.

जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०।१३।१२।३ इस्में आयनांश २२।४४।३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि इस्का भुज १।५।५६।६ इस्के अंश ३५।५६।६ इहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५ अंशकोष्ठकका नीचेका विकलादिफल ७३।२० इस्को अंशके नीचे कला ५६ और विकला ६ है इस्को अंशकोष्ठकके सामने गुण २८ है इस्से गुणक १५७०।४८ इस्को गुणके नीचे हर १५ इस्से भागके १०४ प्रति कला युक्त करके ८१।४ यह सायन सूर्य्य वृष राशिको है इसवास्ते ऋण जानना.

बहुविध देशोंकी अक्षभा.

नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.
अलवर	६	१५	केदार	७	८	जिलोई	५	१८	नाशीक	४	२५
अमदावाद	५	२	कोल्हापूर	२	२०	जवनपुर	५	२७	नागपुर	४	३१
अहमदनगर	५	०	कोराग्राम	४	२५	अंबृसर	४	४८	नागौर	४	२३
अजमेद	५	४५	कोकण	३	१५	जलालाबाद	५	३०	नारनवल	६	१४
अयोध्या	६	७	कृष्णगढ	६	०	जालंधर	६	५१	नैपाल	५	२५
अमरकोट	५	२५	खंभाई	४	५१	जुनागढ	५	३१	नैमिषारण्य	५	५५
अपसर्दाला	६	४५	खांधार	०	०	जुनेर	५	०	पटियाला	७	१
अवरंगाबाद	४	३०	खमात	४	२१	जोधपुर	५	४८	पंढरपुर	४	०
अग्रपाटण	५	४०	गंगासागर	४	१८	झांसी	५	४३	प्रयाग	५	४२
अजमेर	२	६	गढा	२	६	हैकोरी	५	२५	प्रकासा	४	४०
अनिबंग	५	१	गर्गराट	५	६	टोंका	५	२७	प्रकाण	४	५
अमृतसर	७	२४	गहीरा	५	४५	ट्ठा	५	३६	पानिपत	६	४०
आग्रा	६	७	गया	५	५०	ठगनपुर	५	३	पायघ्नी	४	३०
आजमगढ	५	५२	गणशुक्ल	६	४	तंजावरु	२	७	पाडव	५	१
इंदोर	५	३०	गाजीपूर	५	५५	तेरला	६	२५	पुणे	४	०
इटावा	६	०	ग्वाल्हेर	५	५४	ताजपुर	५	४५	पुरुषोत्तमक्षे.	५	४५
उज्जनी	५	६	गुवरापुर	५	१०	तैलंग.	४	४	पुष्कर	५	५२
उचवानगढ	५	१०	गुजरात	४	४८	दरभंगा	५	३३	पैठण	४	३०
उदेपुर	५	२०	गोमानक	२	२०	दारसल	५	•	बडोदा	४	१४
उत्कल	५	३३	गोपाल	३	२०	दामनउर	५	४५	वलसाड	४	४०
उमरावती	४	३४	गोलकुंडा	३	२५	द्वारका	६	५	वरद्वान	५	१
ओनकमंदु	२	२५	गोलग्राम	४	०	दिल्ली	६	३४	ब्र्हाणपुर	४	३०
ओच्छडा	५	४५	गोरखपुर	६	८	देवगढ	६	४	ब्रह्मपुरी	५	२०
ओट	४	६	गोकुल	५	५५	देवग्राम	४	४०	वजवाडा	६	५७
कलकत्ता	४	५७	धनदेवी	४	४०	दोलतावाद	३	३०	वाणपुर	४	३१
कपिला	६	३६	चंदेली	५	०	धवलपुर	५	१२	बाणगंगा	४	३०
कटक	४	२८	चाटसुपुर	५	४५	धालक	५	२	विनिया	६	२
काशिक्षेत्र	५	४५	चित्रोड	५	२०	धामोनिगढ	५	१०	विजापुर	३	३५

कानपुर	५	३१	चित्रकूट.	५	३०	नवसरी	४	४२	बिकानेर	६	३१
काश्मिर	७	५४	छपरा	५	४७	नगरकोट	७	२०	बूंदीकोटा	६	२
काविल	८	२०	जयपूर	६	४	नडीयाद	५	२	भविपुर	४	५२
कांची	२०	३०	जंबू	७	४०	नरवर	५	४५	भरतपुर	६	११
कान्यकुब्ज	६	०	जब्बलपुर	५	८	नयनीताल	६	४५	भृगुक्षेत्र	४	८
कुरुक्षेत्र	६	४६	जगन्नाथ	५	२०	नर्मदा	४	४७	भोजपुर	५	४५
भागलपुर	५	४०	म्हैस्सूर	२	२६	वधवमगर	५	२७	सिंहज	५	०
मकसूदाबाद	५	२४	भूपाल	५	१०	बलघ	८	७	सिंधपुर	४	४०
मंडी	७	२४	रत्नागिरी	२	४१	वटीपुर	४	२	सिंहनद	७	३०
मद्रास	२	४७	रनथंभ	५	३०	वटेश्वर	५	४८	सुरत	४	३१
मगधदेश	६	९	रनद	६	६	वढाल	७	२	सोलापुर	२	४१
मथुरा	६	०	रामेश्वर	१	५८	विजयनगर	४	१२	सोमनाथ	५	३१
महल	६	२६	रामनगर	५	०	बेलगांव	३	२५	सोनपथ	६	४०
माडा	४	५०	राजो	५	२६	बैराठ	६	२७	संगमनेर	४	२०
माडन्नाचल	४	४७	राजापिल	४	४४	शारंगपुर	४	४६	संभल	६	२
मालपुर	५	४५	राजपुर	५	३०	स्यामगढ	४	२८	संगरपुर	५	१२
मांडवा	५	१	रायपुर	४	३१	शिरोज	४	४८	हस्तिनापुर	६	३०
मालवा	५	३०	राजमहाल	५	२५	शीतपुर	४	२०	हरिद्वार	६	५६
माडोगढ	४	१७	रींवा	५	२८	श्रीनगर	६	५६	हरदा	४	५१
मिथिल	६	८	रैवा	४	२६	खुसा	१०	२	हैद्राबादसिंध	५	३१
मिरज	३	२७	रोहित	६	२१	सपादु	७	१५	हैद्राबादनिजाम	३	४३
मिरजापुर	५	२५	रोहिदाश	५	२८	समसाबाद	६	५०	विलायत लंडन	१५	६
मुंबई	४	७	लखनऊ	५	४८	सहस्त्राव	५	१७	श्रीरंगपट्टण	२	२९
मुलतान	६	४०	लवणपुर	५	३०	सातारा	३	५१	सेतबंधरामेश्वर.	२	६
मुंगेरी	५	५६	लक्ष्मवती	५	४८	सागर	५	१८	हस्ती	६	२५
मुरेर	४	३०	लक्ष्मनवास	२	[illegible]	सावंतवाडी	२	[illegible]	पटण	५	४५
मरता	५	४५	लाहोर	७	२१	सिरी	५	[illegible]	[illegible]	६	१८

लग्न सारणी प्रवेश अयनांशाः २२

सारणीमें दहने तरफ मेषादि मीनतक १२ राशि लिखी हैं और ऊपर के तरफ ३० अंश कोष्टक लिखा है उस्मेंसे तत्काल स्पष्ट सूर्य्य जिस राशीको होय वह राशीके सामने सूर्य्यके इष्टांश कोष्टकके नीचे अंक कलादि फल लेके उस्को इष्ट घटीपल युक्त करना वह युक्त करनेके अनंतर घटी ६० से ज्यादा होयतो ६० में कम करना. अनंतर जो घटीपल बाकी रहे वह कला विकला भया अनंतर नमित कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्टकके नीचे होंगे वह अंश और वह कला विकलाके दहने तरफ

लग्नसारणी चक्र.

अं	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अं.
०	२ २९	२ ४७	२ ५४	३ ०	३ ८	३ १६	३ २३	३ ३०	३ ३८	३ ४६	३ ५४	४ ३	४ ११	४ १९	४ २८	४ ३६	४ ४४	४ ५३	५ १	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३५	५ ४३	५ ५३	६ ०	६ ८	६ १६	६ २५	६ ३३	मेष.
१	६ ४२	६ ५०	६ ५८	७ ८	७ १५	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४९	७ ५७	८ ६	८ १५	८ २४	८ ३२	८ ४१	८ ४९	९ १	९ ११	९ २०	९ ४०	९ ५०	१० ०	१० १०	१० २०	१० ३०	१० ४०	१० ५०	११ ०	११ १२	११ २१	वृ.
२	११ २०	११ ४२	११ ५१	१२ १	१२ १२	१२ २१	१२ ३१	१२ ४२	१२ ५२	१३ ३	१३ १४	१३ २६	१३ ३७	१३ ४९	१४ ०	१४ १२	१४ २३	१४ ३४	१४ ४६	१४ ५७	१५ ९	१५ २०	१५ ३१	१५ ४३	१५ ५५	१६ ६	१६ १७	१६ २८	१६ ४०	१६ ५२	मि.
३	१७ ३	१७ १५	१७ २७	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५८	१९ १०	१९ २१	१९ ३२	१९ ४४	१९ ५५	२० ७	२० १८	२० ३०	२० ४२	२० ५३	२१ ५	२१ १६	२१ २८	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २६	२२ ३७	क
४	२२ ४२	२३ १	२३ १३	२३ २४	२३ ३५	२३ ४७	२३ ५८	२४ १०	२४ २२	२४ ३३	२४ ४४	२४ ५५	२५ ७	२५ १८	२५ २९	२५ ४०	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४८	२६ ५९	२७ ११	२७ २२	२७ ३३	२७ ४४	२७ ५६	२८ ७	२८ १८	सिं.
५	२८ २०	२८ ४१	२८ ५३	२९ ४	२९ १४	२९ २६	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ ३०	३१ ४१	३१ ५२	३२ ३	३२ १४	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३३ ०	३३ ११	३३ २२	३३ ३४	३३ ४५	३३ ५६	कं.
६	३४ ७	३४ १८	३४ ३०	३४ ४१	३४ ५२	३५ ४	३५ १५	३५ २६	३५ ३८	३५ ४९	३६ १	३६ १२	३६ २४	३६ ३५	३६ ४७	३६ ५९	३७ १०	३७ २२	३७ ३३	३७ ४६	३७ ५८	३८ ८	३८ १९	३८ ३१	३८ ४३	३८ ५४	३९ ६	३९ १७	३९ २९	३९ ४०	तु
७	३९ ५२	४० ४	४० १५	४० २५	४० ३८	४० ५०	४१ १	४१ १३	४१ २५	४१ ३६	४१ ४७	४१ ५८	४२ १०	४२ २२	४२ ३३	४२ ४५	४२ ५६	४३ ७	४३ १९	४३ ३०	४३ ४२	४३ ५३	४४ ५	४४ १६	४४ २७	४४ ३९	४४ ५०	४५ १	४५ १३	४५ २५	वृ.
८	४५ २६	४५ ४७	४५ ५९	४६ १०	४६ २३	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १८	४७ २८	४७ ३८	४७ ४८	४७ ५८	४८ ८	४८ १८	४८ २८	४८ ३८	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	५० ०	५० ९	५० १९	५० ३०	५० ४०	ध.
९	५० ५९	५१ ०	५१ १०	५१ २०	५१ ३०	५१ ४०	५१ ५०	५२ ०	५२ ११	५२ १९	५२ २७	५२ ३६	५२ ४४	५२ ५२	५३ १	५३ ९	५३ १७	५३ २६	५३ ३४	५३ ४३	५३ ५१	५३ ५९	५४ ८	५४ १६	५४ २८	५४ ३३	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ६	म
१०	५५ १४	५५ २३	५५ ३२	५५ ४०	५५ ४८	५५ ४६	५६ ५	५६ १३	५६ २२	५६ २९	५६ ३६	५६ ४३	५६ ५२	५६ ५९	५७ ५	५७ १३	५७ २४	५७ २५	५७ ३४	५७ ४४	५७ ५०	५८ २	५८ ११	५८ १८	५८ २५	५८ ३२	५८ ४०	५८ ४७	५८ ५४	५८ ५४	कुं.
११	५९ ६	५९ ९	५९ १६	५९ २३	५९ ३१	५९ ३८	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ७	० १५	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५८	१ ५	१ १२	१ १९	१ २७	१ ३६	१ ४१	१ ४९	१ ५६	२ ३	२ १०	२ १८	२ २५	२ ३२	मी.

जो राशि होय सो लग्नका राशी जानना. यह स्थूल मान है परंतु स्व-
स्वदेशीय देशांतर रेखा धन ऋणादि देखके सारणीसे लग्न करना.
उदाहरणः- तात्कालिक सूर्य्य ०।११।११।५६ इहां सूर्य्य मेपराशीको है.
इसवास्ते मेषराशीके ११ अंश कोष्ठकका फल ४।३ इसको इष्टघटी ३२ प. १
युक्त करके ३६।४ इहां ३६।१ कला विकला यह तुल राशीके १० अंश कोष्ठक
के नीचे लिखा है इसवास्ते लग्न ६।१०।३६।१ यह स्थूल मानका लग्न जानना.

दशम भाव सारणी प्रवेश.

केशवीमें कथित प्रमाण नतसाधन करके सारणीमें बाये तरफ मेषादि

दशम भाव सारणी चक्र.

भा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे.	३ २४	३ ३३	३ ४२	३ ५२	४ १	४ १०	४ १९	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ८	७ १८	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ७
वृ.	८ १७	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	८ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४७	९ ५७	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १९	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १३	१३ २३
मि.	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३९	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ २०	१७ ३१	१७ ४२	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ ३५	१८ ४६
क.	१८ ५७	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५२	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १२	२१ २२	२१ ३३	२१ ४३	२१ ५३	२२ २	२२ १२	२२ २३	२२ ३३	२२ ४२	२२ ५२	२३ २	२३ ११	२३ २२	२३ ३२	२३ ४२	२३ ५२
सिं.	२४ २	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२८ ०	२८ ९	२८ १८	२८ २७	२८ ३६
क.	२८ ४६	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५५	३१ ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३१ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४५	३२ ५५	३३ ५	३३ १५
तु.	३३ २४	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३५ २८	३५ ३८	३५ ४८	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ८	३७ १८	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ ७
वृ.	३८ १७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३८ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४८	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४० ५२	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १९	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३
ध.	४३ ३४	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३९	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४२	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६
म.	४८ ५७	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० २	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ २	५२ १२	५२ २१	५२ ३२	५२ ४२	५२ ५२	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२
कु.	५४ २	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ३	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७
मी.	५८ ४६	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५५	१ ५	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३७	२ ४७	३ ५६	३ ५	३ १५

राशि गीनतक १२ राशि लिखी हैं. और ऊपरके तरफ ३० अंशकोष्ठक

लिखे है- उस्मेसे स्पष्ट सूर्य्य जिस राशिको होय वह राशीके साम्ने सूर्य्य के इष्टांशकोष्ठकके नीचेका कलादि फल लेके उस्को नतघटी और पल पश्चिम होयतो युक्त करना और वह घटी ६० से अधिक होयतो उस्में से ६० कम करना और नत घटी और पल पूर्व होयतो लिखाजो अंश फल उस्मेंसे कमती करना और वह अंशफलसे अधिक होयतो अंश फलके कलामें ६० युक्त युक्त करके उस्में पूर्वनत घटीपल कमती करना अनंतर जो घटी पल बाकी रहै वह कला और विकला भई अनंतर तन्मित कला विकला सारणीमें जिस अंशकोष्ठकके नीचे होय वह अंश और कला विकलाके बाये तरफ जोराशी होय वह दशम भावकीराशी जानना- यह सर्व देशोंका मध्यम मान है-

उदाहरणम्.

जन्मकालिक स्पष्टरवि०।१३।३०।४२ यह सूर्य्य मेषराशीको हैं इसवास्ते मेषराशिके १३ अंशकोष्ठकका फल ५।२८ इस्में जन्मकालिक पश्चिमनत घटी १५ पल ४० युक्त करके २१।८ इहां कला विकला २१।३ यह कर्क राशीके १२ अंशके नीचे लिखा है. इसवास्ते दशम यह ३।१२।२१।८ भया इस्मैं ६ राशी युक्त करी तो ९।१२।२१।८ यह- चतुर्थ भाव भया-

अष्टोत्तरी महादशा-

आर्द्रासे प्रारंभ करके मृगशिरतक २८ नक्षत्र और सूर्य्य- चन्द्र- भौम- बुध- शनि गुरु राहु शुक्र यह ८ ग्रहोंका कोष्ठक पृथक् पृथक् किया है उस्में महादशाकी वर्षसंख्या पापग्रह नक्षत्र ४ और शुभ ग्रह नक्षत्र ३ जानना दशाकी वर्ष संख्या नक्षत्रोंके विभागसे सो- यह सूर्य्य ४ नक्षत्रको ६ वर्ष इसवास्ते १ नक्षत्रको १ वर्ष ६ महिना यह प्रकारका जानना. औरजन्म कालिक जो दशा सो प्रथम मान- के जन्म नक्षत्रकी जन्मकालतक युक्त घटिका जो होय उस्को नक्षत्र के वर्षसे गुणके गुणाकारको जन्म नक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्व घटीसे भागके जो भागाकार आवे सो वर्ष और शेष रहै सो १२ से गुणके पूर्ववद्भागके भागाकार आवेसो मास और शेष रहै सो ३० से गुण के पूर्वप्रमाण भागके भागाकार आवेसो दिवस और शेष रहै सो ६० से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवेसो घटी जानना. अनं-

नरआयाजो वर्षादि भुक्तकाल औरजन्म नक्षत्रके पूर्वके दशापती केगत नक्षत्र होयतो उस्काभी भुक्त काल दशापतिके दशावर्षमेंसे कमकरके शेष रहे सोवर्षादि भोग्यदशा है ऐसा जानना.

अंतर्दशा बनावनेका क्रम.

जिस ग्रहके दशायें अन्य ग्रहकी अंतर्दशा करना है तोवहपरस्पर रोंका दशावर्षोंके गुणाकारको ९ से भागके जो भागाकार आवेसो मास जानना और शेष रहे उस्को पूर्वलिखे प्रमाण उत्तरोत्तर गुणके ९ से भाग देना दिन घटीका आवतीहै. यह रीतिसे महा दशा मेंकी अंतर्दशाजानना. और १० का भाग विंशोत्तरीका लेना.

अष्टोत्तरी महादशा चक्र.

सूर्यकी महादशा वर्ष ६ अंतर्दशा. आर्द्रा. पुनर्वसु पुष्य. आश्लेषा.

सू.	चं.	मं.	बु	श.	गु	रा.	शु	यो.
०	०	०	०	०	१	०	१	६
४	१०	५	११	६	०	८	२	०
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रकी महादशा वर्ष १५ अंतर्दशा. मघा. पूर्वाफाल्गुनी. उत्तरा फाल्गुनी.

चं.	मं.	बु	श.	गु.	रा.	शु	सू.	यो.
२	१	२	१	२	१	२	०	१५
१	१	४	४	७	८	११	१०	०
०	१०	१०	२०	२०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौमकी महादशा वर्ष ८ अंतर्दशा. हस्त. चित्रा. स्वाति विशाखा.

मं.	बु.	श	गु.	रा.	शु	सू.	चं.	यो.
०	१	०	१	१	१	०	१	८
७	३	८	४	१०	६	५	१	०
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	०
२०	२०	३०	४०	०	०	०	०	०

बुधकी महादशा वर्ष १७ अंतर्दशा. अनुराधा. ज्येष्ठा. मूल

बु.	श.	गु.	रा.	शु	सू.	च.	मं.	यो.
२	१	२	१	२	०	२	१	१७
८	९	११	१०	३	११	४	३	०
३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३	०
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०	०

शनिकी महादशा वर्ष १० अंतर्दशा- पूर्वाषाढा- उत्तराषाढा- अभिजित्- श्रवण-

श-	के-	रा-	शु-	सू-	च-	मं-	बु-	यो-
०	१	१	१	०	१	०	१	१०
११	९	१	११	३	४	८	६	०
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	०
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०	०

गुरुकी महादशा वर्ष १९ अंतर्दशा- धनिष्ठा- शततारका- पूर्वाभाद्रपदा-

के-	रा-	शु-	सू-	च-	मं-	बु-	श-	यो-
३	२	३	१	२	१	२	१	१९
४	१	८	०	७	४	११	९	०
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३	०
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०	०

राहुकी महादशा वर्ष १२ अंतर्दशा- उत्तराभाद्रपदा- रेवती- अश्विनी- भरणी-

रा-	शु-	सू-	चं-	मं-	बु-	श-	के-	यो-
१	२	०	१	०	१	१	२	१२
४	४	८	८	१०	१०	१	१	०
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकी महादशा वर्ष २१ अंतर्दशा- कृत्तिका- रोहिणी- मृगशीर-

शु-	सू-	चं-	मं-	बु-	श-	के-	रा-	यो-
४	१	२	१	३	१	३	२	२१
१	२	११	६	३	११	८	४	०
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

इतिअष्टोत्तरीदशांऽतर्दशाचक्र-

विंशोत्तरीमहादशाकरण-

जन्म नक्षत्र जो होय उसकी संख्यामे २ कम करके ९ से भाग लेना शेष १।२।३।४।५।६।७।८।० तक रहेगा नव क्रमसे सूर्य्य- चंद्र भौम- राहु- गुरु- शनि- बुध- केतु- शुक्र- यह दशापति जानना और उनकी क्रमसे ६-१०।७-१८।१६-१९-१७-७-२० यह दशाकी वर्ष संख्या जानना- जन्म नक्षत्रकी जन्म कालतक जो भुक्त घटी होय उस्को अष्टोत्तरीमे कथित रीतिसे दशापतिके वर्ष संख्यासे गुणके और नक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्व घटीसे भागके भागाकार वर्षमास दिन घटिपल आवे गासो दशापतीके वर्षसंख्यामेसे कम करके शेष रहै सो वर्षादि संख्या भोग्य है ऐसा जानना इस्में अंतर्दशा बनावनेका प्रकार अष्टोत्तरीमे कहाहै सो जानना-

कृत्तिकासे भरणीतक २७ नक्षत्र और दशा अंतर्दशा और प्रत्यंतर्दशाके अधिपतिके नाम और उनकी वर्षादि संख्या इनके जुदे जुदे कोष्ठक आगे लिखे हैं.

उदाहरणम्.

जन्म नक्षत्र इहां उत्तराषाढहै इसकी संख्या२१ इसमें २कम करके शेष१९ इसमें ९से भागके शेष१ इसवास्ते सूर्य्यकी दशा भई अब पूर्वषाढ नक्षत्रकी घटी ४७।३६ इसको ६०मे कम करके १२।२४ यह इसमें इष्टघटी ३२ पल १ युक्तकरके ४४।२५ यह भुक्त घटी भई और अगला नक्षत्र उत्तराषाढ नक्षत्रकी घटी पल ५३।३२ इसमें १२।२४ यह युक्त करके ६५।५७ यह भोग्य भया. अब भुक्त और भोग्यकी पल क्रमसे २६६५।३९५७ भुक्त पलको सूर्य्यका वर्ष ६ इससे गुणके १५९९० इसमें भोग्यकी पलसे भागके ल० ४ वर्ष शेष १६२ इसको १२से गुणके १९४४ यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके ल० ० मास शेष१९४४ इसको ३०से गुणके ५८३२० यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके ल० दिन १४ शेष २९२२ इसको ६० से गुणके १७५३२० इसमें भोग्य पलसे भागके ल० घटी ४४ शेष १२१२ इसको ६०से गुणके ७२७२० इसमें भोग्य पलसे भागके ल० पल १८ एवं वर्षादि रविदशा ४।०।१४।४४।१८ भुक्त भई अब इसको सूर्य्यका वर्ष६ मे कम किया तो १।११।१५।१५।४२ यह भोग्यदशा भई इसी प्रकारसे दशा विंशोत्तरी करना.

टिप्पण.

जिसदिनजन्म होय उसदिन अथवा वर्ष प्रवेश होय उसदिन जो नक्षत्रकी घटी पल अभीष्ट घटी पलसे कमती होय तो उसी नक्षत्रकी घटीपलको ६०में कम करके दो जधें रखना एक स्थानमें इष्ट घटि पल युक्त करना तो भुक्त घटी हो जाय दूसरी जघा अगला नक्षत्रकी घटीपल युक्त करेतो भोग्य होता है.

दशाका उदाहरणम्.

प्रथम रवि दशा वर्षादि भोग्य १।११।१५।१५।४२ इस्के नीचे जन्म कालीन संवत् १९४३ यह वर्षमें स्पष्टसूर्य्य ०।१३।१०।४२ इस्को प्रथम दशा मासादि युक्त करके ११।२८।२६।२४ और संवत्में वर्ष युक्त करके १९४४ यह संवतमें ११।२८।२६।२४ यह स्पष्ट सूर्य्य रहते रविदशा पूर्ण होयके चन्द्र दशा प्रवेश भई. यही रीतिसे सब दशा प्रवेश करना तथा अंतर्दशा प्रत्यंतर्दशा करना.

विंशोत्तरी दशा चक्रम्.

०	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्र.
०	१ ११ १५ १५ ४२	१० ० ० ० ०	७ ० ० ० ०	१८ ० ० ० ०	१६ ० ० ० ०	१९ ० ० ० ०	१७ ० ० ० ०	७ ० ० ० ०	२० ० ० ० ०	व. मा. दि. घ. प.
१९ ४३	१९ ४४	१९ ५४	१९ ६१	१९ ७८	१९ ९५	२० १४	२० ३१	२० ३८	२० ५८	सं.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
० १३ १० ४२	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	११ २८ २६ २४	रा. अं. क. वि.

टिप्पण.

अथवा जन्मके दिन वा वर्ष प्रवेशके दिन जो नक्षत्र घटीपल इष्टसे अधिक होयतो पिछला नक्षत्रको ६०में कम करके दोस्थानमें रखकर एक जघें इष्ट युक्त करनातो भुक्त घटिका होती हैं. दूसरी जघें जन्मका वा वर्ष प्रवेशके दिनका नक्षत्रकी घटीपल युक्त करनातो भोग्य होता हैं.

सूर्यमध्येअंतर्दशाचक्रम्.								
सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	१
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यमध्येसूर्यतन्मध्येदशाच.								
सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येचन्द्रतन्मध्येविदशाचक्रं								
चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येभौमतन्मध्येविदशाचक्रं								
मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
२१	५४	४८	५७	५१	०	१८	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येराहुतन्मध्येविदशाचक्रं								
रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	१	०	०	०
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येगुरुतन्मध्येविदशाचक्रं								
वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	०	१	०	०	०	१
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येशनितन्मध्येविदशाचक्रं.								
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	०	१	०	०	०	१	१
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
९	२७	५[illegible]	०	६	३०	५७	१८	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येबुधतन्मध्येविदशाचक्रं.								
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	१	०	०	०	१	१	१
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येकेतुतन्मध्येविदशाचक्रं								
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१
०	०	०	०	०	०	०	०	०

रविमध्येशुक्रतन्मध्येविदशाचक्रं.								
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	१	१	१	१	०
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येअंतर्दशा चक्रम्								
चं·	मं	रा·	बृ·	श·	बु·	के·	शु	सू·
०	०	१	१	१	१	०	१	०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्येदशाचक्र								
चं·	मं·	रा·	बृ·	श·	बु	के·	शु	सू·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	१	१	१	१	१	०
२५	१७	१०	१०	१७	१२	१७	२०	१०
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येभौमस्तन्मध्येवि॰ च								
मं·	रा·	बृ·	श·	बु·	के·	शु	सू·	चं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	१	०	०	१	०	०
१२	१	२८	३	२३	१२	५	१०	१७
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येराहुस्तन्मध्येविदशाच								
रा·	बृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं	मं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	१	०	०	१	१
२१	१९	२५	१६	१	०	२७	१०	१.
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि॰ च॰								
बृ·	श·	बु	क·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	०	२	०	१	०	२
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येशनिस्तन्मध्ये वि· च								
श·	बु·	के·	शु·	सू·	न·	मं·	रा·	बृ·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	२	१	३	०	१	१	२	२
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येबुधस्तन्मध्ये वि॰ च॰								
बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	बृ·	श
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	२	०	१	०	२	२	२
१२	२९	२५	२५	१८	२९	१६	८	२०
१५	४५	३०	३०	३०	४५	३०	०	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येकेतुस्तन्मध्येविदशाच·								
के	शु·	सू	चं·	मं·	रा·	बृ·	श·	बु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	१	०	१	०
१२	५०	१०	१७	१२	१०	२८	३	२९
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येभृगुस्तन्मध्ये वि· च·								
शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	बृ·	श·	बु·	के·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	२	२	३	२	१
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमध्येसूर्यस्तन्म· वि॰ चक्र.								
सू	चं·	मं·	रा·	बृ·	श·	बु·	के·	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
०	०	३०	०	०	३०	२०	२०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये अंतर्दशा चक्रं.

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	१	०	१	०	०	१	०	०
४	०	११	१	११	४	२	४	७
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये भौमस्तन्मध्ये दशाचक्र.

मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

भौममध्ये राहुस्तन्मध्ये विदशाचक्र

रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	२	०	१	०
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
४२	२७	५१	३३	३	०	५४	३०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० चक्र.

गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	०	१	०	०	०	१
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये शनिस्तन्मध्ये विदशाच.

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	२	०	१	०	१	१
३	२६	२९	४	१९	३	२३	२९	२३
०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
४	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

भौममध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० चक्र.

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	१	०	०	०	१	१	१
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

भौममध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
३०	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

भौममध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
०	०	०	३०	०	३०	०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये रवितन्मध्ये वि० च.

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	८	१६	१९	१७	७	२१
१८	३०	५१			५७	५१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौममध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०

चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	२	२५	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये अंतर्दशा चक्रम्

रा·	वृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·
२	२	२	२	१	३	०	१	१
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येराहुस्तन्मध्ये विदशाच·

रा·	वृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	५	४	१	५	१	२	१
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
४८	३६	५४	४२	१२	०	३६	०	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येगुरुस्तन्मध्ये विदशाच·

वृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	४	१	४	१	२	१	४
२५	१६	२	२०	२४	१२	१२	२०	९
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येशनिस्तन्मध्ये विदशाच

श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	वृ·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	१	५	१	२	१	५	४
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येबुधस्तन्मध्येविद· च·

बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	वृ·	श·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	४
१०	२२	२	१५	१६	२२	१७	२	२४
३०	३२	०	५४	३०	२२	४२	२४	५४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येकेतुस्तन्मध्ये विदशाच·

के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा	वृ·	श·	बु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	०	१	०	१	१	१	१
२२	२	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये भृगुस्तन्मध्येवि· चक्र·

शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	वृ·	श·	बु·	के·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	३	२	५	४	५	५	२
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येरवैस्तन्मध्ये विदशाच·

सू·	चं·	मं·	रा·	वृ·	श·	बु·	के·	शु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	१	१	०	०
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्येचन्द्रस्तन्मध्य विदशाच·

चं·	मं·	रा·	वृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	२	२	१	३	०
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
०	२०	०	०	२०	२०	२०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुमध्ये भौमस्तन्मध्ये विदशाच·

मं·	रा·	वृ·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	०	०	०	१
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येअंतर्दशा चक्रम्.

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
२	२	२	०	२	०	१	०	२
१	६	३	११	८	९	४	११	४
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येगुरुस्तन्मध्ये वि॰ चक्र

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	३	१	४	१	२	१	३
१२	१	१८	१४	८	८	४	१५	२५
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४०	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये शनिस्तन्मध्ये विद॰ च॰

श	बु	के.	शु	सू	चं	मं.	रा	बृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	१	५	१	२	१	४	४
२४	९	२३	२	१५	१३	२३	१६	१
४	१२	३०	४	३६	०	१२	४८	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये बुधस्तन्मध्ये विद॰ च॰

बु	के	शु.	सू	चं	म.	रा.	बृ.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	४	१	२	१	४	३	४
२५	१७	१६	५०	८	११	२	१८	९
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि॰ चक्र

के.	शु.	सू	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	१	१	१	१
१९	२६	१६	२०	१९	२०	१४	२३	१७
३६	०	०	०	२६	२४	८	१२	३६
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येशुक्रस्तन्मध्ये वि॰ च

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ	श.	बु	के
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१	२	१	४	४	५	४	१
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	२६	२६
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये रविस्तन्मध्ये वि॰ चक्र

सू.	चं.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	१	१	०	१
१४	२४	१६	१३	९	१५	१०	१६	१८
१४	०	४८	१२	२०	३१	४८	४८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येचन्द्रस्त॰विदशा चक्र

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	२	२	२	२	०	२	०
५०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्ये भौमस्तन्मध्ये नि॰ चक्र

मं.	रा.	बृ	श.	बु	के	शु	सू.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	०	१	०	०
१०	४०	२४	२३	१७	१९	१६	१६	२८
२६	२४	४८	४२	३६	३६	०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुमध्येराहुस्तन्मध्ये वि॰ चक्र.

रा.	बृ	श.	बु	के	शु	सू	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	३	४	४	१	४	१	२	१
९	२५	१०	२०	२०	२४	१०	१०	२०
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्ये अंतर्दशाचक्रम्.								
श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	बृ.
३	२	१	३	०	१	१	२	२
०	८	१	२	११	७	१	१०	६
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्येशनिस्तन्मध्ये विदशाच.								
श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	बृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	२	६	१	३	२	५	४
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
३०	३०	२०	०	०	०	३०	०	०

शनिमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च.								
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	५
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
३६	३१	२०	२७	४५	२१	२१	१२	२५
२०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनिमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०								
के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	०	१	०	१	१	२	१
२३	६	९	३	२३	२९	२२	३	२६
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनिमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०								
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	३	२	५	५	६	५	२
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्येरविस्त० विदशाचक्र.								
सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	१	१	०	१
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
६	३०	५७	१८	२६	९	२७	५७	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्येचन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								
चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	३	२	१	३	०
१७	३	२७	१६	०	२०	३	५	२८
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्येभौमस्तन्मध्ये वि० च०								
मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	१	०	२	०	१
२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनिमध्यराहुस्त० विदशाचक्र.								
रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	५	[illegible]	१	५	१	२	१
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
५४	४८	२७	५१	४८	०	२०	३०	५१
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिमध्येगुरुस्तन्मध्ये वि० चक्रं.								
बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	४	१	५	१	२	१	४
१	२४	९	२२	२	१४	१६	२२	१६
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्येअंतर्दशाचक्रम्.								
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
२	०	२	०	१	०	२	२	२
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्येबुधस्तन्मध्येविदशाच.								
बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
०	०	४	०	०	०	०	०	०
४	१	४	१	२	१	४	३	४
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	२६	१६
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

बुधमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०								
के.	शु.	र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	०	०	१	१	१	१
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

बुधमध्ये भृगुस्त० विदशाचक्रं.								
शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१	२	१	५	४	५	४	१
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्ये रविस्तन्मध्येवि० चक्र								
र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	१	१	१	१	०	१
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								
चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	२	२	२	२	०	२	०
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२६
३०	४९	३०	०	२५	१५	४९	२	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्ये भौमस्तन्मध्येवि० च०								
मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	०	१	०	०
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

बुधमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०								
रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	र.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	४	४	१	५	१	२	१
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०								
गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	३	१	४	१	२	१	४
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधमध्येशनिस्तन्मध्ये वि० च०								
श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	१	५	१	२	१	४	४
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुमध्येंतर्दशा चक्रम्.								
के·	शु·	र·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·
०	१	०	०	०	१	०	१	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्येकेतुस्तन्मध्ये वि० च०								
के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
३४	३०	२१	१५	२४	२	२६	१६	४९
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०								
शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	शु·	बु·	के·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०
१०	२१	५	२४	३	१६	६	२९	२४
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये रवेस्तन्मध्ये वि० च०								
सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								
चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	०	१	०	०	१	०
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च०								
मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	र·	चं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
३४	३	२६	१६	४१	३४	३०	२१	१५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

केतुमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०								
रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	०	२	०	१	०
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
४२	२४	५१	३३	३	०	५९	३०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०								
गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	०	१	०	०	०	१
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
४८	१२	२६	२६	०	४८	०	३६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्येशनिस्तन्मध्ये वि० च०								
श·	बु·	के·	शु·	र·	चं·	मं·	रा·	गु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	१	०	२	०	१	०	१	१
३	२६	२३	६	१९	३	२२	२८	२३
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० चक्र.								
बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	१	०	०	०	१	१	१
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
२९	४९	२०	५१	४५	४९	३३	२६	३१
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

भृगुमध्येअंतर्दशा चक्रम्.								
शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु	के·
३	१	१	१	३	२	३	२	१
४	०	८	२	०	८	२	१०	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

भृगुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० चं०								
शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	२	३	२	६	५	६	५	२
२०	०	१०	१०	०	१०	३०	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० च०								
र·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	१	०	१	१	१	१	०	२
०	०	११	२४	१८	२७	२१	२१	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येचन्द्रस्तन्मध्ये विदशा								
चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	३	२	३	२	१	३	१
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च०								
मं·	रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	१	२	१	०	२	०	१
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येराहुस्तन्मध्ये वि० च०								
रा·	गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	४	५	५	२	६	१	३	२
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येगुरुस्तन्मध्ये वि० च०								
गु·	श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	५	४	१	५	१	२	१	४
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येशनिस्तन्मध्ये वि० चक्र								
श·	बु·	के·	शु·	सू·	चं	मं·	रा·	गु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	५	२	६	१	३	२	५	५
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्येबुधस्तन्मध्ये वि० च०								
बु·	के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	५	४	५
२४	२९	२०	११	२५	२९	३	१६	११
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रम० केतुस्तन्मध्ये वि० च०								
के·	शु·	सू·	चं·	मं·	रा·	गु·	श·	बु·
०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	०	१	०	२	१	२	१
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

इति अंतरप्रत्यंतर.

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उस्में ३ अंक युक्त करके ८ से भाग देना शेषअंक १।२।३।४।५।६।७।० तक रहेगा तब क्रमसे मंगला-पिंगला-धान्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा यह योगिनीके नाम जानना. और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्षसंख्या जानना. और जन्मनक्षत्रके भुक्तयोगघटीप्रमाण जन्मकालिक दशावर्षसंख्यामेंसे अष्टोत्तरीमें लिखे प्रमाण भुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्षसंख्याके दिनकरके उस्को ३६ से भाग के भागाकार आवे सो दिवस सर्व दशामें मंगला योगिनीकी अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भागाकार क्रमसे २।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणेतो पिंगलादि योगिनी इनके अंतर्दशादिवस होवेहै. इहां दशाधिपति और दशा अंतर्दशाके नाम उनके वर्षादिसंख्या इस्के जुदे जुदे कोष्टक आगे लिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम ३६ वर्षका सो भोगनेके अनंतर पुनः यही लेना.

मंगला मध्ये अंतरम्.							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
० ० १० ० ०	० ० २० ० ०	० १ ० ० ०	० १ १० ० ०	० १ २० ० ०	० २ ० ० ०	० २ १० ० ०	० २ २० ० ०

पिंगलामध्ये अंतर्दशाचक्रम्.							
पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
० १ १० ० ०	० २ ० ० ०	० २ २० ० ०	० ३ १० ० ०	० ४ ० ० ०	० ४ २० ० ०	० ५ १० ० ०	० ० २० ० ०

धान्यामध्ये अंतर्दशाचक्रम्.							
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.
० ३ ० ० ०	० ४ ० ० ०	० ५ ० ० ०	० ६ ० ० ०	० ७ ० ० ०	० ८ ० ० ०	० १ ० ० ०	० २ ० ० ०

भ्रामरी दशामध्ये अंतर्दशाच.							
भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
० ५ १० ० ०	० ६ २० ० ०	० ८ ० ० ०	० ९ १० ० ०	० १० २० ० ०	० १ १० ० ०	० २ २० ० ०	० ४ ० ० ०

भद्रिकामध्ये अंतर्दशाचक्रं.							
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.
० ८ १० ० ०	० १० ० ० ०	० ११ २० ० ०	१ १ १० ० ०	० १ २० ० ०	० ३ १० ० ०	० ५ ० ० ०	० ६ २० ० ०

उल्कामध्ये अंतर्दशाचक्रं.							
उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
१ ० ० ० ०	१ २ ० ० ०	१ ४ ० ० ०	० २ ० ० ०	० ४ ० ० ०	० ६ ० ० ०	० ८ ० ० ०	० १० ० ० ०

सिद्धादशामध्ये अंतर्दशाचक्रं.							
सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.
१ ४ १० ० ०	१ ६ २० ० ०	० २ १० ० ०	० ४ २० ० ०	० ७ ० ० ०	० ९ १० ० ०	० ११ २० ० ०	१ २ ० ० ०

संकटामध्ये अंतर्दशा चक्रम्.							
सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
१ ९ १० ० ०	० २ २० ० ०	० ५ १० ० ०	० ८ ० ० ०	० १० २० ० ०	१ १ १० ० ०	१ ४ ० ० ०	१ ६ २० ० ०

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम-

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्री रामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अयन ऋतु मास पक्ष तिथि वार नक्षत्र योग करण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीपल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्य मादि स्पष्टग्रह और लग्न लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रहन्यास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना अनंतर चन्द्र राशि कुंडली लिख के फल लिखना. तन्वादि द्वादशभावसंधिसहित लिखके ग्रहोंका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भाव गत ग्रहफल और भावस्वामी गतफल और भाव लग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्पर दृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्वर्गकुंडली ग्रहसहितलिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक् काल निसर्ग चेष्टा दृग्वल और भावबलभी लिखना. तन्वादि द्वादशभाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट भंग राजयोग राजयोग भंगादि सुनफा अनफा दुरधरा के मद्रुमनाभसयोगादि संभवयोग फल और सर्वतो भद्र चक्र सूर्य्य कालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादि चक्र. और यमदंष्ट्रा चक्र. और फल और राशिफल और दीप्तादि और बालादि जागृतादि ग्रहोंकी अवस्था फल सहित और इष्टक लादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और दृष्टकष्ट और आयुर्दाय दशाविभाग फल सहित और दशामें अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहितलिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहितलिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्तोयं ग्रंथः

श्लोक-
जगत्पूर्वेणईशेन नारनौल निवासिना ॥
नृगिराकेशवीकृत्वा केशवार्यार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्द-:

आदौब्रह्मस्थानतोद्विजनिकर भवाब्राह्मणागौडवर्य्या
स्तन्दारद्वाजगोत्रेप्रथित गुणगणः सुन्दरोलाल युक्तः ॥
आसीत्तस्यापिपुत्रीप्रकटसमुदयावासतुर्लब्धकीर्ती
यच्छौरीत्यादिसुक्तं शुभगुणनिचयंभू रिलोकागृणन्ति ॥१॥

अर्थभाषाः- (अब कविके वंशकी प्रशंसा कहीजाती है स्रग्धराछंदसे)

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौड द्विजश्रेष्ठ भये तिनके शुभ भारद्वाज गोत्रमें विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये श्रौर तिनके पुत्र जो प्रकटित भाग्योदयवाले श्रौर लब्धकीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं. १

श्लोक- शिवदयालुयुक् शिवःसहायवान् सुतावुभौ तदीय-
पुत्रतागतौ सुयुग्मकौतु पंडितौ ॥ महद्गरीयगौरवौ त्रि-
कालवाचकावुभौ समापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिकं यशः २

अर्थभाषाः- ऐसे शिवदयालुजी शिवसहायजी दोनों पुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये - जो महाभारी गौरववान् श्रौर त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पट्टालया धीश श्रीमन्नरेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यश कीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया. २

श्लोक- दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहायएतौ महदाप्तकामौ ॥
जनाभिरामौ नृपतिप्रधानौ ज्योतिर्विदावाप्ततुराप्तमानौ ॥३॥

अर्थभाषाः- सो दुर्गाप्रसाद श्रौर भवानीसहाय ये दोनों परिपूर्णकाम भये जो जनोंको अभिराम आनंद देनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये.

श्लोक- अथो शिवसहायस्य सुतावेतौ महामती ॥
लक्ष्मी नारायणश्चाद्य ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥४॥

अर्थभाषाः- फिर तिन शिवसहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मी नारायण श्रौर ज्योतिर्वित् जगदीश शर्मा पुत्र हैं.

श्लोक- ज्योतिर्विज्जगदीशोसौ जगदीशप्रतोषदम् ॥
केशवायार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥५॥

अर्थभाषाः- ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसाद शर्माने जगदीश नारायणको तुष्टि प्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्यभाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्प्पण किया. अथवा केशव दैवज्ञवर्य्यकी पूजामें अर्पण किया. यह भी श्लेष है.

श्लोक- त्रिपंचांकेन्दुवर्षस द्वैकर्मीयेन भास्विते ॥
नृगिरोदाहृ तिःपूर्णा पूर्णिमायां रवेर्दिने ॥६॥

अर्थभाषाः- संवत् १९५३ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभ भारतभूमि मण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकशैलतलवर्ति नन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सो मनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया. सो सबको सदा सदा सुखादि देवो.

श्लोक- मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलं सर्वलो-
कानां भूयो भूयास्तु मंगलं ॥७॥ मंगलं भगवान्विष्णुर्मंगलं
गरुडध्वजः ॥ मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥८॥

अथसूर्य्यसेलग्नसेइष्टकालकरनेकीरीति

श्लोक- } अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालन्वितो युक्त मध्योदयोभीष्ट कालोभवेत् ॥ १ ॥

अर्थभाषा-

स्पष्टसूर्य्यमें अयनांशा युक्त करके उस्को राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उस्के प्रमाण स्वदेशीयलग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उस्के ऊपर जो राशी होय उस्के प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशीसे सायनसूर्य्यकी राशीतक लग्नमान स्वदेशीयकाऐक्य करके उस्में भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देनातो इष्टकाल घटी पलस्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्य्यकी राशीसे सायन लग्नकी राशीतक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे जब सूधा लग्नलेना और सायन लग्नकी राशीसे और सायन सूर्य्यकी राशीतक लग्नका ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण-

स्पष्टसूर्य्य ०।१२।१०।४२ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कमकरके १।२४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन कियातो १९५ अबलग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२९ इस्से भुक्तपल साधन कियातो २८ अबसायन सूर्य्य वृष राशीका है इसवास्ते मिथुनकालग्न ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६९७ इस्में भुक्त भोग्य पल युक्त करीतो इस्के ६० का भाग दियातो लब्ध ३२ शेष ० यह पलपूर्व तुल्य इष्टभया इसी प्रमाणसे सूर्य्य लग्नसे इष्टकाल करना.

जो सायन सूर्य्य और सायनलग्न एक राशीमें होयतो इनकाअंतर करके उस्को सायन सूर्य्यके उदयसे गुणके ३० से भागदेना जो भागाकार आवेसो पलात्मक अभीष्ट काल होता है जो सायनसूर्य्य के अपेक्षा सायन लग्न कमती होयतो पूर्व प्रमाण साधन किया जो ... । सो ६० मेंसे कम करनातो इष्ट काल होता है.

अथ रवेरष्टवर्गांकाः ४८							
सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	ल·
१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११ ०	३ ६ १० ११ ० ० ० ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११ ०	३ ५ ६ ९ १० ११ १२ ० ०	५ ६ ९ ११ ० ० ० ० ०	६ ७ १२ ० ० ० ० ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११ ०	३ ४ ६ १० ११ १२ ० ० ०

चन्द्रस्याष्टवर्गांकाः ४९							
चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	ल·	सू·
१ ३ ६ ७ १० ११ ० ० ०	२ ३ ५ ६ ९ १० ११ ०	१ ३ ४ ५ ७ ८ १० ११ ०	१ ४ ७ ८ १० ११ १२ ०	३ ४ ५ ७ ९ १० ११ ० ०	३ ५ ६ ११ ० ० ० ०	३ ६ १० ११ ० ० ०	३ ६ ७ ८ १० ११ ० ०

भौमस्याष्टवर्गांकाः ३९							
मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	ल·	सू·	चं·
१ २ ४ ७ ८ १० ११ ०	३ ५ ६ १२ ० ० ० ० ०	६ १० ११ १२ ० ० ० ० ०	६ ८ ११ १२ ० ० ० ०	१ ४ ७ ८ ९ १० ११ ०	१ ३ ६ १० ११ ० ० ० ०	३ ५ ६ १० ११ ० ० ०	३ ६ ११ ० ० ० ० ०

बुधस्याष्टवर्गांकाः ५४							
बु·	बृ·	शु·	श·	ल·	सू·	चं·	मं·
१ ३ ५ ६ ९ १० ११ १२	६ ८ ११ १२ ० ० ०	१ २ ३ ४ ५ ८ ९ ११	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११	१ २ ४ ६ ९ ११ १२ ०	५ ६ ९ ११ १२ ० ० ०	४ ५ ६ ८ १० ११ ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११

गुरोरष्टवर्गांकाः ५६							
बृ·	शु·	श·	ल·	सू·	चं·	मं·	बु·
१ २ ३ ४ ७ ८ १० ११ ०	२ ५ ६ ९ १० ११ ० ० ०	३ ५ ६ १२ ० ० ० ० ०	१ २ ४ ५ ६ ७ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ७ ८ ९ १० ११	२ ५ ७ ९ ११ ० ० ० ०	१ २ ४ ७ ८ १० ११ ० ०	१ २ ४ ५ ६ ९ १० ११

शुक्रस्याष्टवर्गांकाः ३९							
शु·	श·	ल·	सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·
१ २ ३ ४ ५ ८ ९ १० ११	३ ४ ५ ८ ९ १० ११ ०	२ ३ ४ ५ ८ ९ ११ ०	८ ११ १२ ० ० ० ० ०	१ २ ३ ४ ५ ८ ९ ११ १२	३ ५ ६ ९ ११ १२ ० ० ०	३ ५ ६ ९ ११ ० ० ०	५ ८ ९ १० ११ ० ० ०

शनेरष्टवर्गांकाः ३९							
श·	ल·	सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·
३ ५ ६ ११ ० ० ० ०	३ ४ ६ ९ १० ११ ० ०	१ ३ ४ ७ ८ १० ११ ०	३ ६ ११ ० ० ० ० ०	३ ५ ६ १० ११ १२ ० ०	६ ८ ९ १० १२ ० ० ०	५ ६ ११ १२ ० ० ० ०	६ ११ १२ ० ० ० ० ०

लग्नस्याष्टवर्गांकाः ४८							
ल·	सू·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·
३ ४ ९ १० ११ १२ ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० १२	३ ६ १० ११ ० ० ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११	२ ५ ६ ९ १० ११ १२ ०	५ ६ ९ ११ ० ० ० ०	६ ७ १२ ० ० ० ० ०	१ २ ४ ७ ८ ९ १० ११

अथ सर्वतोभद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठान वात्र चक्रे सुधियाविधेयाः ॥ स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्ध भावाच्च मयानिरुक्तम् ॥ २ ॥ भ्रमोऽमवेन्दे ऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे सति विघ्नमेव जंतुः कथं जीवति पंचविद्धे ॥ ३ ॥ भरण्यकारो वृषभं च नंदां भद्रांतकारं श्रवणं विशाखाम् तुलां च विद्धे दुनलर्क्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥ ४ ॥ वकारमोकार मुकार दास्रे स्वातीर कारं मिथुनं च कन्याम् ॥ तथाभिजित्संज्ञकमं च विद्धे त्र्यन्यर्क्षसंस्थो हिन भश्च रेन्द्रः ॥ ५ ॥ कर्ककर्कारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारं अकारकं वै वृषभमत्र विद्धे दलं नभा मंडलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वक्षेभ्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दृष्ट्या द्वेधः सत्फलं सौम्यजातो त्यंतकष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मिन् ऋक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽस्य भेयातियास्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतोभद्रचक्रम्.

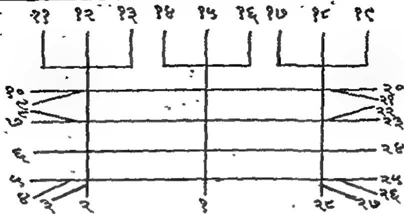
अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	आ.
भ.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	२	३	४	लृ.	म.	पू.
रे.	च.	१	आ.	ने.	औ.	५	ट.	उ.
उ.	द.	१२	रि.	भू.	फ.	६	प.	ह.
पू.	स.	११	अ.	ज.	अं.	७	र.	चि.
शा.	ग.	ऐ.	१०	९	८	ए.	त.	स्वा.
ध.	ऋ.	ख.	ज.	भ.	य.	न.	ऋ.	वि.
इ.	श्र.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

अथ सूर्य्यकालानलचक्रं.

सूर्य्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥ त्रिशूलकायाः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाः परिकल्पनीयाः ॥ रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र हे द्वे च कोणापरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणांतरगान्य रेखा तदग्रयोः शृंगयुता विधेयम् ॥ मध्यत्रिशूलस्य च दंडमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिलिख्य ॥ ३ ॥ स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सद्सत्फलं हि तत्र स्वक्रमात् पर्क्रमेण चिन्ताबधन्धनप्रतिबधनानि ॥ ४ ॥ शृंगद्वये रुक् च भवेद्विभंगश्च दिशुमूलं परिकल्पनीयम् शेषे शुधिष्ण्यां सुजयश्च लाभो ऽभीष्टार्थसिद्धिर्यच हृन्धानयोगाम् ॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्गदेच वादे धरणे प्रयाणे ॥ प्रयत्नपूर्वं नतु चिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥ ॥

इति सूर्य्यकालानल चक्रम्.

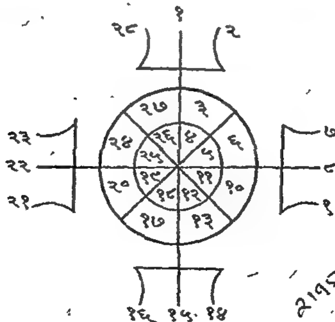
अथसूर्य्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायरत्नं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥रत्नाद्द्विहिसंचलितेविधेयेरेखात्रिशूलाश्चतदग्रकेषु ॥१॥ कोणाश्चरेखाद्वितियेनसाध्या पूर्वत्रिशूलेकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रंलिखेद्भंतदनुक्रमेण सव्येनधिष्ण्यानिबहिस्तदंते ॥२॥ कालानल चक्रमिदंहिचान्द्रं रणप्रयाणादिषुजन्मभंचेत् त्रिशूलंसंस्थं निधनायनूनं अंतर्बहिः स्थंत्वशुभप्रदंहि ॥३॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



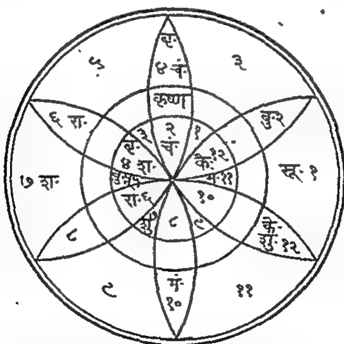
श्लोक-

हिमांशोर्भेऽङ्के ब्जेऽसुरगुरुरियौराहुरनुजेऽब्धिगो-
मन्दःपुण्येशिखियुगुशनास्तेऽवनिसुतः ॥ रवौस्व-
स्थेसौम्येशिवभवनगेमासिमधुकेसितेमध्यान्हे
भूद्रघुवरजनिर्विम्बिसुखदा ॥ १ ॥ ॥

भाद्रेमासिसितेतरेवसुतिथौब्राह्मेद्रृपेङ्के-विधौ-
लग्नस्थेसशनौगुरौसहजगेम्बुस्थेरवौसेन्दुजे ॥
राहौपंचमगेभृगौरिपुगतेभौमेनृपस्थेध्वजे ला-
भेरात्रिदलेबभूवकमलाधीशावतारोबुधे ॥ २ ॥

इतिकृष्णाचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्न ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अंक युक्त करके ८से भागदेना शेषअंक १।२।३।४।५।६।७।० तक रहेगा तब क्रमसे मंगला-पिंगला-धान्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा यह योगिनीके नाम जानना. और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्षसंख्या जानना. और जन्मनक्षत्रके भुक्तयोगघटीप्रमाण जन्मकालिक दशावर्षसंख्यामेंसे अष्टोत्तरीमें लिखे प्रमाण भुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्षसंख्याके दिनकरके उसको ३६से भागके भागाकार आवेसो दिवस सर्व दशाने मंगला योगिनीकी अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भागाकार क्रमसे २।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणेतो पिंगलादि योगिनी इनके अंतर्दशादिवस होवेहै. इहां दशाधिपति और दशाअंतर्दशाके नाम उनके वर्षादिसंख्या इस्के जुदेजुदे कोष्ठक आगेलिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम ३६वर्षकासो भोगनेके अनंतर पुनः यही लेना.

मंगला मध्येअंतरम्.								पिगलामध्येअंतर्दशाचक्रम्.							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	१	१	२	२	२	१	२	२	३	४	४	५	०
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्यामध्येअंतर्दशाचक्रम्.								भ्रामरी दशामध्ये अंतर्दशाच.							
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	५	६	७	८	१	२	५	६	८	९	१०	१	२	४
०	०	०	०	०	०	०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भद्रिकामध्ये अंतर्दशाचक्रं.								उल्कामध्ये अंतर्दशाचक्र.							
भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	भ.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.
०	०	०	१	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०
८	१०	११	१	१	३	५	६	०	२	४	२	४	६	८	१०
१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सिद्धादशामध्येअंतर्दशाचक्रं.								संकटामध्ये अंतर्दशा चक्रम्.							
सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.
१	१	०	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	१	१	१
४	६	२	४	७	९	११	२	९	२	५	८	१०	१	४	६
१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम.

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्री रामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अयन ऋतु मास पक्ष तिथि वार नक्षत्र योग करण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीपल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्य मादि स्पष्टग्रह और लग्न लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रहन्यास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना अनंतर चन्द्र राशि कुंडली लिख के फल लिखना. तन्वादि द्वादश भावसंधिसहित लिखके ग्रहोंका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भाव गतग्रहफल और भावस्वामी गतफल और भाव लग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्परदृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्वर्गकुंडली ग्रहसहितलिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधा मैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक् काल निसर्ग चेष्टा दृग्वल और भावबल भी लिखना. तन्वादि द्वादश भाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट भंगराजयोग राजयोग भंगादि सुनफा अनफा दुरधरा के मद्रु मनाभसयोगादि संभवयोग फल और सर्वतो भद्र चक्र सूर्य्य कालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादि चक्र. और यमदंष्ट्रा चक्र. और फल और राशिफल और दीप्तादि और बालादि जागृतादि ग्रहोंकी अवस्था फल सहित और इष्टक लादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और स्वह दिष्टकष्ट और आयुर्दाय दशाविभाग फल सहित और दशामें अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहितलिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहितलिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्तोयं ग्रंथः

श्लोक. } जगत्पूर्वेणईशेन नारनौल निवासिना ॥
नृगिराकेशवीकृत्वा केशवार्यार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्द.

आदौप्र स्थानतोदिग्द्विजनिकर भवाद्ब्राह्मणागौडवर्य्या
त्स्न्दारद्वाजगोत्रेप्रथितगुणगणः सुन्दरोलाल युक्तः ॥
आसीत्तस्यापिपुत्रीप्रकटसमुदया वासतुर्लब्धकीर्ती
यच्छौरीत्यादियुक्तं शुभगुणनिचयंभू रिलोकागृणन्ति ॥१॥

अर्थभाषाः-(अब कविके वंशकी प्रशंसा कहीजाती है स्रग्धराछंदसे)

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौड द्विजश्रेष्ठ भये तिनके शुभ भारद्वाज गोत्रमें विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये और तिनके पुत्र जो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्ध कीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं. १

श्लोक- शिवदयालुयुक्शिवःसहायवान्सुतावुभौ तदीय-
पुत्रतागतौसुयुग्मकौतुपंडितौ ॥ महद्गरीयगौरवौ त्रि-
कालवाचकावुभौसमापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिकंयशः २

अर्थ भाषाः- ऐसे शिवदयालुजी शिव सहायजी दोनो पुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये - जो महा भारी गौरव वान् और त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पट्टालया धीश श्रीमन्नरेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यश कीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया. २

श्लोक- दुर्गाप्रसादश्चतथाभवानीसहायएतौमहदाप्तकामौ॥
जनाभिरामौनृपतिप्रधानौज्योतिर्विदावासतुराप्तमानौ॥३॥

अर्थ भाषाः- सो दुर्गा प्रसाद और भवानीसहाय ये दोनो परिपूर्णकाम भये जो जनोंको अभिराम आनंददेनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्य जोतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये.

श्लोक- अथो शिवसहायस्यसुतावेतौमहामती ॥
लक्ष्मी नारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥४॥

अर्थ भाषाः- फिर तिन शिव सहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मी नारायण और ज्योतिर्वित् जगदीश शर्मा पुत्र हैं.

श्लोक- ज्योतिर्विज्जगदीशोसौजगदीशप्रतोषदम् ॥
केशवायार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥५॥

अर्थ भाषाः- ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसाद शर्माने जगदीश नारायणको तुष्टि प्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्प्पण किया अथवा केशव दैवज्ञवर्य्यकी पूजामें अर्पण किया - यह भी श्लेष है.

श्लोक- त्रिपंचांकेन्दुवर्षेसद्धेकर्मीयेनभास्विते ॥
नृगिरेदाह्तिःपूर्णापूर्णिमायांरवेर्दिने ॥ ६ ॥

अर्थ भाषाः- संवत् १९५३ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभ भारत भूमि मण्डलान्तर्गत प्रसिद्ध इन्द्र प्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकशैलतलवर्ति नन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीशप्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सो मनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया. सो सबको सदा सदा सुखादि देवो.

श्लोक- मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलं सर्वलोकानां भूयो भूयास्तु मंगलं ॥७॥ मंगलं भगवान्विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः ॥ मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः ॥८॥

अथसूर्य्यसेलग्नसेइष्टकाल करनेकीरीति

श्लोक- } अर्कभोग्यस्तनो र्भुक्तकालन्वितो युक्त मध्योदयोभीष्ट कालोभवेत् ॥ १ ॥

अर्थभाषा-

स्पष्टसूर्य्यमें अयनांशा युक्त करके उस्को राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उस्के प्रमाण स्वदेशीयलग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उस्के ऊपर जोराशी होय उस्के प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशीसे सायनसूर्य्यकी राशीतक लग्नमान स्वदेशीयकाऐक्य करके उस्में भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देनातो इष्टकाल घटी पल स्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्य्यकी राशीसे सायन लग्नकी राशीतक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे जब सूधालग्नलेना और सायन लग्नकी राशीसे और सायन सूर्य्यकी राशीतक लग्नका ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण-

स्पष्टसूर्य्य ०।१२।१०।४२ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कमकरके १।२४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन कियातो १९५ अबलग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२९ इस्से भुक्तपल साधन कियातो २९ अबसायन सूर्य्य वृष राशीका है इसवास्ते मिथुनकालग्न ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६९७ इस्में भुक्त भोग्य पल युक्त करीतो इस्के ६० का भाग दियातो लब्ध ३२ शेष ० यह पलपूर्वतुल्य इष्टभया इसी प्रमाणसे सूर्य्य लग्नसे इष्टकाल करना.

जो सायन सूर्य्य और सायनलग्न एक राशीमें होयतो इनकाअंतर करके उस्को सायनसूर्य्यके उदयसे गुणके ३० से भागदेना जो भागाकार आवेसो पलात्मक अभीष्ट काल होता है जो सायनसूर्य्य के अपेक्षा सायन लग्न कमती होयतो पूर्व प्रमाण साधन किया जो ... ।सो ६० मेंसे कम करनातो इष्ट काल होता है.

अथ रवेरष्टवर्गाङ्काः ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११	०	७	१०
८	०	८	१०	०	०	८	११
९	०	९	११	०	०	९	१२
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०
११	०	११	०	०	०	११	०
०		०	०	०		०	०

चन्द्रस्याष्टवर्गाङ्काः ४९

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९	०	०	१०
११	१०	८	११	१०	०	०	११
०	११	१०	१२	११	०	०	०
०	०	११	०	०	०		०
०		०		०			

भौमस्याष्टवर्गाङ्काः ३९

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	१२	१२	१२	८	१०	१०	०
८	०	०	०	९	११	११	०
१०	०	०	०	१०	०	०	०
११	०	०	०	११	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०				

बुधस्याष्टवर्गाङ्काः ५४

बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९	०	५	८	९	१२	१०	८
१०	०	८	९	११	०	११	९
११	०	९	१०	१२	०	०	१०
१२	०	११	११	०	०	०	११

गुरोरष्टवर्गाङ्काः ५६

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०	०	६	७	११	८	६
८	११	०	७	८	०	१०	९
१०	०	०	९	९	०	११	१०
११	०	०	१०	१०	०	०	११
०	०		११	११			

शुक्रस्याष्टवर्गाङ्काः ३९

शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.
१	३	२	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	५	०	४	९	९	१०
५	९	८	०	५	११	११	११
८	१०	९	०	८	१२	०	०
९	११	११	०	९	०	०	०
१०	०	०	०	११	०	०	०
११				१२	०		

शनेरष्टवर्गाङ्काः ३९

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	३	६	५	८	६	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७	०	१०	१०	१२	०
०	१०	८	०	११	१२	०	०
०	११	१०	०	१२	०	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

लग्नस्याष्टवर्गाङ्काः ४८

ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
३	१	३	१	३	५	६	१
४	२	६	२	५	६	७	२
६	४	१०	४	६	९	१२	४
१०	७	११	७	९	११	०	७
११	८	०	८	१०	०	०	८
१२	९	०	९	११	०	०	९
०	१०	०	१०	१२	०	०	१०
०	१२	०	११	०	०	०	११

अथ सर्वतोभद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥१॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ॥ स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाच्च मया निरुक्तम् ॥२॥ भ्रमो भवेन्द्वेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वेधे सति विभ्रमे व जंतुः कथं जीवति पंचविद्धे ॥३॥ भरण्यकारो वृषभं च नंदां भद्रांतकारं श्रवणं विशाखाम् तुलां च विद्धे दनलर्क्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञैः ॥४॥ वकारमौकारमुकारदास्त्रे स्वातीरकारं मिथुनं च कन्याम् ॥ तथाभिजित्संज्ञकमं च विद्धे ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥५॥ कर्कं ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारं अकारकं वैश्वभमत्र विद्धे दलं नभो मंडलगो मृगस्थः ॥६॥ एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वक्षेम्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दुष्याद्वेधः सकलसौम्यजातोत्यंतकष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मिन् दृक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽस्य भं याति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतोभद्रचक्रम्.

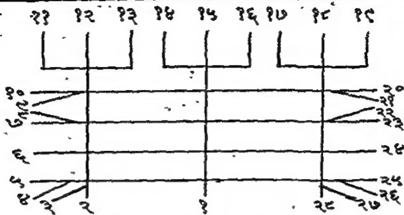
अ·	कृ·	रो·	मृ·	आ·	पु·	पू·	आ·	आ·
भ·	उ·	अ·	व·	क·	ह·	ड·	ऊ·	म·
अ·	ल·	लृ·	२	३	४	लॄ·	म·	पू·
रे·	च·	१	आ·	नं·	औ·	५	ट·	उ·
उ·	द·	१२	रि·	पू·	भ·	६	प·	ह·
पू·	स·	११	अ·	ज·	अ·	७	र·	चि·
श·	ग·	ऐं·	१०	९	८	ए·	त·	स्वा·
ध·	ऋ·	ख·	ज·	भ·	य·	न·	ऋ·	वि·
इ·	श्र·	अ·	उ·	पू·	मू·	ज्ये·	अ·	इ·

अथसूर्य्यकालानलचक्रं.

सूर्य्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥१॥ त्रिशूलकायाः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वे रेखाः परिकल्पनीयाः ॥ रेखात्रयं मध्यगतं तत्र हे द्वे चकोणापरिगे विधेये ॥२॥ त्रिशूलकोणांतरगान्य रेखा तद्द्रयोः शृंगयुता विधेयम् ॥ मध्यत्रिशूलस्य च दंडमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिलिख्य ॥३॥ स्वनाम भं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि तत्र स्वकाले तपक्रमेण चिन्तावधश्च प्रतिबंधनानि ॥४॥ शृंगद्वयरुक् चभेव द्विभंगशूलेषु मूलं परिकल्पनीयम् शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिश्च हुधानयोणाम् ॥५॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्देच वादे चरणे प्रयाणे ॥ प्रयत्नपूर्वमनुचिन्तनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥ ॥

इति सूर्य्यकालानल चक्रम्.

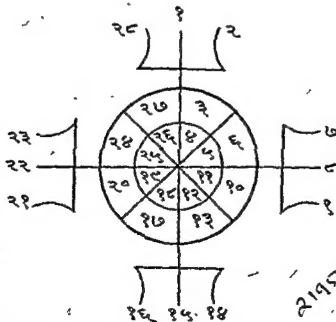
अथसूर्य्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥वृत्ताद्बहिःसंचलितेविधेयेरेखात्रिशूलाश्चतदग्रकेषु ॥१॥ कोणाश्चरेखाद्वितियेनसाध्या पूर्वत्रिशूलेकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रंलिखेद्भंतदनुक्रमेण सव्येनधिष्ण्यानिबहिस्तदंते ॥२॥ कालानलचक्रमिदंहिचान्द्रं रणप्रयाणादिषुजन्मभंचेत् त्रिशूलसंस्थं निधनायनूनं अंतर्बहिः स्यात्त्वशुभप्रदंहि ॥३॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



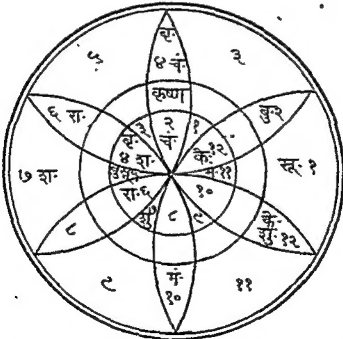
श्लोक-

हिमांशोर्भेऽङ्के ध्नेऽसुरगुरुरिपौराहुरनुजेऽब्धिगो-
मन्दःपुण्येशिखियुगुशनास्तेऽवनिसुतः ॥ रवौस्व-
स्थेसौम्येशिवभवनगेमासिमधुकेसितेमध्यान्हे
भूद्रघुवरजनिर्विम्बसुखदा ॥ १ ॥ ॥

भाद्रेमासिसितेतरेवसुतिथौब्राह्मेनृपेङ्के-विधौ-
लग्नस्थेसशनौगुरौसहजगेम्बुस्थरवौसेन्दुजे ॥
राहौपंचमगेभृगौरिपुगतेभौमेनृपस्थेध्वजेला-
भेरात्रिदलेबभूवकमलाधीशावतारोबुधे ॥ २ ॥

इतिकृष्णाचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्न ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥